अभिनन्दन ग्रन्थ

शिरोमणि श्री पं० चन्द्रभानु

॥ ओ३म् ॥

पुरोहितशिरोमणि

श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण

अभिनन्दन ग्रन्थ

सम्पादक

आचार्य विक्रम

एम० ए०

प्रकाशक

आर्य पुरोहित सभा (पंजीकृत)

दिल्ली प्रदेश

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान

(१) श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण

१/१२ सर्व प्रिय विहार

नई दिल्ली-११००१६

(२) श्री राजपाल सिंह शास्त्री – मधुर प्रकाशन

२८०४, आर्य समाज मन्दिर,

बाजार सीताराम, दिल्ली-६

(३) गोविन्दराम हासानन्द

४४०८ नई सड़क, दिल्ली-११०००६

मूल्य १५) रुपये

प्रिंटर्स—

श्री शोभाराम जी आर्य

जागृति प्रिन्टर्स

७१०८ पहाड़ वाली गली, पहाड़ी धीरज दिल्ली-६
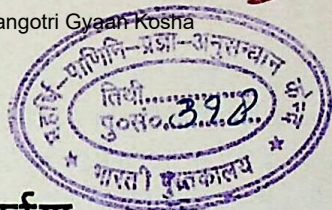
समर्पण

धर्माचार्य श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण

के ७५वें जन्म दिवस १६ मार्च १९८४ ई०

पर सादर समर्पित।

प्रस्तावना

हम कौन थे क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।।

उपर्युक्त पंक्तियां राष्ट्रकवि स्व० श्री मैथिलीशरण गुप्त की हैं। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति संगठन सभा आदि को अपने अतीत-वर्तमान तथा भविष्य के विषय में समय-समय पर आवश्यक रूप से विचार करना चाहिए।

आर्य समाज की स्थापना के १०९ वर्षों के बाद भी हमारा अपने अतीत-वर्तमान तथा भविष्य पर विचार करना अनुचित न होगा। निःसन्देह हमारा अतीत बहुत गौरवपूर्ण था, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, पं० लेखराम, महात्मा हंसराज आदि अनेक त्यागी तपस्वी स्वामी दयानन्द जी द्वारा लगाए गए आर्य समाज रूपी पौधे को आजीवन अपना सर्वस्व समर्पित करके सींचते रहे और इसे फलता-फूलता छोड़कर चले गए। धीरे-२ समय के परिवर्तन के साथ-साथ यह वृक्ष अपनी शाखा प्रशाखाओं के द्वारा देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी फैलता गया। गत वर्षों में हुए अनेक अन्तर्राष्ट्रीय महा सम्मेलन (मोरिशस-नेरोबी-लन्दन) इसके प्रमाण हैं लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने जिस उद्देश्य को लेकर इसे लगाया था इसके कुछ विपरीत परिणाम देखने को मिल रहा है। सुना भी यही जाता है पहले आर्य समाज की स्थिति बड़ी अच्छी थी। आर्य समाज केवल सीमित क्षेत्र में ही बंध गया है उसमें आज युवको का अभाव है? वह समय कहां गया जब रामप्रसाद बिस्मिल से पिताजी ने कहा कि या तो तुम घर छोड़ो या आर्य समाज को छोड़ो, राम प्रसाद ने तुरन्त निश्चय किया कि आर्य समाज की अपेक्षा अपना घर छोड़ना उचित होगा। इसी तरह से समाजों में पुरोहितों उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों आदि का अभाव देखने को मिल रहा है। जो हैं वे धीरे-धीरे जा रहे हैं और नये आ नहीं रहे? तथा कोई भी अपनी सन्तान को इस लाइन में डालना पसन्द नहीं कर रहा है

एक समय था जब पुरोहित समाज का अग्रणी माना जाता था "पुर एवं दधति इति पुरोहितः" जिसे आगे रखकर ही समाज अपने समस्त सामाजिक कार्यों को करने में अपना गौरव समझता था, जब तक यहां पर यह स्थिति रही तब तक समाज प्रगति करता रहा क्योंकि किसी भी समाज-संगठन तथा सभा की रीढ़ की हड्डी उसका पुरोहित उपदेशक तथा भजनोपदेशक अथवा प्रचारक ही होता है। आज देश में सिख-ईसाई मुस्लिम आदि संगठनों के आगे बढ़ने के जहां अनेक कारण हैं वहां पर प्रमुख कारण उनके प्रचारकों को उचित-सुख सुविधाओं के साथ सम्मान पूर्वक रखा जाता है जिसका आर्य समाज में अत्यन्त अभाव है। आज का पुरोहित, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा प्रचारक रोटी कपड़ा और मकान की समस्याओं से घिरा रहता है, और इसके बावजूद पढ़े-लिखे स्नातक शास्त्री तथा एम. ए. आदि की योग्यता रखने वाले के प्रति उचित सम्मान की बात तो दूर है उसके पद के अनुरूप भी सुख सुविधाएं नहीं मिलती हैं अतः वह स्वयं इस व्यवहार से इतना निराश है कि अपनी सन्तान के भविष्य को देखते हुए उसे इस ओर भेजना पसन्द नहीं करता समय के साथ-साथ पुरोहित की इस परिभाषा में भी परिवर्तन हो गया। यदि इसे वर्तमान में "परे एवं दधति इति पुरोहितः" अर्थात् जिसे परे रखकर कार्य किया जाए, कहा जाये तो अनुचित न होगा। आज समाजों में पुरोहित की गरिमा को बनाए रखने वालों का अभाव है। जब यह स्थिति वर्तमान में हैं तो भविष्य के बारे में एक प्रश्न चिन्ह बनना स्वाभाविक ही है? हो सकता है कोई पुरोहित बनना तो दूर रहा पुरोहित कहलाना भी पसन्द करेगा कि नहीं— इसे बड़ी गम्भीरता के साथ आर्य जगत् को सोचना चाहिए।

इन्हीं उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए तथा अपने विघटन का अनुभव करते हुए दिल्ली के युवा वर्ग विद्वानों ने, उपदेशकों ने, अपने को संगठित करना आवश्यक समझा उसी का परिणाम आज आर्य पुरोहित सभा एक पंजीकृत संस्था है। इस संगठन को लोगों नें यूनियन कहा, लेकिन सभा ने कभी भी इस प्रकार के शब्द के साथ अपना नाता जोड़ना पसन्द नहीं किया। उसने अपने उद्देश्यों को बड़े सोच समझकर बनाया है। जिनका उल्लेख अन्यत्र है।

पुरोहित सभा ने क्या प्रगति की है ? इसके उत्तर में यही पर्याप्त है कि सभा किसी भी तरह का विरोध करके आगे बढ़ने में विश्वास नहीं रखती अपितु अपने उद्देश्य में जो बाधा आयेंगी उसका समाधान शालीनता तथा धैर्य के साथ करते हुए आगे बढ़ना चाहती है तथा अपना भविष्य उज्जवल बनाना चाहती है। दिल्ली तथा अन्य स्थानों के विद्वानों का सहयोग इसके लिए अपेक्षित है। समस्त सभाओं, समाजों एवं संगठनों के कार्यकर्ताओं के सहानुभूति पूर्ण सहयोग की अभिलाषा रखती है।

अन्त में पुरोहित सभा अपने वयोवृद्ध प्रधान पुरोहितशिरोमणि श्री पं० चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन करना अपना कर्तव्य समझते हुए उनकी सेवाओं का उल्लेख अभिनन्दन ग्रन्थ के माध्यम से कर रही है ताकि आगे आने वाली पीढ़ी उनका अनुशरण करके लाभ उठा सके। परमात्मा की अपार कृपा से सभा का वह उद्देश्य निर्विघ्नता से सम्पन्न हुआ इसके लिए मैं समस्त लेखकों, लेखिकाओं, विशेष लेखों के लेखक आर्य संन्यासियों तथा विद्वानों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादन तथा प्रूफ संशोधन में मेरे मित्र आचार्य विक्रम जी ने जो परिश्रम किया है, श्री पण्डित चन्द्रभानु जी के सुपुत्र श्री अरुण प्रकाश जी तथा उनके घनिष्ट मित्र श्री मंगेश जी कुलकर्णी (बम्बई), श्री रमेश जी सोनी (बम्बई), श्री गुलाबचन्द जैन प्रिन्टर्स, कन्वर्टर्स् कारपोरेशन दिल्ली, श्री संतोष जी भार्गव ने चित्रावली को तैयार करने में जो सहयोग दिया है ; ग्रन्थ के लेखन में श्री पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुमती जी, उनकी बहिन श्रीमती शान्ता जी विद्यालंकृता एम. ए. ने तथा धन संग्रह करने में श्री मेघश्याम जी वेदालंकार ने जो सहायता दी है तदर्थ इनका बहुत धन्यवाद है।

वेदकुमार वेदालङ्कार एम. ए.
मन्त्री आर्य पुरोहित सभा

विषय सूची

सम्पादकीय

श्रद्धेय पं० चन्द्रभानु जी आर्य समाज के ऐतिहासिक पुरोहित हैं, पुरोहित वर्ग का प्रादुर्भाव तो ऋषियों की उच्च विचार धारा का परिणाम है, जो ऋग्वेद के प्रथम मंत्र से ही परमपिता परमात्मा द्वारा अग्नि ऋषि के हृदय में प्रवाहित हुई, संस्कृत साहित्य के रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थों में भी पुरोहित का उच्च स्थान है, किन्तु पतन के बाद पतन होता गया और पुरोहित का स्थान चपरासी की तरह से आर्य समाज में हो गया, पौराणिकों में आज भी पुरोहित का वही सम्मान है जो हजारों वर्ष पूर्व था। इसीलिये पूज्य गुरुवर अमर स्वामी जी महाराज को लिखना पडा कि—पौराणिक पुरोहित अपने यजमान को ठगता है और आर्य समाजी यजमान अपने पुरोहित को ठगता है।

ऐसी भीषण-भयंकर परिस्थितियों में एक ही समाज में ४५।। वर्ष काम करना और अपनी प्रतिष्ठा भी बनाना पं० चन्द्रभानु जी का ही काम है।

इसीलिये मुझे उनके प्रति श्रद्धा हुई और यह ग्रन्थ आपके हाथों में है, आगे आने वाली पीढ़ी जो आर्य समाज के 'पुरोहित' के रूप में काम करेगी। उसे और अधिकारी वर्ग को इस ग्रन्थ से प्रेरणा मिलेगी साथ ही आश्चय होगा—यह आर्य समाज के इतिहास में दुनिया के अन्य सात आश्चर्यों की तरह से पहला आश्चर्य होगा।

भाई वेदकुमार जी वेदालङ्कार मंत्री आर्य पुरोहित सभा ने पुरोहित सभा की ओर से कुछ सामग्री एकत्रित की उनका धन्यवाद है आर्य समाज लाजपत नगर के पुरोहित मेघश्याम जी वेदालंकार नें दिन-रात एक करके सबसे ज्यादा सहयोग दिया—आभारी हूँ।

पूज्य पं०चन्द्रभानु जी एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमति इन्दुमति जी ने, सुपुत्र अरुण जी ने, अन्य सभी पुत्र एवं पुत्र वधुओं ने, सुपुत्रियों ने अपेक्षित सहयोग दिया—धन्यवादी हूं। दानियों का, सभी लेखक महानुभावों का धन्यवाद है।

श्री शोभाराम जी आर्य, विराट् प्रिंटिंग एजेन्सी ने बड़ी तत्परता से प्रिंटिंग का कार्य करके महत्वपूर्ण सहयोग दिया। धन्यवाद !

ग्रन्थ में कोई कमी होगी वह मेरी अल्पज्ञता के कारण है, अच्छाई है तो आपके सहयोग के कारण। नीर-क्षीर-विवेक से अच्छाई स्वीकार करें। धन्यवाद।

आपका
विक्रम

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च कार्यम्॥
ऋ० ६/१६/५

"शत्-शत् अभिनन्दन"

मान्य श्रद्धेय !

मैं आपको पुरोहित वर्ग के मार्गदर्शक और उपदेशक रूप में अपने मध्य पाकर, ७५ वें वर्ष में पदार्पण करने के शुभ अवसर पर, आपकी मेत्रा में हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं। आशा है आप इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

श्रद्धेय आर्य !

आपका सारा जीवन आर्य समाज की सेवा करते हुए व्यतीत हुआ। इस सुदीर्घ समय में आपके प्रवचन एवं संस्कारों द्वारा आर्य समाज की उत्तरोत्तर प्रशंसनीय उन्नति होती रही। आपकी कर्म-काण्ड विधि का आर्य जनता पर बड़ा ही मोहक प्रभाव हुआ।

आपकी स्नेहशीलता, प्रेम व सरल व्यवहार ने समस्त आर्य जनता के हृदय को इस प्रकार प्रभावित किया कि प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में भी आपका मार्ग दर्शन पाकर स्वयं को सौभाग्यशाली समझेगा।

महात्मन् !

लगभग पचास वर्ष का कार्यकाल जो भारतीय इतिहास में राजनैतिक एवं धार्मिक दृष्टि से बड़ा ही संघर्षपूण युग रहा है? आपने धैर्य और प्रेम से सफलता पूर्वक, कपने कर्त्तव्य का पालन किया और साथ ही अपने व्यक्तित्व को भी आदर्श बनाये रखा। वैदिक पद्धति और जीवन दर्शन में आपका सदा अटल बिश्वास रहा। आपने आर्यमिश्नरी के रूप में केवल दिल्ली में ही काम नहीं किया अपितु हैदराबाद में भी निर्भीकता से आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार किया। अपने क्रान्तिपूर्ण कार्य के कारण ही आपको हैदराबाद छोड़ने के लिये विवश होना पड़ा।

हे धर्मात्मन् !

आपने दिल्ली में वैदिक धर्म का प्रचार केवल आर्य समाज के माध्यम से ही नहीं किन्तु अपने लेखों और उपदेशों से आर्य सिद्धान्तों का प्रचार स्थान-स्थान पर किया।

महानुभाव !

आपने वैदिक सिद्धान्तों पर पुस्तकें भी लिखी हैं। जो व्यक्ति एवं समाज के लिये बड़ी ही उपयोगी हैं। आज आपके हजारों शिष्य एवं प्रेमी सरकारी, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में जनता की सेवा करते हुए सम्मानपूर्वक जीवन बिता रहे हैं। आप पिछले तीन वर्षों से समस्त दिल्ली पुरोहित सभा के प्रधान पद पर सुशोभित होकर सेवा कर रहे हैं।

लगभग ४५ वर्ष तक आप दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य समाज हनुमान् रोड नई दिल्ली के पुरोहित पद को सुशोभित करते रहे, जिससे आपने स्वेच्छिक सेवा निवृत्ति ली।

धर्मात्मन् !

आज का दिन परम सौभाग्य का दिन है। कि आप जैसे धर्मात्मा, ऋषि-भक्त समाज सुधारक तथा आर्य सिद्धान्त प्रचारक का अभिनन्दन किया जा रहा है। इस शुभावसर पर, मैं तथा आर्य जनता आपके स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की कामना करती हैं। आपकी समाज सेवा और उपकारों के लिये अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में भी आप इसी प्रकार हमारा मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

आर्य समाज का सेवक
राजाराम शास्त्री
आर्य समाज बाजार
सीताराम दिल्ली-६

चित्रावली

श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण के ७५ वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर समर्पित अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादक

श्री विक्रम जी एम. ए. श्री पण्डित चन्द्रभानु जी तथा उनकी धर्मपत्नी के साथ

स्वर्गीया माता श्रीमती गौमती देवी जी

श्री पण्डित जी आयुं २१ वर्ष (सन् १९३० ई०) स्थान लाहौर
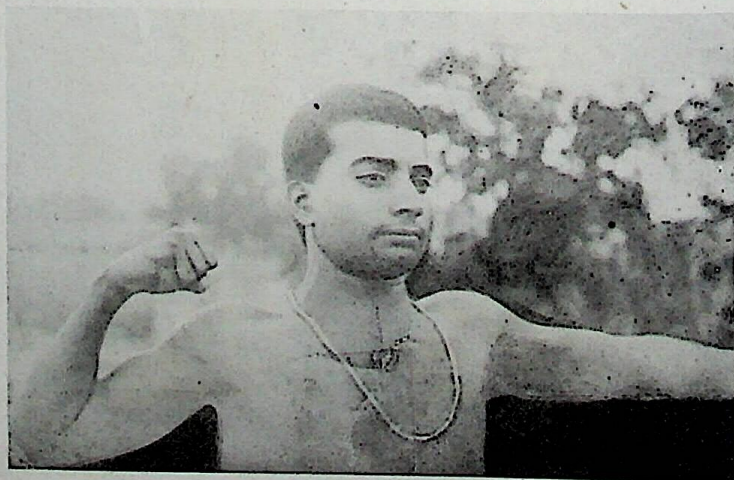
श्री पण्डित जी आर्य समाज, हैदराबाद दक्षिण में

श्री पं० चन्द्रभानु जी आर्य समाज, हनुमान रोड में
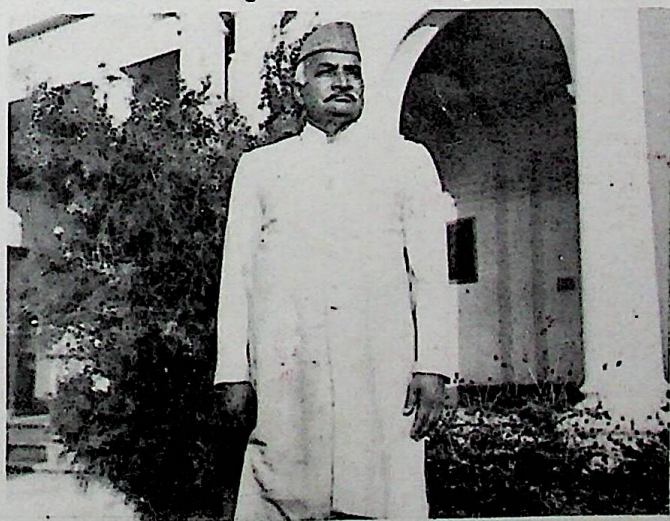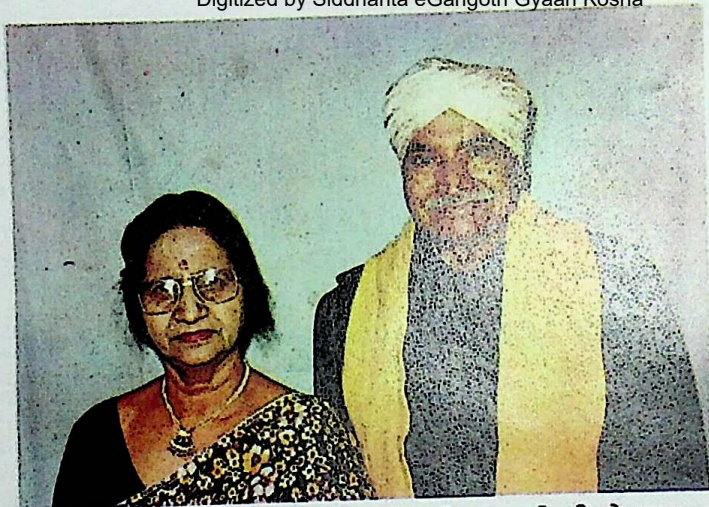
श्री पण्डित जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुमती जी के साथ

श्रीमती तथा श्री पण्डित जी अपने पुत्रों के साथ – (बायें से दायें) :
विनय प्रकाश, अरुण प्रकाश, आनन्द प्रकाश तथा विमल प्रकाश

श्रीमती तथा श्री पण्डित जी अपनी पुत्रवधुओं के साथ

श्री पण्डित जी तथा उनकी धर्मपत्नी अपने पौत्र तथा पौत्रियों सहित
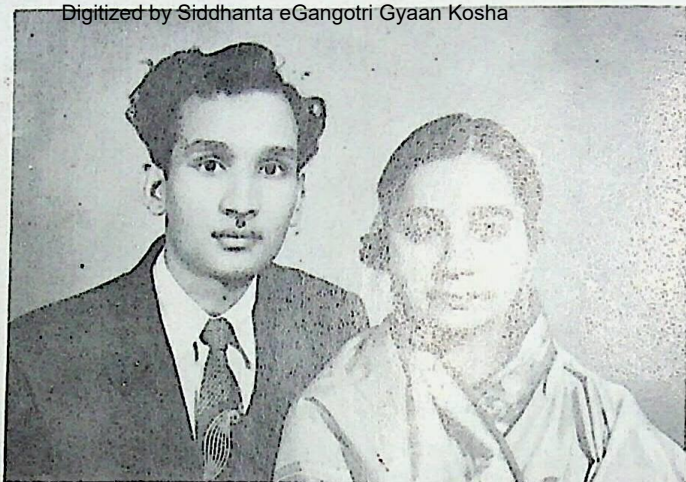
बड़ी पुत्री सुभद्रा अपने पति श्री आर. के. वत्स के साथ

पुत्री सुशीला अपने पति श्री हरि किशन शर्मा के साथ
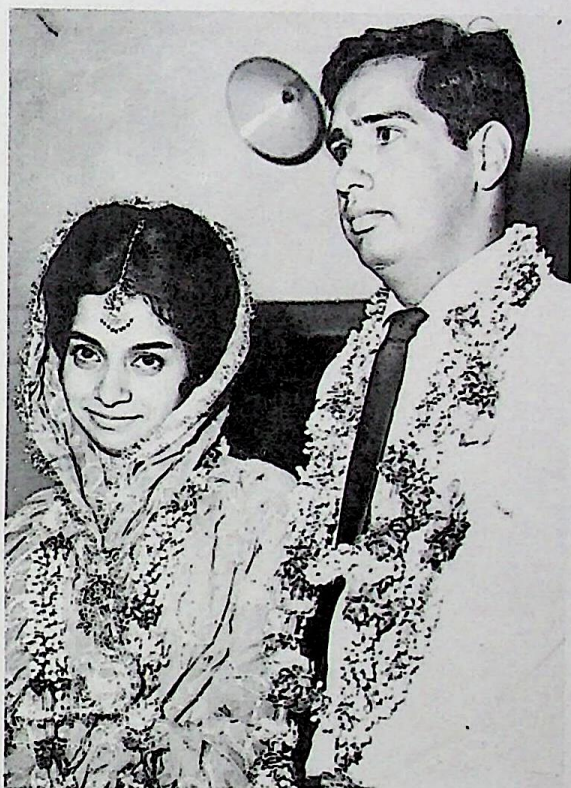
कनिष्ठ पुत्री सुधा अपने पति डा० राजकुमार के साथ

पुत्री सुमेधा अपने माता पिता के साथ

श्री पं० चन्द्रभानु जी के श्वसुर
स्व० श्री पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु

श्री पण्डित जी की धर्मपत्नी
श्रीमती इन्दुमती जी
श्री लाल बहादुर जी शास्त्री
को अपने स्कूल की ओर से
एकत्रित धनराशि भेंट करते हुए।

श्रीमती इन्दुमती जी के
स्कूल से रिटायर होने पर
मैनेजर श्री मल्होत्रा द्वारा भेंट
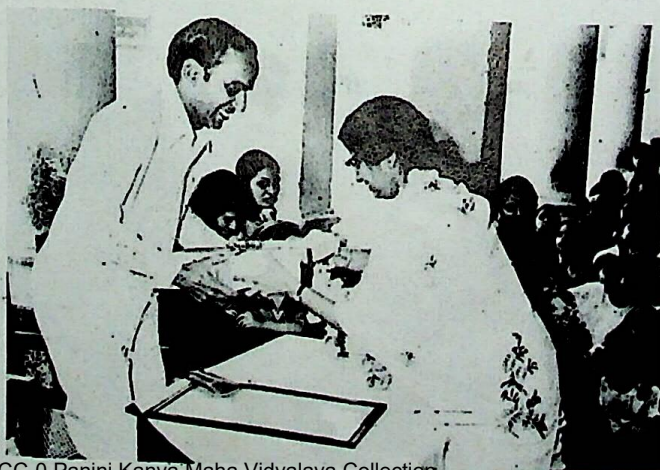
श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण

का

जीवन-वृत्त

(आचार्य श्री विक्रम एम० ए०)

पं० चन्द्रभानु जी का जन्म जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) के मवानाकलां (बड़ा मवाना) कस्बे में फाल्गुन शुक्ला पूर्णमासी (होली के दिन) सम्वत् १९६५ विक्रमी तदनुसार ६ मार्च सन् १९०९ ई० शनिवार के दिन एक आर्य परिवार में हुआ।

जन्म का संयोग भी बड़ा विचित्र था कि इधर नगर में सब लोग इकट्ठे होकर होली में आग लगा कर खुशी मना रहे थे जिससे संसार के सभी घरों का अंधेरा दूर हो जाय। उधर आग लगी, इधर बालक चन्द्रभानु का जन्म हुआ। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण था। शायद परमात्मा ने ही बालक को वैदिक धर्म की ज्योति जगाने के लिये ऐसे समय में जन्म दिया। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात, महापुरुषों के, समाज सुधारकों और समाज सेवियों के जन्म भी एक ऐतिहासिक घटना होते हैं। इन्हीं विचित्रताओं में प्रसिद्ध समाज सेवी पंडित जी का जन्म हुआ।

माता जी का नाम श्रीमती गोमती देवी तथा पिता जी का नाम श्री पंडित मुरारीलाल जी था।

परिवार

अहमदशाह अब्दाली ने सन् १७४८ ई० में जब मुल्तान पर आक्रमण किया उस समय आपके पूर्वज मुल्तान छोड़कर उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले में कस्बा सिकन्दराबाद आकर बस गए थे। इसी परिवार में पं० बाल मुकुन्द जी (पितामह) मेरठ में रहते थे और जेल—क्लर्क थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मेरठ में आगमन सन् १८७४ ई० में हुआ। स्वामी दयानन्द का क्रान्तिकारी आन्दोलन उन दिनों सारे संसार को आंदोलित कर रहा था। इस भव्य और उत्कृष्ट देवता को देखने के लिये दुनिया उमड़ पड़ी थी। पंडित बाल मुकुन्द जी भी स्वामी दयानन्द जी के दर्शन करने के लिये पहुंचे उन पर स्वामी जी के भव्य चेहरे और उपदेश का जादू जैसा असर हुआ। वे आर्य बन गए और अपने दोनों सुपुत्रों मुरारी लाल व बनवारी लाल को पीली धोती पहना कर ब्रह्मचारी वेष में स्वामी दयानन्द जी के चरणों में ले गए। ऋषि ने दोनों बच्चों के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया। पंडित मुरारी लाल जी के दो पुत्रों में से बड़े पुत्र मोहन लाल जो तो मेरठ के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी हैं तथा दूसरे पंडित चन्द्र-भानु जी प्रसिद्ध समाज सेवी। दोनों पुत्र ही सूर्य व चन्द्र की तरह चमके। वैसे तो चन्द्रभानु नाम ही बता रहा है कि यह पुत्र दिन व रात दोनों में ही प्रकाश स्तम्भ का काम करेगा। श्री पंडित जी ने सारे जीवन नाम के अनुरूप ही काम किया। तीन बहने भी अपने अपने परिवारों में सुस्थापित हो गईं।

पं० बालमुकुन्द जी (प० मुरारीलाल जी के पिता और पं० चन्द्रभानु जी के दादा) का शुभ नाम अमर शहीद पं० लेखराम जी द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित्र के हिन्दी अनुवाद पृ० ४४६ पर दिये गये आर्य समाज मेरठ के सदस्यों में छपा है। यह अनुवाद आर्य महोपदेशक श्री कविराज रघुनन्दन सिंह निर्मल ने किया है जिसे आर्य समाज नया बांस दिल्ली-६ ने अपनी स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में सन् १९७२ ई० में प्रकाशित किया है। पं० बालमुकन्द जी ने हिन्दी के अनन्य भक्त श्री पं० गौरी शंकर जी के साथ मिलकर मेरठ में देवनागरी विद्यालय की स्थापना की जो आज एक उच्च कोटि का कालेज है पं० जी के पूर्वज सारस्वत ब्राह्मण गर्ग गोत्रीय तथा यजुर्वेदी थे नाना कुंजबिहारी लाल जी मथुरा के चोबे (चतुर्वेदी) थे। वे सन् १८५७ में क्रान्ति के समय मेरठ आये थे—वे दिन में छिप जाते थे और रात्रि को सफर करते थे। मेरठ में नानखताई बनाने की सबसे पहली दुकान उन्होंने खोली थी।

जब गौमती देवी (माता पं० चन्द्रभानु) का रिश्ता पं० मुरारीलाल जी (पिता पं० चन्द्रभानु) से होने लगा तो लोगों ने

(पं० जी के नाना) श्री पं० कुंज विहारी लाल चोबे से कहा कि कहां रिश्ता करने लगे हो ये तो आर्यसमाजी हैं जो हलवे में पहले थूकते हैं और फिर प्रसाद बांटते हैं। कुंज बिहारी जी ने जब इस घटना की छानबीन की तो पता लगा, मूर्ति पूजक मिथ्या ही आरोप आर्य समाजियों पर लगाते हैं बल्कि आर्यसमाजी ही ईश्वर भक्त और श्रेष्ठ नेक दिल इन्सान होते हैं।

सन् १९१३ में पं० मुरारीलाल जी का तबादला मवानां कलां से गांव भैंसा में हो गया, वह सिंचाई विभाग में बड़े अमीन थे वहां उनके छोटे भाई को बडी चेचक निकल आई। जो इतनी भयंकर थी कि नाक तक में दाने होने से श्वास लेना भी कठिन था अन्त में इसी से उमकी मृत्यु हो गई।

शिक्षा—१९१४ ई० में पं० मुरारीलाल जी का तबादला भैंसा गांव से किला परीक्षित गढ़ जिला मेरठ हो गया। उस समय उन्हें प्राइमरी विद्यालय में भर्ती कराया गया—यहां बालक चन्द्रभानु हिन्दी के साथ-साथउर्दू भी पढ़ने लगा और सारी कक्षा में सबसे तेज विद्यार्थी हो गया—उन दिनों हैजे का बड़ा प्रकोप था। अध्यापक कपड़े में कपूर की डलो बंधवा कर भुजा से बांध देते थे जिससे बच्चे उसे बार-बार सूंघते रहते थे और बीमारी से बचाव हो जाता था—मलेरिया के बचाव के लिये विद्यालय में बच्चों को कुनेन की गोली दी जाती थी विद्यालय में हिमालय का पहाड़ी दृश्य जो पत्थरों से बनाया गया था, नदियों और अनेक मैदानों में प्रवाह भूगोल सिखाने में बड़ा सहायक था—बालक चन्द्रभानु गणित में सबसे होश्यार था और शायद इसीलिये पं० चन्द्रभानु का जीवन का गणित भी सबसे सही निकला—जिस कारण वह अपने जीवन में सभी सुखों से पूर्ण रूपेण आनन्दित हैं। बालक चन्द्रभानु से ही अध्यापक अन्य सुस्त व कमजोर बच्चों को थप्पड़ भी लगवाते थे जिससे वे भी अपना पाठ याद करें फिर भी सबका प्रेम सम्बन्ध चन्द्रभानु से बराबर था।

सरकारो विद्यालय से चतुर्थ श्रेणी उत्तीर्ण कर परीक्षित गढ़ में ही विद्या प्रचारक स्कूल में पढ़ने के लिये प्रविष्ट करा दिया। यह प्राईवेट स्कूल आर्य समाज मन्दिर में लगता था और मुसलमान बच्चे भी उसमें पढ़ते थे। सभी बच्चे हवनकुंड में पैर लटका कर बैठे रहते थे—चूंकि कोई आर्य समाजी ऐसा न था जो बच्चों को

हवन की महत्ता बताता अथवा हवन करवाता अध्यापक भी पौराणिक थे—अब्दुल गनी नाम का एक मुसलमान लड़का चन्द्रभानु का पक्का दोस्त बन गया और जब पं० चन्द्रभानु १८ वर्ष की आयु में दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के ग्रीष्मावकाश में अपने दोस्त से मिलने परीक्षितगढ़ आये तो अब्दुल गनी ने ही देशभक्ति पर अपने प्रिय मित्र चन्द्रभानु का ओजस्वी व्याख्यान कराया जिसे सी० आई० डा० नोट कर रही थी—किन्तु शिवाजी की नीति पर चलने वाले चन्द्रभानु ने सी० आई० डी० वालों को सारे पते ही गलत बता दिये जिससे वे धक्के खाते फिरें। देश के लिये झूठ बोला किन्तु जीवन में कभो असत्य को स्वीकार नहीं किया।

आर्य समाज मन्दिर को आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० तुलसोराम जी स्वामी ने बनवाया था।

इसी विद्यालय में एक ताहिर हुसैन नाम का मुसलमान लडका पढ़ता था उसके बड़े भाई परीक्षित गढ़ में ही सब ओवरसियर थे। एक तो मुस्लिम परिवार दूसरे अंग्रेजियत का असर, ताहिर हुसैन बिगड़ चला था। वह सूट बूट में रहता था और बड़ी लम्बो-२ जुल्फे रखता था, शरीर से भी सुन्दर और काफी लम्बा चौड़ा था। इतना सब होते हुए भी था चरित्रहीन और पढ़ाई में बिलकुल निकम्मा था, हां क्रिकेट अच्छो खेलता था—यहां बालक चन्द्रभानु ने देखा कि चरित्रहीन को क्या दुर्दशा होती है अतः उस निकम्मे ताहिर हुसैन से भो आपने क्रिकेट खेलने का अच्छाई का गुण लिया और क्रिकेट खेलने में भी उसका मुकाबला करते थे—हां अपने जीवन और चरित्र को संभाल कर आगे बढ़ना प्रारम्भ कर दिया।

विद्या प्रचारक स्कूल में शिक्षा समाप्त कर चन्द्रभानु मास्टर मथुरादास जी के प्राईवेट विद्यालय की सप्तम् श्रेणी में भर्ती हो गये, यहां भैरवदत्त नाम के एक सहपाठी से चन्द्रभानु की धनिष्ठ हो गई, उसके पिता पं० रघुनाथ जी पहाड़ी ब्राह्मण थे, भैरवदत्त चन्द्रभानु को अखरोट लाकर खिलाया करता था चूंकि उनके परिवार में प्रायः अखरोट पहाड़ से आया करते वे अखरोट खिलाने के साथ वह यह भी कहता था कि इसमें बकरे के मांस जितनी ताकत है, यहीं से चन्द्रभानु के मन पर यह संस्कार भी पड़ा कि लोग कितने निकम्मे हैं जो इन निरपराधी प्राणियों का मांस खा जाते

हैं। साथ में यह प्रेरणा भी मिली कि मांस से ज्यादा ताकत मेवों फलों और अन्न में ही होती है।

श्री मथुरादास अंग्रेजी के अच्छे विद्वान् मास्टर थे जो चन्द्रभानु को पढ़ाते थे। बहरा होने के कारण सब बच्चे आपस में उन्हें बहरा मास्टर ही कहते थे। मास्टर जी अंग्रेजी के तो अच्छे जानकार थे किन्तु नारियल का एक छोटा सा हुक्का बना रक्खा था—जिसे वह पीते रहते थे। हुक्के की दुर्गन्ध से चन्द्रभानु ने शिक्षा ली कि कितना भी योग्य व्यक्ति हो अथवा वड़ा व्यक्ति, ये दुर्गुण तो दुर्गुण ही हैं और मन में निश्चय किया कि मैं बड़ा भी बनूंगा और दुर्गुणों को अपने पास न फटकने दूंगा।

इसी बीच चन्द्रभानु के बड़े भाई मोहन लाल एक तुलसीकृत रामायण खरीद लाये—जिसे चन्द्रभानु अपने मकान की छत पर एक कोने में, एकांत में, बैठकर पढ़ता था। साथ ही परिवार में श्री ला० लाजपतराय जी द्वारा लिखा गया महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र था उसे भी दोनों भाई वड़ी निष्ठा से पढ़ते थे किसे पता था कि चन्द्रभानु जा आज उस ऋषि का जीवन चरित्र पढ़ रहा है, कल उसी के सिद्धान्तों का प्रवक्ता बनेगा। पं० मुरारीलाल जी जसे ईमानदार और कर्तव्य निष्ठ पिता को पाकर चन्द्रभानु धन्य हो गये थे—वह अपने काम से कई-कई दिनों तक नहर विभाग का कोठी पर ही रहते थे और चन्द्रभानु हो प्रातःकाल २ मोल दूर आलू के पराठे पिताजी को देने पैदल ही जाते थे और मार्ग में किसी भो पैदल चलते व्यक्ति से अपनो तेज गति के कारण आगे निकल जाते थे और यह संकल्प और दृढ़ होता गया कि थोड़ी दूर पर यात्रा में आगे क्या निकलना जीवन म भी आगे निकलूंगा इस दृढ़ संकल्प ने ही उन्हें अपनी धुन का धुनी बना दिया था।

परिक्षत गढ़ को अन्य घटनायें

परिक्षित गढ़ में प्रति वर्ष रामलीला बड़े धूम धाम से मनायी जाती थी परन्तु नगर में चर्चा होती थी कि रामलोला के कई धनी अधिकारो उन सुन्दर ब्राह्मण लड़कों से दुराचार भो करते थे जिन्हें राम-लक्ष्मण बनाया जाता था, ओह हिन्दु जाति की दोन और होन अवस्था -- कहां पूर्वजों का वीरता भरा उज्वल चरित्र और

कहां ये भ्रष्ट नचकईये—चन्द्रभानु ने निश्चय किया कि अपने जीवन में अपने पूर्वजों के चरित्र की स्थापना करूंगा ओर हिन्दू जाति के पतन का निवारण करूंगा।

परीक्षित गढ़ में ही 'देवी' का एक शानदार मेला लगता था और मन्दिर के अहाते में ही मुसलमान लड़के दुराचार करने का अवसर खोजते रहते थे। इस मुर्दा हिन्दू जाति की ओर से कोई रोक टोक न थी।

परीक्षित गढ़ में ही शिया मुसलमान सुन्दर ताजिये बनाकर जलूस निकाला करते थे, मुहर्रम के दिन एक खलील नाम का मुसलमान बड़े ही आर्त स्वर में मर्सिया पढ़ता था। उसके पास एक घोड़ा था, जिसके लिये वह घास मंडो से घास खरीदने जाता था वह दुराचारी मुसलमान घास भी उस युवती से खरीदता था जो सुन्दर हो। प्रायः निम्न जाति की स्त्री (हरिजन) इस काम को करती थी, खलील की नजर एक सुन्दर हरिजन युवती पर जम गई और उसे वह अपने साथ घोड़े के अस्तबल में ही घास डालने ले जाता था। अन्त में उसे उसने मुसलमान बना कर निकाह कर लिया और जहां पं० मुरारीलाल जी रहते थे उसी घर के पीछे के घर में ले आया—बालक चन्द्रभानु उस हिन्दू युवती को मुसलमान बने देखता था तो तड़फ उठता था, अफसोस हिन्दू जाति अपनी देवियों की रक्षा भी नहीं कर सकती। परीक्षित गढ़ एक ऐतिहासिक स्थान है, यहां पर गान्धारी तालाब भी है जिसे गन्धार कहते हैं इसी तालाब में एक सम्पन्न घराने की सुन्दर युवा विधवा ने गर्भ रह जाने के कारण पानी में डूब कर आत्महत्या कर ली थी। सारे नगर में उसके शव को देख कर बड़ी बदनामी हुई—काश उसके परिवार वाले उसका पुनर्विवाह कर देते—हिन्दू जाति की ये कुरीति चन्द्रभानु को अन्दर स कुरेदती रहती थी, कि इनका समाधान क्या है, तो उत्तर मिलता केवल दयानन्द का आर्यसमाज ही यह काम कर सकता है।

परीक्षित गढ़ में ही महादेव का एक सुन्दर मन्दिर था और सब लोग गन्धार में अथवा वहां बने हुए कुवें के ठंडे जल से स्नान करते थे। मनोकामना पूर्ति के लिये शिवजी की अर्चना करते थे—बालक चन्द्रभानु अपने साथी गंगाराम के साथ महादेव मन्दिर पहुँचा—

स्नान आदि करने के बाद दोनों बालक शिव लिंग के सामने डट गये और बड़ी श्रद्धा व विनम्रता से बैठे रहे साथ ही प्रार्थना करते रहे कि हे शिवजी आप सबकी मनोकामना पूर्ण करते हैं, हमें कुछ रुपये पैसे दो। घंटों की पूजा-अर्चना व्यर्थ गई फूटी कौड़ी न मिली— आखिर पत्थर से मिलना भी क्या था, बालक चन्द्रभानु का मूर्ति पूजा से विश्वास हट गया और निश्चय किया कि सच्चा शिव तो कोई और ही है।

परीक्षित गढ़ के बाजार में एक कबीर पंथी साधु जो बड़ा तगड़ा पहलवान था घूमता रहता था और खम ठोककर कहता था कि है कोई जो मुझसे कुश्ती लड़ेगा। किसी की हिम्मत न होती थी बालक चन्द्रभानु अपने निर्भीक और निडर स्वभाव के कारण खम ठोकर उसके सामने जा खड़ा होता कि काई न लड़ेगा तो मैं लड़ूंगा सब लोग आश्चर्य से देखते रह जाते थे—कुश्ती तो क्या होनी थी पर बच्चे का निर्भीकता और स्वाभिमान तो प्रशंसनीय ही था।

परीक्षित गढ से पुनः मवाना

पिता पं० मुरारीलाल जी का तबादला परीक्षितगढ से अनिवास की कोठी पर हो गया था, अतः परिवार के साथ चन्द्रभानु भी पुनः मवाना आ गये और उसी मकान में ठहरे जहां उनका जन्म हुआ था। मकान के साथ ही एक मंदिर था जिसके शान्त वातावरण में बैठकर चन्द्रभानु भजन करते रहते और सबके साथ मिलकर आरती भी गाते थे। मवाना में एंग्लो संस्कृत स्कूल में अष्टम श्रेणी में प्रविष्ट हो गये। और घर पर ही श्री देवकी नन्दन खत्री के लिखित प्रसिद्ध तिलस्मी उपन्यास चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्ता सन्तति, भूतनाथ तथा सत्यवादी हरिश्चन्द्र नाटक आदि पुस्तकें पढ़ डाली जिस भी परिवार में हिन्दी पुस्तकें मिलती पढ़ डालते इससे अध्ययन करने की रुचि प्रबल हो गई थी।

मृत्यु जिज्ञासा—किसी की मृत्यु देखकर अथवा सुनकर मन में प्रश्न उठते हैं, इसी जिज्ञासा को लेकर चन्द्रभानु एक दिन एक वैश्य परिवार में गए जहां किसी का देहान्त हो गया था। घर के लोग ढूंढते रहे कि चन्द्रभानु कहां है और मृत्यु से श्मशान घाट तक की

सब क्रिया देखकर ही वापिस लौटे। लोग कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि एक बालक अपने जीवन में यह सब कुछ करेगा।

अकेले यात्रा :—मवाना से परीक्षत गढ़ ८ मील की दूरी पर है, १३ वर्षीय चन्द्रभानु अपने दोस्तों से मिलने अकेले हो पैदल नहर की पटड़ी-पटड़ी चले, जहां भयंकर सन्नाटा था, किन्तु जिज्ञासा तो सब कुछ करा देती है— दयानन्द भी वर्षों भयंकर सन्नाटे में घूमे। यह शान्त वातावरण चन्द्रभानु को अति प्रिय था। अपने मित्रों से मिलकर हो वापिस लौटे-घर के लोग सोचते थे बड़ा विचित्र है चन्द्रभानु।

कांग्रेसी हलचल :—मवाना में कांग्रेस की हलचल प्रारम्भ हो गई थी। कांग्रेस की एक बहुत बड़ी सभा स्कूल के पास के बाग में हुई जसमें चौ० विजयपाल सिंह का भाषण हुआ। चौ० साहब मेरठ जिले के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता थे लम्बे चौड़े व्यक्तित्व के मालिक-निर्भीक और ओजस्वी वक्ता चन्द्रभानु ने भाषण सुना और मन में निश्चय किया कि अंग्रेजों के खिलाफ कुछ करना चाहिये। छात्रावस्था में खद्दर पहनना ही राष्ट्र सेवा होगी।

मवाना से नेक :—पिता पं० मुरारी लालजी शर्मा का अन्यत्र तबादला हो जाने के कारण सन् १९२२ ई० में माता गोमती देवी अपने बच्चों को लेकर अपने देवर के पास ग्राम नेक (टिमकिया) निकट जानी जि० मेरठ आ गई। यहां चन्द्रभानु की दादी शताबों देवो जी, जो जवानी में ही विधवा हो गई थी और अपने पितृ गृह में चलो गई थी से मिले, छोटे लाल जी चन्द्रभानु के चाचा के यहां शिक्षा की समुचित व्यवस्था न थी। चूंकि वहाँ प्राईमरी स्कूल ही था। अतः चन्द्रभानु को मेरठ अपने बड़े भाई मोहनलाल जी के पास पढ़ने भेज दिया।

मोहनलाल जी कांग्रेस के अनथक कार्यकर्त्ता थे और कांग्रेस के दफ्तर सिपट बाजार (सुभाष बाजार) में रहते थे भाई के साथ चन्द्रभानु पर भी कांग्रेस और देश भक्ति का रंग चढ़ता गया। साथ ही कांग्रेस के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री विष्णुशरण जी दुबलिश जैसे देश भक्तों के सम्पर्क में आये, इन दिनों मेरठ में गांधी नेशनल हाई स्कूल खुला और चन्द्रभानु वहां अष्टम श्रेणी में प्रविष्ट हो गये—विद्यालय

में विद्यार्थियों को खड्डी पर खद्दर बुनना भी सिखाया जाता था और पहनने की प्रेरणा भी दी जाती थी।

मेरठ में कांग्रेस की बड़ी-बड़ी सभायें होती थी एक बार गढ़ मुक्तेश्वर के प्रसिद्ध मेले में पं० जवाहरलाल जी के पिता श्री मोती लाल जी नेहरू का भाषण हुआ। वहां चन्द्रभानु ने उस भाषण को सुना और वे मोतीलाल जी की सुंदरता-भव्यता देखकर दंग रह गये और देश भक्ति के रंग में रंगते चले गये।

गाँधी नेशनल हाई स्कूल के सभी अध्यापक देश भक्ति के रंग में रंगे हुये थे अत: अंग्रेजी शासन की उन पर कडी नज़र थी। इस कारण स्कूल के प्रधान अध्यापक श्री गोपीनाथ जी सिन्हा तथा अन्य अध्यापक अंग्रेजों द्वारा पकड लिये गये। विद्यालय में पढ़ाई का काम ठप्प हो गया—विद्या का जिज्ञासु किन्तु लाचार चन्द्रभानु अपना बिस्तर बांध कर ग्राम नेक लौट रहा था तो रास्ते में ही पिताजी मिल गये और बच्चे की पढ़ाई के विघ्न को देखकर दुखी हुए और कहा कि शीघ्र ही उचित व्यवस्था तेरी पढ़ाई की करूगा।

मेरठ से पानीपत :—पं० मुरारीलाल जी शर्मा ने यह उचित समझा कि उनके बेटे की पढ़ाई निर्विघ्न चले अत: अपनी बहिन सोहनी देवी के पास पानीपत में भेज दिया। सोहनी देवी जी का विशाल भवन और उसका द्वार देखकर राजमहल की याद ताजा हो आती थी। सन् १९२३ ही में जैन हाई स्कूल की अष्टम् श्रेणी में चन्द्रभानु को प्रवेश मिला और सन् १९२५ ई० में करनाल सैन्टर से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की साथ ही करनाल जिले में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

उर्दू पढ़ते हुए भी स्कूल से निकलने वाली हिन्दी पत्रिका का उप सम्पादक भी चन्द्रभानु को प्रि० ने विशेष योग्यता के कारण नियुक्त किया। पुस्तकाध्यक्ष श्री मास्टर केशवचन्द्र सेन जी किशोर चन्द्रभानु को बहुत प्यार करते थे और कहते थे कि इतनी पुस्तकें अन्य कोई विद्यार्थी नहीं लेता है और ऐसा विद्या व्यसनी मैंने अन्य विद्यार्थी आज तक नहीं देखा है। स्कूल पुस्तकालय में सभी जैन ग्रन्थों को चन्द्रभानु ने पढ़ डाला साथ ही उर्दू-फारसी तथा अंग्रेजी में भी विशेष योग्यता प्राप्त करली थी। स्वाध्याय प्रेमी चन्द्रभानु को सुन्दर पीले वस्त्रों में बंधें, तिपाई पर रक्खें जैन शास्त्रों को देखकर

उन्हें पढ़ने की उत्कंठा जाग उठी और एक-एक करके उनके ग्रन्थों को पढ़ कर ही दम लिया।

जैन धर्म से प्रभावित तपस्वी चन्द्रभानु रात्रि को भोजन तो क्या पानी भी नहीं पीता था।

पानीपत के प्रतिष्ठित जैन प्रसन्न होते थे कि ब्राह्मण परिवार का प्रतिभाशाली युवक अब जैन होने वाला है। उन्हें क्या पता था कि यह युवक नीर क्षीर विवेक के लिये ही इन ग्रन्थों का मन्थन कर रहा है।

विस्फोट :—एक दिन चन्द्रभानु को पुस्तकें पढ़ते २ इटावा के 'चन्द्र सेन जेन वैद्य' द्वारा लिखी पुस्तक 'आर्य मत लीला' हाथ लगी। इस पुस्तक में आर्य समाज के विरुद्ध अनर्गल बातें लिखी थी और स्वामी दयानन्द व सत्यार्थप्रकाश का बार-बार उल्लेख किया गया था—किशोर मन अंगडाई लेने लगा कि सच्चाई जानने के लिये सत्यार्थ प्रकाश अवश्य ही पढ़ूंगा और युवक चन्द्रभानु तुरंत ही आर्य समाज के मंत्री श्री ला० सोहनलाल जी की दुकान पर सत्यार्थ प्रकाश लेने पहुंच गये। श्री सोहन लाल जी पुराने आर्य समाजी थे बड़े प्रसन्न हुए और पुस्तकालय की चाबी चन्द्रभानु को दे दी कि जाओ जो भी पुस्तक लेनी है लो और पढ़ो तथा जब भी आवश्यकता हो चाबी मुझ से ले गये और पुस्तक निकाल ली, आर्य साहित्य पढ़कर जैन मत का रंग फीका पड़ गया। सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर अब चन्द्रभानु मुस्लिम लड़कों से कुरान पर सवाल करता—तथा ईसाईयों की बाईबिल पर विचार करता—सारे विद्यार्थी हैरान कि यह इतना ज्ञानी कहां से हो गया—तो चन्द्रभानु कहता कि मेरे पास एक करामाती पुस्तक है जिससे मैंने सब कुछ जान लिया है।

यज्ञोपवीत :—सन् १९२४ ई० में पानीपत आर्यसमाज के उत्सव पर ब्रह्मचारी युधिष्ठिर (स्वामी व्रतानन्द चितौड़) की अध्यक्षता में बालक राम आर्य हाई स्कूल के अध्यापक पं० विष्णु मित्र के पारोहित्य में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। पं० विष्णु मित्र के प्रति चन्द्रभानु की विशेष श्रद्धा का कारण यह था कि वह जेन मत छोड़कर आर्य बने थे और उनकी सब शंकाओं का समाधान करते थे।

मथुरा जन्म शताब्दी में :—सन् १९२५ ई० में १५ फरवरी से १९ फरवरी तक महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी मथुरा में बड़े

धूम-धाम से मनाई गई थी। आर्य बन्धुओं के साथ युवक चन्द्रभानु १६ वर्ष की आयु में पुण्य भागी बना, और इस शताब्दी में उसने आर्य समाज के विद्वान् संन्यासी और दिग्गजों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त किया—मैट्रिक की परीक्षा की चिन्ता नहीं की, एक सप्ताह ज्ञान गंगा में स्नान किया, दयानन्द ग्रन्थ संग्रह आदि पुस्तकें खरीदी जो आज भी पं० जी के पास सुरक्षित हैं। शताब्दी में स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा नारायण स्वामी जी, सर्वदानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी पं० रामचन्द्र देहलवी पं० बुद्धदेव विद्यालंकार आदि विद्वानों के दर्शन किये।

स्काऊट चन्द्रभानु :—सन् १६२४ ई० में दशहरे की छुट्टियों में पंजाब प्रांत के अंग्रेज स्काऊट कमिश्नर Sir H.W. Hegg की अध्यक्षता में 'मरी' पहाड़ पर प्रान्त के सब स्काऊटों का कैम्प लगा, यात्रा रेल द्वारा तथा बस द्वारा तय की गई—चन्द्रभानु स्कूल के स्काऊटों के पेन्ट्रोल लोडर थे। मैदानी और पहाड़ी तथा इतनी लम्बी यात्रा करके देशाटन की रूचि जाग उठी साथ ही ईश्वर की सुन्दर सृष्टि देखकर आध्यात्मिक मन विभोर हो उठा।

धर्म सकट :—कैम्प में डबल रोटी बिस्कुट अंडे का बोल-बाला था और चन्द्रभानु के ब्राह्मण शाकाहारी परिवार में टमाटर, चुकन्दर और मसूर की दाल की भी मनाही थी। चन्द्रभानु ने उपवास रक्खा किन्तु उस भोजनालय की वस्तुओं को हाथ से भी न छूआ जब सर हैग को यह पता लगा तो वह द्रवित हो गये और उन्होंने बाहर वैष्णव भोजनालय में भोजन करने के लिये (विशेष अनुमति) चन्द्रभानु को प्रदान की, स्काऊट कैम्प में भी सन्ध्या में व्यवधान न पड़ने देते थे और सन्ध्या से पहले कुछ खाते भी न थे सन्ध्या के साथ प्राणायाम भी करते थे भूख खूब खुलकर लगती थी।

लौटती बार अन्य स्काऊट लाहौर की सैर को निकल गये और चन्द्रभानु का सामान ताले में बंद हो गया जब ब्रह्मचारी वेश में आधी धोती नीचे बांधी हुई थी और आधी ऊपर ओढ़ी हुई थी तो जैसे ही चन्द्रभानु जी सन्ध्या से उठे तो तत्काल ही एक सज्जन आये और किशोर की ईश्वर निष्ठा देख अपने साथ ले गये और भोजनालय में गर्म गर्म भोजन कराया। प्रभु की कृपा और उन सज्जन का प्रेम देखकर मन ही मन चन्द्रभानु गद् गद् हो गये।

दुराचार से घृणा—पानीपत में ही पं० जी की बुआ के देवर पं० रामस्वरूप अराजनवीस का पुत्र त्रिभुवन भी रहता था—वह चन्द्रभानु की आयु का ही था—चन्द्रभानु सादगी से रहते तो वह ठाट बाट से, इन्हें पढ़ने का शौक था तो उसे गप्प लड़ाने का, उसकी माता का देहान्त हो गया और उसके पिता ने सरधना जि० मेरठ की एक अन्य युवती से विवाह कर लिया—पति की अधिक आयु तथा पूर्ण समय न देने के कारण उस युवती के अपने हीं सौतेले बेटे त्रिभुवन से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित हो गये और अपने दुश्चरित्र के कारण सर्वत्र उनकी निन्दा हुई तथा सब धन भी बर्बाद हो गया बालक चन्द्रभानु ने अपने दृढ़ संकल्प के कारण ब्रह्मचर्य का व्रत लिया।

आर्य कुमार सभा :—सन् १९२४ में पानीपत में आर्य कुमार सभा की स्थापना हुई और चन्द्रभानु उसके सक्रिय सदस्य बने—सन्ध्या करना कराना—भजन बोलना—भाषण प्रतियोगिता में भाग लना —आदि मुख्य काम चन्द्रभानु ही करते थे तथा अंग्रेजी में भाषण देने की विशेष योग्यता प्राप्त करली थी।

संन्यासी द्वय :—पूज्य स्वामी स्वतंत्रता नन्द जी तथा स्वामी सत्यानन्द जी महाराज मथुरा शताब्दी के निश्चय को पूर्ण करने के लिये पानीपत पधारे—निश्चय यह था कि पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत एक उपदेशक विद्यालय लाहौर में खोला जाय।

युवक चन्द्रभानु ने इन संन्यासियों के संकल्प को अपने लिये वरदान समझ कर दृढ़ निश्चय किया कि मैं ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ हूं अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आदि का अध्ययन तो हो गया अब संस्कृत का अध्ययन कर वेद शास्त्रों का पूर्ण ज्ञाता बनूंगा। आर्य समाज पानीपत के सदस्यों का स्नेह और प्रेरणा तथा चन्द्रभानु का संकल्प इस ओर बढ़ने का रास्ता साफ करने लगे।

मार्च १९२५ में मैट्रिक की परीक्षा देने के बाद जब चन्द्रभानु पितृ ग्राम रूकनपुर (मोरना) जि० मेरठ पहुंचे तो पिताजी स्वप्न देख रहे थे कि बड़ा बेटा मोहनलाल तो कांग्रेस में कार्य कर रहा है। सी. आई. डी. उसके पीछे लगी है अब चन्द्रभानु ही धन कमायेगा अतः अब मैं तो जिलेदार बन गया हूं और बेटे को इंजिनियर

बनाऊंगा। चन्द्रभानु अब तुमने कालिज में पढ़ना है। पिता की बात से चन्द्रभानु की इच्छाओं पर बज्रपात सा हो गया किन्तु अपने धैर्य और सहनशीलता के कारण नम्रता—पूर्वक चन्द्रभानु ने कहा कि पिता जी मैं तो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ हूँ और संस्कृत का अध्ययन कर वेद-शास्त्र पढ़ ब्राह्मण का ही काम करूंगा और इसके लिये मैंने लाहौर दयानन्द उपदेशक विद्यालय में जाने का फैसला कर लिया है। पिताजी को आन्तरिक कष्ट तो हुआ किन्तु अन्त में बेटे की इच्छा के सामने वह नम्र हो गये और कहा इस घर का क्या बनेगा आगे तेरी इच्छा--घर से भागना मत, चाहे संस्कृत ही पढ़ना।

लाहौर प्रस्थान :—मई १९२५ ई० में चन्द्रभानु ब्रह्मचार वेश में दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में प्रविष्ट हो गये। यह विद्यालय रावी रोड पर स्थित 'गुरुदत्त भवन' जो एक विशाल भवन था के ऊपर वाले भाग में स्थित था—वहां पर ही आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य कार्यालय तथा वैदिक पुस्तकालय था। विद्यालय के आचार्य पूज्यपाद स्वामी स्वतंत्रता नन्द जी महाराज थे। वहीं गुरुदत्त भवन में आर्य विद्यार्थी आश्रम के अधिष्ठाता पं० ज्ञानचन्द जी बी. ए. आर्य सेवक रहते थे। विद्यालय के मुख्य अध्यापक श्री स्वामी वेदानन्द जी थे अन्य अध्यापक पं० प्रिय रत्न जी आर्य (स्वा० ब्रह्ममुनि) जी तथा ब्र० सत्यदेव थे।

जब विद्यालय अपना भवन बनने पर नीचे चला गया तो पं० धर्मवीर जी शास्त्री किरठल जि० मेरठ निवासी तथा पं० नारायणदत्त जो सिद्धान्तालंकार जो (जो बाद में आयुर्वेद के विशेष ज्ञाता बनकर बिडला मिल के चीफ मेडिकल आफिसर बने) श्री पं. सुखदेवजी वेदान्त वाचस्पति जो कलकत्ता आय समाज के आचार्य रहे तथा बाद में गुरुकुल कांगड़ी में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक बने, अध्यापक थे।

विद्यालय में अष्टाध्यायी-महाभाष्य (नवाह्निक) न्याय-सांख्य योग-वंशेशिक तथा वेदान्त का कुछ भाग-सत्यार्थप्रकाश संस्कार विधि, भास्कर प्रकाश-पुराण मतपर्यालोचन, मुद्रा राक्षस, प्रबोध चन्द्रोदय शिवराज विजय, मुनि चरितामृत, देवी भागवत पुराण आदि का अध्ययन ब्रह्मचारी चन्द्रभानु ने बड़ी निष्ठा से पूर्ण किया। कुछ मास अरबी का विशेष अध्ययन कर कुरान शरीफ पढ़ने की योग्यता प्राप्त कर ली थी किन्तु इस्लाम मजहब का अध्ययन छोड़ ब्रह्मचारी

चन्द्रभानु ने पौराणिक मत का अध्ययन करना विशेष उपयोगी समझा कि जब तक अपना हिन्दू समाज ही नहीं उठता तब तक क्या बनेगा और साथ ही ब्राह्मण तो ढ़ोंग में फंसे पड़े हैं।

ब्रह्मचारी चन्द्रभानु के सहपाठी उन दिनो पं. शिवदत्त जी मौलवी फाज़िल-दक्षिण के पं० गोप देव जी जो दर्शनों के प्रकांड पंडित हुए। शास्त्रार्थ महारथी पं० शान्तिप्रकाश जी, पं० सूर्यदेव जी गुजरात निवासी पं० रमणदेव, पं० हरपाल सिंह शास्त्री, पं० चन्द्रप्रकाश जी व्याकरणाचार्य, पं० चन्द्रदेव जी आदि आर्य समाज की प्रसिद्ध हस्तियाँ थी।

ब्राह्मण चन्द्रभानु का स्वर अच्छा था और अन्त्येष्टि संस्कार पर आचार्य जी प्रायः उन को ही भेजते थे लाहौर में शव यात्रा के समय भी लोग भजन गाते चलते थे तथा अन्त्येष्ठि के बाद भी प्रार्थना और भजन होता था—

महत्वपूर्ण अन्त्येष्ठि—पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द) जी की धर्मपत्नी की मृत्यु के बाद प्रारम्भ से अन्त तक ब्रह्मचारी चन्द्रभानु शव यात्रा में साथ रहे और संस्कार विधि के मंत्रों से अन्त्येष्ठि संस्कार कराया शोकातुर पं० बुद्धदेव जी भी ब्रह्मचारी चन्द्रभानु की संस्कार विधि में साथ-साथ मंत्र पढ़ने लगे। १७ नवम्बर १९२८ ई० को पंजाब केसरी ला० लाजपतराय जी की शव यात्रा उनकी कोठी से प्रारम्भ हुई। ब्रह्मचारी चन्द्रभानु प्रातःकाल से ही उनकी कोठी पर पहुंच गये। शव यात्रा का जुलुस बडा विशाल था जो रावी तट पर सायंकाल को पहुंचा भीड़ इतनी अधिक थी कि अन्त्येष्ठि के लिये निश्चित स्थान को छोड़ रावीं नदी के किनारे-किनारे जल को पार कर एक ऊंचे और सूखे टीले पर चिता बनाई गई। संस्कार करते-करते अंधेरा हो आया था। इस कारण चिता की अग्नि में ही देखकर मंत्र पढ़े गये और मंत्र पढ़ने वालो में पं० चन्द्रभानु प्रमुख थे।

उन दिनों आर्य समाज से मुसलमानों के सर्वत्र शास्त्रार्थ हो रहे थे, आर्य समाज की ओर से पं० रामचन्द्र देहलवी तथा धर्मभिक्षु प्रमुख थे, मुसलमानों की ओर से मौलवी सनाउल्ला अमृतसरी आदि थे। आर्य समाज का प्रभाव बढ़ता जा रहा था और इस्लाम की

कच्ची जड़ें हिल रही थी। मौलाना घबरा गये। मुसलिम हलचल प्रारम्भ हो गई और आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के चरित्र पर कीचड़ उछालने के लिये "उन्नीसवी सदी का महर्षि" पुस्तक मुसलमानो ने प्रकाशित की उसके जवाब में म० राजपाल जी ने 'रंगीला रसूल' प्रकाशित कर मुंह तोड उत्तर दिया। मुसलमानों में खलबली मच गई और उनकी जोशीलो सभायें होने लगी। उस समय की ब्रिटिश सरकार से मुकदमा करवाने की अपील मुसलमानो ने की, मुकदमा चला किन्तु आर्य समाज के अकाट्य प्रमाणों के आगे इस्लाम कोर्ट में धराशाही हो गया। आखीर हार कर मुसलमान अपनी पुरानी खूंख्वांर नीति-नीचता पर उतर आये। उनके भेजे एक धर्मान्ध संकीर्ण और दुष्ट खुदा-बख्शनामक मुसलमान ने महाशय राजपालजी पर २६ सितम्बर १९२७ ई० को छुरे से वार किया जिससे महाशय जी को ६ घाव हुए किन्तु ईश्वर ने जान बचा ली। ९ अक्टूबर १९२७ ई० को फिर एक मतान्ध नीच मुसलमान अब्दल अज़ीज ने महाशय जी पर दुकान में ही हमला किया। स्वामी सत्यानन्द जी बीच में आ गये और उन्हें चोटे आयी किन्तु महाशयजी फिर बच गये। ६ अप्रेल १९२९ को दिन के दो बजे इलमदोन नामक एक मुसलमान ने तेज छुरा महाशय राजपाल जी की छाती में घुसेड दिया और महाशय जी के प्राण पखेरू तत्काल ही उड गय। उस समय दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य स्वामी स्वतंत्रता नन्द जी वहां उपस्थित थे उन्होंने उस व्यक्ति मुसलमान का हाथ पकड लिया और उसे तब तक नहीं छोड़ा जब तक पुलिस न आ गई।

७ अप्रैल को शव यात्रा में लाहौर उमड पड़ा और ब्रह्मचारी चन्द्रभानु ने शव यात्रा में भाग लिया और अन्त्येष्टि संस्कार भी कराया।

ऐतिहासिक घटना :—२३ दिसम्बर सन् १९२६ ई० को दिल्ली में आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता उच्च कोटि के संन्यासी स्वामी श्रद्धा-नन्द जी महाराज को हत्या एक मतान्ध आततायी और दुष्ट व्यक्ति अब्दुल रशीद ने गोली मारकर कर दी और यह समाचार बिजली की तरह सारे देश में फैल गया—आर्य समाज स्तब्ध रह गया सारा लाहौर शोक में डूब गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति अपना श्रद्धा प्रकट करने के लिये एक विशाल जुलूस लाहौर में निकाला

गया। उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी भी उसमें सम्मिलित हुए और ब्रह्मचारी चन्द्रभानु भी उनमें एक थे- जुलूस का नेतृत्व डी० ए० वो० आन्दोलन के सूत्रधार महात्मा हंसराज जी कर रहे थे महात्मा हंसराज एवं स्वा० श्रद्धानन्द में कुछ मत-भेद भी था लेकिन दोनों ही आर्य समाज और दयानन्द के दीवाने थे। ब्रह्मचारी चन्द्रभानु ने मन ही मन निश्चय किया कि मैं अनेक मुसलमानों की शुद्धि कर इस हत्या का बदला लूंगा। प० जी ने अपने जीवन में ही हजार से उपर विधर्मियों की शुद्धि की।

लाहौर उन दिनों क्रान्तिकारियों का गढ़ था, ब्रह्मचारी चन्द्रभानु शान्ति प्रिय शील स्वभाव के थे और विद्याध्ययन करने के कारण क्रान्ति से दूर किन्तु क्रान्तिकारियों के निकट थे चूंकि स्वामी वेदानन्द जी के पास बिहार के एक युवक श्रुतिकान्त जी आया करते थे और उनका क्रान्तिकारियों से सीधा सम्बन्ध था—नागपुर के प्रसिद्ध युवा नेता जनरल अंसारी की एक पुस्तक का हिन्दी से उर्दू में अनुवाद कामरेड एहसान इलाही के कहने पर ब्रह्मचारी चन्द्रभानु ने ही किया था। एहसान इलाही सरदार भगतसिंह के साथियों में से थे।

भगतसिंह के सान्निध्य में :—भगत सिंह उन दिनों नौजवान भारत सभा के मंत्री थे। भाटी गेट के बाहर वाले मैदान में प्रायः सरदार भगतसिंह के भाषण होते थे और ब्रह्मचारी चन्द्रभानु सब काम छोड़कर भाषण सुनने अवश्य ही जाते थे, एक बार ब्रैडला हाल में जहां नेशनल कालिज लगता था वहां 'इन्टर कम्यूनल डिनर' रक्खा, इसमें खाना मेहतरों को परोसना था, नौजवान भारत सभा द्वारा आयोजित इस भोज में विद्यालय से कोई भी जाने को तैयार न हुआ किन्तु ब्राह्मण परिवार में जन्मा शुद्ध चेतन्य ब्रह्मचारी चन्द्रभानु वहाँ अवश्य पहुंचा और सरदार भगतसिंह को समीप से जी भर कर देखा।

सन् १९२६ ई० में १७ मार्च से २० मार्च तक गुरुकुल कांगडी का रजत जतन्ती महोत्सव था, जिसमें सम्मिलित होने के लिये दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहोर को विशेष निमंत्रण पत्र भेजा। उसका रोचक वर्णन पं० जी ने अपनी कलम से किया है। पढ़ें।

गुरुकुल कांगड़ी में :—महोत्सव का विशेष आकर्षण देश के सर्वोच्च

नेता महात्मा गांधी जी द्वारा दीक्षान्त भाषण देने की स्वीकृति थी। गांधी जी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बहुत आदर करते थे और उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी का २३ दिसम्बर १९२६ को बलिदान हुआ और जिसके पश्चात् गुरुकुल कांगडी का यह पहला ही वार्षिकोत्सव था और वह भी रजत जयन्ती महोत्सव, इसलिये महात्मा गांधी जी इसमें सम्मिलित होना अपना नैतिक कर्तव्य समझते थे।

गुरुकुल कांगडी उन दिनों गंगापार के सुरम्य बन स्थल में था, जहां पहुँचने के लिये घड़ों से बने हुए कमेड़ों की सहायता लेनी पड़ती थी और डर भी लगता था। गुरुकुल भूमि में निवास तथा भोजन की उत्तम व्यवस्था थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुख्य पत्र 'आर्य' के सम्पादक श्री पं० अवनीन्द्र जी विद्यालंकार मेरे कृपालू मित्र थे, मैं उन्हें उर्दू पढ़ाया करता था। उन्होंने मुझे गुरुकुल जाते हुए 'आर्य' का विशेष संवाददाता भी बना दिया जिसके कारण मुझे रजत जयन्ती महोत्सव के मंच पर बैठने का स्वतः अधिकार प्राप्त हो गया। दीक्षान्त भाषण के दिन मैं पूज्य महात्मा गांधी के सन्निकट ही दो घंटे तक बैठा रहा तथा अपने को धन्य सराहता रहा। मैंने अपने मन में कहा 'चन्द्रभानु' अब मुझे सारी आयु इनके दुर्लभ दर्शन करने के लिये कहीं भटकने की आवश्कता नहीं आज देख ले और जी भरकर देख ले। रजत जयन्ती महोत्सव में आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वानों, संन्यासियों तथा नेताओं के भाषण सुनकर मेरी ज्ञान वृद्धि हुई। ऋषि दयानन्द गुरुकुल प्रणाली तथा आर्यसमाज में और अधिक निष्ठा बढ़ी।"

कुम्भ मेले में :—ब्रह्मचारी चन्द्रभानु की प्रबल इच्छा थी कि कुम्भ मेला भी देखा जाय—रजत जयन्ती के पश्चात् हरिद्वार में होने वाले कुम्भ में आर्य समाज की ओर से गुरुकुल कांगड़ी के प्रारम्भिक विद्यालय के स्थान "मायापुर वाटिका" में एक प्रचार कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें दयानन्द उपदेशक विद्यालय के छात्रों के साथ चन्द्रभानु ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कुंभ के मेले में सारे भारतवर्ष से बड़े-२ साधु-महात्मा तथा सनातन धर्म के विद्वान् पधारे हुए थे और स्थान-२ पर उनके प्रचार कैम्प लगे हुए थे। उन सभी स्थानों पर चन्द्रभानु ने घूम-२ कर उनके ठाट-बाट

तथा प्रचार का ढंग देखा। सर्वप्रथम गंगा जी में कौन स्नान करे इसके लिये साधुओं के अखाड़ों की प्रतिस्पर्धा भी देखने को मिली ब्रह्मचारी चन्द्रभानु ने देखा कि धर्म के नाम पर कितना ढोंग और आडम्बर फैला है जो हिन्दू जाति के पतन का कारण है।

वेद प्रचार :—विद्यालय के छात्रों में चन्द्रभानु सर्वश्रेष्ठ वक्ता थे। विद्यालय के आचार्य स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज ने टोबा टेकासिंह (पाकिस्तान) के वार्षिकोत्सव पर भाषण देने भेजा लौटते हुए ब्रह्मचारी चन्द्रभानु ने आर्यसमाज गूजरा मंडी में भी व्याख्यान दिया।

सन् १६२८ ई० में ब्रह्मचारी चन्द्रभानु ने विद्यालय की सिद्धान्त भूषण परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। जब वे सिद्धान्त शिरा-मणि के द्वितीय खण्ड में थे तब उन्होंने एक अध्यापक के दुराचारी जीवन के कारण उसका विरोध करते हुए जून १६३० में विद्यालय छोड़ दिया। चन्द्रभानु उन दिनां तेजस्वी ब्रह्मचारी थे और सदाचार के प्रवल समर्थक व पोषक थे।

पुनः पानीपत :—ब्रह्मचारी चन्द्रभानु लाहौर से चलकर पानीपत आ गये उनकी इच्छा थी कि अंग्रेजी का विशेष अध्ययन कर विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार किया जाय—यहां उन दिनों जैन समाज के रजत-जयन्ती महोत्सव पर आर्य समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए सर्व धर्म-सम्मेलन मे निवन्ध पढ़ा—सभाध्यक्ष ब्र० शीतल प्रसाद जी ने चन्द्रभानु की भाषा प्रतिभा और शैली की अत्यन्त सराहना की।

पानीपत आर्य समाज में एक दिन आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र जी देहलवी पधारे। वे ब्रह्मचारी चन्द्रभानु की प्रतिभा से प्रभावित थे चूंकि चन्द्रभानु जी एक बार देहली पं० रामचन्द्र जी देहलवी से मिल चुके थे और पं० रामचन्द्र देहलवी तभी हैदराबाद (दक्षिण) से प्रचार कर लौटे थे तथा वहां एक योग्य उपदेशक की आवश्यकता थी पं० देहलवी जी ने ब्र० चन्द्रभानु से पूछा कि आजकल क्या कर रहे हो—चन्द्रभानु ने उत्तर दिया इन्टर परीक्षा की तैयारी करने के साथ-२, लक्ष्मी इंसोरेन्स कम्पनी में पार्ट टाईम काम कर रहा हूं, तथा रात्रि को हरिजन पाठशाला में निशुल्क पढ़ाता हूं—शेष समय आर्य समाज पानीपत की सेवा करता हूं। पं०

देहलवी बोले अरे इतना योग्य ब्रह्मचारी विदेश जाये और देश तबाह हो रहा है पहले अपना देश संभालों और हैदराबाद जाओ। पं० रामचन्द्र देहलवी की प्रेरणा से ब्र० चन्द्रभानु हैदराबाद आ गये। पानीपत रहते हुए आर्य समाज घंरौडा के उत्सव पर भी गये और पं० रामदयालु अधिष्ठाता आर्य प्रतिनिधि उप सभा करनाल तथा पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु से विशेष स्नेह मिला जिस कारण आर्य समाज के काम करने की रुचि बढ़ी।

हैदराबाद में :—आर्य समाज के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी की प्रेरणा से उपदेशक क्षेत्र में ही पूर्णरूपेण समर्पित होकर पं० चन्द्रभानु रेजीडेन्सी बाजार (सुल्तान बाजार) पहुँच गये। १६ सितम्बर १६३० शुक्रवार से अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही दिनों में हैदराबाद दक्षिण में अपना व्यापक प्रभाव जमा लिया। उन दिनों पं० जी को ६० रु० महोना वेतन मिलता था। हैदराबाद के आर्य समाजियों ने उत्साही युवक पं० नरेन्द्र को भी पं० चन्द्रभानु जी के साथ रख दिया, और पं० चन्द्रभानु जी ने नरेन्द्र जी को व्याख्यान देना सिखाया और प्रबुद्ध वक्ता बना दिया।

हैदराबाद क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर घूमते हुए पं० चन्द्रभानु जी ने वर्णाश्रम व्यवस्था, अछूतोद्धार, गायत्री मंत्र, मृत्यु मीमांसा, अद्वैतवाद खण्डन, आर्य समाज के नियम, अवतारवाद खण्डन आदि विषयों पर व्याख्यान देते थे और कभी इधर उधर की बातें नहीं करते थे।

तुर्की टोपी :—पेद्दापल्ली नामक स्थान पर एक दिन व्याख्यान के बाद मंत्री जी ने कहा कि पं० जी आज आपका भोजन इन तुर्की टोपी वाले सज्जन के यहां होगा पं० जी आश्चर्य चकित रह गये और मन में सोचने लगे कि क्या यहां कोई आर्य भोजन कराने वाला नहीं मुझे मांसाहारी मुसलमान के यहां भोजन करना पड़ेगा। मंत्री जी तभी पं० जो के मनोभावों को समझ गये और बोले पं० जी मुसलमान नहीं है नीचे धोती भी पहनते हैं और तिलक भी लगाते हैं। यह तो निजाम के कर्मचारियों की वेषभूषा है और यह तो कट्टर आर्य समाजी हैं आप तिलक से पहचान लिया करें कि यह हिन्दू हैं।

सी० आई० डी० :—पं० जी के व्याख्यान में सर्वत्र गुप्तचर विभाग उनका पीछा कर रहा था और पूरी रिपोर्ट सरकार को

भेजता था। चन्द्रभानु बहुत ही सोच समझकर सैद्धान्तिक व्याख्यान देते थे।

करोडगिरी :—जहां भी जाते थे तलाशी होती थी जैसे कोई मुर्जरिम हो, खूनी हो, कातिल हो, डाकू हो यह निजाम हैदराबाद की ओर से तोहफा था, और इस तलाशी का नाम वहां चुंगी के महकमे में करोडगिरी था। तलाशी में पूछा कि लंगोट और दंड क्यों रखते हो। पं० चन्द्रभानु ने उत्तर दिया—व्यायाम और ब्रह्मचर्य के लिये लंगोट आवश्यक है और दंड अपनी सुरक्षा के लिये रखता हूं।

करीम नगर—करीम नगर में पं० चन्द्रभानु के साथ पं. नरेन्द्र भी थे वहां नरेन्द्र जी के सम्बन्धी थे और उन्होंने नरेन्द्र को कहा—अरे अच्छा भला लड़का था यह क्या बन गया है।

गुरुकुल (धारूड़ फतेहाबाद)—कुछ वर्ष पूर्व पं० भगवान स्वरूप जी न्याय भूषण गुरुकुल (धारूड़ फतेहाबाद) के आचार्य थे और पं० कुंजन प्रसाद जी अधिष्ठाता थे। धारूड़ के पं० कुंजन प्रसाद जी सनातनी वेद पाठियों को बड़ी ही श्रद्धा से बुलाते थे और खूब दक्षिणा देते थे। सनातनी पं० भी कहते थे कि वेदों की रक्षा तो आर्य समाज ने की है। सनातनी पंडितों का वेद पाठ सुनकर पं० चन्द्रभानु गद्-गद् हो गये और स्वयं भी वैसा ही वेद पाठ सीखने का यत्न करने लगे।

विवाह प्रसंग—अब २६ वर्षीय सदाचारी-सुन्दर-स्वस्थ कमाऊ युवक पर सबकी आंखे टिकने लगी और एक साथ २ पत्र प० चन्द्रभानु को हिंगोली में मिलें एक पं० रामचन्द्र जिज्ञासु का और दूसरा पं० बुद्धदेव विद्यालंकार के पिता पं० रामचन्द्र जी का दोनों रामचन्द्र अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रभानु से करना चाहते थे और दोनों पत्रों को निर्णय के लिये पं० रामचन्द्र देहलवी जी को भेज दिया कि रामचन्द्रों का फैसला रामचन्द्र ही कर सकता है। पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने फैसला दिया कि पं० रामचन्द्र जिज्ञासु का अधिकार पहले है कि उन्होंने इससे पूर्व भी बात की थी।

विधवा विवाह आन्दोलन—हैदराबाद आर्य समाज की ओर से उन दिनों विधवा विवाह आंदोलन पूरे जोर शोर से चल रहा था और

कट्टर पंथी सनातनी कदम-कदम पर विरोध कर रहे थे, मुसलमान चाहते थे कि हिन्दुओं में विधवा विवाह न हो और हिन्दू विधवाओं को मुसलमान उडा ले जाते थे तथा उनका बच्चे पैदा करने के लिये मशीन रूप में इस्ते माल करते थे, इधर सनातनी पंडे-पाखंडी-ढोंगी विधवा विवाह का इसलिये विरोध कर रहे थे कि—इनके ऐशो आराम में कमी आ जायेगी, हिन्दू विधवा मठों और मन्दिरो में भगवान की सेवा के बहाने इन पाखंडियों की सेवा कर रहीं थी और ये भ्रष्टाचारी मजे लूट रहे थे।

पं० चन्द्रभानु जी ने एवं आर्य समाज के मंत्री श्री चन्दूलाल जी ने एक स्मरण पत्र वहां की लेजिलेटिव कौंसिल के सचिव नवाब हाशिलयार जंग बहादुर को १२ जनवरी सन् १९३१ को दिया। पत्र में विधवा विवाह अवश्य हो लागू होना चाहिये कारण और प्रमाण दिये गये थे।

शास्त्रार्थ—सनातनियों ने अपने प्रसिद्ध वक्ता पं० माधवाचार्य को विधवा विवाह पर शास्त्रार्थ करने के लिये बला लिया। आर्य समाज की ओर से पं० बुद्धदेव विद्यालंकार आने वाले थे, किसी कारण वहा वह न आ सके और आर्य समाज की ओर से शास्त्रार्थ पं० चन्द्रभानु जी ने किया तथा आर्य समाज को विजय दिलाई। यह शास्त्रार्थ २५-२६ दिशम्बर सन् १९३० विवेक—वर्द्धिनी थियेटर में हुआ था।

पं० चन्द्रभानु की प्रशंसा—आर्य समाज के मंत्री ने दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य के नाम पत्र लिखा कि—पूज्य श्री स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी की सेवा में—

श्री पं० चन्द्रभानु जी बड़ी लग्न और योग्यता से काम रहे हैं, जिसका अंदाजा मेरी भेजी हुई रिपोर्ट से जो 'प्रकाश' के १-२-३१ के अंक में प्रकाशित हुई है लगाएं पं० माधवाचार्य आदि से जो शास्त्रार्थ किया वह किस उत्तमता से किया और अन्य ग्रामादि प्रचार में बहुत लग्न से काम करते हैं। इतना ही लिखना पर्याप्त है. अधिक क्या लिखूं।

ह० दास चन्दूलाल

विवाह संस्कार—जिस शुभ घड़ी की प्रत्येक युवक-युवती प्रतीक्षा

करते हैं, वह घड़ी पं० चन्द्रभानु जी के जीवन में आई और फाल्गुण शुक्ला १२ सम्वत् १९८७ वि० तदनुसार १ मार्च सन् १९३१ ई० रविवार के दिन पं० रामचन्द्र जी की सुपुत्री इन्दुमती के साथ भारत की राजधानी दिल्ली में बल्लीमारान मोहल्ले में ला० मदन मोहन दिल्ली क्लाथ मिल वालों की धर्मशाला (मदन मोहन शिल्प विद्यालय) में पं० रामचन्द्र जी पुरोहित आर्य समाज चावड़ी बाजार तथा अन्य विद्वानों ने विवाह संस्कार सम्पन्न कराया। सब बारातियों को सुन्दर रुमाल में बांध कर एक-एक सत्यार्थ प्रकाश भेंट दिया गया। पत्नी सहित पं० चन्द्रभानु जी वापिस हैदराबाद पहुंच गये।

हैदराबाद के कुछ विशेष प्रशंग तथा कार्य

तीन उपदेश

२६ मार्च सन् १९३१ ई० को पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद दक्षिण पधारे। वे श्री पंडित जी के प्रचार कार्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने २९ मार्च को श्री पंडित जी को ३ उपदेश दिये (१) यहां पर कोई संस्था न बनाना (२) तैलगू भाषा अवश्य सीखना (३) संस्था के स्थान में कोई और उपदेशक रख लेना।

दयानन्द के पुत्र

४ अप्रेल सन् ३१ ई० शनिवार को देवी दीनबाग में आर्य समाज रेंजिडैन्सी बाजार के वार्षिकोत्सव में प्रात: श्री पंडित जी का धर्मोपदेश हुआ जिससे प्रभावित होकर वहां के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री पं० गयाप्रसाद जी ने पंडित जी तथा श्री पं० धर्मदेव जी विद्या-वाचस्पति के सम्बन्ध में कहा कि आप दोनों नौजवानी में ही प्रचार क्षेत्र में उतर गये हो, वास्तव में दयानन्द के पुत्र तुम ही हो।

आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य की स्थापना

आर्य समाज के उत्साही मन्त्री श्री चन्दूलाल जी तथा निजाम राज्य के प्रसिद्ध आर्य-कार्यकर्ताओं की बहुत इच्छा थी कि रियासत

में वैदिक धर्म के प्रचार को सुसंगठित करने के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य की स्थापना की जावे इसलिये २६ मार्च से २९ मार्च सन् १९३१ ई० तक जब सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी हैदराबाद पधारे तो आर्यजनों ने श्री पं० चन्द्रभानु जी की खास ड्यूटी लगा दी कि वे स्वामी जी महाराज से मिलकर उक्त सभा के सब नियमादि बना लें। ४ अप्रैल सन् १९३१ ई० को देवी दीनबाग में आर्यसमाज रेजिडैन्सी बाजार के वार्षिकोत्सव पर निजाम राज्य के सब आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की मीटिंग बुलाई गयी जिसमें श्री पण्डित जी ने वे सब बातें रखीं जो महात्मा नारायण स्वामी जी की सम्मति से स्थिर की गई थी। भिन्न-२ स्थानों से आये हुए प्रतिनिधियों ने कुछ परिवर्तन के साथ सब नियम स्वीकार कर लिये तथा बड़े हर्ष के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य की स्थापना हो गई। सभा के मन्त्री श्री चन्दूलाल जी तथा उप मन्त्री श्री पं० चन्द्रभानु जी बनाये गये।

देहलवी जी द्वारा शाबाशी

इसीदिन ४ अप्रैल की सायं ६-१० से ७-१० तक वार्षिकोत्सव में श्री पं० चन्द्रभानु जी का 'आस्तिकवाद' पर व्याख्यान हुआ श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने उनका भाषण पहिले कभी सुना न था अतः वे गौर से सब Points सुनते रहे और पंडित जी के बैठ जाने पर उनकी पीठ ठोक कर कहा कि बहुत अच्छा रहा, तत्पश्चात् उन्होंने अपने गले में पड़े हुए हारों को श्री पंण्डित जी के गले में डाल दिया जिस पर खूब तालियां बजीं। इस उत्सव में निजाम सरकार के प्रधान मन्त्री महाराजा बहादुर, सर किशन प्रसाद महोदय भी पधारे हुए थे।

आर्य समाज लातूर की स्थापना

५ अगस्त सन् १९३१ को श्री चन्दूलाल जी मन्त्री को लातूर से तार मिला कि सनातन धर्म के प्रसिद्ध उपदेशक पं० कालूराम जी शास्त्री कई दिन से आर्य समाज के विरुद्ध व्याख्यान दे रहे हैं किसी आर्य विद्वान् को फौरन भेजें। उन दिनों श्री पं० चन्द्रभानु

जी कुछ अस्वस्थ थे परन्तु वैदिक धर्म की पुकार सुनकर वे उसी दिन लातूर रवाना हो गये। ६ अगस्त को उन्होंने व्यङ्कटेश सिनेमा हाल में एकेश्वरबाद तथा ईश्वर के साकार मानने में दोषों पर वह प्रभावशाली भाषण दिया कि वहाँ के मुसलमान पुलिस मुहतमिम (Superintendent) ने प्रशंसा करते हुए श्री पण्डित जी स कहा कि आपने आज 'वहदानियत पर हमारे बड़े-बड़े मौलवियों से भी अच्छा कहा। श्री पंडित जी के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर कालूराम शास्त्री ने विज्ञापन निकालकर अपने निवास स्थान पर श्री पडित जो के व्याख्यानों का खण्डन शुरू कर दिया जिस पर श्री पण्डित जी ने भी उसके व्याख्यानों के Notes लेकर श्री डा० नीलकण्ठ राव जी के सामने वाले चौक में प्रत्युत्तर देना प्रारम्भ कर दिया। यह सिलसिला कई दिन तक चला और शास्त्रार्थ के इस नये अन्दाज से सिद्धान्तों की खूब छान-बोन हो गई। आर्यसमाज के प्रबल सिद्धांतों और तर्कों की छाप जनता पर बैठती चली गई। अन्त में कालूराम जी शास्त्री ने 'विधवा विवाह' पर शास्त्रार्थ करने का चेलेन्ज दिया जिस पर उन दिनों आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ कर्ता श्री स्वा० कर्मानन्द जी को लातूर बुलाया गया और १५ अगस्न को व्यङ्कटेश सिनेमा के हाल में श्री कालूराम शास्त्री से जोरदार शास्त्रार्थ हुआ। श्री पंडित जी स्वामी जी की प्रमाणों आदि से खूब सहायता कर रहे थे। श्री पं० चन्द्रभानु जी के प्रभावशाली प्रचार तथा इस शास्त्रार्थ के परिणाम स्वरूप १६ अगस्त को आर्य समाज लातूर की स्थापना हो गई और १७ अगस्त को निम्नलिखित चुनाव हुआ :—

प्रधान—श्री लक्ष्मी नारायण जी, उप प्रधान—श्री दिगम्बर राम जी वकील, मन्त्री—श्री किशन राम जी सौताडेकर, कोषाध्यक्ष तथा पुस्तकाध्यक्ष—श्री भृगुराम जी चामले।

सन् १९५० में जब श्री पण्डित चन्द्रभानु जी महात्मा आनन्द स्वामी जी के साथ रियासत हैदराबाद में विशेष प्रचारार्थ गये हुए थे तो आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के तत्कालीन मन्त्री श्री पं० मनोहर लाल जी ने श्री पण्डित जी को बताया था कि लातूर में आपके व्याख्यान सुन कर ही मैं आर्य समाजी बना था जिस पर

श्री पंडित जी ने कहा कि मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मेरा बनाया हुआ एक आर्य बन्धु आज आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पद को सुशोभित कर रहा है।

मौलवी सद्दीक-दीनदार द्वारा फैलाये भ्रम जाल को छिन्न-भिन्न करना

मौलवी सद्दीक दीनदार एक बहुत चालाक मुस्लिम प्रचारक था जो श्री पं० चन्द्रभानु जी के हैदराबाद पहुँचने से पूर्व कई वर्ष से वहां के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र रच रहा था। उसने एक ओर तो वहां के लिंगायतों को यह झांसा देना शुरू किया कि उनके संस्थापक महात्मा चन्न बसवेश्वर के सम्बन्ध में जो उनके ग्रन्थों में यह भविष्य वाणी है कि सन्निकट भविष्य में वे पुनः अवतार लेकर धरती पर अवतीर्ण होंगे सो मैं सद्दीक दीनदार ही उनका वह अवतार हूँ तदनुसार उसने अपने नाम के साथ वसवेश्वर लगाना शुरू कर दिया तथा उनके शरीर पर जैसे चिन्ह वर्णन किये गये थे वैसे उसने गोदवा लिये। हैदराबाद के कट्टर मुस्लिम शासक निजाम साहब तथा पंजाब के कादियानियों की गुप्त सहायता से अपने साथ कई अन्य मुस्लिम प्रचारक भी साथ रख लिये। यह रियासत हैदराबाद में स्थान-२ पर अपनी मन्डली लेकर प्रोपोगैन्डा करने लगा।

रियासत के अनेक मुस्लिम अफसर भी उसकी अन्दरूनी मदद करते थे। श्री पण्डित जी ने उसके फैलाये भ्रम-जाल को जगह-जगह पहुँच कर छिन्न भिन्न करना शुरु कर दिया इस कार्य में अनेक हिन्दू युवकों ने श्री पंडित जी की बड़ी सहायता की वे मुस्लिम वेष में उसकी मीटिंगों में जाकर शामिल होते तथा उसकी स्कीमों तथा भावी प्रोग्राम की सूचना पूर्व से ही पण्डित जी को लाकर दे देते, जिसका लाभ उठाकर श्री पण्डित जी उसके गन्तव्य स्थान पर जाकर वहां के हिन्दुओं को पहले से सावधान कर देते। दूसरा कार्य मौलवी सद्दीक दीनदार ने यह किया कि उसने मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिये तथा वहां के हिन्दुओं को नीचा दिखाने के लिये एक पुस्तक 'सखरे आलम' लिखी जिसमें

हजरत मुहम्मद साहब को सर्व-श्रेष्ठ महापुरुष साबित किया गया तथा हिन्दुओं के देवी देवताओं पर लांछन लगाने के लिये पुराणों को अनेक कथाओं को तोड़ मरोड़ कर पेश किया गया था। यद्यपि इस पुस्तक का उत्तर सनातन धर्म के प्रसिद्ध पंडित कालूराम जी शास्त्री ने हिन्दी पुस्तक द्वारा दिया परन्तु वह हैदराबाद की उर्दू भाषा जानने वाली जनता में कारगर साबित न हुआ इसलिये श्री मास्टर लक्ष्मण जी आर्योपदेशक से अपनी टिप्पणियों सहित जोरदार उत्तर लिखवाया। पुस्तक का नाम रखा गया 'नकली चन्न वसवेश्वर की किताब सखरे आलम या खंजरे जालिम'। यह पुस्तक लगभग २०० पृष्ठों की थी जिसको आर्य समाज रैजिडैन्सी बाजार हैदराबाद दक्षिण ने स्वल्प मूल्य में जनता में वितरित करा दी, जिसका उत्तम प्रभाव पड़ा। अपनी इन स्कीमों में फेल हो जाने पर मौलवी सद्दीक दीनदार ने एक और जबर्दस्त चाल चली। उसने हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थ 'तिरुपति' के विशाल धन भण्डार को लूटने की भावना से बड़े-बड़े विज्ञापन मुसलमानों में बंटवाये कि मैं चन्न वस्वेश्वर का अवतार हूँ जिसके सम्बन्ध में यह भविष्य वाणी है कि वह हम्पी (तिरुपति) पर आक्रमण करेगा तथा वहां के प्रसिद्ध खजाने पर कब्जा करेगा इसलिये मुसलमानों को कुरान के आदेशानुसार काफिरों के विरुद्ध इस पवित्र कार्य में सहयोग देना चाहिये। उसका यह गुप्त विज्ञापन आर्य समाज के हाथ लग गया। उसके ऐसे कुत्सित इरादों से 'तिरुपति के निकटवर्ती हिन्दुओं को सावधान करने के लिये आर्य समाज के उत्साही मन्त्री श्री चन्दूलाल जी ने श्री पण्डित जी को दो बार बंगलौर भेजा। जहां पर वयोवृद्ध आर्य संन्यासी श्री स्वा० सत्यानन्द जी ने जो बाद में हैदराबाद सत्याग्रह में शहीद हुए श्री पण्डित जी को बहुत सहयोग दिया तथा स्थानीय हिन्दु नेताओं से सम्पर्क स्थापित कर सद्दीक दीनदार के घिनौने षड्यन्त्र से सावधान कर दिया गया।

हैदराबाद में प्रचार कार्य

श्री पण्डित जी ने हैदराबाद नगर तथा रियासत के निम्नलिखित स्थानों पर २५२ व्याख्यान दिये :—हनम कोण्डा, पेद्दापल्ली, करीम नगर, निजामाबाद, धारूड़, फतहाबाद, मोमिनाबाद, परभनी,

सेलू, हिंगोली, नान्देड़, मेला अलवाक, नूतन विद्यालय गुलवर्गा, बरंगल, नल गुन्डा, सिकन्दराबाद, हस्तरा, बुलारम, सम्मा मेठ, बीदर, लातूर, बेगम पेट, भैंसा जि० नान्देड़, निर्मल, कलम्ब, उस्मानाबाद, नलदुर्ग, शोलापुर, आलमपल्ली, हास्पेद हल्लीखेड, उदगीर इत्यादि। इन स्थानों में श्री पण्डित जी कई-कई बार भी गये तथा अनेक स्थानों पर व्याख्यानों की शृंङ्खला प्रारम्भ की। व्याख्यानों के अतिरिक्त श्री पण्डित जी ने ४२ संस्कार तथा ४ यज्ञ भी कराये।

रियासत हैदराबाद से निर्वासित किया जाना

श्री पण्डित जी का संकल्प था कि मैं अपनी सारी आयु हैदराबाद में वैदिक धर्म-प्रचार में लगा दूंगा तथा यहां डट कर कार्य करूंगा परन्तु निजाम सरकार को यह मंजूर न था। उनके पास श्री पण्डित जी के प्रभावशाली कार्य किये जाने तथा मुस्लिम प्रचारकों के मनसूबों और कार्यों को धूल में मिला देने की रिपोर्टें पहुँच रही थी इसलिये उन्होंने श्री पण्डित जी पर राजनैतिक क्रान्तिकारियों के सहयोगी होने का इल्जाम लगाकर ३० सितम्बर सन् १९३२ ई० को रियासत हैदराबाद से निर्वासित कर दिया। इस सम्बन्ध में वहां के प्रसिद्ध समाचार पत्र 'मुशीरे दकन' में जो समाचार छपा वह निम्न प्रकार है :—

'मुशीरे दकन १४ आबान (मुस्लिम तिथि) १९ सितम्बर सन् १९३२ ई० हैदराबाद १३ आबान—सुना गया कि आर्य समाजी मुबल्लिग (प्रचारक) चन्द्रभान जी का उनकी अपनी सभा से (राजनैतिक) सरगर्मियों की बिना पर (गति-विधियों के कारण) मुमालिक महसूसा सरकारे आली (निजाम राज्य) से अखराज अमल में आया है (निर्वासित करने का आदेश दिया गया है)

[दकन न्यूज]

यह आदेश कितना खोखला और दुराग्रहपूर्ण था इसका पता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सुयोग्य मन्त्री श्री प्रो० सुधाकर जी एम० ए० द्वारा हैदराबाद के अत्याचारों के सम्बन्ध में लिखी गयी सारगर्भित पुस्तक "The case of Arya Samaj in Hyderabad State (सन् १९३८ ई०) के पृष्ठ ६ व ७ के अंग्रेजी उद्धरण से हो जाता है :—

"Our trouble in Hyderabad State began with the restrictions imposed by the Nizam Government on our preachers. Pandit Chandra Bhanu was the first victem. He was served with a deportation Order by the State on the 1 ,th September 1932. Soon after the order was served, a deputation Consisting of influential members of our local Arya Samaj organization waited upon the Political Member of H.E.H. the Nizam's Government and inquired as to the reasons which lead the Government to issue an order of externment against a hamler and peaceful preacher of the Arya Samaj. The Political Member was pleased to say that the deportation order was not based on any Complaints against Pandit Chandra Bhanu as on Arya Samaj preacher in the State but they were based upon the reports received from the Government of India that he had Connection with such people and in stitutions which were Concerned with Politics etc. We were also told that the State Police had no Complaint what so ever against him Consequently on the 20th October 1932 we wrote to the secretary to the Government of India, Foreign and Political Department, inviting his attention to the above reply by the Political Member of the Nizam's Government and we were surprised to learn from the Resident at Hyderabad that the exclusion of Pt. Chandra Bhanu from the Nizam's dominions was decided upon by the Nizam's Government for reasons which must have appeared to them sufficient and not as the result of any suggestion or report from the Residency and that was not a case in which he was prepared to make any representation to the state authorities.

This Created misgiving in our minds, as the affair smaced of duplicity. We felt as if the Nizam's Government was bent upon hitting the Arya Samaj hard but not to take the responsibility. We therefore, resolved to approach the Nizam's Government again pointing out the inmocence of our preacher admitted by both—the Government of India as well as their own Government, and demanding that justice should now be done to him. In reply we were Curtly told

"As the matter was finally settled the Government did not want to reopen it."

एक मुसलमान भक्त

जुलाई १६३१ ई० में जब श्री पण्डित जी बीदर गये हुए थे उन्होंने वहां एक बड़े मन्दिर के अहाते में कई व्याख्यान दिये जिनमें एक व्याख्यान का विषय था 'मैं कौन हूँ, कहां जाऊँगा तथा मुझे उसके लिये क्या करना है ? श्री पण्डित जी के व्याख्यान बड़े युक्ति-युक्त, तर्क पूर्ण और चटकीली उर्दू भाषा में हुआ करते थे जिसे सुनने के लिये हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमान भी आया करते थे। मुदल्लिल व्याख्यान भी सुनते और उत्तर भ रत की सलीस उर्दू भाषा का आनन्द भी लेते। उपरोक्त विषय पर दिया गया उस दिन का व्याख्यान कुछ ऐसा तर्क पूर्ण तथा भावपूर्ण बना कि श्रोता सुन-कर झूम उठे। उन्हीं में से एक सम्पन्न घराने के सुपठित मुसलमान बन्धु पर कुछ ऐसा विशेष प्रभाव पड़ा कि वे श्री पण्डित जी जहां ठहरे हुए थे वहां पर पधारे और कहने लगे कि मैंने अनेक वक्ताओं की तकरीरें सुनी हैं परन्तु आज आपका व्याख्यान कमाल का था जिसका मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा है । मैंने ऐसा व्याख्यान कभी नहीं सुना है। मुझे आपकी यह तकरीर सदा याद रहेगी।

संयोग की बात देखिये यही मुस्लिम महानुभाव १६ वर्षों के पश्चात् जब श्री पण्डित जी सन् १६५० ई० में पुलिस एक्शन के बाद पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी के साथ रिसायत हैदराबाद गये हुए और ज़हीराबाद में व्याख्यान देकर १३ दिसम्बर १६५० ई० को बस में लौट रहे थे, उसी बस में यात्रा कर रहा था। उसने श्री पण्डित जी को देखते ही फौरन पहचान लिया तथा प्रसन्न होकर कहने लगा पण्डित जी ! मुझे वह आपकी तकरीर अब तक याद है। श्री पण्डित जी भी उससे मिलकर बड़े प्रसन्न हुए और उससे कुशल मंगल समाचार पूछे। रियासत हैदराबाद से निर्वासित होकर श्री पण्डित जी सपरिवार २ अक्तूबर सन् १६३२ ई० रियासत को हैदराबाद से प्रस्थान कर ४ अक्तूबर को दिल्ली पहुंचे और अपने श्वसुर श्री पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु, जो उन दिनों दिल्ली के चीफ मेडिकल आफीसर के हैडक्लर्क थे तथा चर्खेवालान में रहते थे, के पास

ठहरे। वे उनके साथ आर्य समाज चावड़ी बाजार के साप्ताहिक सत्संगों में जाते तथा भावी कार्यक्रम पर विचार करते रहते। श्री पण्डित जी का विचार भारत की राजधानी दिल्ली को ही केन्द्र बना कर वैदिक धर्म का प्रचार करने का था। उन दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत ही था तथा आ० प्र० सभा पंजाव सब प्रान्तीय सभाओं में सिरमौर थी तथा सुसंगठित ढंग से प्रचार कार्य करा रही थी इसलिये पूज्य श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने जो श्री पण्डितजी के हैदराबाद में किये गये प्रचार से बड़े प्रसन्न और प्रभावित थे श्री पण्डितजी के सम्बन्ध में १४ नवम्बर सन् १६३२ ई० को यह पत्र लिखा :—

"श्री मन्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर,

नमस्ते,

निवेदन है कि श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण, जो अभी हैदराबाद दक्षिण से वापिस आ गये हैं यानी वहां की रियासत ने उनको गलत फ़हमी से क्रान्तिकारी दल से सम्बद्ध समझ कर अपने यहां से निर्वासित कर दिया है, आपकी सभा में कार्य करना चाहते हैं—इनको वहां ५०) मासिक मिलते थे -वहां की प्रतिनिधि सभा के सहायक मन्त्री भी थे। इनका काम निहायत अच्छा रहा है। केवल मेहनती ही नहीं हैं, परन्तु सच्चे और धार्मिक पुरुष हैं। आर्य समाज के लिये दिल में प्रेम और श्रद्धा है। प्रचार में शौक से काम करते हैं इसलिये प्रार्थना है कि आप इनको अपनी सभा में अवश्य ले लें और किसी मण्डल में लगा दें। इनमें दोनों योग्यता हैं, व्याख्यान में बड़ी तहकीकात होती है और सुनने वाले इसको महसूस भी करते हैं। लेखन शक्ति इन में गर मामूली है यानी मुझ से अच्छा लिख सकते हैं।

भवदीय

ह० रामचन्द्र देहलवी आर्योपदेशक

अभी आ० प्र० पंजाब से उत्तर आया भी न था कि श्री पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु ने श्री पण्डित जी को सूचित किया कि आर्य समाज नयाबांस वाले आपको अपना पुरोहित बनाना चाहते हैं।

आर्य समाज नयाबांस दिल्ली—आर्य समाज नयाबांस के अधिकारियों के विशेष आग्रह पर श्री पण्डित जी ने वहां के आर्य समाज में पुरोहित रुप में नियुक्त होकर १२ दिसम्बर सन् १९३२ ई० दिन सोमवार से अपना कार्य ४०) रु० मासिक पर प्रारम्भ कर दिया। आर्य समाज नयाबांस में रहते हुए भी पं० जी केवल एक समाज से ही नहीं बंधे रहे। अन्य आर्य समाजें भी उनकी विद्वत्ता से लाभ उठाती रहीं—देहली के अतिरिक्त पं० जी निम्न स्थानों पर प्रचार करने के लिये गये।

बली जि० मेरठ, बेगमाबाद (वर्तमान मोदीनगर) जि० मेरठ, धनपुरा जि० मेरठ, बडौत जि० मेरठ चिरोडी जि० मेरठ, ककरौला जि० मुजफ्फरनगर, पलडा जि० मु० नगर। साखनी जि० बुलन्दर शहर, गुरुकुल सिकन्दराबाद जि० बुलन्दशहर, खैर जि० अलीगढ़, सोनीपत, कोसली जि० रोहतक, पानीपत, खरल कलां जि० रोहतक उजीना (गुडगांव) गुडगांव नगर, भिवानी, करहल जि० इटावा, पलवल, बिजनौर, फजलपुर (मेरठ) शाहदरा, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, भोगल, कादीपुर (गुड़गांव) मेरठ नगर, जंगपुरा, नांगलोई, खानपुर।

आप ४-६-३५ को आर्य तर्क शालिनी सभा के उप प्रधान चुने गये। आर्य समाज नयाबांस के उन दिनों मन्त्री श्री राधेमोहन जी तथा प्रधान श्री सुन्दरलाल जी गोटे वाले थे। आर्य समाज नयाबांस में कार्य करते हुए पण्डित जी बहुत दूर से आते थे। वे तिब्बिया कालेज के निकट दिल्ली क्लाथ मिल्स की 'सी' लाइन में रहते थे जहां क्लाथ मिल्स की कन्या पाठशाला में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुमती जी अध्यापिका थीं और उन्हें पाठशाला के साथ का फ्लैट मिला हुआ था। वे प्रायः वहां से पैदल चल कर बाड़ा हिन्दूराव से नया बांस तक ट्रम्वें द्वारा जाते थे और दैनिक सत्संग कराते थे। दोपहर पश्चात् वे आर्य वैदिक पाठशाला में तीसरी तथा चौथी श्रेणी को प्रश्नोत्तर रूप में धर्मशिक्षा पढ़ाते थे जिसके लिये उन्होंने स्वयं सरल धर्म शिक्षा लिखकर गिरधारी लाल बुक-सैलर खारी बावली द्वारा प्रकाशित कराई। यह पुस्तक बहुत लोक प्रिय हुई और श्री पण्डित जी के आ० स० नया बांस से चले जाने पर भी कई वर्ष तक पाठशाला में चलती रही।

बांदी कुई

८, ९, व १० अप्रैल सन १९३४ को आ० स० बांदी कुई का वार्षिकोत्सव था जिसमें पण्डित जी को भी आमन्त्रित किया गया यह समाज वहां के रेलवे स्टेशन के सन्निकट ही थी जिसमें अधिकांश रेलवे के उत्साही आर्य कर्मचारी ही कार्यकर्त्ता थे। यहीं पर श्री पण्डित जी का प्रसिद्ध कवि श्री प्रकाशचन्द्र जो से मिलन हुआ जिसका उल्लेख उन्होंने श्री प्रकाशचन्द्र जी के सम्बन्ध में लिखे गये संस्मरण में किया है। इसी वार्षिकोत्सव में श्रद्धेय श्री ला० हंसराज जी गुप्त के पिता श्री ला० गुलराज जी गोपाल रेलवे इन्जीनियर अजमेर से भी पधारे हुए थे। वे कुछ दिन पहले लन्दन से लौटे थे। श्री पण्डित जी के प्रभावशाली भाषण के पश्चात् श्री गुलराज गोपाल जी का मनोहर व्याख्यान हुआ।

जैसा कि बताया जा चुका है श्री पण्डित जी दिल्ली क्लाथ मिल की 'सी' लाईन में रहते थे जिसके आस-पास मच्छरों का प्रकोप होने के कारण उन्हें प्रति वर्ष मलेरिया ज्वर होता था। साथ ही कई मील पैदल व ट्रम्वे से यात्रा करनी पड़ती थी। आर्य समाज के धनी मानी प्रधान श्री सुन्दर लाल जी गोटे वाले के स्वर्गवास हो जाने पर आय भी कम हो गयी थी पं० जी इच्छा थी, कि किसी बड़े आर्य समाज में कार्य करूं जहां जनता भी ज्यादा सुशिक्षित हो जिससे मेरा स्वाध्याय भी अधिक हो तथा मेरी योग्यता का उत्तम रीति से सदुपयोग हो। सौभाग्य वश समाचार पत्रों में आर्य समाज हनुमान रोड का विज्ञापन निकला और श्री पं० चन्द्रभानु जी ने प्रार्थना पत्र भेज दिया। ४७ प्रार्थना पत्र ऊंचे २ विद्वानों के पौरोहित्य कर्म कराने के लिये आये। उन दिनों पं० चन्द्रभानु जी का नाम और काम चमक रहा था। शास्त्रार्थ महारथी श्री स्वामी कर्मानन्द जी ने पं० जी के बारे में ९ अप्रेल सन् १९३५ ई० को पानीपत से आर्य समाज हनुमान रोड को यह पत्र लिखा था :—

श्री मन्त्री जी आर्य समाज, हनुमान् रोड, नई देहली

श्रीमन्नमते,

सेवामें निवेदन है कि श्रीमान् पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण इस समय आर्यसमाज, नयाबांस देहली के पुरोहित हैं। आप पहले रियासत हैदराबाद में भी प्रचार करते रहे हैं वहां आपने

बड़ी ही योग्यता से कार्य किया है तथा यहां भी आपका कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। आप आर्य सिद्धान्तों के अच्छे ज्ञाता हैं तथा उपदेश भी आपका सुन्दर एवं भावपूर्ण होता है। आप शंकाओं का समाधान भी बहुत अच्छा करते हैं। संस्कार तो आप सुचारु रूप से करवाते ही हैं इसलिये यदि आपको पुरोहित की आवश्यकता हो तो मेरी सम्मति में पण्डित जी को प्रथम स्थान मिलना चाहिये क्योंकि आप इस कार्य के लिये सर्वथा उपयुक्त हैं।

भवदीय

ह० कर्मानन्द आर्य समाज पानीपत

आर्यसमाज, हनुमान रोड

१ अगस्त सन् १९३५ ई० से श्री पण्डित जी को ४५ रुपये मासिक पर आ. स. हनुमान् राड का पुरोहित नियुक्त किया गया। उस समय आर्य समाज मन्दिर में पुरोहित को सपरिवार रहने के लिये पृथक् आवास का प्रबन्ध न था इसलिये श्री पण्डित जी समाज मंदिर में बने नीचे के क्वार्टर में (जहां आज कल आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का कार्यालय है। श्री पं० दीवानचन्द जी के साथ-२ कमरे लेकर रहने लगे। इस क्वार्टर में ४ कमरे किचन, स्नानगृह तथा शौचालय है जिनका ३०) मासिक किराया पं० दीवानचन्द जी आर्यसमाज को देते थे। महाशय जी के पास-पास कमरे तथा किचन था इसलिये वे १६) मासिक तथा श्री पण्डित जी १४) मासिक किराया देते थे। बिजली पानी का व्यय अलग था। यह व्यवस्था ९-१० महीने तक तो चली परन्तु जब श्री पण्डित जी ने महसूस किया कि ४५) के स्वल्प वेतन में से १६)-१७) रुपये तो किराये आदि के ही निकल जाते हैं तो उन्होंने निकल्सन स्क्वेयर में रहने वाले एक अपने भक्त महानुभाव से परामर्श किया। उसने बड़ी प्रसन्नता से कहा आप मेरे क्वार्टर में चलकर फ्री रहिये। यह मेरा सौभाग्य होगा कि आप जैसे महानुभाव की मैं सेवा कर सकूं। आपके सत्संग और सहवास से मेरे बच्चे भी अधिक सुशील और धार्मिक हो जायेंगे इस पर श्री पण्डित जी ने आर्य समाज के मन्त्री श्री पं० रामशरणजी

को कह दिया कि अब मेरा परिवार निकल्सन स्क्वेयर में रहेगा तथा मैं दैनिक सत्संगादि के लिये वहां से आर्यसमाज में आ जाया करूंगा तथा सायंकाल को समाज के कार्यालय में उपस्थित हो जाया करूंगा। श्री मन्त्री जी ने यह बात अन्तरंग सभा में रखी जिस पर विचार होकर निश्चित हुआ कि श्री पण्डित जी का सपरिवार आर्य समाज मन्दिर में रहना आवश्यक है ताकि कोई भी किसी समय श्री पण्डित जी से समाज मन्दिर में मिल सके तदर्थ श्री पण्डित जी को एक कमरा सपरिवार रहने के लिये निःशुल्क दे दिया गया जहां पर आजकल कार्यालय के निकट स्टोर है।

अग्नि परीक्षा

जब श्री पं० चन्द्रभानु जी को आ० स० हनुमान रोड में कार्य करते हुए लगभग ५ वर्ष हो गये तो उन्हें १७ मार्च सन् १६४० ई० को अन्तरंग सभा द्वारा स्वीकृत यह प्रस्ताव १६ मई ४० को प्राप्त हुआ कि 'संस्कारों पर पुरोहित जी को जो दक्षिणा मिलती है वह समाज के कोष में जमा होनी चाहिये पुरोहित जी को जिन संस्कारों में दक्षिणा प्राप्त हुई है उनके लिये २) प्रति विवाह संस्कार तथा १) प्रति अन्य संस्कार के हिसाब से उनके वेतन के साथ उन्हें दिया जाया करे।"

यह प्रस्ताव एक पुरोहित के लिये बड़ा अपमान जनक था जिसके लिये श्री पण्डित जी ने उस समय के श्री मन्त्री जी से पत्र व्यवहार किया तथा "आर्य समाज और दक्षिणा" के सम्बन्ध में अनेक आर्य विद्वानों तथा आर्य सभासदों की सम्मतियां लिखवा कर दी। जिन में से दो विद्वानों की सम्मतियाँ इस अभिनन्दन ग्रन्थ में अन्यत्र प्रकाशित हैं। परन्तु अन्तरंग सभा टस से मस न हुई।

यह आपत्काल ऐसा था कि यदि और कोई पुरोहित होता तो भाग खड़ा होता परन्तु श्री पण्डित जी बड़े धैर्यवान थे उन्होंने निश्चय किया हुआ था जहां भी कार्य करूंगा, डट कर करूँगा कोई कठिनाई या बाधा आई तो संघर्ष सहन करूंगा। प्रभु पर विश्वास रखूंगा वे अवश्य कालान्तर में मेरी सहायता करेंगे।" और सचमुच हुआ भी ऐसा ही। यह कठोर नियम ३१ अगस्त सन् १६४५ ई० तक लागू

रहा। इसी अवधि में आर्य समाज, नया बांस देहली की रजत जयन्ती आ गई जहां श्री पण्डित जी आ० स० हनुमान रोड से पूर्व २ वर्ष तक प्रभावशाली कार्य कर चुके थे तथा वहां से स्वयं त्याग पत्र देकर आये थे। वहां के अधिकारियों ने श्री पण्डित जी की सेवा में आकर स्वयं निवेदन किया कि अब आप पुनः हमारे आर्य समाज में आने की कृपा करें। हम आपको यहां से अधिक वेतन भी देंगे तथा जैसा कि आप पर पहिले भी दक्षिणा सम्बन्धी कोई प्रतिबन्ध न था वैसा ही यहां के आर्य समाज हनुमान रोड की तरह कोई प्रतिबन्ध न होगा जिस पर श्री पण्डित जी ने आ० स० हनुमान रोड को एक मास का नोटिस दे दिया। नोटिस का देना था कि उस समय के अधिकारियों में खलबली मच गई। वे पण्डित जी जैसे योग्य और प्रभावशाली पुरोहित को अन्यत्र जाने देना नहीं चाहते थे। उन्होंने श्री ला० हंसराज जी गुप्त, श्री बाबा मिलखासिंह जी तथा रा० सा० गोपीचन्द जी सहगल की सब कमेटी बना कर श्री पुरोहित जी से मिलकर सर्व सम्मत समझौता मान लिया। श्री पण्डित जी इस अग्नि परीक्षा में खरे उतरे। निश्चय यही हुआ कि संस्कारों व यज्ञों में प्राप्त दक्षिणा श्री पुरोहित जी की ही होगी तथा दान आर्य समाज का। जिन संस्कारों में समाज को दान प्राप्त न हो तो पुरोहित जी अपनी दक्षिणा में से कुछ आर्य समाज को स्वयं दान दे देंगे।

आर्य समाज हनुमान रोड में श्री पंडित जी ने १ अगस्त सन् १९३५ ई० से ३१ दिसम्बर सन् १९८० ई० तक ४५ वर्ष ५ मास तक प्रतिष्ठा पूर्वक दीर्घकालीन सेवा कार्य करके न केवल आर्यजगत् में अपितु पुरोहित के लिये भी उच्च आदर्श उपस्थित किया जो अनुकरणीय तथा वाञ्छनीय है। इस काल में श्री पंडित जी ने ९५४१ संस्कार तथा ८४५७ विविध यज्ञ कराये जिनसे आर्य समाज हनुमान रोड को ३ लाख ९२ हजार ८७७ रुपये तथा आर्य अनाथालय व आर्य कन्या पाठशालादि संस्थाओं को ७५०५) दान में प्राप्त हुए।

इन संस्कारों तथा यज्ञों के अतिरिक्त श्री पंडित जी ने २३४१ पारिवारिक सत्संग कराये तथा दिल्ली व अन्य स्थानों पर ३७९६ व्याख्यान दिये। दिल्ली के अतिरिक्त जिन ग्रामों व नगरों में श्री पंडित जी गये उनके नाम निम्न प्रकार हैं।

(१) खेंखड़ा (२) भोंगल (३) गदपुरी (४) बादशाहपुर जि० गुड़गांव (५) बहादुर गढ़ (६) घरौंडा जि० करनाल (७) पुन्हाना जि० गुडगांव (८) ताजपुर जि० रोहतक (९) नारायणा (१०) मांढे महाराष्ट्र (११) दयानन्द वैदिक आश्रम गदपुरी (१२) ग्राम कड़े खां (१३) बक्सर जि० मेरठ (१४) कुली कैम्प पुराना किला (१६) ग्राम तुगलकाबाद (१७) थन्थरी तहसील बल्लभ गढ़ (१८) ग्राम मदनपुर (१९) साहिबाबाद दौलतपुर (२०) ग्राम मस्जिद मोठ (२१) नांगल राया (२२) ग्राम जोरबाग (२३) तेखण्ड (२४) डुम-रौली (२५) हथींन (पल्वल) (२६) ग्राम शाहपुर जट (२७) नवगांव (मथुरा) (२८) अटेरना (नरेला) (२९) तिगांव (३०) नरेला (३१) ग्राम मुखमेलपुर (३२) सक्खर (सिन्ध) (३३) थरड़ी मुहब्बत (सिन्ध) (३४) राघन (सिन्ध) (३५) जोरबाग नसंरी (३६) ग्राम अनंदपुर (३७) मोड़बन्दर (३८) ग्राम अनखोर (३९) दौलताबाद ((४०) बदरपुर (४१) ग्राम कोटला मुबारिक पुर (४२) बावली (बड़ौत) (४३) रुकनपुर (मेरठ) (४४) एहमदपुर (४५) कटेवड़ा (औचन्दी) (४६) जहीराबाद (हैदराबाद दक्षिण) (४७) अहमद पुर (हैदराबाद दक्षिण) (४८) उमरी (हैदराबाद) (४९) कलमनूरी (५०) बोलारम (हैदराबाद) (५१) टटीहरी (बागपत) (५२) पानी-पत (५३) आगरा (५४) मुंगेर (बिहार)।

श्री पंडित जी के समय में आर्यसमाज के प्रधान श्री गोपीचन्द जी सहगल (सन् १९३५ से ३६ तक तथा १९४४ से ४६ तक), रा० सा० श्री शादीराम जी (१९४० से ४३ तक); श्री प्रो० रामदेव जी (१९४७ ई०) श्री ला० हंसराज जी गुप्त (१९४८ से ५४ तक); श्री ला० मेलाराम जी (१९५५ से ७० तक); श्री सरदारी लाल जी वर्मा (१९७१ व ७२ ई०) तथा श्री राममूर्ति जी केला (१९७३ से ८० तक) रहे।

मन्त्री श्री पं० रामशरण जी (१९३५ से ३७ तक); श्री त्रिलोकी नाथ जी वर्मा (१९३८ से ४० तक, १९४२ व ४३ तथा १९४५ व ४६); श्री दीवानचन्द (१९४१ ई०); श्री कुन्दन लाल जी (१९४४ ई०); श्री टेकचन्द जी (१९४७ ई०); श्री दीवानचन्द जी वकील (१९४८ ई०) श्री रामनाथ जी भल्ला (१९४९ से ५१ तक; १९५५ व ५६); श्री जसवन्तराय जी (१९५२ से ५४ तक); श्री सरदारी

लाल जी वर्मा (१९५७ से ६१ तक; १९६३ से ६५ श्री देशराज जी खन्ना (१९६२ ई०); श्री हरवंश लाल जी बहल (१९६६ से ६८ तक तथा १९७३ से १९७५ तक); श्री सुभाष जी विद्यालङ्कार (१९६९ से ७२ तक); श्री हर कृष्ण लाल जी सहदेव (१९७६ ई०); तथा श्री विमल चन्द्र जी 'विमलेश' (१९७७ से ८० तक)।

श्री पंडित जी ने जो महत्वपूर्ण विशेष विवाह संस्कार कराये उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :—

(१) २५ दिसम्बर सन् १९३५ ई० को दिल्ली के पुराने आर्य कार्यकर्ता श्री हरिसिंह जी खलीफा की पुत्री राजदुलारी का विवाह कराया।

(२) ८ फरवरी १९३६ ई० को श्री पं० देवकी नन्दन जी शर्मा उप प्रधान आ० स० शाहदरा की सुपुत्री शान्ति देवी का विवाह कराया।

(३) २४ अप्रेल १९३६ ई० को श्री रामचन्द्र जी चैलपुरी की पुत्री सरला देवी का विवाह श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी विद्यावाचस्पति से कराया जो बाद में सालवान हा० सै० स्कूल के संस्कृताध्यापक तथा आ० स० राजेन्द्रनगर के पुरोहित रहे। आर्य समाज लन्दन के पुरोहित इनके सुपुत्र अशोक का विवाह संस्कार कराया।

(४) ३ मई सन् १९३६ को आ० स० करौल बाग के जोशीले धर्म प्रचारक श्री म० धर्मदेव जी की पुत्री लाजवती का विवाह कराया।

(५) ७ दिसम्बर सन् १९३६ को श्री विष्णुसहाय जी का विवाह रा० सा० सूरजनारायण की पुत्री के साथ कराया। विष्णुसहाय जी दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड के कई वर्ष तक सैक्रट्री रहे।

(६) ३१ जनवरी १९३७ को एम० बी० हायर से० स्कूल के प्रिन्सिपल श्री राधाकृष्ण जी भटनागर के भ्राता श्री बालकृष्ण जी की पुत्री प्रेमवती का विवाह श्री मदन मोहन स्वरूप जी से कराया और उनकी पुत्री का विवाह भी कराया।

(७) ६ मार्च सन् १९३७ ई० भगत श्रीराम जी प्रधान आ० स० पानीपत की पुत्री शकुन्तला देवी का विवाह कराया।

(८) ७ मई १९३७ को आ० स० हनुमान रोड के प्रधान रा० सा० गोपीचन्द जी सहगल की पुत्री सत्यवती का विवाह कराया।

(९) १६ जून १९३७ सेठ बनवारी लाल जी पंचकुइयां रोड के भ्राता तथा आर्य समाज जींद शहर के मन्त्री श्री राम प्रकाश जी सर्राफ की पुत्री लीलावती का विवाह कराया।

(१०) २० नवम्बर १९३७ ई० को श्री ला० मुल्तानी राम जी ठेकेदार राजा बाजार को पुत्री वीरमती का विवाह श्री फकीर चन्द जी B.A., LL. B. से कराया जो आजकल दिल्ली के प्रसिद्ध एड्वोकेट हैं।

(११) २८ नवम्बर १९३७ को बैरिस्टर श्री राज किशन जी सरकारी वकील अमृतसर के पुत्र श्री बालमुकन्द जी का विवाह हिसार में श्री शेखर चन्द जी जैन की पुत्री से कराया।

(१२) १२ दिसम्बर १९३७ को श्री धर्मप्रकाश जी चार्टर्ड एकाउन्टेंट पहाड़गंज की बहिन दयावती का विवाह कराया। २२ फरवरी १९७० ई० को इनके पुत्र विजय खोसला का विवाह विक्रम होटल के श्री ओम् प्रकाश जी की पुत्री किरण के साथ कराया।

(१३) ३ अक्तूबर १९३८ को श्री ला० मेलाराम ठेकेदार २ कलिंग रोड की पुत्री राजकुमारी का विवाह कराया।

(१४) २५ जनवरी १९३९ ई० को इम्पीरियल सिनेमा पहाड़गंज के मालिक श्री मोहन लाल जी व सोहन लाल जी की बहिन शान्ति देवी का विवाह श्री विमलचन्द्र जी से कराया।

(१५) २६ जनवरी १९३९ को श्री इन्द्र प्रसाद जी ४९ मारकेट रोड की पुत्री शीला का विवाह श्री गुरुदेव शरण जी एम० ए० से कराया जो बाद में केन्द्रीय सरकार के वित्त विभाग में Financial Adviser बने। इनकी पुत्री उषा का विवाह ५ फरवरी १९६५ को तथा पुत्र विनोद कुमार का विवाह २३ अप्रैल १९७० को कराया।

(१६) १७ अप्रैल १९३९ को जैन हाई स्कूल पानीपत के मेरे हैडमास्टर तथा आर्य कालेज पानीपत के प्रोफेसर श्री केशचन्द्र जी एम० ए० एल० टी० के पत्र रमेशचन्द्र का जगाधरी जि० अम्बाला में विवाह कराया।

(१७) २४ अप्रैल १९३९ को श्री केसर चन्द जी सेठ बेयर्ड स्क्वेयर की पुत्री का विवाह आर्यसमाज जम्मू के प्रधान प्रसिद्ध आर्य श्री ला० ईश्वरदास जी मल्होत्रा के पुत्र मुल्कराज मल्होत्रा से कराया।

(१८) १ मई १९३९ को आर्यसमाज हनुमान् रोड के उपमंत्री श्री सरदारसिंह जी की पुत्री कृपा देवी का विवाह उनके ग्राम बिचौला जि० बुलन्दशहर में जाकर कराया।

(१९) ७ मई १९३९ ई० को प्रसिद्ध आर्य ठेकेदार श्री बाबा मिलखासिंह जी १४ बाराखम्बा रोड की पुत्री शान्ता विद्यालङ्कृता (अब प्रोफेसर कालेज) का विवाह श्री हरिवंश जी कोछड़ विद्यालङ्कार एम. ए. (जो बाद में गवर्नमेन्ट कालेज नैनीताल में हिन्दी प्रोफेसर बने। के साथ कराया। इनकी पुत्री नीरजा का विवाह २२ मार्च १९७२ को प्रसिद्ध आर्य नेता श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आ. प्र. सभा पंजाब के पुत्र चन्द्रमोहन (सम्पादक वीर प्रताप जलन्धर। के साथ कराया।

(२०) ११ जून १९३९ को श्री गणेशी लाल जी रिटायर्ड तहसीलदार प्रधान आर्य समाज अलवर के पुत्र राजेन्द्र कुमार का विवाह कराया।

(२१) ७ दिसम्बर १९३९ को आर्य समाज सदर बाजार के प्रसिद्ध कार्यकर्ता चौ० लक्ष्मी नारायण जी की पुत्री का विवाह कराया।

(२२) २६ दिसम्बर १९३९ को शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री सांख्यतीर्थ आचार्य गुरुकुल सिकन्दराबाद की पुत्री शकुन्तला का विवाह पं० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित एम. ए. (प्रिन्सिपल आर्य कालेज पानीपत तथा अब स्वा. विद्यानन्दजी के साथ कराया, इस विवाह की विशेष घटना यह हुई कि पं० जी ने विवाह संस्कार की दक्षिणा लेने से इन्कार कर दिया परन्तु श्री देवेन्द्रनाथजी का आग्रह था कि दक्षिणा अवश्य लेनी पड़ेगी इस पर आ० स० नयाबांस के प्रधान श्री ला. बुद्धिप्रकाश जी ने पं० जी के सुझाव दिया कि आप दक्षिणा लेकर श्री पण्डित जी की पुत्री शकुन्तला को भेंट कर दो तदनुसार ऐसा ही किया गया।

(२३) २० जनवरी १९४० को रायबहादुर ला. देवीसिंह जी २९ राजपुर रोड की पुत्री का विवाह कराया।

(२४) २९ फरवरी १९४० को श्री सी. एल. कैटरमल स्टेट इन्जीनियर रियासत टीकमगढ़ की पुत्री चम्पा रानी का विवाह श्री के. ए. भोला से मार्केट रोड नई दिल्ली में कराया। श्री के. एल. भोला बाद में दिल्ली के डिप्टी पोस्ट मास्टर जनरल हो गये और २० नवम्बर १९७० को उनकी पुत्री डा० रेखा का विवाह बैरिस्टर डी. ए. मेहता के पुत्र प्रमोद मेहता से कराया।

(२५) २ मार्च १९४० को जैन हाई स्कूल पानीपत के सैकिण्ड मास्टर श्री ब्रह्मानन्द जी गोयल का पुनर्विवाह श्री बी. आर. सिंहल C. E. (लन्दन) की विधवा पुत्री से ३ दरिया गंज में कराया।

(२६) ९ मार्च १९४० को श्री काशी प्रसाद जी एम. ए., एल-एल बी मुन्सिफ सीतापुर (उत्तर प्रदेश) के भ्राता का विवाह ४२ बाबर रोड पर कराया।

(२७) ९ मई १९४० को आ. स. हनुमान् रोड के सदस्य श्री रविदत्त जी की पुत्री किरण देवी का विवाह उनके ग्राम सुरजावली निकट अरनिया जि० बुलन्दशहर में कराया।

(२८) १७ मई १९४० को श्री विद्यादत्त जी प्रेमी पत्रकार दैनिक 'तेज' (उर्दू) की पुत्री गार्गी देवी भूषण का विवाह कराया।

(२९) १९ मई १९४० ई० को आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता श्री प्रो० रामसिंह जी की पुत्री सरला का विवाह कराया।

(३०) ८ दिसम्बर १९४० को श्री मा० अनन्तरामजी एम. ए. बी. टी. हैडमास्टर रामजस हाई स्कूल डाक्टर्स लेन की पुत्री कृष्णा कुमारी का विवाह मजीठ जि० गुजरावाला निवासी श्री रुल्यारामजी एम. ए. बी. टी. से कराया। ये बाद में दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स' में सहायक सम्पादक बने। ५ मई १९७४ को इनके पुत्र अरुणकुमार का विवाह प्रसिद्ध वैष्णव सन्त नरसी मेहता के वंश में उत्पन्न गुजराती कन्या से कराया।

(३१) १ फरवरी को श्री हरिदास जी सूद बी. ए., एल-एल-बी के पुत्र सुरेन्द्रनाथ सूद का विवाह रैडक्रास आफिस के श्री प्यारेलालजी

की पुत्री से कराया। १६ नवम्बर १९६८ को इनकी पुत्री पूर्णिमा का विवाह कराया।

(३२) २८ फरवरी १९४१ को आ. स. हनुमान् रोड के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री चेलाराम जी एस. डी. ओ. की पुत्री प्रकाशवती का विवाह श्री जगदीशचन्द्र कूबा से कराया। १२ मार्च १९६८ को इनकी पुत्री मञ्जू का विवाह कराया।

(३३) ३ मार्च १९४१ को महात्मा गांधी जी की प्रमुख शिष्या डा० सुशीला नैयर की बहिन डा० सत्यवती नैयर का विवाह लै० कर्नल बसन्तलाल जी मल्होत्रा I.M.S. से कराया। १४ मार्च १९७१ को इनकी पुत्री आशा का विवाह ११ लोधी एस्टेट की कोठी में श्री योगेश गान्धी से कराया।

(३४) ६ जून १९४१ को आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्ता श्री द्वारिका प्रसाद जी 'सेवक' की पुत्री प्रेमलता 'सेवक' का विवाह प्रिन्सिपल राधाकृष्ण जी भटनागर के सम्बन्धी श्री प्रयाग राजकृष्ण से कराया। १५ मई १९७२ को इनकी पुत्री सविता तथा सुनीता के विवाह राजौरी गार्डन में कराये।

(३५) १७ जून १९४१ को आ. स. हनुमान् रोड के पुस्तकाध्यक्ष श्री म० रामचन्द्र जी की पुत्री रूपवती का विवाह उनके ग्राम नाऊ नगलिया निकट जहांगीराबाद जि० बुलन्दशहर में कराया।

(३६) ३ जुलाई १९४१ को आ. स. हनुमान् रोड के उपप्रधान ला० ऋषिराय जी (acounts officer A. G. C. R.) की पुत्री शान्ति देवी का विवाह श्री बलराज जी से कराया।

(३७) १० जुलाई १९४१ को रा. सा. दीपचन्द जी ११ कीलिंग रोड की पुत्री पुष्पावती का विवाह कराया।

(३८) २८ सितम्बर १९४१ को आ. स. हनुमान् रोड के मन्त्री तथा रेलवे के Compliments officer श्री टेकचन्द जी की पुत्री स्नेह प्रभा का विवाह अमृतसर के प्रसिद्ध आर्य सेठ श्री राधाकृष्ण जी के पुत्र ओमप्रकाश जी से कराया जो बाद में प्रसिद्ध प्रकाशन राजकमल पब्लिकेशन्स से सम्बद्ध रहे।

(३९) २० नवम्बर १९४१ को आर्यसमाज के प्रसिद्ध ठेकेदार श्री रुलियाराम २ कीलिंग रोड की पुत्री मान कुमारी का महात्मा आनन्द स्वामी जी के जामाता श्री नारायणदास जी कपूर के अनुज कृष्णचन्द्र कपूर के साथ विवाह कराया।

(४०) २२ नवम्बर १९४१ को आर्यसमाज करौलबाग के कार्य-कर्ता प्रो० मथुरादास की पुत्री का विवाह कराया।

(४१) २३ नवम्बर १९४१ को आ. स. शिमला के मन्त्री श्री श्रीकृष्ण जी कैंकर के पुत्र चान्द कृष्ण का विवाह प्यारेलाल एन्ड सन्स के कैशियर श्री रमेशचन्द्र की पुत्री से धर्मशाला रंग महल में कराया।

(४२) १८ फरवरी १९४२ को श्री ला० द्वारिकादास की पुत्री का विवाह श्री धर्मपाल जी चोपड़ा से कराया।

(४३) ३० अप्रैल १९४२ को श्री ला० मेलाराम जी २ कीलिंग रोड के पुत्र विक्रमजीत नागर का विवाह श्री रामनाथ जी सहगल की पुत्री रामप्यारी बी. ए. से कराया। १४ अक्तूबर १९७२ को इनके पुत्र विजय नागरथ का विवाह कराया।

(४४) ३ अगस्त १९४२ को श्री मा० नन्दलाल जी पलिता हैडमास्टर गवर्नमैन्ट मिडिल स्कूल करोल बाग की पुत्री प्रकाशवती का विवाह श्री रामप्रकाश जी सरीन से कराया। २० फरवरी १९७६ को इनकी पुत्री विजय लक्ष्मी का विवाह कराया।

(४५) २० सितम्बर १९४२ को श्री बाबा मिलखासिंह जी १४ बाराखम्बा रोड के पुत्र बाबा दानसिंह का विवाह मसूरी में कराया। इनके पुत्र बाबा आनन्द सिंह का विवाह एटलस साइकिल वाले की पुत्री से कराया।

(४६) ७ फरवरी १९४३ को प्रिन्सिपल जी० एल० दत्ता के बड़े भाई चौ० केदार नाथ जी दत्त की पुत्री विमला देवी P. A. का विवाह श्री प्राणनाथ जी बाली B. sc. से कराया। ये बाद में दिल्ली क्लाथ मिल की फरीदाबाद स्थित हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लाश फैक्टरी के विशेष अधिकारी बने।

(४७) ६ फरवरी १९४३ को आ० स० हनुमान रोड के मन्त्री श्री पं० निरञ्जन देव जी B-A. B.T. की पुत्री उर्मिला F.SE. का विवाह श्री शान्ति भूषण जी शर्मा B.SC. ,LL.B. से मौडल बस्ती में कराया।

(४८) २६ फरवरी १९४३ को कैप्टेन जगन्नाथ जी आहूजा (जो आजकल स्वा० जगदीश्वरानन्द जी के नाम से विख्यात हैं। के पुत्र राजेन्द्रनाथ जी का विवाह श्री शिव लाल जी रामनगर की पुत्री सावित्री देवी से कराया। २१ नवम्बर १९७३ को इनके पुत्र अर्जुन कुमार का विवाह कराया।

(४९) १७ अप्रैल १९४३ को राय साहब भगवान चन्द जी सूद करौल बाग की पुत्री पद्मावती का विवाह कराया। इनके पुत्र श्री कश्यप जी की आर्य अनाथालय पाटौदी हाउस की विल्डिंग में Envelope फैक्टरी है।

(५०) ७ मई १९४३ को श्री टेकचन्द जी Superintendent पावर हाउस राजघाट के पुत्र रणधीर सिंह का विवाह कराया जो 'जैन्टिल' नाम से भारत के प्रसिद्ध हाकी खिलाड़ी बने।

(५१) १६ जून १९४३ को श्री अनन्तराम जी खन्ना हैडमास्टर रामजस स्कूल की पुत्री प्रकाशवती शास्त्रिणी एम. ए. बी. टी. का विवाह श्री केशव चन्द्र जी बुग्गा एम. ए., एल. एल. बी. से कराया। १५ अक्तूबर १९७८ को इनके पुत्र वीरेश का विवाह कराया।

(५२) ८ जुलाई १९४३ को N.D.M.C. के एसिस्टैन्ट सैक्रेटरी श्री देशराज जी की पुत्री का विवाह थाम्पसन् रोड पर कराया।

(५३) ११ जुलाई १९४३ को भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर-शान्ति स्वरूप जी भटनागर के पुत्र आनन्द स्वरूप जी भटनागर का विवाह श्री महेश बिहारी लाल जी की पुत्री शकुन्तला भटनागर से १३ फीरोजशाह रोड पर कराया। ५ अक्तूबर १९७३ को इनकी पुत्री गीता का विवाह इनकी कोठी ८४ लोधी एस्टेट पर कराया।

(५४) १८ मई १९४४ को प्रो० सुधीर कुमार जी गुप्त एम. ए., पी. एच. डी. का विवाह श्री बा० चुन्नीलाल जी वकील की पुत्री से

गुडगांवा में कराया। आजकल ये जयपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं।

(५५) १ मार्च १९४९ को बा० रामगोपाल जी Goint Secretary Finance Deptt. Govt. of India की पुत्री सुशीला देवी का विवाह श्री विजय कुमार जी से १३ अकबर रोड पर कराया।

(५६) ११ अप्रैल १९५१ को जम्मू के भूतपूर्व वजीर राम रतन की पुत्री प्रमिला रतन का विवाह कोठी नं० ३ मानसिंह रोड पर कराया। इस विवाह में भारत के प्रधान मन्त्री श्री पं० जवाहर लाल नेहरू भी उपस्थित थे।

(५७) ३१ अक्तूबर १९५३ को प्रिन्सिपल उग्रसेन जी भार्गव कालेज शिमला के पुत्र श्री सत्येन्द्र कुमार जी डिप्टी कमिश्नर नागपुर का विवाह श्री मनोहर लाल जी सूद की पुत्री स्वर्णा से कोठी न० २० अशोक रोड पर कराया।

(५८) ३० दिसम्बर १९५३ को मैडिकल कालेज इन्दौर के प्रोफेसर श्री डा० बी. डी. गुप्त के पुत्र भूपेन्द्र भूषण गुप्त का विवाह कामनवैल्थ इन्स्योरेन्श कम्पनी के श्री ओम् प्रकाश जी गुप्त की कन्या से कर्जन रोड पर कराया।

(५९) ९ मार्च १९५६ को प्रसिद्ध उद्योगपति श्री कर्मचन्द जी थापर के पुत्र ब्रजमोहन जी थापर आयु ३३ वर्ष का विवाह श्री प्राणनाथ सिंह जी की पुत्री सुलोचना सिंह से पंचकुइयां रोड की एक कोठी में कराया।

(६०) २९ नवम्बर १९५८ को प्रसिद्ध व्यवसायी श्री के. सी. महेन्द्रा के भतीजे सुरेशचन्द्र महेन्द्रा का विवाह महारानी मन्द्री की पुत्री इन्दिरा कुमारी के साथ श्री देवराज जी वढेरा की कोठी १५ बारा खम्बा रोड पर कराया।

(६१) २२ जनवरी १९५९ को पंजाब नैश्नल बैंक अन्डर हिल रोड के मैनेजर श्री अमरसिंह जी पुरी की पुत्री किरण का विवाह अमृतसर के श्री राजेन्द्र मेहरा से कराया।

(६२) ८ अक्तूबर १९५१ को श्री ला० गणपतराय तलवाड़ ३७ हनुमान् रोड के पुत्र डा० महेन्द्र तलवाड़ का विवाह महात्मा हंसराज जी के पुत्र तथा पंजाब नेशनल बैंक के चेयरमेन श्री ला० योधराज जी की पुत्री से १२ हेली रोड पर कराया। डा० तलवाड़ का पूसा रोड पर प्रसिद्ध Talwar's Narsing Home है। २३ फरवरी १९८० को इनके पुत्र संजय का मुकुट बन्धन कराया। बारात को दिल्ली से बाहर जाना था।

(६३) ५ मई १९५९ को रायबहादुर श्री दुर्गादास जी के पुत्र श्री हरनामदास जी स्कन्द की पुत्री लीना का विवाह प्रसिद्ध उद्योग पति श्री कर्मचन्द जी थापर के दूसरे पुत्र मनमोहन थापर के साथ ८ कर्जन रोड पर कराया।

(६) १२ दिसम्बर १९५९ को प्रसिद्ध पत्रकार तथा "ट्रिब्यून" लाहौर के एडीटर श्री राणा जंगबहादुरसिंह जी की पुत्री सुषमा का विवाह श्री कुलदीप जी से निजामुद्दीन ईस्ट में कराया।

(६५) १९ फरवरी १९६१ को हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यकान्त जी के सुपुत्र कृष्ण कान्त का विवाह मेजर भल्ला की बहिन प्रेम से ३४ खैबर पास मैस में श्री पं० हरिदत्त जी एकादशतीर्थ के सहयोग से कराया

(६६) २८ जून १९६१ को मेरठ के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री रामचन्द्र जी मित्तल की पौत्री शशिप्रभा का विवाह उनको लाल कोठी में कराया।

(६७) २६ अक्टूबर १९६१ को प्रसिद्ध पत्रकार तथा रेडियो वार्ताकार श्री यतीन्द्र भटनागर ९/७ रमेशनगर की बहिन प्रियलता का विवाह आर्य समाज मन्दिर हनुमान् रोड में कराया।

(६८) २२ जनवरी १९६२ को लाहौर के प्रसिद्ध डाक्टर दीवानचन्द जी अग्रवाल १० कर्जन रोड के पुत्र सतीन्द्र कुमार अग्रवाल का विवाह अंजना के साथ आ. स. हनुमान् रोड में कराया।

(६९) १६ नवम्बर १९६२ को श्री पो. एस. धोत्रेकर रीजनल कमिश्नर Employee's Provident Fund के तत्वाधान में कुमारी दत्तात्रेय कुलकर्णी २२ वर्ष का विवाह डा० बी. जी भोपले आयु २७ वर्ष के साथ कराया।

(७०) १२ सितम्बर १९६२ ई० को श्री चिन्तामणि देशमुख वाइस चांसलर दिल्ली की उपस्थिति में मद्रास के टी. वी. आर. चारी का विवाह लीलावती से आर्यसमाज हनुमान रोड में कराया।

(७१) ५ दिसम्बर १९६२ ई० को प्रसिद्ध कार्यकर्त्तृ श्रीमती कौशल्या मलिक म्युनिसिपल कमिश्नर की पुत्री डा० ललिता का विवाह रोहतक रोड पर कराया।

(७२) १० जनवरी १९६३ ई० को श्री न्यादरमल जी गुप्त एडवोकेट प्रधान आर्य समाज सीताराम बाजार की पुत्री कृष्ण गुप्ता का विवाह उनके मकान कूंचा हरजसमल में कराया।

(७३) २१ अप्रैल १९६३ ई० को कश्मीर राज्य के भूतपूर्व मंत्री स्वर्गीय मेहता जी तथा श्रीमती कृष्णा मेहता की पुत्री कमलेश का विवाह १६ जनपथ पर कराया। इस विवाह में श्रीमती इन्दिरा गांधी जी भी पधारी थीं।

(७४) १६ जून १९६४ ई० को श्री आर. के. श्री वास्तव डिप्टी सेक्रेटरी होम मिनिस्ट्री की बहिन रक्षा का विवाह सागर निवासी श्री मनोहर वर्मा से कराया।

(७५) ३ जनवरी १९६५ ई० को उड़ीसा सरकार के अधिकारी श्री नलिनीकान्त पण्डा की पुत्री स्नेहा पण्डा का विवाह श्री श्याम-सुन्दर ठकार से उड़ीसा भवन कौटिल्य लेन में कराया।

(७६) २१ जून १९६५ ई० को आर्य साहित्य ट्रस्ट के संस्थापक श्री दीपचन्द जी आर्य के पुत्र वेदपाल का विवाह अन्य विद्वानों के सहयोग में कराया।

(७७) ६ फरवरी १९६५ ई० को प्रिंसिपल सांईदास जी लाहौर के पौत्र तथा डा० डी० आर० मेहता G-१६ N.D..S.E.-II के पुत्र का विवाह कराया।

(७८) २१ मई १९६६ ई० की श्री श्यामलाल जी एडिटर टाइमज़ ऑफ इण्डिया D-३१ N. D. S..-EII की पुत्री नींना का विवाह कराया।

(७९) ५ जौलाई १९६७ ई० को श्री मूलचन्द जी गर्ग मैनेजर हिन्दुस्तान वैक्यूम फैक्ट्री फरीदाबाद के पुत्र का विवाह कराया।

(८०) ६ मई १९६८ ई० को रूसी हिन्दी कोषकार श्री वीर राजेन्द्र ऋषि ३९७ लक्ष्मीबाई नगर को पुत्री मंजु का विवाह कराया।

(८१) १६ जून १९६८ को उत्तर प्रदेश सरकार के मन्त्री श्री चतुर्भुज शर्मा के सम्बन्धी श्री ब्रजकिशोर शर्मा आयु ३२ वर्ष चारबाग लखनऊ का विवाह कुमारी सरला ३२ वर्ष भूतपूर्व सायरा सिद्दीकी लखनऊ का विवाह आ० स० मन्दिर हनुमान रोड में कराया। दोनों लखनऊ के स्कूल आफ फाइन आर्टस में सहपाठी थे।

(८२) ३ मई १९६९ को प्रिन्सिपल श्री ओम् प्रकाश जी तलवाड़ मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा के भ्राता लन्दन निवासी श्री प्रेम जी तलवाड का विवाह कराया।

(८३) १४ जून १९६९ को प्रसिद्ध Colonizer श्री रामाधार जी ३५ हनुमान रोड की पुत्री वन्दना का विवाह श्री कैलाशनाथ जी वाजपेयी से कराया।

(८४) १२ दिसम्बर १९६९ को प्रसिद्ध कहानी कार श्री चन्द्रगुप्त जी विद्यालंकार की पुत्री रानी का विवाह १३ बाराखम्बा रोड पर कराया। इस विवाह में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री बलराज साहनी भी आये हुए थे।

(८५) २६ जनवरी १९७० को प्रसिद्ध व्यवसायी तथा अरविन्द आश्रम दिल्ली के संचालक श्री सुरेन्द्र नाथ जी जौहर की पुत्री पूर्णिमा का कोठी नं० ११ त्याग राज मार्ग में विवाह कराया।

(८६) ४ अक्तूबर १९७० को श्री विद्यासागर जी गर्ग मैनेजर ग्रेन्ड होटल, सिविल लाइन्स की पुत्री वीरबाला का विवाह कराया।

(८७) २२ नवम्बर १९७० को गुरुकुल कांगड़ी के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी के पौत्र तथा श्री देवेन्द्रनाथ

जी अवस्थी एडवोकेट के पुत्र महेन्द्र कुमार जी का विवाह श्री विश्वनाथ जी की पुत्री नीलम से कराया।

(८८) १२ अगस्त १९७२ को वैदिक पद्धति से विवाह कराने के प्रबल इच्छुक जापानी नबयुवक Kinao Hottari आयु २५ वर्ष तथा जापानी नवयुवती Miziyo Obsoto आयु २५ वर्ष का विवाह आ० स० मन्दिर हनुमान रोड में कराया जिसे उन्होंने बहुत पसन्द किया।

(८९) २८ नवम्बर १९७३ को आर्य समाज लोधी रोड के मन्त्री तथा आजकल आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य के मन्त्री श्री प्राणनाथ जो घई की पुत्री वीरबाला का विवाह श्री देवराज जी चड्ढा उप मन्त्री आ० स० दीवान हाल के पुत्र अरुण कुमार से कराया।

(९०) १६ जनवरी १९७८ को संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री डा० मंगलदेव जी शास्त्री की दौहित्री तथा कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्ता श्री प्रताप सिंह जी लोहिये की पुत्री का विवाह श्री ओम् प्रकाश जी गुप्त सफदरजंग एनक्लेव के पुत्र राकेश कुमार के साथ कराया। विवाह संस्कार से पूर्व १३ जनवरी को राकेश कुमार जीं का यज्ञोपवीत संस्कार भी कराया।

(९१) ११ दिसम्बर १९७४ को आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री बलवन्त राय जी (खन्ना N.D.S.E. II) के पुत्र गुलशन राय का विवाह कराया।

(९२) २८ दिसम्बर १९७४ को लेडी हार्डिंग हस्पताल के डा० वेदप्रकाश मलिक की बहिन पुष्पा मलिक का विवाह डा० खेमसिंह सोलंकी से कराया।

(९३) २८ जनवरी १९७५ को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के कोषाध्यक्ष श्री हरिशंकर जी २३ फायर ब्रिगेड लेन की पुत्री कमलेश का विवाह दिनेश मेहरा से कराया।

(९४) ७ फरवरी १९७५ को दूरदर्शन दिल्ली के कलाकार श्री कुबेर दत्त शर्मा पुत्र श्री सी. आर. सरस का विवाह कुमारी कमलिनी नागराजन् से आ० स० मन्दिर हनुमान रोड में कराया जिसमें अनेक प्रतिष्ठित कलाकार उपस्थित थे और उन्होंने विवाह संस्कार को बहुत सराहा।

(९५) २० मई १९७६ को श्रीमती विद्या वेनजी शाह अध्यक्षा N.D.M.C. की भतीजी सुरभि का विवाह श्री इन्द्र जी वर्मा के पुत्र के साथ क्लैरिजेज होटल में कराया।

(९६) २४ अगस्त १९७६ को शुद्धि संस्कार के पश्चात् सुनील प्रकाश भूतपूर्व सुहैल परवेज २८ वर्ष पुत्र अमजद अली C-७४२ सैक्टर ६ महानगर लखनऊ का विवाह कुमारी मंजुल पाण्डे आयु २४ वर्ष के साथ आ० स० मन्दिर हनुमान रोड में कराया।

(९७) १ अक्तूबर १९७६ को आ० स० हनुमान रोड के योगाभ्यासी श्री डा० साधुरामजी अग्रवाल रामनगर के पुत्र सुरेश मोहन का विवाह कुमारी सीता से दरीबा कलाँ में कराया।

(९८) २५ जनवरी १९७७ को श्रीमती ज्ञानवती दरवार के पुत्र राजीव दरवार का विवाह रानी कश्यप से कोठी न० २९ डा० विशम्भरदास मार्ग में कराया।

(९९) १० जून १९७७ को प्रसिद्ध पत्रकार श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार के सम्बन्धी श्री प्रेमचन्दजी भारद्वाज की पुत्री अनीता का विवाह भी विजय कुमार जी से १३ गुरुद्वारा रकाब गंज रोड पर कराया।

(१००) ४ जूलाई १९७७ को श्री सूर्यदेवजी प्रधान आ० स० दीवानहाल के सम्बन्धी गुना (मध्यप्रदेश) निवासी श्री वीरसेन दुसाज के पुत्र योगेन्द्र का विवाह भीं एम० पी० कुकरेजा की पुत्री कुंकुम एम० ए० से गाजियाबाद में कराया।

(१०१) १६ जौलाई १९७७ ई० को श्री जी० एस० बावा ऐडवोकेट C-५९ स्वामी नगर कीं पुत्री रंजना का विवाह विजय कुमार जी से कराया।

(१०२) २१ अगस्त १९७७ श्री डा० ज्ञानचन्द जी जैन की पुत्री विनीता का विवाह श्री विनोद जैन से कराया।

(१०३) २१ अक्तूबर १९७७ को श्री दुर्गादास जी सरीन २८ बाराखम्बा रोड के पुत्र अनिल कुमार का विवाह रेखा से कराया।

(१०४) ७ दिसम्बर १९७७ को भारत सरकार के उच्च अधिकारी श्री हितप्रकाश जी ४१ भारतींगर की पुत्री अनीता का विवाह श्री सत्यप्रकाश जी बंसल के पुत्र सुशील से कराया।

(१०५) ८ फरवरी १६७४ ई० को आचार्य भगवानदेवजी शर्मा उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का विवाह श्री रामकृष्ण जी भारती की बहिन पद्मा जी से पंजाबी बाग में कराया।

(१०६) १७ अगस्त १६७६ को श्री डा० शिवनन्दन प्रसाद जी डाइरेक्टर पुरातत्व लेखागार के पुत्र आनन्द प्रसाद का विवाह ललिता से तथा ५ मार्च १६७८ को उनके दूसरे पुत्र आलोक प्रसाद का विवाह नन्दिनी सहाय से कराया।

(१०७) १४ दिसम्बर १६७६ को प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री डा० आत्मारामजी की दौहित्री तथा श्री रवीन्द्र कुमार जी की पुत्री ऋता का विवाह ३६ सैंट्रल विस्टा होस्टल में कराया।

(१०८) १२ फरवरी १६७८ श्री डा० भद्रसेन जी C-६५५ न्यूफ्रैन्ड्स कालोनी की पुत्री शरत्‌बाला का विवाह श्री विनोद जी से कराया

(१०९) ४ मार्च १६७८ ई० को प्रोफ़ेसर वेदव्यास जी के भतीजे श्री प्रेमचन्द जी खन्ना ऐडवोकेट ६ नीतिबाग को पुत्री रेखा का विवाह श्री मित्रसेन जी के पुत्र अरविन्द जी से कराया।

(११०) ६ सितम्बर को वेक्फील्ड प्रोडक्टस पूना के श्री एस० सी० कपूर की पुत्री नलिनी कपूर का विवाह श्री राजीव भागो से विक्रम होटल में कराया।

(१११) १५ अक्तूबर १६७६ को श्री भीमसेन जी दीक्षित के पुत्र विजय भूषण का विवाह रोहतक में श्री जी० एस० रामपाल सुप्रिन्टैं-डिंग इन्जोनियर की पुत्री रेखा से कराया।

(११२) ७ नवम्बर १६७६ को श्री राजेन्द्र जी चतुर्वेदी I.P.S की बहिन पूजा का विवाह श्री शादीलाल जी कपूर रोहतक रोड के पुत्र राकेश से आर्यसमाज मन्दिर हनुमान् रोड में कराया।

(११३) २४ नवम्बर १६७६ को श्री रामदेव जी शास्त्री प्रिंसि-पल आयुर्वेदिक कालिज कन्या गुरुकुल खानपुर की पुत्री रंजना का विवाह श्री कुन्दनलाल जो बढेरा के पुत्र अरुण से कराया।

(१२४) १८ दिसम्बर १६७६ को श्री आनन्द सिंह जी विश्नोई भूतपूर्व चीफ इन्जीनियर उत्तर प्रदेश के पुत्र डा० अरविन्द कुमार सिंह का विवाह डा० व्यंकटेशन की पुत्री दीपा से सफ़दरजंग ऐन्क्लेव क्लब में कराया।

(११५) २६ जौलाई १९७९ ई० को डा० रामकिशन जी गोयल मायापुरी की पुत्री डा० अर्चना का विवाह डा० कुलभूषण से कराया।

(११६) ६ मार्च १९८० ई० को श्री मदन मोहन जी सब्भरवाल २७-ए औरंगजेब रोड के भतीजे तथा श्री सूरजप्रकाश जी के पुत्र राजीव का विवाह कु० अमिता से कराया।

(११७) ८ मार्च १९८० को श्री डा० एस० के० भारद्वाज २०७ गोल्फलिंक्स की भतीजी का विवाह श्रीमती सुशीला देवी जी दुआ के पुत्र रूप से कराया।

(११८) ८ जून १९८० को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश के पुरोहित वेदकुमार जी वेदालंकार का विवाह अन्य विद्वानों के सहयोग से कुमारी प्रेमलता वेदशिरोमणि एम० ए० स्नातिका कन्या गुरुकुल हाथरस के साथ आर्य समाज मन्दिर में कराया।

(११९) ११ सितम्बर १९८० ई० को श्रीमती चन्द्रकान्ता जी कोछड़ की पुत्री नलिनी का विवाह मेरठ के प्रसिद्ध कांग्रेसी तथा म्यूनिसिपल बोर्ड के अध्यक्ष श्री मूलचन्द जी शास्त्री के पुत्र अशोक से कराया।

(१२०) १७ अक्तूबर १९८० को श्री रूपनारायण जी चीफ़ इंजीनियर हरियाणा की पुत्री शैली पंडित का विवाह श्री गुरुदत्त जी ज्योति फरीदाबाद के पुत्र राजीव ज्योति से कराया।

(१२१) ११ दिसम्बर १९८० को दिल्ली विश्व विद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० सत्यव्रत जी ३/५४ रूपनगर की पुत्री इन्दुबाला का विवाह श्री बोधराज प्रकाश जी ऐसिस्टेंट कमिश्नर इन्कमटैक्स के पुत्र विनोद से कराया।

१ जनवरी १९८१ से स्वतन्त्रकार्य करने पर अधोलिखित विशेष विवाह कराये :—

(१२२) १६ जनवरी १९८१ को श्रीमती चन्द्रप्रभा जी अटल की पुत्री पुलोमजा का विवाह कमाण्डर सोहनलाल जी मिश्रा के पुत्र रंजन से १० अशोक रोड पर कराया।

(१२३) ९ फरवरी १९८१ को श्री सुदर्शन जी अग्रवाल सेक्रेट्री लोकसभा कार्यालय की कोठी २६ पन्डारा पार्क में श्री हुकमचन्द जी का पुनर्विवाह सन्तोष जी से कराया।

(१२४) २८ फरवरी १९८१ को श्री विमलचन्द्र जी ५० जोर-बाग की पुत्री अर्चना का विवाह श्री गौतम देव जी के पुत्र राजीव से कराया।

(१२५) ११ मई १९८१ को श्री कृष्ण कान्त जी एम० पी० की पुत्री दिव्य दीप्ति का श्री सुनील जी हान्डा से विवाह कराया।

(१२६) १४ अक्तूबर १९८१ को श्री इन्द्र जी सैनन १०० आनन्द लोक के पुत्र तरुण सैनन का विवाह मनोर होटल में कराया।

(१२७) १३ नवम्बर १९८१ को श्री अशोक जी सरीन २८ श्रीराम रोड की बहिन चन्दा का विवाह कराया।

(१२८) २४ नवम्बर १९८१ को हरिवंश जी कोछड़ तथा श्रीमती शान्ता जी प्रोफेसर जानकी देवी कालिज एम० ए० की पुत्री शुचि स्मिता का विवाह क्लरिजेंज़ होटल में कराया।

(१२९) ५ दिसम्बर १९८१ को धर्मवीर जी कपूर १२ तुग़लक लेन (भारत सरकार के उच्च अधिकारी) की पुत्री गीता तथा दीपक पुत्र श्री नारायण जी दीक्षित का विवाह कराया। (द्वारा—प्रधान आ० स० हनुमान रोड राममूर्त्ति जी कैला)।

(१३०) १९ जनवरी १९५५ को श्री हंसराज जी गुप्त के पुत्र शिवराज का विवाह मुंगेर (बिहार) में कु० पुष्पा से कराया तथा २१ दिसम्बर सन् १९८१ को इनकी पुत्री आरती का विवाह आलोक से कराया।

(१३१) १७ जनवरी १९८२ को देवराज जी बढ़ेरा २० ई-पृथ्वी राज रोड के पुत्र नीरज बढेरा का विवाह बिन्दु पुत्री श्रीराम जी सचदेव के साथ ताज होटल में कराया।

(१३२) २४ जनवरी १९८२ को विभा जी सक्सेना आर० के० पुरम् के पुत्र शैलेन्द्र और तरु पुत्री श्री सुरेन्द्र जी भाटिया का विवाह फुलवाड़ी रैस्टोरेन्ट प्रगति मैदान में कराया।

(१३३) २६ जनवरी १९८२ को आर्य समाज के प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशक श्री विजय कुमार जी E-३०६ ईस्ट आफ कैलाश की पुत्री दीप्ति का विवाह श्री पं० नरेन्द्र जी विद्यावाचस्पति के पुत्र राजीव के साथ इन्टर नेशनल पंजाबी हाउस ४३ रिंग रोड में कराया।

(१३४) २७ फरवरी १९८२ को श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त जी की

पौत्री तथा प्रि० श्री चन्द्रदेव जी की पुत्री सोनल का विवाह पवन कुमार के साथ आ० स० मन्दिर में कराया।

(१३५) २४ मई १९८२ को कल्याण सिंह जी गुप्त एम-२/५ ग्रीन पार्क की पुत्री शालिनी का विवाह श्री एस० एन० वधवा के पुत्र राकेश से कराया।

(१३६) ३० सितम्बर १९८२ को S.N. बजाज M-19 ए N. D. S. E. II के पुत्र हरेन्द्रनाथ का विवाह श्री डा० अनूपलाल जी बंगलौर निवासी की पुत्री मंजु के साथ हुआ।

(१३७) १८ अक्तूबर १९८२ को रिजर्व बैंक के भूतपूर्व गवर्नर श्री के० आर० पुरी सागर एपार्टमैन्ट्स के पुत्र सुधीर का विवाह नीना के साथ कनिष्क होटल में कराया।

(१३८) २७ नवम्बर १९८२ को श्री दीवानचन्द जी मित्तल का विवाह हरियाणा के चीफ इंजीनियर श्री मुन्नालाल जी बंसल के पुत्र विवेक बंसल से कराया।

(१३९) २ दिसम्बर १९८२ को विक्रम होटल के श्री बलदेव कृष्ण जी अब्बी के पुत्र दिनेश का विवाह श्री आर० पी० खोसला की पुत्री वीणा से कराया।

(१४०) १२ दिसम्बर को प्रसिद्ध उद्योगपति श्री नेत्र कृष्ण जी सहगल ४ सरदार पटेल मार्ग की पुत्री गीता और विजय कुमार का विवाह ताज होटल में कराया।

(१४१) २६ जनवरी १९८३ को भारत विकास परिषद् के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री बालकृष्ण जी कैला H-19 महारानी बाग की पुत्री नीलम का विवाह कराया।

(१४२) १४ अप्रैल १९८३ को यशपाल जी कोहली ८७ जोर बाग के पुत्र राजीव का विवाह कराया।

(१४३) २४ अप्रैल १९८३ को विद्याभूषण जी सोनी २२-बी महारानी बाग की पुत्री शोभिता का विवाह कराया।

(१४४) २१ मई १९८३ को महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम जी गोयल के छोटे भाई तथा श्री हकीम श्यामलाल जी के पुत्र जवाहर गोयल का विवाह कराया।

(१४५) ३ जौलाई १९८३ को श्री प्रो० शेरसिंह जी प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के० पुत्र डा० तरुण का विवाह चौ० हरवीर सिंह जी सैक्टर ४ आर० के० पुरम् की पुत्री डा० आशा के साथ आर्य समाज मन्दिर जोरबाग में कराया।

(१४६) १८ जौलाई १९८३ को डा० बलदेव लाल जी हांडा B-39 स्वास्थ्य विहार के पुत्र राजीव हांडा का विवाह संगीता के साथ कराया।

(१४७) ११ अगस्त १९८३ को प्रिंसीपल श्री जगदीश नारायण जी भटनागर की पुत्री साधना का विवाह श्री श्याम सुन्दर जी के पुत्र अनिल के साथ कलैरिजेज होटल में कराया।

(१५८) ८ सितम्बर १९८३ को श्री जगदीश जी वधावन M-22 ग्रेटर कैलाश की पुत्री माला का विवाह सुनील कपूर के साथ अशोक होटल में कराया।

(१४९) १२ सितम्बर १९८३ को श्री शान्तिलाल जी डंग बसन्त बिहार के पुत्र अनिल डंग का विवाह श्री महेशचन्द्र जी सरीन सैक्रेटरी मिनिस्ट्री ऑफ डिफैन्स की पुत्री गीता के साथ उनकी कोठी १४ हुमायूँ रोड पर कराया।

(१५०) १७ सितम्बर १९८३ को श्री आर० के० कपूर डाई-रेक्टर C B.I.D-1-207 चाणक्य पुरी के पुत्र अशोक का विवाह चारु के साथ कराया।

(१५१) १२ अक्तूबर को स्व० श्री डा० भगतराम जी पुरी १० जैन मन्दिर रोड के दौहित्र अशोक जुल्का का विवाह श्री एम० एल० कपूर की पुत्री कृष्णा कपूर के साथ तालकटोरा इन्डोर स्टेडि-यम में कराया।

(१५२) १५ अक्तूबर १९८३ को स्व० श्री रामलाल जी चन्डोक अपर इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी के पौत्र तथा श्री विद्या भूषण जी चन्डोक B-483 न्यू फ्रेंड्स कालोनी के पुत्र विवेक का विवाह श्री मदन मोहन मेहता की पुत्री सविता के साथ अशोक होटल में कराया।

(१५३) १८ नवम्बर १९८३ ई० को श्री प्रेमनारायण जी सूद, २ शान्तिनिवास के पुत्र रवि सूद का विवाह श्री गोपाल जी कपूर की पुत्री मधु के साथ वाई० एम० सी० ए० में कराया।

२० नवम्बर १९८३ को राष्ट्रपति भवन के उच्च अधिकारी तथा आ० स० हनुमान रोड के कोषाध्यक्ष श्री देशबन्धु जी भाटिया की पुत्री अन्जु का विवाह रविकुमार के साथ कराया।

(१५४) २१ नवम्बर १९८३ को प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सुशील कुमार जी अंसल की पुत्री अर्चना का विवाह टेलिविस्टा T.V. के निर्माता श्री वेदप्रकाश जीं लूथरा के पुत्र विपिन के साथ कराया।

(१५५) १ दिसम्बर १९८३ को श्री ला० गिरधारी लाल जी २८ टोडरमल रोड के पौत्र राजीव का विवाह श्री सुरेन्द्र कुमार जी की पुत्री हिमानी के साथ सुन्दर नगर में कराया।

(१५६) १० दिसम्बर १९८३ को स्व० श्री बाबा गुरुमुखसिंह के पौत्र तथा श्री बावा हरभजनसिंह के पुत्र अजय का विवाह सविता के साथ मनोर होटल में कराया।

(१५७) ४ जनवरी १९८४ को श्री चन्द्रकान्त का विवाह आर्य स्त्री समाज जोरबाग के तत्वावधान में कु० कश्मीरा (भूतपूर्व कु० शमीम) के साथ कराया। इस विवाह में संसद सदस्य श्री आचार्य भगवान देव जी तथा श्री विट्ठल भाई पटेल (सदस्य राज्य सभा) भी उपस्थित थे।

(१५८) २८ फरवरी १९८१ को श्री बनवारी लाल जी भल्ला ४७ कैलाश अपार्टमेन्ट की पुत्री सुनीता का विवाह इन्द्रसिंह के साथ कराया।

(१५९) १६ जनवरी १९८३ को श्री भगीरथ जी भल्ला आजाद एपार्ट मेन्ट्स की पुत्री उर्वशी का विवाह सिद्धार्थ होटल पूसा रोड में कराया।

(१६०) २२ जनवरी १९८४ को श्री ओमप्रकाश जी पारथी B-2/84 सफदर जंग एन्क्लेव के पुत्र दीपक का विवाह श्री कृष्ण लाल जी कपूर की पुत्री प्रीति के साथ कराया।

(१६१) ६ फरवरी १९८४ को श्री मदनमोहन जी पुरी ३३/४ सादिक नगर की पुत्री रेणु का विवाह कराया।

(१६२) १६ फरवरी १९८४ को श्री हरिकिशन जी शर्मा तथा श्रीमती सुशीला शर्मा एम० ए० अम्बाला की पुत्री बीनू एम० ए० का विवाह कैप्टन अश्विनी के साथ कराया।

(१६३) २३ फरवरी १९८४ को प्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक श्री डा० दीवान हरीश चन्द्र जी के पुत्र विजय का विवाह मधुमती के साथ ओबराय होटल में कराया।

(१६४) ४ मार्च १९८४ को श्री तिलकराज जी तथा श्रीमती रानी मल्होत्रा ३४ हनुमान रोड के पुत्र सुनील और संगीता का विवाह ताज पेलेस होटल में कराया।

(१६५) २ अप्रैल १९८४ को दिल्ली के भूतपूर्व हैल्थ आफिसर श्री डा० गौतम चन्द जी माथुर सर्वोदय ऐन्कलेव की पुत्री नीना का विवाह दिलीप कुमार भट्टाचार्य के साथ उनकी कोठी पर कराया।

(१६६) २२ अप्रैल १९८४ को श्री ओमप्रकाश जी सरोजनी नगर की पुत्री मेखला का विवाह सिद्धान्त शर्मा के साथ कराया।

(१६७) २९ अप्रैल १९८४ को श्री विजयेन्द्र थापर की पुत्री मंजु थापर का विवाह क्लैरिजेज होटल में कराया।
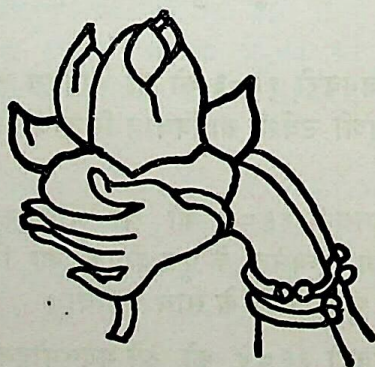
२७ अक्टूबर सन् ७५ को १/१२ सर्वप्रियविहार के गृह-प्रवेश पर

महात्मा आनन्द स्वामी जी का पधारना

श्री पण्डित जी तथा उनकी धर्म पत्नी श्री पं० मदन मोहन जी शास्त्री को गृह प्रवेश कराते हुए।

यज्ञ का दृश्य तथा महात्मा जी का उपदेश

श्री पं० चन्द्रभानु जी भारत सरकार के उच्च अधिकारी श्री टी० एन० श्रीवास्तव के पुत्र केशव का ७ जनवरी सन् ६८ को अमेरिकन कन्या सुनीति के साथ विवाह कराते हुए

रूसी हिन्दी डिक्शनरी के लेखक श्री वीर राजेन्द्र ऋषि की पुत्री मंजु का ६ मई ६८ को विवाह कराते हुए
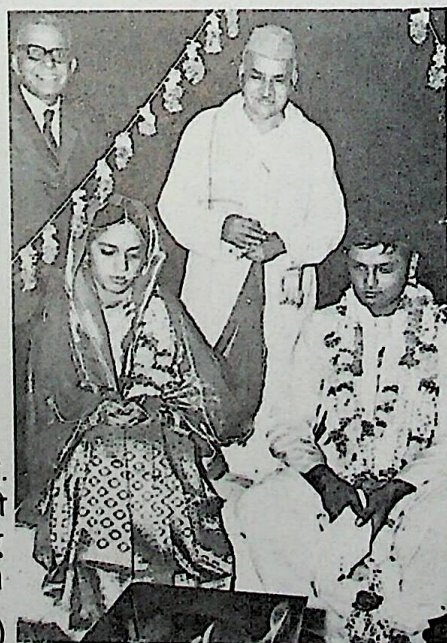
प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती कमला रत्नम् एम.ए. के पुत्र अशोक रत्नम् का ६ सितम्बर ७३ को मृदुला के साथ विवाह कराते हुए श्री पंडित जी।

(देखों संस्मरण पृष्ठ ५१)
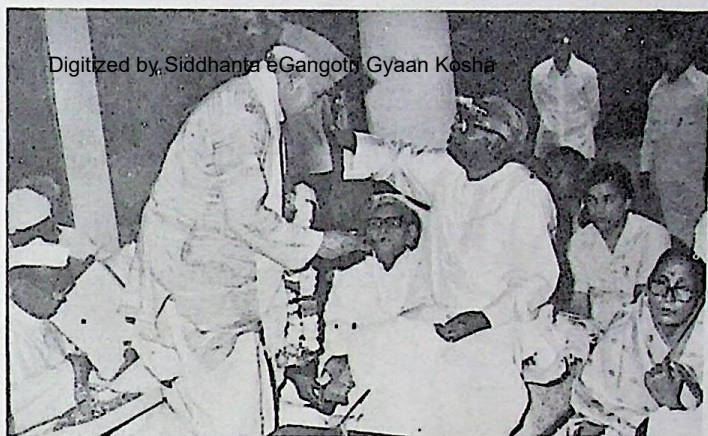
माननीय श्री जगजीवन राम जी अपने जन्मदिवस पर
श्री पण्डित जी को तिलक लगाते हुए
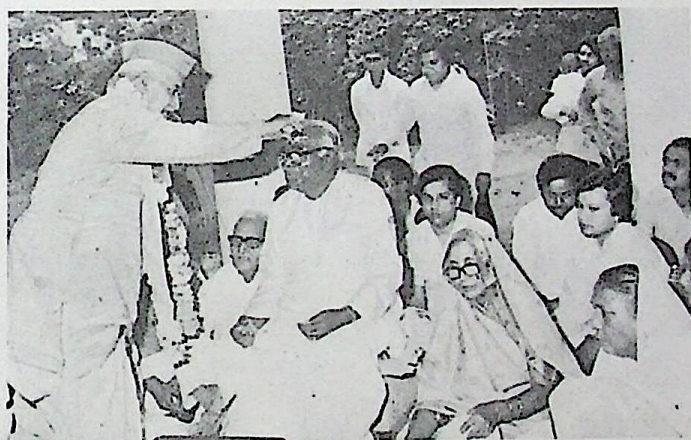
श्री पण्डित जी माननीय श्री जगजीवनराम जी को
उन के जन्मतिथि यज्ञ पर तिलक लगाते हुए।
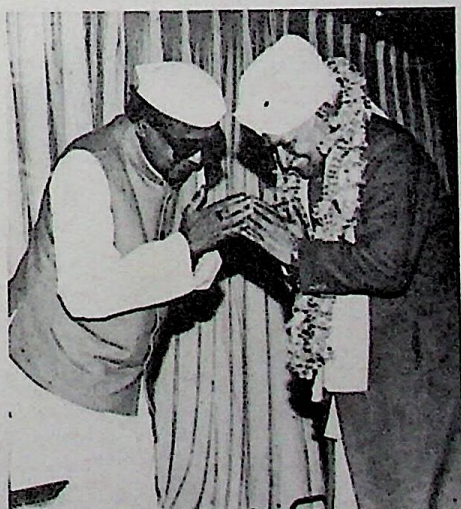
विश्व आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर
श्री यशपाल जी कपूर श्री प. चन्द्रभानु जी का
स्वागत करते हुए।

ईरान में श्री पण्डित जी अपने पुत्र विनय प्रकाश की कोठी पर यज्ञ कराते समय उस के एक मुस्लिम मित्र से वार्तालाप करते हुए। (१९७७ ई.)

श्री पं. चन्द्रभानु जी पेरिस के रेलवे स्टेशन पर। (१९७७ ई)
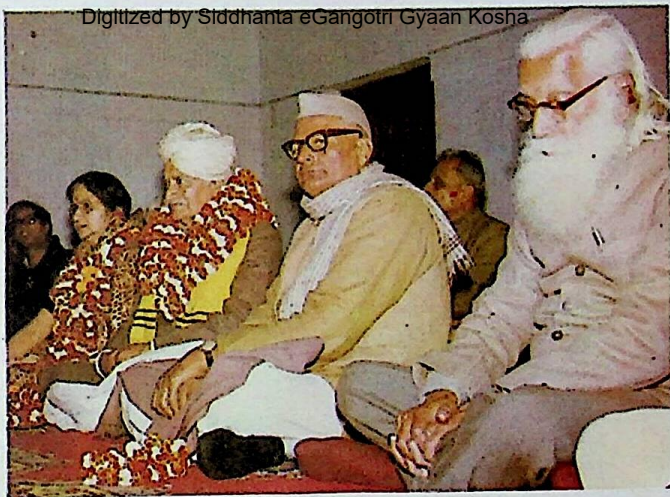
मंच पर विराजमान श्री ला. हंसराज जी गुप्त
श्री पं. शिवकुमार जी शास्त्री (अध्यक्ष) के साथ

१० जनवरी १९८१ को आर्य समाज हनुमान रोड से विदाई समारोह के कुछ चित्र

विदाई समारोह में उपस्थित आर्य नेता तथा आर्य जनता।
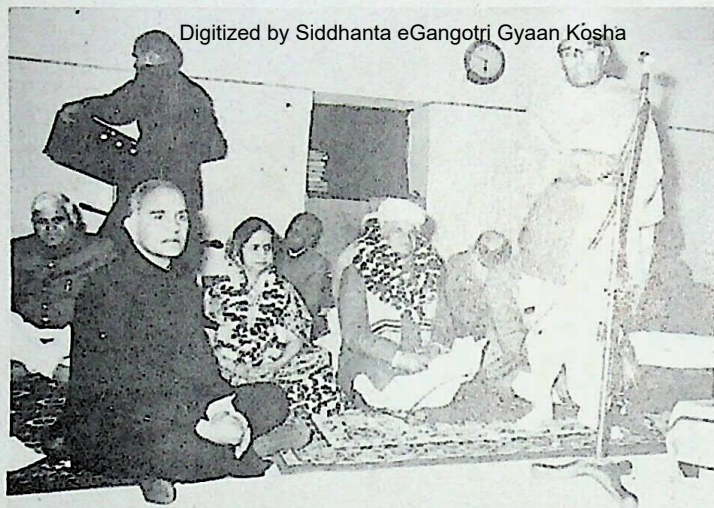
सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान
श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले भाषण करते हुए।

१० जनवरी १९८१ को आर्य समाज हनुमान रोड से विदाई समारोह

आर्य प्रादेशिक सभा के मंत्री
श्री रामनाथ जी सहगल भाषण देते हुए।

श्री राममूर्ति जी कैला प्रधान आर्य समाज हनुमान रोड श्री पण्डित चन्द्रभानु जी को ५१००, रुपये का चैक भेंट करते हुए।

श्री पण्डित जी भाषण देते हुए।
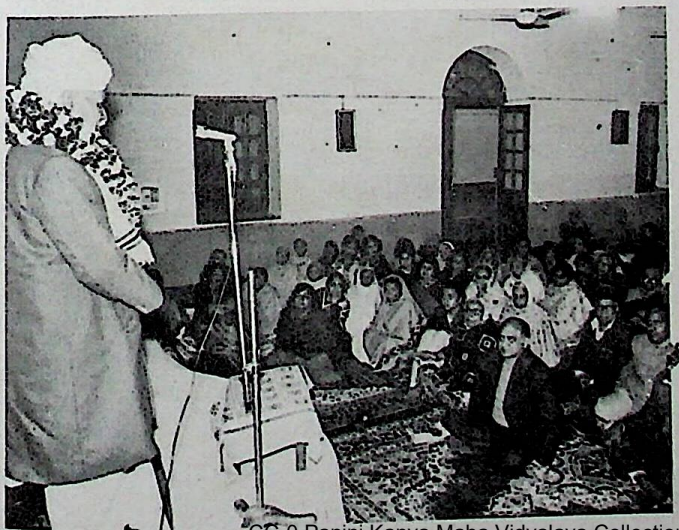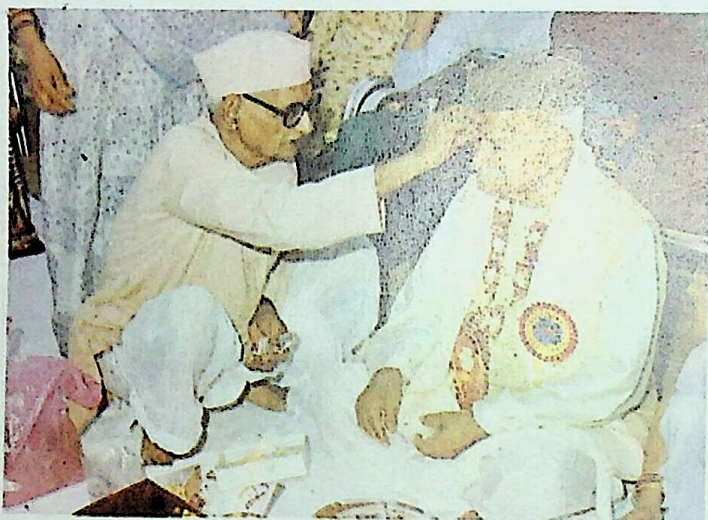
१६ मार्च १९८४ ई. को श्री पण्डित जी के ७५ वें जन्मदिवस पर उन के बहनोई श्री पं. अमरनाथ जी शर्मा तिलक लगाते हुए।

श्री पण्डित जी के ७५ वें जन्मदिवस पर आए हुए रिश्तेदार तथा पड़ौसी।

भारत सरकार के मंत्रियों के गृहों पर कराये गये संस्कार

(१) माननीय श्री जगजीवनराम जी

(१) सन् १९५३ ई० से प्रति वर्ष ५ अप्रैल को इनकी कोठी पर श्री पंडित जी विभिन्न प्रान्तों से आये हुए इनके भक्तों तथा समर्थकों के विशाल समूह की उपस्थिति में जन्मतिथि यज्ञ कराते आ रहे हैं। इस लम्बी अवधि में माननीय श्री जगजीवनराम जी भारत सरकार के श्रम मंत्री, संचार मंत्री, रेलवे मंत्री, रक्षा मंत्री आदि गौरवपूर्ण पदों को सुशोभित करते रहे हैं।

(२) इन के बड़े भ्राता पूज्य श्री सन्तलाल जी तथा पूज्या माता की अन्त्येष्टि संस्कार तथा शोक शान्ति यज्ञ भी श्री पंडित जी ने कराये हैं।

(३) इनकी धर्मपत्नि श्रीमती इन्द्राणी जी बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति की आर्य महिला हैं, ये प्रतिवर्ष नवरात्रि के दिनों में कई सहस्र गायत्री मंत्रों का जप करती हैं, तथा रामनवमी को इस जप यज्ञ की पूर्णाहुति श्री पण्डित जी कराते हैं। जिसमें स्वयं श्री जगजीवनराम जी तथा उनका पूरा परिवार श्रद्धापूर्वक भाग लेता है।

(२) श्री इन्द्रकुमार जी गुजराल

(१) १८ मार्च को श्री इन्द्रकुमार जी गुजराल ने भारत सरकार के मंत्रीपद को संभाला और वे कई वर्ष तक विभिन्न मंत्रालयों में कार्य करते रहे। प्रतिवर्ष १८ मार्च की श्री पंडित जी उनके कार्य-भार संभालने में अधिक उत्तम रीति, परिश्रम तथा कर्त्तव्य निष्ठा और प्रभु का आशीर्वाद लेने के लिए उनकी कोठी में विशेष यज्ञ कराते रहे।

(२) श्री गजराल जी के छोटे भाई श्री सतीश जी गुजराल जो भारत के प्रसिद्ध चित्र कलाकार हैं तथा इनके बहनोई श्री कृष्ण

लाल जी नन्दा जो रेलवे के उच्च अधिकारी हैं, अनेक संस्कार श्री पंडित जी ने कराये हैं।

(३) श्री गुजराल जी जब भारत सरकार की ओर से रूस में भारत में राजदूत मनोनीत हुए तो उनकी ६ नं० मोतीलाल नेहरू वाली कोठी पर विशेष यज्ञ कराया। और उनकी सफलता के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

(४) जब श्री गुजराल जी मास्को में राजदूत पद पर थे तब २२ दिसम्बर १९७८ ई० को श्री पंडित ने उनके पुत्र विशाल का दिल्ली में विवाह संस्कार कराया।

(३) श्री महावीर जी त्यागी

(१) श्री त्यागी जी जब वित्त मंत्रालय के राज्य मन्त्री थे तब उनकी पुत्री उमा का ३४ पृथ्वीराज रोड पर विवाह कराया।

(४) श्री प्रोफेसर शेरसिंह जी

(१) १५ अगस्त १९६९ ई० को जब वे राज्य मन्त्री थे उनकी पुत्री वत्सला का विवाह श्री बलबीर जी के साथ उनकी हेस्टिंग्स रोड वाली कोठी पर कराया।

(२) १० नवम्बर १९७८ ई० को इनके तथा इनकी धर्मपत्नी प्रभात शोभा के तत्वावधान तथा सहयोग से राज शर्मा और चन्द्र-प्रकाश शर्मा का विवाह डी. १३५ न्यू राजेन्द्र नगर में कराया।

(३) ७ जोलाई १९८३ ई० को इनके पुत्र डा० तरुण का विवाह चौ० हरबीरसिंह जी पुत्री डा० आशा का विवाह आ० स० मन्दिर जोर बाग में कराया।

(५) श्री कुंवर सुरेन्द्रपालसिंह जी

विदेश सचिव की नवनिर्मित कोठी W-29 ग्रेटर कैलाश का गृहसंस्कार १७ मई १९७३ को कराया।

(६) श्री देशराजसिंह जी

उप सचिव के द्वारा शुद्धि ३ मई १९७४ को उनकी C-1/12 लोधी गार्डन में कराई गई।

(७) श्री अटलबिहारी वाजपेयी

(१) विदेश मन्त्री भारत सरकार के निकट सम्बन्धी श्री कौल जी की मौसी का अन्त्येष्टि संस्कार तथा शोक शान्ति यज्ञ कराया।

(२) २५ दिसम्बर को श्री वाजपेयी जी का जन्मतिथि यज्ञ उनकी कोठी ६ रायसीना रोड पर कराया।

पंजाब राज्य के मंत्रियों के यहां कराये गए संस्कार

(१) २ जौलाई १९७३ को पृथ्वीसिंह जी आजाद भूनपूर्व मंत्री पंजाब सरकार के पुत्र श्री बिजय I.A.S. का विवाह पुत्री श्री प्रेमलाल जी सोंधी नवजोवन विहार की पुत्री वृन्दा से राजेन्द्र पार्क में कराया।

(२) स्वर्गीय श्री प्रेमलाल जी सोंधी का शोक शान्ति यज्ञ नवजीवन विहार में कराया।

(३) १२ सितम्बर १९७५ को श्री अमरनाथ जी विद्यालङ्कार संसद सदस्य तथा भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री पंजाब सरकार की पुत्री ज्योत्स्ना का विवाह श्री चरणदास जी आनन्द निकेतन के पुत्र विजय से १३ बाराखम्बा रोड पर कराया।

(४) श्री यश जी शिक्षा मंत्री पंजाब सरकार की पुत्री का विवाह आ० स० ग्रेटर कैलाश में कराया।

दिल्ली संघ राज्य के

(१) भूतपूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद् श्री राधारमण जी की ११ जैन मन्दिर रोड पर बनी कोठी का गृह प्रवेश संस्कार २४ जौलाई १९७७ को कराया।

(२) कांग्रेस की प्रसिद्ध कार्यकर्त्तृ धर्मपत्नी श्री राधारमण जी का अन्त्येष्टि संस्कार तथा चौथे को उनका शोक शान्नि यज्ञ कराया जिसमें भारत की भूतपूर्व प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी उपस्थित थीं।

(३) २३ अक्तूबर १९७८ ई० को श्री केदारनाथ जी साहनी मुख्य कार्यकारी पार्षद का उनकी कोठी ११ तालकटोरा रोड पर जन्म तिथि यज्ञ कराया।

श्री पंडित जी द्वारा जजों इत्यादि के परिवारों में विवाह संस्कार

(१) ५ जनवरी १९४६ को आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री गंगा प्रसाद जी चीफ जज टिहरी स्टेट की भतीजी तथा श्री प्यारे लाल जी रिटायर्ड सैशन जज बरेली की पुत्री का विवाह भारत सरकार के उच्चाधिकारी P.P. माथुर के भ्राता जे० एस० माथुर के साथ कराया।

(२) २५ जौलाई १९५९ को सर विवियन बोस जज सुप्रीम कोर्ट की पुत्री का विवाह स्क्वैड्रन लीडर श्री पवार के साथ उनकी कोठी १७ सफ़दर जंग रोड पर कराया :

(३) १७ जून १९६२ को श्री तेजसिंह रिटायर्ड सैशन जज मंडी की भावी पुत्र वधु का शुद्धि संस्कार कराया गया, तथा उसका एवं उनके पुत्र मधु सूदन के यज्ञोपवीत संस्कार कराने के पश्चात् १८ जून को विवाह संस्कार कराया।

(४) ८ नवम्बर १९६२ को श्री चन्द्रभानु रिटायर्ड जज प्रयाग के पुत्र अशोक का विवाह लाला गणेशदास जी (प्रधान आर्य वान-प्रस्थ आश्रम ज्वालापुर) की पुत्री सुषमा का F 8 N. D.S.E II में कराया।

(५) १२ दिसम्बर १९६४ को दीवान श्रीराम जी पुरी रिटायर्ड सैशन जज दिल्ली के पुत्र इन्द्रजीत का विवाह कराया।

(६) २५ अप्रैल १९६७ को जस्टिस हार्डी कोठी नं० 2 A मोती लाल नेहरू मार्ग की पुत्री सरोजिनी का विवाह श्री P.L. हांडा १५ तिलक मार्ग के पुत्र विजय से कराया।

(७) २ दिसम्बर १९६८ को आत्माचरण जी सैशन जज (जिन्होंने महात्मा गांधी के हत्यारे गोड से का प्रसिद्ध केस सुना था) की पुत्री देविका का ४७ लोधी एस्टेट में विवाह कराया।

(८) १६ दिसम्बर १९६७ को जस्टिस जी. डी. खोसला की पुत्री मीनाक्षी का विवाह उनकी कोठी तीनमूर्त्ति लेन में कराया।

(९) १० अप्रैल १९७२ को राजस्थान सरकार के भूततूर्व महाधि-वक्ता तथा प्रसिद्ध न्यायविद् श्री लक्ष्मीमल सिंघवी का उनकी कोठी

३० लोधी एस्टेट में गृह प्रवेश कराया। इस अवसर पर स्व० श्री पंडित प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद् सदस्य भी उपस्थित थे।

(१०) २२ मार्च १९७२ को दिल्ली के सेशन जज श्री बोहरा जी की पुत्री चित्रा का विवाह उनकी कोठी 5-F कोर्ट रोड पर कराया।

(११) ३० दिसम्बर १९७० को जस्टिस एस० एन० शंकर ४ तुगलक रोड के पुत्र नरेश शंकर का विवाह शालिनी के साथ कराया।

(१२) ३ दिसम्बर १९७७ को जस्टिस पी० एन० खन्ना E-2 महारानी बाग के पुत्र अनिल खन्ना का विवाह कराया।

संसद सदस्यों यथा प्रान्तीय विधान सभाओं के सदस्यों के यहां कराये गए विवाह आदि

(१) १० अक्तूबर १९५१ को श्रीमती दुर्गाबाई जी देशमुख M.P. धर्मपत्नी श्री चिन्तामणि देशमुख वित्तमंत्री भारत सरकार की भतीजी लीला का विवाह सिकन्दराबाद दक्षिण के प्रसिद्ध आर्य एडवोकेट श्री बाजीराव के पुत्र के साथ कराया इस विवाह में लोक सभा के स्पीकर श्री अनन्त शयनम् आयंगार तथा ईसाइयों क (धर्मगुरु) आर की विशप भी उपस्थित थे।

(२) १२ मार्च १९५२ को श्री डा० सत्यनारायण संसद् सदस्य (बिहार) आयु ४० वर्ष का विवाह कु० अरुणा देवी २६ वर्ष से कराया। इस विवाह में ऑल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

(३) १० अप्रैल १९५३ को संसद सदस्य श्री रामनारायण सिंह जी द्वारा उन की कोठी १६ विन्सरप्लेस पर श्री बद्रीदत्त जी शास्त्री की पुत्री पुष्पा का विवाह सांभर लेक के मजिस्ट्रेट श्री श्रीनिवास जी से कराया।

(४) ८ जौलाई १९६२ को श्री मनोहर लाल जी सोंधी I-F.S. संसद सदस्य का विवाह पंजाब के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री के० सन्तानम् की पुत्री के साथ आ० स० मन्दिर हनुमान रोड में कराया।

(५) २० अक्तूबर १९६६ को इन के पुत्र शिवाजी लाल का H-7 ग्रीन पार्क ऐक्सटेंशन में मुंडन संस्कार कराया।

(६) १० अप्रैल १९६२ को श्रीमती सावित्री निगम संसद् सदस्या की कोठी १३ रकाबगंज रोड पर राजेन्द्र निगम का विवाह शान्ति रावत से कराया।

(७) ३१ मई १९६३ को श्री गुरुदेव गुप्त संसद् सदस्य की पुत्री आशा का विवाह उनकी कोठी १६ जनपथ पर कराया।

(८) १० मार्च १९६६ को श्री हरिचन्द जी हेडा संसद सदस्य १ फिरोजशाह रोड के पुत्र शरदेन्दु का विवाह कराया।

(९) ८ दिसम्बर १९८९ को श्री हेमराज जी सूद संसद सदस्य (कांगड़ा) ७७ साउथ एवेन्यू के पुत्र क्रान्ति कुमार सूद का विवाह कराया।

(१०) ५ जौलाई १९७१ को श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री संसद् सदस्य १ केनिंग लेन की पुत्री सुधा का विवाह कराया। ११ मई १९८४ को शास्त्री जी के सुपुत्र सुधीन्द्र का विवाह कुतुब होटल में ठा० मानपाल सिंह जी की पुत्री ममता से कराया—ममता आचार्य विक्रम जी की भानजी है। इसमें भूतपूर्व प्रधान मन्त्री चरणसिंह जी उपस्थित थे।

(११) २४ नवम्बर १९७२ को श्री चन्द्रशेखर जी संसद् सदस्य के द्वारा श्री सत्यप्रकाश जी मित्तल की पुत्री सविता का विवाह श्री जगमोहन के साथ कराया।

(१२) ४ जौलाई १९७३ तथा ७५ को श्री गुलजारी लाल जी नन्दा संसद् सदस्य तथा भूतपूर्व उप प्रधान मंत्री भारत सरकार का जन्मतिथि यज्ञ उनकी कोठी ५ तुगलक रोड पर कराये।

(१३) १० दिसम्बर १९७८ को स्व० रूपनारायण जी संसद् सदस्य की पुत्री मीना का विवाह रवि जोशी से आ० समाज मन्दिर हनुमान रोड में कराया।

(१४) १ जनवरी १९५८ को पंजाब कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता ला० पिण्डीदास जी की दौहित्री तथा श्री प्रबोध चन्द्र जी M.L.A. (पंजाब) की पुत्री प्रिय देश का विवाह जंगपुरा एक्सटेंशन में कराया।

(१५) ११ जनवरी १९६२ को आ० स० के प्रसिद्ध नेता पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री की प्रेरणा पर रामपुर के श्री कृष्ण जी आर्य भूतपूर्व M.L.A. उत्तर प्रदेश के पुत्र आर्यवीर का विवाह मथुरा में कराया।

प्रसिद्ध खिलाड़ियों के विवाह

(१) ७ मई १६४३ को रणधीरसिंह हाकी जगत् में टाटा स्पोर्ट स के "जैन्टिल" नाम के प्रसिद्ध खिलाड़ी पुत्र श्री टेकचन्द जो सैनी सुपरिन्टैन्डेन्ट पावर हाउस राजघाट का स्व० श्री देवाराम जी की पुत्री सत्यवती के साथ सदर बाजार में कराया।

(२) १८ नवम्बर १६६६ को टेबल टैनिस के खिलाड़ी अशोक कुमार केशवानो का विवाह रजनी के साथ आ० स० मन्दिर हनुमान रोड में कराया।

(३) १० दिसम्बर १६७३ को टेबल टैनिस की प्रसिद्ध खिलाड़ी कमलजीतपुरी पुत्री श्री बक्शी चरणसिंह जी एडवोकेट का विवाह श्री सोमनाथ जी कपूर के पुत्र शशि के साथ २२ फ्रैन्ड्स सालोनी में कराया।

(४) ३१ मई १६७५ को विश्वविख्यात हाकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी मेजर ध्यानचन्द के पुत्र तथा प्रसिद्ध हाकी खिलाड़ी अशोक का विवाह श्री कल्याणसिंह की पुत्री कंवल जीत के साथ आ० स० मन्दिर हनुमान रोड में कराया।

(५) २२ फरवरी १६७१ को Nationat Institute of Sports पटियाला के डाईरेक्टर कर्नल आर० एल० आनन्द की पुत्री प्रीति का विवाह दिल्ली के प्रसिद्ध डा० जे० एन० चावला के पुत्र तथा दिल्ली के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री अमरनाथ जी चावला संसद् सदस्य के भतीजे वीरेन्द्र के साथ पटियाला में कराया।

फिल्मी जगत् वालों के विवाह

(१) १८ अक्तूबर १६५७ को प्रसिद्ध फिल्मी गायक श्री सी० एच० आत्मा का विवाह श्री शालिग्राम जी कपिल की पुत्री रमारानी से ६ सुन्दर नगर में कराया।

(२) गुरुकुल कांगड़ी के प्रोफेसर श्री लालचन्द जी की दौहित्री श्री विश्वनाथ जी विद्यालङ्कार की पुत्री प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री का पुनर्विवाह मन्दिर हनुमान रोड में कराया।

(३) नवोदित फिल्म अभिनेता श्री शेखर का विवाह श्रीमती डा० विमला जी की पुत्री के साथ १७ बाराखम्बा रोड पर कराया।

सैनिक अधिकारियों के विवाह

स्थल सेनाधिकारियों में ब्रिग्रेडयर पद तक के ६२ पदाधिकारियों के अपने विवाह अथवा उनके पुत्र वा पुत्रियों के विवाह इस प्रकार करायें—

लैफिनैन्ट ३; कैप्टेन १३; मेजर १०; लैफि० कर्नल ३७; ब्रिगेडियर २२ ब्रिगेडियर पद से उच्च सेनाधिकारियों के यहां कराये गये विवाहादि का विवरण अधोलिखित है :—

(१) २८ फरवरी १९७४ को मेजर जनरल मदन गोपाल जी दीवान ३ कुशल रोड की पुत्री रूपा का विवाह विवेक से कराया।

(२) ९ जुलाई १९७० को जनरल नगेश राज्यपाल आन्ध्र प्रदेश १२२ गौल्फ लिक्स के पुत्र अशोक का विवाह कराया।

(३) २२ सितम्बर १९७२ को जनरल वढेरा की पुत्री गीता का श्री जे० के० पुरी ३ टाल्स्टाय रोड के पुत्र अरुश से ओबेराय होटल में विवाह कराया।

(४) ३ दिसम्बर १९७३ को जनरल नगेश के द्वितीय पुत्र का वैवाहिक यज्ञ कराया।

(५) ६ नवम्बर १९७६ को जनरल तिवारी ३७ बी इर्विन रोड रोड की पुत्री उमा का विवाह कराया।

(६) १६ जुलाई १९७६ को मेजर जनरल श्री सत्यप्रकाश जी १०७ जोर बाग के पुत्र चेतन प्रकाश का विवाह मधु सूरी से कराया।

(७) २७ मई १९७९ को जनरल मोहन C-65 डिफेन्स कालोनी के पुत्र प्रदीप मोहन का विवाह कर्नल देशराज जी ठकराल की पुत्री रागिनी से कराया।

(८) १ नवम्बर १९७९ को मेजर जनरल श्री तिलक बहादुर जी नन्दा ६ तीनमूर्ति मार्ग की पुत्री ज्योतिका का विवाह बम्बई के श्री प्रेमनारायण जी के पुत्र अतुल से कराया।

(९) ३१ मई १९७९ को जनरल शंकरनू नायर के पुत्र चन्द्रमोहन नायर का विवाह मनजीत कौर से आर्य समाज हनुमान रोड में कराया।

(१०) २३ जून १९८० को मेजर जनरल श्री हरप्रसाद जी पृथ्वी राज रोड का अन्त्येष्टि संस्कार कराया।

(११) २९ सितम्बर १९८१ को लैफि० जनरल श्री सतगुरु प्यारा ३ बलवन्तराय मेहता लेन की पुत्री माला का विवाह अरुण से कराया।

(१२) १ दिसम्बर १९८१ को जनरल श्रीं तिलकराज जी नन्दा ३ अक्तूबर रोड की पुत्री चम्पिका का विवाह नरोत्तम स्याल से कराया।

(१३) १ मार्च १९८२ को मेजर जनरल श्री प्रकाश मोहन जी पसरीचा १४ लोधी एस्टेट के पुत्र तरुण का विवाह श्री अवतार कृष्ण जी चोपड़ा की पुत्री गीता से कराया।

(१४) १८ फरवरी १९८३ को मेजर जनरल श्री प्रताप नारायण जी गुप्त मकान नं० ४८२६, २४ दरियागंज की स्वर्गीया माता जी का शोक शान्ति यज्ञ कराया।

(१५) ६ मार्च १९८३ को जनरल जगदोश नारायण जी सभ्भरवाल ७९ लोधी एस्टेट के पुत्र राजीव सभ्भरवाल का विवाह कराया।

(१६) १८ मई १९६९ को मेजर जनरल श्री खन्ना की पुत्री इन्दु का श्री रामकृष्ण जी सेठी ५ कैवेलरी लेन के पुत्र वायु सेनाधिकारियों में १ स्क्वेड्रन लीडर २ विंग कमान्डर रणजीत से विवाह कराया तथा ७ ग्रुप कंप्टनों के ६ परिवारों में विवाह संस्कार कराने के अतिरिक्त उन से उच्च पदाधिकारियों के अधोलिखित परिवारों में विवाहादि कराये :—

(१) ८ मार्च १९६९ को एयर वाइस मार्शल दीवान आत्माराम जी नन्दा की पुत्री चांद का विवाह उनकी कोठी C-५४७ डिफैन्स कालोनी में कराया।

(२) १० अगस्त १९७१ को एयर वाइस मार्शल डा० अजितनाथ की पुत्री गीता का रवि कपाही से विवाह उनकी कोठी ३ मौलाना आजाद मार्ग पर कराया।

(३) २२ अगस्त १९७४ को एयर कमोडोर श्री पी० राजगोपालन की पुत्री पद्मनी का विवाह लैफि० कर्नल डी० एस० शिवराव के पुत्र योगेन्द्र से उनको कोठी १ अशोक प्लेस पर कराया।

(४) एयर मार्शल दीवान हरिचन्द जी C-२५० डिफेन्स कालोनी की स्वर्गीया धर्मपत्नी का शोक शान्ति यज्ञ कराया।

(५) स्थल सेना के जनरल छिब्बर की पुत्री निम्मी का श्री ज्योति स्वरूप जी I.A.S. के पुत्र आशीष से उनकी कोठी १० कुशक रोड पर विवाह कराया।

(६) २२ जनवरी १९८४ को एयर मार्शल अजितनाथ जी ३२ राजदूत मार्ग का विवाह जयन्ती यज्ञ कराया।

जल सेनाधिकारियों के परिवारों में निम्नलिखित विवाह कराये

(१) २१ सितम्बर १९६३ को एडमिरल के एल० के० राव की पुत्री निर्मला का उनकी कोठी १० तुगलक लेन में विवाह कराया।

(२) २६ सितम्बर १९६३ को एडमिरल एस० एन० नन्दा की पुत्री वीणा का विवाह उनकी कोठी ३ अकबर रोड पर कराया।

(३) १७ जून १९७५ को कमान्डर एम० पी० सिंह 'D-II/५३ पन्डारा रोड की पौत्री मनीषा का जन्म तिथि यज्ञ कराया।

(४) १५ जून १९७५ को कमान्डर अमरेन्द्र कुमार मुकर्जी की पुत्री भारती चम्पा मुकर्जी का विवाह आर्य समाज, हनुमान् रोड में कराया।

(५) २४ नवम्बर १९७७ को एडमिरल सुरेन्द्रनाथ जी कोहली की पुत्री अरुणा कोहली का विवाह उनकी कोठी २१ अकबर रोड पर कराया।

अन्त्येष्टि संस्कार

पुरोहित यजमान के सुख का ही साथी नहीं उसके दुःख का साथी भी होता है। वह जहां विवाह संस्कार कराता है वहां परिवार में दुःख दायक मृत्यु हो जाने पर अन्त्येष्टि संस्कार भी कराता है। श्री पण्डित जी ने अपने जीवन में ६९८ अन्त्येष्टि संस्कार कराये इनमें से कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के अन्त्येष्टि संस्कारों का विवरण अधोलिखित है :—

(१) १९ फरवरी १९४० को अन्त्येष्टि श्री पं० रामशरण जी मन्त्री आर्यसमाज हनुमान रोड।

(२) २० मार्च १९४७ को अन्त्येष्टि श्री चेलाराम जी S.D.O. मन्त्री तथा प्रमुख कार्यकर्ता आ० स० हनुमान रोड।

(३) २० जून १९४८ अन्त्येष्टि श्री प्रो० सुधाकर जी मन्त्री सार्वदेशिक आ० प्र० सभा

(४) १२ अगस्त १९४८ अन्त्येष्टि श्री प्रो० रामदेव जी प्रधान आ० स० हनुमान् रोड तथा प्राध्यापक इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स कालेज।

(५) २८ जून १९४९ अन्त्येष्टि रा० सा० श्री शादीराम जी प्रधान आ० स० अनुमान् रोड तथा म्यूनिसिपल इन्जीनियर।

(६) ६ सितम्बर १९५२ अन्त्येष्टि रा० सा० गंगाराम जी प्रधान आ० स० हनुमान् रोड तथा मन्त्री भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा।

(७) १८ अक्तूबर १९५१ अन्त्येष्टि श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी ठेकेदार प्रधान आ० स० हनुमान् रोड तथा पुस्तकाध्यक्ष सार्वदेशिक आ० प्र० सभा।

(८) २२ नवम्बर १९५१ अन्त्येष्टि प्रसिद्ध आर्य नेता श्री ला० देशबन्धु जी गुप्त मालिक दैनिक तेज।

(९) २४ नवम्बर १९५१ अन्त्येष्टि भगत ईश्वर दास जी एम० ए० लाहौर वाले आयु ९६ वर्ष।

(१०) १३ दिसम्बर १९५२ अन्त्येष्टि श्री बाबा मिलखा सिंह जी ठेकेदार प्रधान आर्य कन्या पाठशाला राबर्टस लेन तथा पिता बाबा दानसिंह जी

(११) २४ दिसम्बर १९५२ ई० अन्त्येष्टि चाचा श्री डा० तुलसी राम जी आयु ११० वर्ष।

(१२) ७ मार्च १९५४ अन्त्येष्टि श्री पं० विष्णु मित्र जी बी० ए० अध्यापक डी० ए० वी० हाई स्कल बेयर्ड रोड तथा यज्ञोपवीत संस्कार कर्ता पं० चन्द्रभानु (विद्यार्थी काल पानीपत में)

(१३) ३० सितम्बर १९५४ में अन्त्येष्टि श्री जयदेव जी राजपाल (पुत्र श्री भक्त सुन्दर दास जी वानप्रस्थ) १८ फायर ब्रिगेड लेन

(१४) २८ नवम्बर १९५५ अन्त्येष्टि श्री प्रो० गोपाल जी बी०

ए० मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा मैनेजर श्री रघुमल आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय राजा बाजार।

(१५) ४ जून १९५५ अन्त्येष्टि श्रीमती चन्द्रप्रभा जी एम० ए० पुत्री आचार्य रामदेव जी गुरुकुल कांगड़ी तथा माता श्री गिरीश चन्द्र जी खोसला पुरोहित आर्य समाज वन्दे मातरम् भवन लन्दन ।

(१६) १३ अक्तूबर १९५६ अन्त्येष्टि श्री देशराज जी वर्मा राम नगर सैनिट्री इन्स्पैक्टर N.D.M.C. सभासद् आ० स० हनुमान रोड।

(१७) २८ नवम्बर १९५६ अन्त्येष्टि श्री स्वा० वेदानन्द जी महाराज भूतपूर्व मुख्याध्यापक दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर तथा महामन्त्री आ० प्र० सभा पंजाब जालन्धर (अन्य विद्वानों के सहयोग में।

(१८) २० फरवरी १९५७ अन्त्येष्टि रायबहादुर धनीराम जी भूतपूर्व प्रिन्सीपल चीफस कालेज लाहौर।

(१९) २१ सितम्बर १९५७ अन्त्येष्टि पंजाब के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता चौ० कृष्ण गोपाल जी दत्त ३ कीलिंग रोड।

(२०) १ फरवरी १९५८ अन्त्येष्टि श्री गोकुल चन्द्र जी मेहरा गोकुल निवास कनाट फ्लेस पिता श्री सुरेन्द्र जी मेहरा एयर वाइस मार्शल।

(२१) २० अप्रैल १९५८ अन्त्येष्टि श्रीमती सत भ्रांवा जी धर्म पत्नी स्व० लाला दीवानचन्द जी ठेकेदार तथा आर्य समाज मन्दिर हनुमान् रोड के भवन को बनवाने वाली।

(२२) २१ जून १९५८ अन्त्येष्टि पिताजी श्री अचिन्त्य राम जी सूद M.P. मन्त्री लोक सेवक मण्डल लाहौर इलेक्ट्रिक लेन।

(२३) ५ सितम्बर १९५८ अन्त्येष्टि श्री सन्तलाल जी ज्येष्ठ भ्राता माननीय श्री जगजीवन राम जी रेलवे मन्त्री भारत सरकार।

(२४) २४ अक्तूबर १९५८ अन्त्येष्टि श्री ला० मथुरादास जी ९३ वर्ष नैरोबी के प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्ता तथा पिताजी श्री डा० बलराम जी M.D. डाक्टर्स लेन।

(२५) २८ अक्तूबर अन्त्येष्टि श्री नानक चन्द जी पिता श्री

प्रो० गोपाल जी बी० ए० तथा श्री अमरनाथ जीं हीरो वाच कम्पनी जनपथ।

(२६) ३ दिसम्बर १६५८ अन्त्येष्टि श्री डा० तुलसीराम जी ४ जैन मन्दिर रोड, मन्त्री श्री रघुमल आर्य कन्या माध्यमिक स्कूल राजा बाजार।

१६५६

(२७) २४ मार्च को अन्त्येष्टि माता जी श्री जगजीवनराम जी रेलवे मंत्री भारत सरकार क्विन विक्टोरिया रोड।

(२८) १६ मई को अन्त्येष्टि मामा जी श्री शान्ति नाथ जी भल्ला ५ गुरुद्वारा रोड रकाबगंज उपप्रधान आ० स० हनुमान रोड।

(२६) १६ अगस्त को अन्त्येष्टि रा० सा० श्री बद्रीलाल जी धवन खानमार्किट।

१६६०

(३०) ६ जनवरी अन्त्येष्टि श्री नत्थासिंह जी मलिक १४ हेली रोड।

(३१) २५ फरवरी अन्त्येष्टि श्री गोविन्दराम हासानन्द जी ७५ वर्ष (आ० स० के प्रसिद्ध प्रकाशक नई सड़क दिल्ली)।

(३२) २० अप्रैल अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री हरिकृष्ण जी सहगल ४ सरदार पटेल मार्ग।

(३३) २४ अगस्त को अन्त्येष्टि अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के सुपुत्र पं० इन्द्र देव जी विद्या वाचस्पति (अन्य पंडितों के सहयोग में)।

(३४) ३ अक्टूबर अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री जगन्नाथ जी गुलाटी १६ महादेव रोड।

(३५) १३ अक्तूबर अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री निहालचन्द जी एस० डी० ओ० २४ हनुमान रोड।

(३६) २६ अक्तूबर अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री डा० हीरालाल जी खोसला १३ क्वीनमेरी ऐवेन्यू।

(३७) २० नवम्बर अन्त्येष्टि श्रीमती तारा देवी जी माता श्रीमती डा० सुशीला नैयर।

(३८) १२ दिसम्बर अन्त्येष्टि पूज्य श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज प्रधान आर्यप्रतिधि सभा पंजाब (अन्य विद्वानों के सहयोग में)।

१९६१

(३९) २५ जनवरी अन्त्येष्टि दिल्ली के पुराने आर्य समाजी श्री विशन चन्द जी ऐडवोकेट गली बेरी कूँचा पातीराम।

(४०) २२ फरवरी अन्त्येष्टि श्री ला० लक्ष्मीचन्द जी ठेकेदार ५९ पंचकुइया रोड कोषाध्यक्ष आ० स० दीवानहाल।

(४१) १ अप्रैल अन्त्येष्टि श्रो धर्मपाल जो नैयर भ्राता श्रीमती डा० सुशोला जी नैय्यर १ कर्जन लेन।

(४२) १७ जून अन्त्येष्टि माता जी श्री मेजर डा० चावला कनाट प्लेस।

(४३) १२ जौलाई अन्त्येष्टि रायबहादुर श्री बरकतराम जी खोसला मैनेजर आर्य अनाथालय फिरोजपुर।

(४४) ३१ जौलाई अन्त्येष्टि श्री मेहरचन्द जो पुरी पंचकुंइया रोड, उप प्रधान आ० स० हनुमान रोड।

१९६२

(४५) २३ फरवरी अन्त्येष्टि आ० स० अनारकली लाहौर के प्रसिद्ध पुरोहित श्री पं० जगतराम जी शास्त्री आ० स० सीताराम बाजार।

(४६) २४ मार्च अन्त्येष्टि श्री मोहन लाल जी नैयर भ्राता श्रीमती डा० सुशोला जी नैय्यर १ कर्जन लेन।

(४७) ३१ मार्च अन्त्येष्टि श्री डा० दीवान पिता श्री नन्दगोपाल जी दीवान चीफ इन्जीनियर १८ अशोक रोड।

(४८) २७ अप्रैल अन्त्येष्टि श्री प्रेमप्रकाश जी इन्जीनियर एक मात्र पुत्र रायसाहब श्री ओप्रकाश जी प्रभातरोड करोल बाग।

(४९) २८ मई अन्त्येष्टि माता जी श्री शिव प्रताप जी सोनी कैपिटल ऐस्टेट एजेंसी ३७ हनुमान रोड।

(५०) १८ जौलाई अन्त्येष्टि श्री पं० भीमसेन जी विद्यालङ्कार भूतपूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब।

(५१) २९ अगस्त अन्त्येष्टि प्रसिद्ध डा० श्री भार्गव दरियागंज।

(५२) ११ अक्तूबर अन्त्येष्टि पिताजी श्री वेदव्रत जी वेदालङ्कार तथा डा० भद्रसेन जी दरियागंज।

१९६३

(५३) २५ फरवरी अन्त्येष्टि आ० स० के प्रसिद्ध नेता श्री महाशय कृष्ण जी संचालक दैनिक प्रताप ६ कीलिंग रोड।

(५४) २१ अप्रैल अन्त्येष्टि श्री मा० अनन्तराम जी खन्ना एम० ए० बी० टी० मैनेजर आर्य कन्या पाठशाला डाक्टर्स लेन।

(५५) १२ जून अन्त्येष्टि श्री हरिचन्द जी ८५ वर्ष भ्राता स्व० रायसाहब गंगाराम जी।

(५६) १४ अगस्त अन्त्येष्टि श्री ट्रीनीडाड में प्रसिद्ध वैदिक मिश्नरी श्री पं० सत्याचरण जी शास्त्री एम० पी० ७९ साउथ ऐवेन्यू (इनके संस्कार में श्री लाल बहादुर जी शास्त्री मंत्री भारत सरकार ने विशेष भाग लिया।

(५७) १४ अगस्त अन्त्येष्टि श्री ठाकुरदास जी पिता श्री भगवान दास जी महेन्द्रा ऑफिसर सुपर वाईजर तथा श्री रामजीदास जी महेन्द्रा B-६ हौज खास।

(५८) १० अक्तूबर अन्त्येष्टि श्री महताबराय जी इन्जीनियर ८७ वर्ष पिता श्री रूपेन्द्र नारायण जी सक्सेना ३० सैन्ट्रल लेन।

(५९) २९ अक्तूबर अन्त्येष्टि आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान तथा रामायण कथा वाचक श्री बुद्धदेव जी मीरपुरी महोपदेशक।

१९६४ ई०

(६०) ३ मार्च अन्त्येष्टि माताजी श्री वी० एल० मेहता भूतपूर्व पुलिस कमिश्नर कलकत्ता २८ तुगलक क्रीसेन्ट।

(६१) ३० अप्रैल अन्त्येष्टि श्री देवीचन्द श्री माता रा० सा० श्री पूर्णचन्द्र जी एक्जी० इन्जीनियर १६ हनुमान रोड।
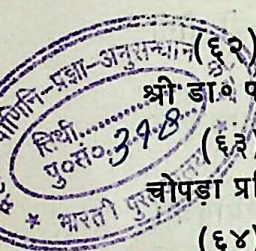
(६२) १२ मई अन्त्येष्टि रा० ब० श्री रामजीदास जी पिता श्री डा० पी० डी० धमीजा ७ हनुमान रोड।

(६३) ३ जुलाई अन्त्येष्टि श्वसुर दीवान श्री पुरुषोत्तमदास जी चोपड़ा प्रसिद्ध एडवोकेट ५१ जोर बाग।

(६४) ५ जुलाई अन्त्येष्टि श्वसुर श्री ला-रलियाराम जी ठेकेदार २ कीलिंग रोड।

(६५) २७ सितम्बर अन्त्येष्टि श्रीमती शिवदेवीजी धर्मपत्नी श्री ला० मेलाराम जी २ कीलिंग रोड।

(६६) १९ अक्तूबर अन्त्येष्टि श्रीमती सुशीलाजी पुत्री आचार्य रामदेवजी गुरुकुल कांगड़ी तथा पुत्रवधू श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट प्रधान आ०प्र० सभा उत्तर प्रदेश।

(६७) ७ नवम्बर अन्त्येष्टि श्री प्रो० बलराज जी महाजन रूप-नगर जामाता श्री सांझीराम जी महाजन मन्त्री आ० स० दीवानहाल।

(६८) ७ दिसम्बर अन्त्येष्टि श्री मनमोहन पुरी ७४ वर्ष पिता श्री यशपाल जी पुरी ७ जन्तर-मन्तर रोड।

(६९) १५ दिसम्बर अन्त्येष्टि धर्मपत्नी स्व० श्री म० कृष्ण जी तथा माताजी श्री के० नरेन्द्र दैनिक प्रताप ६ कीलिंग रोड।

१९६५ ई०

(७०) २७ जून अन्त्येष्टि प्रसिद्ध पत्रकार तथा लेखक श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालंकार ५० ए हनुमान रोड।

(७१) १ जुलाई अन्त्येष्टि श्री स्वा० ध्रुवानन्द जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक आ० प्र० सभा (अन्य विद्वानों के सहयोग में।

(७२) २५ जुलाई अन्त्येष्टि श्रीमती माता मेलादेवी जी माता श्री रणवीर जी दैनिक मिलाप।

(७३) ३ अगस्त श्री कृष्णचन्द्र जी गोविल एक्जी० इन्जीनियर ३३/६० रोहतक रोड।

(७४) २७ अगस्त धर्मपत्नी श्री एन० आर० कोहली (लाहौर के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री) १० कर्जन रोड।

(७५) २५ सितम्बर अन्त्येष्टि श्री धनीराम जी भल्ला (लाहौर

के प्रसिद्ध भल्ला बूट हाऊस वाले) श्वसुर श्री रणवीर जी दैनिक 'मिलाप'।

(७६) ६ नवम्बर अन्त्येष्टि रा० ब० पी० एल धवन ३२ अलीपुर रोड, विद्युत शवदाहगृह में कराया गया सर्वप्रथम अन्त्येष्टि संस्कार

(७७) १० दिसम्बर अन्त्येष्टि दीवान बशेशर नाथजी ६ बारा खम्बा रोड।

१९६६ ई०

(७८)२१ जनवरी अन्त्येष्टि श्री प्रेमनारायण जी ४०D१/१६७ सत्यमार्ग पुत्र श्री ला० द्वारिकादास जी करौलबाग।

(७९) १ जुन अन्त्येष्टि श्री रा० सा० गोपीचन्दजी सहगल एक्जी० इन्जीनियर भूतपूर्व प्रधान आ० स० हनुमान रोड।

(८०) १५ अगस्त अन्त्येष्टि श्री अनन्तराम जी ठकेदार पिता श्री अशोक जी सरीन २८ श्रीराम रोड।

(८१) ४ अक्तूबर अन्त्येष्टि श्री रुलियाराम जी २ टालसटाय मार्ग।

(८२) नवम्बर १९६६ अन्त्येष्टि श्री रणधीरजी L-१२ हौज-खास।

१९६७ ई०

(८३) १२ जनवरी अन्त्येष्टि श्री जियालाल जी गुप्त पिता श्री श्यामलाल जी गुप्त १९-E बाराखम्बा रोड।

(८४) २० जनवरी अन्त्येष्टि रा० ब० सुन्दर लाल जी भूतपूर्व पोस्ट मास्टर जनरल उत्तरप्रदेश १९९ गोल्फलिंक्स।

(८५) २१ जनवरी अन्त्येष्टि रायसाहब भगवन्त किशोर जी पिता डा० गौतम देवजी हैल्थ आफीसर दिल्ली राज्य महादेव रोड।

(८६) १३ फरवरी अन्त्येष्टि श्री सुधीर जी घोष महात्मा गांधी के सहयोगी ६ शाहजहां रोड।

(८७) १२ मई अन्त्येष्टि गिरधारीलाल जी बजाज पिता श्री रविकुमार जी बजाज १ गोल्फलिंक्स।

(८८) ३० सितम्बर अन्त्येष्टि श्री जोहरी मल जी गुप्त १५६ गोल्फलिंक्स ।

(८६) १८ सितम्बर अन्त्येष्टि शोक शांति यज्ञ स्व० श्री शिव लाल जी सब डाक्टर इनचार्ज होम्यो चिकित्सालय आ० स० हनुमान रोड ।

१६६८ ई०

(६०) ५ अगस्त अन्त्येष्टि पिता श्री परमानन्द जी ६८ टोडरमल रोड (६० वर्ष)

(६१) २६ अक्तूबर अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री पं० विष्णुदत्त जी तथा माता जी श्री गौतम जी श्रीकृष्ण एण्ड सन्स घड़ी वाले कनाट सर्कस ।

(६२) ३० दिसम्बर अन्त्येष्टि श्री ला० दिवानचन्द जी पिता श्री राजपाल जी गजटेड आफिसर २५ शाहजहां रोड ।

१६६६ ई०

(६३) ६ जनवरी अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री आनन्द मोहन जी रेलवे बोर्ड १५ लोधी ऐस्टेट ।

(६४) १५ जनवरी अन्त्येष्टि श्री स्वामी समर्पणानन्द जी भूतपूर्व श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार (अन्य विद्वानों के सहयोग से) ।

(६५) १७ जनवरी अन्त्येष्टि पिता श्री दौलतराम जी गुप्त संस्थापक दौलतराम कालिज युनिवर्सिटी रोड ।

(६६) २५ फरवरी अन्त्येष्टि प्रसिद्ध व्यवसायी श्री राजपाल जी चड्ढा १५ कर्जन रोड ।

(६७) २६ अप्रैल अन्त्येष्टि श्रीमती कलावती जी शरण १६ तुगलक रोड इनके नाम पर कलावती सरन अस्पताल है ।

(६८) २८ अप्रैल अन्त्येष्टि लाहौर के प्रसिद्ध डा० श्री महाराज कृष्ण जी कपूर ३१ राजपुर रोड ।

(६६) ५ मई अन्त्येष्टि श्री निहाल चन्द जी एस० डी० ओ० २४ हनुमान रोड ।

(१००) २२ मई अन्त्येष्टि श्री टेकचन्द जी कौड़ा मैनेजर आर्य

हाई स्कूल लोधी रोड। तथा भूतपूर्व मंत्री आ० स० हनुमान रोड।

(१०१) १८ दिसम्बर अन्त्येष्टि श्री पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु पुरोहित आ० स० लाजपत नगर। (श्री पं० चन्द्रभानु जी के श्वसुर)

१९७० ई०

(१०२) १२ जनवरी अन्त्येष्टि माता जी हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री डा० नगेन्द्र जी दिल्ली विश्वविद्यालय।

(१०३) १६ जनवरी अन्त्येष्टि एक मात्र पुत्री श्री हरदयाल जी देवगुण संसद् सदस्य ६० अशोक रोड।

(१०४) २६ जनवरी अन्त्येष्टि श्री रामलाल जी डंग पिता श्री शान्तिलाल जी डंग। बसन्त विहार।

(१०५) ११ फरवरी अन्त्येष्टि श्री रा० सा० पूर्णचन्द जी ऐग्जी-क्यूटिव इन्जीनियर १६ हनुमान रोड।

(१०६) २५ फरवरी अन्त्येष्टि श्रीमती प्रभा मिश्रा हैड वार्डन विलिङ्गडन अस्पताल।

(१०७) २ मार्च अन्त्येष्टि श्री नरेन्द्रनाथ जी चोपड़ा प्रसिद्ध ऐडवोकेट गंगाराम अस्पताल मार्ग।

(१०८) २६ अप्रैल अन्त्येष्टि श्री डंग जी पिता प्रिंसिपल श्रीमती रेखी तथा पति श्रीमती शारदा जी डंग फैक्ट्री रोड।

(१०९) २३ जून अन्त्येष्टि श्री प्रेमनाथ जी वत्स १७/८८६ लोधी रोड।

(११०) २५ सितम्बर अन्त्येष्टि श्री आर्य किशोर जी श्वसुर श्री हरिचन्द्र जी D-२/८३ पंडारा रोड।

१९७१ ई०

(१११) १० जनवरी अन्त्येष्टि माता जी श्री एस वर्मन चीफ इन्जीनियर N-८३ पंचशिला पार्क।

(११२) १८ सितम्बर अन्त्येष्टि श्री ला० मुन्शीराम जी चोपड़ा पिता श्री हंसराज जी चोपड़ा राउज़ एवेन्यू।

(११३) १९ सितम्बर अन्त्येष्टि श्री ज्ञानचन्द जी मेहता ६ जैन मन्दिर रोड।

(११४) १० अक्तूबर अन्त्येष्टि श्री दिवाकर जी खोसला कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ।

(११५) २१ अक्तूबर अन्त्येष्टि श्री डा० स्वामी शरण जी बैजल चीफ ऑफिसर नार्दन रेलवे २३ चेम्सफोर्ड रोड ।

(११६) ५ दिसम्बर अन्त्येष्टि श्रीमती चौधरी धर्मपत्नी स्व० ज्ञानचन्द जी मेहता ६ जैन मन्दिर रोड।

(११७) १७ दिसम्बर अन्त्येष्टि मेजर राजकुमार दिवान भ्राता श्री नन्द गोपाल जी दीवान चीफ इन्जीनियर (ये भारत पाक युद्ध में शहीद हुए) ।

१९७२ ई०

(११८) १२ जनवरी अन्त्येष्टि श्री बालकृष्ण जी शर्मा मैनेजर डैल्टन केबिल कं० A-1/73 सफदर जंग डव० एरिया ।

(११९) १५ अन्त्येष्टि श्री ओम्प्रकाश जी खन्ना सुपेरिन० इन्जीनियर हरयाणा इलैक्टिक बोर्ड ७ हनुमान रोड ।

(१२०) १६ मार्च अन्त्येष्टि श्रीमती माता जी श्रीमती मोहिनी चौधरी तथा फिल्म अभिनेत्री बीनाराय ५ कौटिल्य मार्ग ।

(१२१) १ अप्रैल अन्त्येष्टि श्रीमती माता जी श्री राज सरीन विंग कमान्डर एस-४०७ ग्रेटर कैलाश I ।

(१२२) २५ अप्रैल अन्त्येष्टि श्री इन्द्रदेव जी गुप्त मैनेजर टैन्ट फैक्टरी दिल्ली क्लाथ मिल्स ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग ।

(१२३) १४ जून अन्त्येष्टि श्री शिक्षा प्रसाद जी वर्मा दैनिक सत्संग के प्रेमी आ० स० अनुमान रोड ।

(१२४) २० जून अन्त्येष्टि नाना जी श्री राममूर्ति जी केला ८७३ ईस्ट पार्क रोड ।

(१२५) १५ सितम्बर अन्त्येष्टि श्री त्रिलोकी नाथ जी वर्मा भूतपूर्व मन्त्री आ० स० हनुमान रोड ।

(१२६) १८ सितम्बर अन्त्येष्टि श्री मेलाराम जी वधावन करोल बाग W.E.A. ।

(१२७) २६ सितम्बर अन्त्येष्टि हरिजन नेता श्री रामानन्द जी शास्त्री संसद सदस्य फीरोज शाह रोड।

(१२८) १६ नवम्बर अन्त्येष्टि श्रीमती विद्यावती जी माता श्री रवीन्द्रनाथ जी सचदेव सरकारी वकील दिल्ली ६ स्कूल लेन।

१९७३ ई०

(१२९) २३ जनवरी अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री मदन मोहन जी सब्भरवाल २७ ए० औरंगजेब रोड।

(१३०) १० फरवरी अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री शान्तिलाल जी डंग चाणक्यपुरी।

(१३१) २६ अप्रैल अन्त्येष्टि श्री डा० एच एल० खोसला मैडि० सुपरि० विलिंगडन अस्पताल १३ विशंभरदास मार्ग

(१३२) २२ मई अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री चन्द्रप्रकाश दैनिक मिलाप।

(१३३) २६ जून अन्त्येष्टि माता जी तथा ११ जौलाई अन्त्येष्टि पिताजी श्री गुरुदेव शरण जी बसन्त बिहार।

(१३४) ७ अगस्त अन्त्येष्टि राकेश १६ वर्ष पुत्र श्री राममूर्त्ति जी कैला अशोक विहार प्रधान आ० स० हनुमान रोड।

(१३५) २० नवम्बर अन्त्येष्टि श्री तीर्थरास जी भयाना ९५ वर्ष पिताजी श्री मोहनलाल जी भयाना पी० ४७ साउथ एक्सटेंशन पार्ट II।

१९७४ ई०

(१३६) ५ मार्च अन्त्येष्टि माता जी श्री देवदत्त जी एम० ए० एडीटर 'Point of View' २ सी/३६ रोहतक रोड।

(१३७) २१ मार्च अन्त्येष्टि श्री शिवानन्द जी दीक्षित (लोक सभा सचिवालय) १ विलसन स्क्वेयर।

(१३८) ८ मई अन्त्येष्टि श्री विजय कुमार जी गुजराल १७ बारा खम्बा रोड।

(१३९) १२ मई अन्त्येष्टि श्री विष्णदत्त जी ८६ वर्ष पिता श्री गौतम देव जी, श्रीकृष्ण एन्ड सन्स घड़ी वाले कनाट सर्कस।

(१४०) १६ मई अन्त्येष्टि रा० ब० श्री दुर्गादास जी ६० वर्ष पिता श्री एच० डी० स्कन्द ७ बारा खम्बा रोड ।

(१४१) १८ मई अन्त्येष्टि प्रसिद्ध पत्रकार श्री दुर्गादास जी हिन्दुस्तान टाइम्स टालस्टाय लेन ।

(१४२) २३ मई अन्त्येष्टि श्री रामनाथ जी भल्ला भूतपूर्व मन्त्री आ० प्र० सभा पंजाब तथा आ० स० हनुमान रोड ।

(१४३) २७ मई अन्त्येष्टि माता श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री संसद सदस्य १ केनिंग लेन ।

(१४४) २० जून अन्त्येष्टि दैनिक सत्संग की भक्त श्रीमती शकुन्तला जी पुरी ७ जन्तर मन्तर रोड ।

(१४५) १ सितम्बर अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री शान्तिनाथ जी भल्ला उपप्रधान आ० स० हनुमान रोड एन० २४० ग्रेटर कैलाश ।

(१४६) २४ नवम्बर अन्त्येष्टि श्री सरदार सावन सिंह जी Bar-at-Law द्वारा श्रीमती विशन देवी जी ६५/५ रोहतक रोड

(१४७) ६ दिसम्बर अन्त्येष्टि श्री पं० रामकृष्ण जी ८३ वर्ष आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड ।

१९७५ ई०

(१४८) २ जनवरी शोक शान्ति यज्ञ स्व० श्री विद्यानन्द जी महे द्वारा श्री भरत जी महे ८७ जोर बाग ।

(१४९) ३ अक्तूबर शोक शान्ति यज्ञ स्व० सरजू प्रसाद जी श्रीवास्तव उपमन्त्री आ० स० नौरोजी नगर (ये अपने परिवार सहित आ० स० हनुमान रोड के साप्ता० सत्संग में ७१ बैरव रोड से नियमपूर्वक आते थे) ।

(१५०) २३ अक्तूबर अन्त्येष्टि श्री रामचन्द्र जी शर्मा पिता श्री रामनाथ जी शर्मा (हिसार) एन २ ग्रीन पार्क एक्स्टे० ।

(१५१) २५ नवम्बर ,, माता जी श्री सुरेश जी भयाना ए-६ May fair Gardens ।

१९७६ ई०

(१५२) १२ मई अन्त्येष्टि दानवीर श्री काहन चन्द जी ४१/७७ पंजाबी बाग ।

(१५३) २४ अगस्त अन्त्येष्टि दानवीर स्व० ला० दीवानचन्द जी आवल की धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशवती जी आवल दीवान निवास।

(१५४) २६ सितम्बर अन्त्येष्टि श्री धर्मदेव जी कपूर भ्राता श्री नारायण दास जी कपूर ६२ मालवा मार्ग।

(५५५) १३ दिसम्बर अन्त्येष्टि श्री आनन्द जी पुत्र श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी इलाहाबाद

१९७७ ई०

(१५६) १३ जुलाई अन्त्येष्टि श्री राजीव पुत्र जस्टिस श्री पृथ्वीराज जी १३ तुगलक रोड।

(१५७) १३ अगस्त अन्त्येष्टि प्रसिद्ध पत्रकार श्री रवि चोपड़ा पुत्र स्व० देवराज जी विद्यालङ्कार।

(१५८) १० नवम्बर अन्त्येष्टि प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता श्री डा० एम० सी० डावर कनाट प्लेस।

(१५९) १९ नवम्बर शोक शांति यज्ञ स्व० माता जी श्री के० एल० धवन (श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के प्रसिद्ध सहयोगी अतुल ग्रोव रोड।

१९७८ ई०

(१६०) १४ फरवरी शोक शांति यज्ञ स्व० माता जी श्री प्रो० सतीश चन्द जी अध्यक्ष यूनीवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन ए० बी०/१९ मथुरा रोड।

(१६१) २६ फरवरी अन्त्येष्टि रा० सा० ओम्प्रकाश जी ६०/१० प्रभात रोड करौल बाग।

(१६२) ११ मई अन्त्येष्टि प्रसिद्ध पत्रकार श्री चमनलाल जी भिक्षु दौहित्र स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज।

१९७९ ई०

(१६३) ३१ अक्तूबर अन्त्येष्टि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री मुल्क राज जी कोहली १० कर्जन रोड।

१६८० ई०

(१६४) २६ अप्रैल अन्त्येष्टि श्रीमती चन्द्रकान्ता जी धर्मपत्नी योगासन विशारद तथा प्रचारक श्री मूलराज जी आनन्द कनाट सर्कस।

(१६५) ४ जून अन्त्येष्टि ललिता सच्चर धर्मपत्नी जस्टिस श्री राजेन्द्र जी सच्चर ६ तुगलक रोड।

(१६६) ६ जून अन्त्येष्टि श्री ला० ऋषिराम जी भूतपूर्व उपप्रधान आ० स० हनुमान रोड, १६-ए/२ W.E.A।

१६८१ ई०

(१७६) १७ फरवरी अन्त्येष्टि श्री मुकन्दलाल जी बहल भ्राता श्री हरबंस लाल जी बहल १४० मालचामार्ग।

(१६८) ८ मई अन्त्येष्टि श्रीमती राजकुमारी जी धर्मपत्नी श्री पं० रामचन्द्र जी शर्मा १० बाबर लेन।

१६८२ ई०

(१६६) २ फरवरी अन्त्येष्टि श्री लाला गिरधारी लाल जी एम्पायर स्टोर्स वाले एस० २५ पंचशील पार्क।

(१७०) ११ फरवरी अन्त्येष्टि आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री त्रिलोकीनाथ जी हाँडा (लन्दन) पिता श्री विजय हांडा ऐड-वोकेट बी० २/१० सफदर जंग ऐन्क्लेव।

(१७१) २ मार्च अन्त्येष्टि प्रसिद्ध भवन निर्माता श्री चिरञ्जी-लाल जी अंसल ५७ जोर बाग।

(१७२) ५ मई अन्त्येष्टि श्री जोगेन्द्रपाल जी त्रेहन भूतपूर्व कोषाध्यक्ष आ० स० हनुमान रोड E-45 N.D.S E.I.।

(१७३) २६ जून अन्त्येष्टि श्री देशराज जी खन्ना भूतपूर्व मन्त्री आ० स० हनुमान रोड B-27 NDESII।

(१७४) ११ सितम्बर अन्त्येष्टि प्रसिद्ध व्यवसायी श्री हरिकृष्ण जी सहगल पिता श्री नेत्रकृष्ण जी सहगल ४ सरदार पटेल मार्ग।

(१७५) २८ अक्तूबर अन्त्येष्टि महात्मा गांधी जी के भूतपूर्व निजी सचिव श्री प्यारे लाल जी नैयर सुजानसिंह पार्क।

(१७६) ३० नवम्बर अन्त्येष्टि धर्मपत्नी श्री रामजीदास जी महेन्द्र बी-६ हौजखास।

१९८३ ई०

(१७७) १ जनवरी अन्त्येष्टि श्री जगदीश चन्द्र जी पाल सभासद् आ० स० हनुमान रोड ४६/२८ ईस्ट पटेल नगर।

(१७८) ६ जनवरी अन्त्येष्टि श्री भीमसेन जी वढेरा पिता जनरल बी० पी० बढेरा एस-५० पंचशील पार्क।

(१७९) ९ मार्च अन्त्येष्टि श्रीमती लक्ष्मी देवी जी प्रधाना आर्य स्त्री समाज हनुमान् रोड ८ जैन मन्दिर रोड।

(१८०) २६ मार्च अन्त्येष्टि श्री नारायण दास जी कपूर (जामाता स्व० महात्मा आनन्द स्वामी जी) ४१/७ पंजाबी बाग।

(१८१) १० अक्तूबर अन्त्येष्टि एयर कमोडोर निरंजन प्रसाद नैयर चंडीगढ़ पिता मेजर पवन नैयर ए-१ गीताञ्जलि।

(१८२) २६ अक्तूबर अन्त्येष्टि श्रीमती प्रतिभा सहगल पुत्री श्री ला० बद्रीदास जी सी-३ फ्रेंड्स कालोनी।

(१८३) ९ फरवरी १९८४ ई० अन्त्येष्टि श्री सी० एल० कुमार १२२ मालचा मार्ग।

(१८४) १४ फरवरी अन्त्येष्टि पिताजी श्री गुरुशरण जी बैजल चेयरमेन I.C.I. २२ औरंगजेब रोड।

कुछ अन्य विशेष संस्कार व यज्ञ

(१) १५ अगस्त १९४७ को भारत द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपलक्ष्य में पार्लियामेंट भवन के निकट दिल्ली की आर्य समाजों की ओर से विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसे श्री पंडित जी ने तथा श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्त्तण्ड ने सम्पन्न कराया।

(२) ३० मार्च १९६६ को प्रसिद्ध पत्रकार श्री रघुवीर सहाय जी पी-३१ N. D. S. E. II के पुत्र वसन्त आयु ५ वर्ष का मुण्डन संस्कार कराया। जिसमें हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन भी पधारे हुए थे।

(३) १८ अगस्त १९५८ ई० को आल इण्डिया रेडियो के प्रसिद्ध

कलाकार सब्तेहसन आयु २८ वर्ष की शुद्धि कर राजहंस नाम रखा।

(४) २२ जौलाई १९६० ई० को श्री पं० सोमदत्त जी विद्यालङ्कार बस्तीं हरफूलसिंह के पूज्य पिता तथा श्री पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति के श्वसुर श्री पं० विष्णुमित्र जी का शोक शान्ति यज्ञ कराया।

(५) १७ से २४ अगस्त १९६१ तक सिक्खों के नेता मा० तारा सिंह के अनशन के मुकाबले में श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज द्वारा आ० स० दीवान हाल में अनशन किए जाने के उपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ कराया।

(६) १८ सितम्बर १९६१ को अलीगढ़ यूनिवर्सिटी में फोर्ड फाऊंडेशन द्वारा दिए गए अनुदान से बनने वाले भवन का निर्माणरम्भ यज्ञ श्री मूलराज जी आनन्द प्रूडेंन्शल बिल्डर्स कनाट सर्कस के तत्वावधान में कराया।

(७) १६ जौलाई १९६६ को बाटा शू कम्पनी फरीदाबाद में कक्ष निर्माणारम्भ यज्ञ कराया।

(८) १३ अप्रैल १९६५ को इन्डियन मैटलरजिकल इन्डस्ट्रीज वल्लभगढ़ का भवन निर्माणारम्भ यज्ञ श्री अमरनाथ जी विद्यालंकार भूतपूर्व शिक्षामन्त्री पंजाब के तत्वावधान में कराया।

(९) १० जौलाई १९६५ को आ० स० हनुमान् रोड में सम्पन्न किये जाने वाले सार्वभौम आर्य संन्यासी महासम्मेलन के उपलक्ष्य में बृहद् यज्ञ कराया, जिसके ब्रह्मा श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी थे।

(१०) २३ अगस्त सन् १९६६ को गोवध निषेध सम्बन्धी आन्दोलन के उपलक्ष्य में आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित संसद् भवन के निकट विशेष यज्ञ कराया।

(११) १७ फरवरी से २४ फरवरी १९७२ तक प्रसिद्ध उद्योगपति श्री प्रेमरत्न जी राठी एफ. ७ ए. हौजखास के पूज्य पिता के देहान्तोपलक्ष्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ कराया और कथा की।

(१२) ३ नवम्बर १९७२ को उड़ीसावासी आर्यसंस्कृतिभक्त श्री पुलिनबिहारी जी ब्रह्म के तीन पुत्रों का आ० स० मन्दिर हनुमान् रोड में यज्ञोपवीत संस्कार कराया।

(१३) २१ मई १६७४ को श्री लोकनाथ जी एम० आर० स्टोर्स कनाट प्लेस के पिता श्री मंगतराय जी का शोक शान्ति यज्ञ कराया और ७ दिन तक कथा की।

(१४) २५ जौलाई १६७४ को श्री एस० आर० मित्रू प्रिंसिपल Y. M. C. A. इन्स्टींट्यूट की पुत्री सरोज का विवाह डा० जे. डी. ए. ाणा से कराया।

(५) २६ अक्टूबर १६७४ को आ० स० हनुमान् रोड के विशेष प्रेमी श्री ज्ञानचन्द जी गुप्त ई-७४ आनन्द निकेतन की धर्म पत्नी का शोक शान्ति यज्ञ कराया।

(१६) २६ अक्तूबर १६७४ को Superior Air Products फरीदाबाद का वार्षिक यज्ञ कराया।

(१७) ११ दिसम्बर १६७८ को नयना भूतपूर्व कुमारी नसीम आयु २२ वर्ष पुत्री श्री सुलतान अहमद टी. ३८१ ए. निज़ामुद्दीन का विवाह विनय कुमार भूतपूर्व मुहम्मद अली पुत्र श्री मुहम्मदशफी मुहल्ला लाहौरी सराय नगीना जिला बिजनौर से कराया।

(१८) १५ मई १६७६ को प्रो० वेद व्यास जी (प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा) के भ्राता श्री अमरनाथ जी खन्ना एडवोकेट गोकुल निवास का अन्त्येष्टि संस्कार कराया।

(१६) २० जनवरी १६८० को राजस्थान के नए औद्योगिक क्षेत्र भिवाड़ी में श्रद्धेय श्री ला० हंसराज जी गुप्त तथा उनके सुपुत्रों द्वारा खोले जाने वाले रामपुर इन्जीनियरिंग वर्क्स के विशाल भवन का निर्माणारम्भ यज्ञ कराया।

(२०) ४ मार्च १६८१ को आर्य केन्द्रीय सभा के महा मन्त्री प्रि. श्री ओम्प्रकाश जी तलवाड़ के अनुरोध पर श्री पण्डितजी ने ऋषि बोधोत्सव पर कोटला ग्राउंड में किए जाने वाले बृहद् यज्ञ का पौरोहित्य किया। इससे पूर्व सन् १६५६ से १६६६ तक लगातार ११ वर्ष आर्य समाजों की ओर से सम्मिलित मनाए जाने वाले ऋषि बोधोत्सव तथा ऋषि निर्वाणोत्सव के बृहद् यज्ञों के पुरोहित पद को श्री पण्डित जी सुशोभित करते रहे। दिल्ली तथा नई दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से जो सर्वप्रथम ऋषि बोधोत्सव अजमेरीगेट के निकट दीना के तालाब पर (जहां आजकल कमला मारकेट है) मनाया गया था तथा जिसके अध्यक्ष भिवानी के प्रसिद्ध

राष्ट्र नेता श्री पं० नेकीराम जी शर्मा थे, उसके संयोजक श्री पंडित जी को ही बनाया गया था। कार्यवाही का संचालन आर्य समाज के दिवंगत नेता श्री ला० देशबन्धु जी गुप्त कर रहे थे।

(२१) १२ अप्रैल १९८१ को प्रसिद्ध समाज सेवी श्रीकृष्ण मोहन जी गुप्त १८ आनन्द लोक ने ग्राम खानपुर के निकट अपने कृषि फार्म में आस-पास के क्षेत्र वासी बाल-बालिकाओं के लिए विद्यालय खोला, उसका उद्घाटन यज्ञ कराया।

(२२) २३ जून १९८१ को स्व० संजय गांधी जी की स्मृति में यशवन्त प्लेस चाणक्यपुरी ट्रेडर्स एसोसियेशन की ओर से श्री अशोक खन्ना ने जो यजुर्वेदीय महायज्ञ का आयोजन किया उसमें अनेक आर्य विद्वानों ने भाग लिया, यज्ञ के ब्रह्मा श्री पंडित जी मनोनीत किए गये।

(२३) २६ जुलाई १९८१ को श्रीमती विमलाजी गुजराल ने अपने स्वर्गीय पति श्री विजय कुमार जी गुजराल की स्मृति मे अपनी १७ बाराखम्बा रोड की विशाल कोठी के स्थान पर "विजय एस्टेट" बनाने का निश्चय किया, उसका निर्माणारम्भ यज्ञ कराया।

(२४) २० जून १९८२ को दिल्ली दूरदर्शन के यूथ फारम के सर्वप्रिय कलाकार दीपक वोहरा की बहिन रेखा वोहरा का विवाह कमान्डर कैलाश नाथ भल्ला बंगलौर के पुत्र डा० हेमन्त भल्ला से कराया।

(२५) ३१ अगस्त १९८२ को श्री कृष्ण प्रसाद जी चूड़ामणि डी-१८५ डिफेंन्स कालोनी की पुत्री गिरिजा चूड़ामणि का विवाह जनरल श्रीनिवास कुमार जनरल हाउस शिमला के पुत्र यशवर्द्धन से कराया।

(२६) ५ सितम्बर १९८२ को श्री अनिल कुमार जी डंग वसन्त विहार द्वारा स्थापित Indian Commumications Net Work Private Ltd. 13-B Sector 2, Noida का उद्घाटन यज्ञ कराया।

(२७) १७ अप्रैल १९८३ को श्री लछमनदास जी अरोड़ा द्वारा स्थापित marble House अजमेरी गेट का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव यज्ञ कराया।

(२८) २८ अगस्त १९८३ को प्रसिद्ध अर्थविशारद श्री रघुनाथ जी गुप्त १५ रिंग रोड का हीरक जयन्ती यज्ञ कराया।

(२९) ७ अक्टूबर १९८३ को श्री सुशीलकुमार जी अंसल द्वारा निर्माण किए जाने वाले अन्तरिक्ष भवन २२ कस्तूरबा मार्ग का यज्ञ कराया।

(३०) २ फरवरी १९८१ को श्री नरेन्द्र जी मेहरा द्वारा स्थापित Springer Books India Privats Ltd, 6 Communty Centsr पंचशिला पार्क का उद्घाटन यज्ञ कराया।

(३१) २५ फरवरी १९८३ को रिजर्व. बैंक के भूतपूर्व गवर्नर श्री के. आर. पुरी सागर एपार्टमैन्ट्स का जन्म तिथि यज्ञ कराया।

इन संस्कारों व यज्ञों के अतिरिक्त श्री पण्डित जी टेलीफोन द्वारा भी समय-२ पर दैनिक मिलाप के रणवीरजी द्वारा वेद तथा अन्य शास्त्र सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर अपने विशाल स्वाध्याय के बल पर देते रहे हैं। जिन्हें वे मिलाप में प्रकाशित अपने लेखों को प्रामाणिक बनाने के लिए पछते रहते थे। महामृत्युञ्जय मन्त्र के अर्थों के संबंध में श्री पण्डित जी ने सरोजिनी नगर के श्री सत्यप्रकाश जी का टेलीफोन द्वारा जो समाधान किया तथा श्री सत्यप्रकाश जी ने श्री पंडित जी को कृतज्ञता परक पत्र लिखा वह पृष्ठ ९४ पर दिया गया है।

RC/17 Sarojini Nagar
New Delhi 23
June 3 , 1977

Respected Pandit Ji ,

I may not be known to you but you are known to me (and to Arya Samajists all ovar Delhi) and it was to you therefore I turned for the translation of Maha Mrityunjay Mantra, the text of which I got from a Sanskrt prayer book but the meaning of which were not known to me.

As you kindly explained over the telephone I have faired the translation which I am attaching. Kindly do me the favour of correcting it, as necessary, and particularly the Sanskrit text which I may not have got all correct.

I am sorry to trouble you but I know so long as we have scholars like you ready to impart of their knowledge the future is bright for the Arya Samaj. I had been hunting for the right translation but a number of pleces that I visited could not satisfy me as indeed your translation has done. with my renewed thanks for your selfless gesture ,

Sincerely ,
Sd. S. Perkash
(सत्य प्रकाश)

Pandit Chandra Bhanu Ji
Arya Samaj
Hanuman Road
New Delhi

परिशिष्ट (१)

श्री पण्डित जी १२ दिसम्बर सन् १९३२ से ३१ जुलाई १९३५ तक आर्य समाज नया बांस, दिल्ली तथा १ अगस्त, १९३५ से ३१ दिसम्बर १९८० ई० तक आर्य समाज़ हनुमान् रोड में पुरोहित रूप में एवं तत्पश्चात् स्वतन्त्र रूप में १८ सितम्बर सन् १९८३ तक जो कार्य किया उसका विवरण इस प्रकार है :—

(१) **संस्कार व यज्ञ**—९९४६ संस्कार (इनमें ४९५६ विवाह तथा १४४८ यज्ञोपवीत संस्कार भी सम्मिलित हैं); ९१३६ विविध यज्ञ। इन संस्कारों तथा यज्ञों से आर्य समाज को ४१५७८६) चार लाख पन्द्रह हजार सात सौ छयासी रुपये दान में प्राप्त हुए।

(२) **पारिवारिक सत्संग**—२४२१ कराये।

(३) **परिवारों में कथायें या उपदेश**—१४८ परिवारों में ११९४ दिन कथा की या उपदेश दिये।

(४) **व्याख्यान**—५७२ स्थानों पर ४०८३ व्याख्यान वा उपदेश दिये।

(५) **ग्राम प्रचार**—९८ ग्रामों में ३२० व्याख्यान दिये। ३ पाठशालायें तथा ५ आर्य समाज स्थापित किये।

(६) **शुद्धियें**—आर्य समाज मन्दिर में समय २ पर ३१९ देशी तथा विदेशी स्त्री पुरुषों के शुद्धि संस्कार कराये। २६ नवम्बर सन् १९५२ ई० को ग्राम टटीहरी (निकट बागपत) में ९५३ ईसाई स्त्री पुरुषों का तथा १० मई सन् १९५३ ई० कस्बा बड़ौत में लगभग १ सहस्र ईसाई हरिजनों का सामूहिक शुद्धि संस्कार कराया। १८ वर्ष तक भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का अन्तरंग सदस्य रहते हुए शुद्धि सभा के कार्यों में सहयोग देते रहे।

(७) **हरिजन प्रचार**—सन् १९३० ई० में पानीपत की हरिजन बस्ती की रात्रि पाठशाला में अध्यापन कार्य किया।

२१ नवम्बर १९३५ ई० से १ वर्ष तक बिजली घर नं० ४ नई दिल्ली के निकट हरिजनों के क्वार्टरों में प्रौढों, बालकों तथा बालिकाओं को प्रतिदिन १ घंटे हिन्दी अध्यापन तथा धर्म शिक्षा देते रहे तत्पश्चात् समय २ पर स्वयं उपदेश देते रहे तथा अन्य प्रचारकों द्वारा प्रचार का प्रबन्ध करते रहे।

५ मई १९३७ से प्रत्येक मंगलवार को बाल्मीकि मन्दिर मार्ग के हरिजनों में बाल्मीकि रामायण की कथा करते रहे तथा समय समय पर अनेक विद्वानों के व्याख्यानों का प्रबन्ध करते रहे। अनेक वर्षों तक 'बाल्मीकि जयन्ती' पर पण्डित जी के भाषण होते रहे। यह बाल्मीकि मन्दिर वही स्थान है जहां पर बाद में पूज्य महात्मा गांधी ठहरा करते थे और उनकी प्रार्थना सभा होती थीं। २५ मार्च सन् १९४८ को तत्कालीन श्रम मन्त्री श्री जगजीवन राम जी की उपस्थिति में 'नाम परिवर्तन समारोह' में २२० हरिजन पुरुष, स्त्री तथा बालकों के पंडित जी द्वारा शुद्ध नाम रखे गये।

सन् १९३७ में तालकटोरा की हरिजन बस्ती में एक शुक्रवार को पंडित जी का उपदेश तथा दूसरे शुक्रवार को वहां पर आर्य समाज हनुमान् रोड की ओर से खोली गयी रात्रि पाठशाला के विद्यार्थियों को परीक्षा लेते रहे। यहां पर भो समय-समय पर प्रचार का प्रबन्ध करते रहे।

सन् १९४० में पृथ्वीराज रोड के निकट हरिजन बस्ती तथा कोटला मुबारकपुर के हरिजनों में भी समय-२ पर उपदेश देते रहे।

श्री पंडित जी ने फरवरी १९४० में ग्राम तुगलकाबाद के हरिजनों में ईसाइयों के बढ़ते हुए प्रचार की खबर मिलने पर श्री पं० रामसेवक जी लहरी भजनोपदेशक को साथ लेकर लगातार वहाँ कई साल तक प्रचार किया। ईसाई प्रचारकों से टक्कर ली, उनके प्रचार केन्द्र तथा स्कूल को समाप्त कर ग्राम वासियों के सहयोग तथा सेठ जुगल किशोर जी बिड़ला की सहायता से आर्य पाठशाला तुगलकाबाद की स्थापना की उसका भवन बनवाया। कई वर्ष तक पाठशाला के वार्षिकोत्सव कराते रहे तथा समय-२ प्रचारार्थ जाते रहे।

सन् १९४१ ई० में तुगलकाबाद के हरिजनों के लिए पानी की कठिनाई को अनुभव करते हुए श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला को

ग्राम में ले जाकर विशेष प्रार्थना की जिस पर उन्होंने अपने दान से एक बड़े कूप का निर्माण करा दिया।

मार्च १९४६ में श्री पंडित जी की माता जी का देहान्त होने पर अपने ग्राम रुकनपुर मोरना जि० मेरठ में वहाँ के भंगियों के पेयजल को प्राप्त करने में महान् कष्ट को अनभव करते हुए श्री पंडित जी ने माता जी की स्मृति में भंगियों के लिए एक कुएं को बनवा दिया जिसका स्वच्छ जल उन्हें अब तक तृप्त कर रहा है।

१९४१ ई० में होने वाली जनगणना में अपने को आर्य तथा वैदिक धर्मी लिखवाने की प्रबल प्रेरणार्थ पंडित जी ने पंजाब प्रान्तीय मल्लाह कान्फ्रेन्स की अध्यक्षता १५ व १६ दिसम्बर सन् १९४० ई० स्थान थन्थरी तहसील पलवल जि० गुड़गांव में की।

श्री पण्डित जी हरिजनों के नेता माननीय श्री जगजीवन रामजी का जन्म दिन यज्ञ तथा प्रार्थना १९५३ ई० से ५ अप्रल को कराते आ रहे हैं।

हरिजनों के ६० के लगभग विवाह संस्कारादि कराये।

नवयुवकों में प्रचार—आर्य कुमार सभा हनुमान् रोड, आर्य कुमार सभा क्लाइव स्क्वेयर, आर्य कुमार सभा नूरजहां रोड तथा आर्यकुमार सभा विल्सन क्वेयर की स्थापना कर बालक-बालिकाओं को संन्ध्या हवन, सिखाते रहे, धर्म, शिक्षा देते रहे तथा उनकी वक्तृत्व कला का विकास करते रहे। स्कूलों के ग्रीष्मावकाश में वही कार्यक्रम सप्ताह में २ दिन आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड में दस वर्ष तक चलाते रहे। आर्य परिवारों के पुत्र और पुत्रियों के जन्म दिवस यज्ञ पर उत्तम शिक्षा देते रहे।

(९) **वेद पारायण यज्ञ**—३ ऋग्वेद पारायण यज्ञ, २८ यजुर्वेद पारायण यज्ञ, ९ सामवेद पारायण यज्ञ तथा ३ अथर्व वेद पारायण यज्ञ कुल मिलाकर ४३ वेद पारायण यज्ञ कराये।

परिशिष्ट (२)

श्री पण्डित जी ने १६ सितम्बर १६३० ई० से ३० अप्रैल १६८४ तक १०१५२ (दस हजार एक सौ बावन) संस्कार तथा ६२६३ (नौ हजार दो सौ तरेसठ) विविध यज्ञ कराये। संस्कारों का विवरण निम्न लिखित है :—

पुंसवन ४; सीमन्तोन्नयन ३६; जातकर्म २६, नामकरण ११७६; निष्क्रमण ४; अन्नप्राशन ५४; मुन्डन ६२१; कर्णवेध ४७; यज्ञोपवीत १५८५; विद्यारम्भ २१; विवाह ५००१; गृहप्रवेश २५६; शुद्धि (आर्य समाज मन्दिर में) ३१७ तथा अन्त्येष्टि ६६८)

इन संस्कारों व यज्ञों से आर्य समाज को ४०६६६८।।।) तथा अनाथालय व आर्य कन्या पाठशालादि संस्थाओं को ८८१७।) कुल ४१८५१६) चार लाख अठारह हजार पांच सौ सोलह रुपये दान में मिले।

दिल्ली तथा नई दिल्ली के अनेक बड़े भवनों, संस्थाओं तथा सिनेमाओं यथा मूलचन्द खैरानी राम हस्पताल, डा एस० के० सेन नर्सिंग होम, डा० सहगल नर्सिंग होम, आल इन्डिया चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस् भवन, स्टेट बैंक आफ इन्डिया का मुख्य कार्यालय भवन, आकाश दोप बिल्डिंग, अंसल भवन, गोलचा सिनेमा, उपहार सिनेमा, विराट् सिनेमा, ज्ञान भारतो, अनुपम सिनेमा इत्यादि के भवन निर्माणारम्भ तथा उद्घाटन यज्ञ श्री पण्डित जी ने कराये हैं।

श्री पण्डित जी का परिवार

श्री पण्डित जी के बड़े भाई श्री मोहन लाल जी "रंक" मेरठ जिले के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी हैं और आजकल मोदी नगर के निकट एक ग्राम में रहते हैं। एक छोटी बहिन विद्यावती तथा बहनोई पं० अमरनाथ जी शर्मा गली कुण्डेवालान कूचा पातीराम में रहते हैं। भानजे रामनाथ जी तथा प्रेमनाथ जी खादी ग्रामोद्योग के सर्वप्रिय

कार्यकर्ता हैं। एक भानजे श्री सोमनाथ जी एम० ए० महानन्द मिशन कालिज गाजियाबाद में हिन्दी के प्रवक्ता हैं। दूसरी बहिन कलावती नाईवाड़ा, चावड़ी बाजार में अपने पति पं० मुन्शीलाल जी शर्मा के साथ रहती हैं जो रामकृष्ण जी डालमिया के पास कार्य कर चुके हैं। भानजे श्री यशपाल जी शर्मा बी० ए० इन्डियन एयर लाइन्स में पब्लिक रिलेशन्स आफीसर हैं, उनका संस्मरण अन्यत्र प्रकाशित हैं। सबसे छोटी बहिन जगवती अपने पति श्री भगवत् प्रसाद जी तथा परिवार के साथ मीरापुर जिला मुजफ्फर नगर में रहती हैं।

श्री पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुमती जी कन्या गुरुकुल देहरादून में पढ़ी हैं तथा श्री पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु की सुपुत्री हैं। श्रीं जिज्ञासु जी पहले चीफ मैडिकल आफीसर दिल्ली के हैडक्लर्क थे। इर्विन अस्पताल उन्हीं के सामने बना तथा वे वहां प्रतिष्ठापूर्वक कार्य करते रहे। वहां से रिटायर होने पर श्री जिज्ञासु जी आर्य समाज दीवानहाल के मन्त्री तथा १७ वर्ष तक अवैतनिक पुरोहित रहे तत्पश्चात् आर्य समाज लाजपतनगर के अवैतनिक पुरोहित रहे। श्री पण्डित जी का विवाह १ मार्च १९३१ ई० रविवार को बल्ली मारान मोहल्ले में दिल्ली क्लाथ मिल्स वाले ला० मदन मोहनलाल की धर्मशाला में हुआ। श्रो पण्डित जी के ४ पुत्र तथा ४ पुत्रियां हैं।

सबसे बड़े पुत्र आनन्द प्रकाश जी इन्डियन एयर लाइन्स के बाराखम्बा रोड स्थिति कार्यालय में बड़े आफीसर हैं। टेबिल टैनिस के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं तथा इसी के बल पर कई बार अमेरिका इत्यादि हो आये हैं। इनका विवाह सीताराम बाजार के प्रसिद्ध व्यक्ति पं० शंरसिंह जी हजारी म्यूनिसिपल कमिश्नर की सुपुत्री राका जी बी० ए० से हुआ है जिनका संस्मरण इस पुस्तक में अन्यत्र प्रकाशित है।

दूसरे पुत्र अरुण प्रकाश जी बी० ए० बड़े उत्साही और सफल बिजनिसमैन हैं। इनका विवाह उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व चीफ इन्जीनियर तथा एडवाइजर प्लैनिंग कमीशन भारत सरकार Irrigations & Power) पद्मश्री सरदार बलवन्त सिंह जी नाग की सुपुत्री मनजीत **B.A.** से हुआ है जो बड़ी सुशील और सेवा भाव सम्पन्न हैं। इस अभिनन्दन ग्रन्थ को सुन्दर बनाने तथा इस पर काफी व्यय करने का श्रेय अरुण प्रकाश जी को है।

तीसरे पुत्र विमल प्रकाश जी बी० ए० Food Corporation of India केन्द्रीय कार्यालय में अच्छे पद पर हैं। हाकी के अच्छे खिलाड़ी हैं इनकी धर्मपत्नी दीपाजी जामियामिलिया से हिस्ट्री में एम० ए० हैं।

चौथे पुत्र विनय प्रकाश जी पहले सिलवानिया एन्ड लक्ष्मण में Quality Control Engineer थे तत्पश्चात् वे ईरान में फिलिप्स की कम्पनी Iranian Lamps Ltd. में Quality Control Eengineer के उच्च पद पर ४ वर्ष रहे। १९७७ ई० में श्री पण्डित जी उनके पास ईरान में २४ दिन रहे तथा वैदिक धर्म का प्रचार किया इसका वर्णन श्री विनय प्रकाश जी ने अपने संस्मरणात्मक अंग्रेजी लेख में इसी पुस्तक में दिया है। इनकी धर्मपत्नी सपना जी एक कर्तव्यनिष्ठ सेवा भावी महिला हैं। श्री विमल प्रकाश जी तथा विनय प्रकाश जी दोनों सपरिवार श्री पण्डित जी के साथ ही १/१२ सर्व प्रिय विहार में रहते हैं और अपने माता पिता की सेवा करने में तत्पर रहते हैं। ईरान में उपद्रव हो जाने पर श्री विनय जी अब दिल्ली ही आ गये हैं और Auto International Enterprises के managing Partner हैं।

श्री पण्डित जी की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती सुभद्रा जी वत्स M A. B.Ed. आर्य कन्या हा० सै० स्कूल चावड़ी बजार में संस्कृत की हैड हैं तथा अपने पति और परिवार सहित पालम ग्राम के विशाल भवन में रहती हैं। दूसरी पुत्री सुशीला जी एम० ए० अम्बाले के एक गर्ल्स कालेज में हिस्ट्री की प्रोफेसर हैं, उनके पति कैप्टेन हरिकृष्ण शर्मा वहां रेलवे में उच्च आफीसर हैं। तीसरी पुत्री सुमेधा जी बी० ए० आजकल श्री पण्डित जी के पास ही रहती हैं। इन्होंने मद्रास के Y.M.C.A. College of Physical Education से डिप्लोमा प्राप्त किया है। चौथी पुत्री सुधा जी B.A. (Hons) अपने पति श्री डा० राजकुमार जी M.D. के साथ पहले लन्दन में रहती थीं आजकल अमेरिका में पति के एक यूनीवर्सिटी में प्रोफेसर लग जाने पर अब वहीं रहती हैं।

श्री पण्डित जी की सहधर्मिणी श्रीमती इन्दुमती जी एक आदर्श आर्य महिला हैं जो अपने पति की सेवा में सदा तत्पर रहती हैं। श्री पण्डित जी अपनी सफलता का बहुत कुछ श्रेय उन्हीं को देते हैं

और उन्हें जन्म जन्मान्तर की साथी मानते हैं। श्री पण्डित जी कहते हैं कि केवल पौरोहित्य से वे अपने परिवार का सुचारू रूप से पालन पोषण नहीं कर सकते थे यदि श्रीमती इन्दुमती जी अध्यापन कार्य का गुरुतर भार अपने ऊपर न लेतीं। इन्दुमती जी ने आर्य कन्या पाठशाला डाक्टर्स लेन में ३४ वर्ष तक बड़ी उत्तम रीति से अध्यापन किया है। वहां की अन्य अध्यापिकाओं तथा छात्राओं को उनसे कितना स्नेह था तथा वे इनका कितना आदर करती थी यह उस अभिनन्दन पत्र से पता लगता है जिसे इस ग्रन्थ में दे दिया गया है। परिवार के सब सदस्य श्री पण्डित जी का बड़ा आदर करते हैं तथा श्री पण्डित जी अपने परिवार से बहुत सन्तुष्ट हैं। श्री पण्डित जी के तप त्याग तथा कर्तव्य परायणता पर प्रभु ने उन्हें यह वरदान दिया है। इस वृद्धावस्था में श्री पण्डित जी अपना समय अध्ययन, प्रभु भक्ति तथा आर्य जनता की सेवा में आनन्द पूर्वक व्यतीत कर रहे हैं। प्रभु उन पर तथा उनके परिवार पर इसी प्रकार कृपा दृष्टि बनाये रखें।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम् ।।

अथर्व ३-३०-२

परिवार की ओर से स्नेहाञ्जलि

श्रीमति इन्दुमती जी पण्डित, धर्म पत्नी श्री पं० चन्द्रभानु जी, जिनके प्रेम भरे व्यवहार एवं शालीनता के कारण पं० जी का जीवन धन्य हुआ।

का विशेष लेख—

मेरे आदरणीय पतिदेव

श्री ्मती इन्दुमती सिद्धान्त विशारदा, सेवानिवृत्त अध्यापिका श्री रघुमल आर्य कन्या पाठशाला डाक्टर्स लेन न्यू दिल्ली धर्मपत्नी श्री पं० चन्द्रभानु जी)

मेरा बडा सौभाग्य है कि मुझे श्री पं० चन्द्रभानु जैसे व्यक्ति के रूप में प्राप्त हुए। प्रत्येक युवती की यह कामना रहती है कि उसे जो जीवन साथी मिले वह उसके लिये सुखदायी सिद्ध हो। मेरी भी यही भावना थी। मैं कन्या गुरूकुल देहरादून की छात्रा थी। वहां शहर से दूर हमारा छात्रावास था। जहां लड़के लड़कियों का आपस में मिलना तो दूर दर्शन तक भी नहीं होते थे और न ही उन दिनों माता पिता के घर भेजा जाता था अतः मैं दुनियादारी से बिल्कुल अनभिज्ञ थी। ८ वर्ष विद्याध्यन करने के पश्चात जब मैं घर आई तो माता पिता ने शादी की चर्चा चलाई तो मैं बोली कि मैं शादी नहीं कराना चाहती, मैं तो जीवन भर आपके पास ही रहूंगी। पता नहीं कैसा आदमी मिले। इस पर पिता जी ने मुझे बहुत ऊंच नीच समझाया और मुझे विवाह के लिये मजबूरन राजी होना पड़ा।

मैं अपने पिता जी कि अत्यन्त आभारी हूं कि उन्होंने केवल वर को ही परखा, न घर को, न कुटुम्ब को कोई छानबीन की। वास्तव में उन्होंने मेरे लिये एक अनमोल हीरा श्री पं० चन्द्रभानु के सुन्दर रूप में १ मार्च सन् १६३१ में भेंट किया। मैंने उस हीरे को तराशने और सजाने संवारने का पूरा यत्न किया है।

उसे दुनियां में 'सूर्य' की तरह चमकने में तथा 'चन्द्र' की तरह ज्ञान रूपी सुधारस पिलाने में पूर्ण सहयोग दिया है। प्रभु की कृपा रही और मेरा जीवन रहा तो मैं सौ वर्ष तक इसी प्रकार उन्हें संभाल कर रखूंगी।

अब कुछ गृहस्थ जीवन के संस्मरण लिखती हूं। विवाह के पश्चात् मैंने पाया कि वे अपने नाम 'चन्द्रभानु' के बिलकुल अनुरूप हैं 'चन्द्र' से चन्द्रमा की तरह शान्त और भानु से तेजस्वी व्यक्तित्व

वाले एवं स्त्री जाति का आदर करने वाले व्यक्ति हैं। इनके अन्दर जो मैंने सबसे बड़ा गुण पाया वह सहिष्णुता है। जो कि आजकल बहुत ही कम पुरुषों में पाई जाती है। हमारे गृहस्थ जीवन में अनेक प्रकार के उतार चढ़ाव तथा कष्ट आये परन्तु इन्होंने उस संघर्षमय समय को बड़ी बुद्धिमत्ता तथा शान्तिपूर्ण ढंग से बिताया। सन्तानों के होने पर उनके पालन पोषण और पढ़ाई लिखाई आदि के खर्चे आने पर आर्थिक कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा, परन्तु इन्होंने दिन रात अनथक परिश्रम करके उसे भी दूर किया तथा सब बच्चों को ग्रेज्युएट बनाया। इस आर्थिक कठिनाई को दूर करने के लिये मैंने भी इनका पूर्ण सहयोग दिया। इनका कहना था कि बच्चों को शुद्ध घी दूध और उत्तम भोजन खिलाओ जिस से वे हृष्ट पुष्ट बनें और रोगी न हों वर्ना दवाइयों पर भी तो पैसे खर्चने पड़ेंगे, दूसरे कष्ट भी भुगतेंगे।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन के ३ रूप होते हैं: प्रथम परिवार में, दूसरे कार्यक्षेत्र में तीसरे सामाजिक क्षेत्र में श्री पंडित जी इन तीनों क्षेत्रों में सफल सिद्ध हुए हैं। प्रथम परिवार में उनका व्यवहार सदा प्रेम, दयालुता, तथा कर्त्तव्य परायणता का रहा है। जिससे हमारा गृहस्थ जीवन अत्यन्त उत्तम रीति से व्यतीत हुआ है और भविष्य में भी इसी प्रकार व्यतीत होगा। दूसरे कार्यक्षेत्र में भी श्री पंडितजी पूर्णतया सफल सिद्ध हुए हैं। इनके जीवन के ५० वर्षों से भी अधिक समय आर्य समाज की सेवा में बीते हैं। सबसे अधिक वर्ष अर्थात ४५।। वर्ष आर्य समाज हनुमान् रोड में ही कार्य करते हुए व्यतीत किये हैं।

इन्होंने वहां पर बड़ी लगन तपस्या और ईमानदारी से कार्य किया है। ये गांव २ प्रचार करने जाते थे जबकि उन दिनों वहां पहुंचने के लिये यातायात के साधन बहुत ही कम थे। कई २ मील पैदल चलकर प्रचार करते रहे। परन्तु इनके चेहरे पर कभी भी विषाद की रेखा तक नहीं उभरी। समाज के अधिकारियों तथा सभासदों के साथ सदा इनके मधुर सम्बन्ध रहे हैं और आज भी वैसे ही हैं।

तीसरा सामाजिक क्षेत्र—उसमें भी श्री पंडितजी का स्थान अत्यन्त ही सराहनीय रहा है। जैसे अनेक समाजों में व्याख्यान व उपदेशों

का क्रम आज तक जारी है। यज्ञ व संस्कारों के विषय में तो इन्हें 'संस्कार शिरोमणि' कहा जा सकता है। जिसके परिवार में ये एक बार संस्कार कराने चले जाते हैं वे तथा उनके सम्बन्धी बार २ इन को ही बलाते हैं। इनके पहुंचने पर प्रायः सभी जानकार व्यक्ति कहने लगते हैं कि ये तो हमारे पंडित जी हैं। इन्होंने हमारे यहां सब बहिन भाईयों की शादियां कराई हैं। कोई कहते हमारे घर कोई भी संस्कार होते हैं सब में इन्हीं पंडित जी को बुलाते हैं। अतः ये हमारे भी पडित जी हैं। सारांश यह कि इनको संस्कार विशारद की पदवी से भी सुशोभित कर सकते हैं।

अन्त में मैं प्रभु से ही प्रार्थना करती हूं कि पंडित जी की आयु बहुत ही लम्बी हो ताकि वे ऋषि दयानन्द के मिशन को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा सकें। जिससे समाज व परिवार भी लाभान्वित होते रहें। शमिति।

श्री रघमल आर्य कन्या पाठशाला नई दिल्ली द्वारा भेंट किया गया अभिनन्दन पत्र

सेवा में श्रीमती इन्दुमती जी पंडित

ओं स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥ ऋ० ५।५१।१५

फूलों से नित हंसना सीखो भौंरों से तुम गाना ।
प्रिय बहिन इन्दु से सीखो, प्रतिपल ही मुस्काना ॥

परमादरणीया बहिन जी,

समय की गति कितनी तीव्र है, हमें यह आज ही ज्ञात हुआ है। यह कल की ही बात लगती है जब आप ने आज से ३४ वर्ष पूर्व अपना अनोखा व्यक्तित्व लेकर इस विद्यालय के प्रांगण में पदार्पण किया था। आपके साथ कार्य करते हुए इतनी लम्बी अवधि कब व्यतीत हो गई यह ज्ञात ही नहीं हुआ।

कर्त्तव्य परायण बहिन जी—आप ने जहां अपने शिक्षण कार्य से इस पाठशाला की छात्राओं को लाभान्वित किया वहां अपनी सहकारिणी बहिनों को भी अपने मधुर स्वभाव से अपना बना लिया है। शिक्षण कार्य के साथ-२ आपने पाठशाला के सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्साह तथा लग्न के साथ भाग लिया है। गुरुकुल से प्राप्त वैदिक ज्योति को आपने हार्दिक स्नेह से प्रज्वलित रखते हुए विद्यालय की छात्राओं को अनुप्राणित किया। न केवल छात्राओं में अपितु शिक्षिकाओं में भी आपने सन्ध्या तथा हवन के मंत्रों का सुचारू रूप उपस्थित करके वैदिक धर्म के प्रति जागृत किया।

पूज्या बहिन जी—आप ने अपने सत्य व्यवहार से सभी शिक्षिकाओं के हृदयों में जो अथाह विश्वास और प्रेम प्राप्त किया उस का यह उज्ज्वल प्रमाण है कि आपने १५ वर्षों तक स्कूल की प्रबन्धकर्तृ सभा में दोनों शिफ्टों को शिक्षिकाओं का प्रतिनिधित्व किया।

मधुमयी बहिन—आप सचमुच ही अपने नाम को सार्थक करती हुई "इन्दु" अर्थात् चन्द्रमा के सदृश अपने शान्त एवं मधुर स्वभाव द्वारा हमें आह्लादित करती रहीं यही कारण है कि आज विदा की इस अनिवार्य, उदासीन और दुःखद वेला में हम एक महान् अभाव का अनुभव कर रही हैं, जो शून्यता आपके वियोग से हमारे हृदयों में बन जायेगी उस का भरना असंभव प्रतीत हो रहा है। आपके साथ व्यतीत किये हुए मधुर क्षण हमारे स्मृतिकोष की अनुपम निधि रहेंगे।

प्यारी बहिन जी—हमारी आप से विनम्र प्रार्थना है कि आप हमारी त्रुटियों को विस्मृत करती हुई यदा कदा अपने प्रिय दर्शनों से हमें कृतार्थ करती रहें।

स्नेहमयी बहिन जी—परम पिता परमात्मा से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि आप का भावी जीवन सुख-शान्तिमय हो। अन्त में हम आप की अनेकशः मंगल कामना करती हुई विवश होकर आप को भावभीनी विदाई देती हैं।

१० वैशाख मंगलवार
संवत् २०३० विक्रमी तदनुसार
३०-४-१९७४ ई०

हम हैं—
आपकी शुभाभिलाषिणी बहनें
विद्यालय की शिक्षिकाएं तथा
छात्राएं

मेरे आदरणीय पिता जी

(पुत्री सुशीला एम. ए. लैक्चरर एम० डी० सनातनधर्म गर्ल्स कालेज अम्बाला)

मेरा बड़ा सौभाग्य है कि मैं एक ऐसे पिता की पुत्री हूं जिनकी विद्वता को सब लोग मानते हैं तथा अत्यन्त आदर की दृष्टि से सब लोग देखते हैं। बचपन से ही देखती आई हूं कि पिता जी हमेशा अध्ययनलीन रहते थे हमें समझ नहीं आता था कि क्या पढ़ते हैं ? जब बड़ी हुई तो मालूम हुआ कि उनका सारा समय वेदादि शास्त्रों के अध्ययन व मनन करने में लगता था और आज भी यही कार्यक्रम चलता है । हर त्यौहार पर हमें उसको महत्ता का प्राचीन रूप के विषय में अवगत कराते रहे जो अब मैं अपने बच्चों को कराती हूं ।

प्रतिदिन सायं पिताजी और माताजो जबरदस्ती सन्ध्या करने बिठा लेते थे, हमारा ध्यान खेल में होता था जरा भी मन्त्रोच्चारण में अशुद्धि हुई कि वहीं पकड़े गये और उसे पुनः शुद्ध याद करना पड़ता था । अब उसकी महत्ता का ज्ञान होता है । पिताजी की इस शिक्षा ने हमें इतती मानसिक शक्ति दी कि कष्टों के समय यदि 'गायत्री मंत्र' का अर्थ सहित जाप किया जाये तो कष्ट, कष्ट अनुभव नहीं होता । इस वास्तविकता को मैंने अपने जीवन में कई बार अनुभव किया ।

पिता जी जैसे आदर्शवान व्यक्ति मैंने बहुत कम देखे हैं । हम आर्य समाज हनुमान् रोड की बिल्डिंग में ही रहते थे । कभी रात में हाल की बिजली जलती रहती तो मुझे कहते शीला जरा नीचे जा कर पंखे ब बिजली तो बन्द कर आओ शायद सेवक को याद नहीं रहा । मैंने कहा पिताजी मुझे अंधेरे में जाने से डर लगता है । जली रहने दो क्या फर्क पड़ता है, तो पिता जी कहते नहीं, समाज का नुकसान हमारा नुकसान है ।

हम पिता जी से पूछते कि आप ने सरकारी नौकरी क्यों नहीं

की ? जब कि हमारे नाना जी श्री पं० रामचन्द्र जी जिज्ञासु इर्विन अस्पताल में चीफ मैडिकल ऑफिसर के हैडक्लर्क थे और वे चाहते भी थे तथा नौकरी दिलवा भी सकते थे। तो वे बोले कि मैं आर्य समाज की सेवा करना चाहता हूं। पेट तो सभी भर लेते हैं पर जिस कार्य से आतमा प्रसन्न व सन्तुष्ट रहे वही कार्य करना चाहिए तथा मैं पराधीन रह कर न तो स्वेच्छा से स्वाध्याय कर सकता हूं और न ही समाज सेवा।

किस्मत देखो मैं एक महान् आर्य समाजी सेवक की पुत्री और विवाह हुआ सनातनी (पौराणिक) परिवार में, पर पिता जी के संस्कार इतने दृढ़ थे कि मैं अपने पति के सहयोग से घर में हर शुभ अवसरों पर हवन करती रही दोनों समय सन्ध्या भी सपरिवार करती रही। मेरे पति की शिक्षा भी डो. ए. वी, स्कूल तथा कालिज में हुई इसलिये वेदमंत्रों का उच्चारण करने व अपने तीनों बच्चों को आर्यसमाजी संस्कारों के ढालने में अधिक परेशानी नहीं हुई। पिताजी मुझे समय २ पर हवन मन्त्र व धार्मिक पुस्तकें भेंट देते रहते हैं जिस से मेरे ज्ञान में बड़ी वृद्धि होती है।

मेरे पिताजी न केवल ज्ञान की ही बातें करते हैं। बल्कि उन्हें बैठे-२ "शेर" कहने और तुकबन्दियां करने का भी बड़ा शौक है। खास कर होली वाले दिन "जब पिता जी का जन्म दिन होता है" तब हवन सन्ध्या के बाद तुकबन्दियां व चुटकुले सुनाते जिन्हें सुन कर हम इतना हंसते कि पेट में बल पड़ जाते। कई वस्तुओं के नाम तो उन्होंने अपने ही दिमाग से रखे हुए थे जैसे "धप्पू" जिसे कपड़ें सुखाते समय लगाते हैं। शादी के बाद जब मैं बीकानेर गई तो मैंने दुकानदार से कहा १२ धप्पू देना तो वह हैरान होकर मेरा मुंह देखने लगा जब मैंने समझाया तो बोला इसका नाम धप्पू नहीं "पकड़" है। जब मैं देहली आई तो पिता जी से पूछा कि आपने "पकड़" का नाम धप्पू क्यों बताया ? तो वे बोले "ध" से धोती 'प" से पकड़ना इसलिये यह सांकेतिक नाम मैंने अपना ही रखा है।

पिता जी एक अनुशासन प्रिय व्यक्ति हैं जब वे भोजन करते तथा पढ़ते उस समय घर शोर नहीं मचा सकते थे। पिता जी ने हम सबको अनुशासित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हम सब की ड्यूटी लगी होती थी और उसका विवरण कापी पर लिखा होता

था जिसके अनुसार हम काम करते थे पिता जी के पास पुस्तकों का इतना बड़ा भण्डार है कि गर्मियों की छुट्टियों में उन पर हम सब बहिन भाईयों को कागज चढ़ाने और उन्हें क्रम से लगाने का काम करना होता था। इस पर पिता जी हमें इनाम भी देते थे। समाज का कार्य और उसका ध्यान पिता जी इतना रखते कि जैसे यही उनका जीवन है। रविवार के दिन जब हम साप्ताहिक सत्संग में उनकी वेदमन्त्रों की व्याख्या सुनते तो वह हमारे मन मस्तिष्क में ऐसी घर कर जाती कि हम उसे आज तक (३० वर्ष व्यतीत होने पर भी) भूल नहीं पाये।

पिता जी ने हम आठों बहिन भाईयों के स्वास्थ्य का ध्यान रखा कि हमें सदा दूध ही पिलाया चाय नाम की चीज़ तो घर में आने ही नहीं दी। मुझ अकेली को ही ढाई सेर (किलो) दूध पिलाते थे क्योंकि मैं दूध की बड़ी शौकीन थी। अन्य घर वालों के लिये अलग से दूध लिया जाता था। समय सस्ता था पर उसी के अनुसार आय भी कम थी। पर पिता जी सदा यही कहते कि मैं रात दिन इतनी मेहनत इसलिये करता हूं कि तुम सबको उत्तम तथा स्वास्थ्यवर्द्धक वस्तुएं खिला सकूं तथा उच्चशिक्षा दिला सकूँ।

मैं आज सोचती हूं कि पिताजी अपने समय में कितना आगे थे जब माता पिता बच्चों की प्रत्येक हरकत पर इतना अधिक ध्यान नहीं दे सकते थे क्योंकि बच्चे अधिक होते थे। पिता जी वास्तव में Children Conscious थे उन्होंने हमें इतना अनुशासित बनाया कि हम आठ भाई बहिनों ने आठ परिवार इसी प्रकार बनाए जैसा हमारे पिता जी ने हमें बनाया।

अन्त में हम सब बहिन भाईयों की ओर से प्रभु से प्रार्थना है कि जिस प्रकार उन्होंने अपने ७५ वर्ष पूर्ण किये हैं उसी प्रकार १०० वर्ष भी पूर्ण करें तथा भूयश्चय शरदः शतात्' भी उन की छत्रछाया हमारे परिवार पर बनी रहे।

"पुत्र वधू की भावना"

(श्रीमती राका प्रकाश बी० ए० जनकपुरी)

अपने पूज्य श्वसुर जी के प्रति

छात्रावस्था में मैंने आर्यसमाज व उसके संस्थापक श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती व आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्राथमिक परिचय प्राप्त कर लिया था। एक सनातनी परिवार की होने के कारण आर्यसमाज व उससे सम्बन्धित महानुभावों से विशेष परिचय का अवसर मुझे प्राप्त नहीं हुआ।

संयोग की बात है कि सन् १९६८ ई० में मेरा विवाह आर्य समाज के स्तम्भ माननीय पुरोहित श्री चन्द्रभानु जी के सुपुत्र आनन्द प्रकाश जी से हुआ, और तभी मुझे यह अवसर प्राप्त हुआ कि श्री पंडित जी के जीवन द्वारा आर्यसमाज से मैं सम्यक् परिचित हो सकी।

यह मेरा सौभाग्य था कि मैं पंडित जी के पास उनके निवास स्थान में कई वर्षों तक साथ रही। पंडित जी को समीप से मैंने देखा और जान सकी कि उन्होंने अपने परिवार को किस प्रकार आर्य समाज के सिद्धान्तों से परिपूरित किया हुआ है। प्रातः से सायं तक मैंने देखा कि पण्डित जी प्रतिक्षण आर्य समाज व उसके भक्तों की सेवा में हो मगन रहते थे। आर्य समाज मन्दिर में प्रातः हवन व उपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न कराने के अतिरिक्त उनका अधिकांश समय अनगिनत शिष्यों व उनके परिवारों की धार्मिक व अन्य समस्याओं के समाधान करने में व्यतीत होता है। मैंने पाया कि नामकरण, मुण्डन आदि संस्कारों से लेकर शादी के कार्यक्रम आर्य समाज के भक्त तथा अन्य परिवारों में भी उन्हीं के द्वारा सम्पन्न कराये जाते हैं।

पंडित जी का सम्भ्रान्त व्यक्तित्व अपने आप में स्वयं भी श्रद्धा का स्थान बना लेता है। मैंने देखा कि दिल्ली महानगरी के अनेका-

नेक गण्य-मान्य परिवारों में उनकी उपस्थिति के बिना कोई भी धार्मिक व सामाजिक कृत्य परिपूर्ण नहीं होते थे। कई परिवार तो अपने व्यवसायों के संस्थानों का उदघाटन यज्ञ उन्हीं के द्वारा सम्पन्न कराते थे। इस प्रकार लगातार १७ वर्षों तक मुझे यह सुअवसर प्राप्त हुआ कि मैं पंडित जी को अति निकट से देख व समझ पाऊं। मैंने स्वयं पाया कि वे कितने कर्त्तव्यपरायण, स्निग्ध व कोमल प्रकृति के हैं। दयालुता तो उनका सहज स्वभाव है। अपने परिवार जनों की हर प्रकार की समस्या के समाधान में तो उनका स्वाभाविक अनुदान तो सदा रहा ही, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर उन्होंने अन्य लोगों की वैयक्तिक, पारिवारिक समस्याओं के समाधान में अपना पूर्ण सहयोग दिया। आज भी जब कि वे ७५ वर्ष की सीमा लांघ रहे हैं मैं देख पा रही हूं कि वह कितने लोकप्रिय हैं। इस अवस्था में भी लोगों के आग्रह पर यहां वहां जाते रहते हैं। और अपने भक्त परिवारों के मांगलिक कार्यों में सम्मिलित होते हैं।

उनकी कार्यशीलता व कर्त्तव्य परायणता को देख कर मुझे व परिवार के अन्य सदस्यों को प्रेरणा व स्फूर्ति मिलती है और श्रद्धा व गर्व से ओतप्रोत हो नतमस्तक हो जाते हैं। हम उन्हें शत शत प्रणाम करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें शत वर्ष पर्यन्त दीर्घायु प्रदान करें। हम सब परिवार व अन्य समाज के लोगों पर उनकी छत्रछाया सदव बनी रहे।

उनकी श्रद्धालु पुत्रवधु

हमारे श्रद्धेय मामाजी

आर्य जगत् में हमारे पूज्य मामाजी श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण को सभी भली भांति जानते हैं। जब से मैंने होश संभाला और उनके संपर्क में आया, उनको सदैव ही हंसमुख, मृदु-भाषी और समय का पाबंद पाया।

समाज की सेवा करने में उनको सदा प्रसन्नता होती है। विवाह-संस्कार जैसे मांगलिक कार्यों से लेकर जीवन की सभी प्रकार की सुख-दुख की घड़ियों में अपने को समर्पित करने में वे कभी भी पीछे नहीं हटते।

उनके प्रवचन और सत्संग मर्मस्पर्शी और लाभदायक होते हैं। सभी श्रद्धालु जन खुशी का अनुभव करते हैं।

आर्य समाज के सिद्धान्तों और उनका प्रचार करने में हमारे मामाजी अग्रणी हैं।

आर्य समाज ने जो उनको सम्मान दिया है, हम सभी को इसका गर्व है।

हम उनकी दीर्घायु की परम पिता से प्रार्थना करते हैं। हमारी शुभकामनाएँ उनके साथ हैं।

श्री पण्डित जी का
भानजा
यशपाल शर्मा
जन संपर्क अधिकारी
इंडियन एयर लाइन्स मुख्यालय
नई दिल्ली

१२ मार्च, १९८४

My Father's Visit to Iran and Europe

Shri Vinay Prakash managing Partner Auto International Enterpries

My reverend father Shri Pt Chandra Bhanu ji (whom we call PITAJI in affection), visited me in Qazwin, during the year 1977, an Industrial Area situated 160 km North West of Tehran (Capital of Iran), where I was working with M/s. Iranian Lamps Ltd., a Philips subsidiary Lamp making factory, as a Chief Quality Control. I think Pitaji was quite proud and happy for my success in Iran at such a young age of 25 years only. His programme was delayed by few days, because of unavilability of the seat. When he reached at Tehran, airport however, I received a message through my friend Sardar Manjit Singh Bhasin, that he has been sent by a private taxi to Qazwin and I must receive him there. During those days of Shah, one full taxi for a distance of 160 kms. used to cost only Rs. 80/-. when we met, he was very much glad and happy and I was also happy to see him after nearly 2 years. His eyes were full of tears after seeing all of us. I took him to my apartment in my car (In India, I didn't know even how to drive a cycle) He was quite happy to see my apartment, which was given to me by the factory. We (myself and my wife Sapna) already thought of a corner room attached bath, for his studies as it was very much necessary to provide him as PITAI is very fond of reading. He always has his books with him.

In the evening our many friends (Indian as well as Pakistanis) came to see him. Everybody gave him same recognition and respect, as they could have glven to their parents. In those days weather was quite pleasant. During his stay he had only one motto in his mind—"To preach—to Preach—To Preach the VEDIC Dharma and principles of ARYA SAMAJ". In Iran usually Thrusdays and Fridays were week end, so both these days of the week time

he stayed there, there was always "HAVAN" and other ceremony at some or other's places of Indian Engineers as well as Doctors. This thing brought the awareness amonst all Indians, of our prestigeous religious cultural beritage. A good number of times, even Iranians were also present.

Audience at Gurudwara, Tehran

With the help of Shri Nanak Singh Bhasin of Tehran who was an office bearer of Gurdwara Prabardhak Committee as well as Shri Motihari Cultural Attache, Indian Embassy, Tehran, it was decided to allow "PITAJI", to preach in Gurudwara, Tehran. The Preaching was to start at 10-00 hrs. We started apprx. at 0745 hrs. from Qazwin and reached Tehran at 0930 hrs. covering 160 kms. of the way. It was really a thicky problem to choose the subject. The fanatism of Sardars especially in Gurudwaras is same throughout the world. However with his sharp wit and intelligent sense, he choose the subject "How To Make A Happy Home", giving various examples and Shlokas, All the people present were listening with the pin drop silence, and one could see impressed faces all our the worship place of Gurudwara. After finishing his lecture, I could feel the great satisfaction, joy and privilege to speak by any Arya Samajist in any Gurudwara.

Perplexed with Aura

One of my colleague, Mr. S. O. Chaharbakshi, an Armenian, educated in Massachuts Institute of Technology (U.S.A.) had a great nearness, affection with me, because of his good Indian friends during his studentship in U.S.A. As "PITAJI" was very fond of morning walk, so around 0715 hrs. Mr. Chaharbakshi was going from his apartment to the factory. During the same time PITAJI were returning from the morning walk, As soon as Pitaji passed him, he was suddenly perlexed and motionless as according to him "some ANGEL has just passed" and he stood there for few moments. This was "AURA", for a strong character, selfless preacher, who spent his whole life only in preaching the words of GOD, and never hurt anybody.

Same impression I noticed on the faces of the West Germans near Frankfurt Railway Station, when one day we were wandering during the evening.

Milk Celebration on Effile Tower Paris.

We reached from Frankfurt by the night train to Paris in the morning around 0630 hrs. Being usual habitual of going to toilet, he went to the underground W.C. section at "PARIS NORD" Station having a towel on his shoulders. The gate Reeper sent him back for getting 1.0 F. Fr. as charges for the bath. Accomodation being difficult to get, we left our luggage in the "Locker Room" and got accomodation by noon only. After little relaxation, we planned to go to "Effile Tower". I also took 2 bottes of milk filled in plastic bottles. After reaching to the concerned floor, we saw many tourists drinking Champagne, wine etc. etc. So as a token of our celeberation we orated "GAYATRI MANTRAS" three times, thanked the GOD for all this and drank the Pure Milk on the Effile Tower. We also took Boat Cruising trip around the Effile Tower and saw many Historical Places. Then we retured to hotel from underground railway metro

During Land journey it is really a damn trouble to trevel a heavy weight suitcases, but he bore every trouble because 75% of the weight was nothing else, than the various books, periodical, "HAVAN" Proceedures. which he brought especially from Delhi for free distribution in London to my sister and then to local library in Middlesex. U.K.

Everyday. Everytime of his life, he always told us that we are indebted of Maharishi Davanand. This was the zeal, enthusiasm, dedication and selfless work, which kept always thought of Arya Samaj and Rishi Dayand.

We really cut a sorry figure that none of us, could take his work, because of prevailing low mentality, jeaulous, selfish approach and no respect to preachers by even present members of the governing body of Arya Samaj.

I, with my wife Sapna, son Vikas and daughter Shalini pray a very trouble—free longlife, so that he could have longest life to guide our ways to a fruitful carreer.

तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु ।

यजु० ३४।१

श्री पण्डित जी द्वारा लिखे गये कुछ विशेष लेख तथा संस्मरण

गायत्री मन्त्र का अर्थ तथा संक्षिप्त व्याख्या

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०११ १२ १३१४१५
ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
१६१७ १८ १९ २०२१२२२३२४
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

'गायत्री' शब्द के दो अर्थ हैं (१) गायत्री छन्द २४ अक्षरों का होता है, इस मन्त्र में २४ अक्षर हैं इसलिए इसको गायत्री मन्त्र कहते हैं (२) 'गायत्री' का अर्थ किया गया है 'गातारं त्रायते यस्माद् गायत्री तेन गीयते, यह गान करने वाले की, जय करने वाली की, रक्षा करती है, इसलिए भी इसको गायत्री कहा जाता है।

'ओ३म्' यह ईश्वर का मुख्य नाम है, यह प्रत्येक मन्त्र के आरंभ में बोला जाता है, इसके बहुत अर्थ हैं, उनमें से एक अर्थ है, रक्षा करने वाला। परमेश्वर के सम्बन्ध में हमें ऐसा अनुभव करना चाहिए कि वह सर्व व्यापक है, सब जगह है। हम चाहे कमरे में बैठे हों, जंगल में हों, हवाई जहाज, बस या रेल में सफर कर रहे हों, परमेश्वर हमारी हर स्थान पर रक्षा कर रहा है। दूसरे ईश्वर हमारी हर समय रक्षा कर रहा है। चौकीदार और पहरेदार कुछ घंटों की ड्यूटी देकर थक जाते हैं और फिर सो जाते हैं परन्तु परमेश्वर हमारी हर समय रक्षा कर रहा है, वह हमेशा जागा हुआ है। रात्रि को जिन्हें नींद न आती हो, वे ऐसा अनुभव करें कि प्रभु हमारी माता हैं, वह जगत्-जननी है। हम एक बालक की तरह उसकी गोद में लेटे हुए हैं। वह हमें लोरियां दे रही है। हमें लाड लडा रही है। थपक-थपक कर सुला रही है तो हमें शीघ्र ही नींद आ जायेगी और हमें स्वप्न भी सुन्दर-सुन्दर दीखेंगे। तीसरे वह हमारी हर तरह रक्षा कर रहा है। उसने हमारे शरीर की रक्षा करने के लिए तरह-तरह के फल, सब्जियां तथा अन्न उत्पन्न किये हैं। हमारे मन की रक्षा करने के लिए वह हर देश में महान पुरुषों को उत्पन्न करता है। आत्मा की रक्षा के उसने वेदों का पवित्र ज्ञान

सृष्टि के आरम्भ में दिया है। जिस प्रकार उसने रहने के लिए पृथिवी, श्वास लेने के लिए वायु, देखने तथा जीवन के लिए सूर्य को सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न किया, उसी प्रकार इस पृथिवी पर हमें किस प्रकार रहना है, कैसे एक दूसरे के साथ व्यवहार करना है। कैसे मनुष्य जीवन को सफल और उपयोगी बनाना है इस ज्ञान के लिए वेदों का पवित्र ज्ञान दिया है।

भूर्भुवः स्वः 'भूः, भुवः, स्वः इन तीन शब्दों की बड़ी महिमा है। ये संन्ध्या के मन्त्रों में तथा हवन मन्त्रों में कई स्थान पर आये हैं। इनके भी अनेक अर्थ हैं। एक अर्थ है 'भूरिति वे प्राणः भू प्राण को कहते हैं। वह प्रभु हमारे प्राणों के प्राण हैं, वह हमें प्राणों के समान प्रिय हाने चाहिए। 'भुवरित्यपानः' भुवः अपान को कहते हैं। ईश्वर हमारे दुःखों को दूर करता है। वह हमें प्राण के समान प्रिय इसलिए है कि हमारे दुःखों का नाशक है।

'स्वरिति व्यानः' स्वः व्यान को कहते हैं। सर्वत्र व्यापक होने से वह व्यान कहलाता है। यह हमारे दुःख इसलिए दूर कर सकता है क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। हमसे कहीं दूर नहीं है।

'भू भुंव स्वः' का दूसरा अर्थ—'भू' सत् (Existene) को कहते है 'भू सत्तायाम्' यह सब से पहली धातु (Root) है अर्थात् भू का अर्थ सत्ता है। भुवः 'चित' चेतनता को कहते हैं। 'स्वः' आनन्द को कहते हैं। संसार में ३ ही पदार्थ हैं। प्रकृति (matter), जीव (Soel) तथा ईश्वर। गायत्री मन्त्र में इन तीनों का वर्णन अत्यन्त संक्षेप में गूढ़ रूप से किया गया है। प्रकृति 'भू अर्थात् 'सत्' है। उसकी अपनी सत्ता है। यह जगत् स्वप्रवृत् नहीं है, जीती जागती सताई है। जीव (जोत्रात्मा) 'भूर्भुवः है 'सत—चित' सच्चित है। जीवात्मा की सत्ता भी है परन्तु उसमें यह विशेषता है कि वह 'चेतन' Conseus है प्रकृति चेतन नहीं, जड़ है। ईश्वर स्वः सत—चित—आनन्द सच्चिदानन्द है। उसकी सत्ता है वह मौजूद है 'चित' व सर्वज्ञ है परन्तु उसमें जीवात्मा से यह विशेषता है कि वह आनन्द स्वरूप है। जीवात्मा नहीं। यह तो आनन्द की खोज में रहता है। इसलिए गायत्री हमें सिखाती है कि यदि हम आनन्द चाहते हैं तो हमें प्रभु की शरण में जाना चाहिए। उसकी ओर झुकना चाहिए, प्रकृति की ओर नहीं। क्योंकि प्रकृति तो केवल भू सत् है। हम सच्चित हैं,

प्रकृति से बढ़कर हैं परन्तु परमात्मा हम सबसे बढ़कर हैं वे सच्चिदानन्द हैं। आनन्द उन्हीं से मिल सकता है। जिस प्रकार मिठाई हलवाई की दुकान पर हीं मिलती है, दर्जी की दुकान पर नहीं इसी प्रकार 'आनन्द' भगवान से ही मिल सकता है, प्रकृति से नहीं। प्रकृति का हमें उपयोग तो करना चाहिये, संसार के पदार्थों से लाभ उठाना चाहिये क्योंकि यह शरीर भी प्रकृति से बना हुआ है परन्तु उपासना केवल हमें प्रभु की ही करनी चाहिये। उसी को सर झुकाना चाहिये।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि(तत् सवितुः) उस जगत के उत्पन्न करने वाले तथा ऐश्वर्य के देने बाले (देवस्य) सब सुखों के देने वाले दिव्य देव का जो (वरेण्यं भर्गः) वरण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य, जो पवित्र तेज है (धीमहि) उसका हम ध्यान करें उसको हम धारण करें अर्थात् ईश्वर के जो पवित्र गुण हैं, उनका हम चिन्तन करें तथा अपने जीवन को श्रेष्ठ और पवित्र बनाने के लिये उनको धारण करें। ईश्वर के हम सब गुण तो धारण नहीं कर सकते। वह सर्व व्यापक, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी सृष्टि कर्ता है। हम वैसे तो नहीं हो सकते हैं परन्तु हम उसका अनुकरण करते हुए किसी अंश तक पवित्र, न्यायकारी, दयालु, उदार तथा दानी हो सकते हैं। ईश्वर की भक्ति का सही अर्थ यही है हम उसके अनुयायी (Follover) बनें। उस जैसा बनने का यत्न करें। उसके गुणों को धारण करते चले जावें।

धियो यो नः प्रचोदयात्-हम उस प्रभु के पवित्र तेज को क्यों धारण करें तथा क्यों उसका ध्यान करें इसके लिये (यः) जो वह सच्चिदानन्द स्वरूप, प्राणस्वरूप, दुःखनाशक तथा सर्व व्यापक सविता देव है वह (नः धियः प्रचोदयात्) हमारी बुद्धियों को उत्तम प्रेरणा देवे। उसे अच्छे कार्यों और अच्छे मार्ग पर लगावे।

बुद्धि ही दुनिया में सबसे बड़ी चीज है। यह ठीक है तो सब कुछ ठीक है। यह बिगड़ी तो सब कुछ बिगड़ जाता है। गायत्री का महत्व इसलिये माना गया है कि इसमें सुबुद्धि की याचना की गई

है। धन वैभव, मकान दुकान, ठाठ-बाट शान शौकत सब बुद्धि से ही मिलते हैं परन्तु हमारी बुद्धि ठीक ही बनी रहनी चाहिये वर्ना यह सब खेल बिगड़ जाता है। बुद्धि ठीक होगी तो हम इन्हें प्राप्त कर अभिमानी नहीं बनेंगे, अकड़ेंगे नहीं किन्तु हम नम्र बनेंगे। इन का उपयोग करेंगे। दानशील बने रहेंगे परन्तु यह सब कुछ तब ही हो सकेगा यदि हमारा सम्बन्ध प्रभु से बना रहेगा। हम उसकी भक्ति और उपासना करते रहेंगे। इस प्रकार गायत्री मन्त्र में प्रभु के स्वरूप का वर्णन, उसकी भक्ति तथा इनके द्वारा बुद्धि की निर्मलता पर जोर दिया है। प्रभु के द्वःरा हमारी बुद्धि पवित्र हो इस बुद्धि की पवित्रता द्वारा हम संसार के अन्य कार्य ठीक रीति से करते हुए प्रभु की ओर जाने वाले हों, उसकी भक्ति में लीन होने वाले हों।

चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण
१/१२ सर्वप्रिय विहार
नई दिल्ली— ११००१६
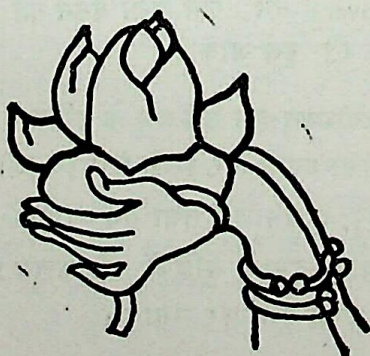
संस्कारों का महत्व

(डी. ए. वी. कालेज अम्बाला नगर की पत्रिका 'ज्ञानशील' के आर्य समाज शताब्दी विशेषांक में प्रकाशित)

पं० चन्द्रभानु की सिद्धांत भूषण आर्य समाज हनुमान् रोड दिल्ली के सुप्रसिद्ध पुरोहित हैं। जिन्हें संस्कारों के सम्बन्ध में अच्छा ज्ञान है अतः दिल्ली के सर्वप्रिय संस्कारक माने जाते हैं। संस्कारों के महत्व में गर्भाधान संस्कारों का कितना वैज्ञानिक स्थान है, इसका प्रस्तुत लेख में अध्ययन कीजिए। संस्कारों के मूल में जिन मनोभावों का व्यापार चलता रहता है वे कितने हृदयग्राही और निर्मापक हैं इस लघु लेख से अनुमान किया जा सकेगा।—सं

संस्कार १६ हैं—(१) गर्भधान (निषेक) (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्नप्राशन (८) मुण्डन (चूड़ा कर्म) (६) कर्ण-वेध (१०) उपनयन (११) वेदारम्भ (१२) समावर्तन (१३) विवाह (१४) वानप्रस्थ (१५) संन्यास तथा (१६) अन्त्येष्टि।

ये संस्कार मानव जीवन का विकास करने, उत्तम नागरिक बनाने एवं व्यक्ति को सुसभ्य तथा सुसंस्कृत करने के हेतु हमारे पूर्वजों द्वारा युक्तियुक्त तथा वैज्ञानिक ढंग से प्रचलित किये गये हैं। भारत के प्रसिद्ध व्यवस्थाकार महर्षि मनु ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ मनु-स्मृति अ० २/२६ में इनके सम्बन्ध में लिखा है—

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादि द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कार पावनः प्रेत्य चेह च॥

सब मनुष्यों को उचित है कि वेदविहित पुण्य रूप कर्मों से द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य अपने सन्तानों के गर्भाधानादि सभी संस्कार करें क्योंकि यह कार्य इहलोक तथा परलोक दोनों को ही पवित्र करने वाला है।

योगिराज श्री कृष्ण ने अपने प्रिय भानजे अभिमन्यु के जातक-र्मादि संस्कार स्वयं कराये थे (महाभारत आदि पर्व अ० २२३/७१

तथा उसको एक आदर्श क्षत्रिय वीर के रूप में संसार के समक्ष उपस्थित करने में सफल हुए थे।

वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक तथा इस युग के समाज सुधारक शिरोमणि महर्षि दयानन्द ने संस्कारों का महत्व प्रदर्शित करते हुए लिखा है—"जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होती है इसलिए संस्कारों का करना सब मनष्यों को अति उचित है।" (संस्कार विधि—भूमिका)

महर्षि दयानन्द के इस कथन का पाश्चात्य विचारकों ने इस प्रकार समर्थन किया है :—

We take much pains over breeds of sheep and cattle and horse, but what is most important is to improve the breed of men—mentally and spiritually. (Lord Clarendon)

इन संस्कारों में प्रथम संस्कार गर्भाधान के महत्व पर कुछ विवेचन प्रस्तुत है—

माता पिता बनने के इच्छुक तथा अपनी गोद में सुन्दर, सबल तथा स्वस्थ सन्तान को किलकारी मारते हुए देखने के उत्सुक विवाहित युवकों और युवतियों को इस संस्कार के लिये प्रथम कुछ तैयारी करने की आवश्यकता है। बिना प्रयत्न के सुन्दर फल की प्राप्ति कैसे होगी ? ऋषि दयानन्द ने इस सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास के आरम्भ में लिखा है :—

'माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व, मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य मद्य दुर्गन्ध, रूक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थों को छोड़ के जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करावें, वैसे घृत, दुग्ध, मिष्टान्न पान आदि श्रष्ठ पदार्थों का सेवन करें जिससे रजस् वीय भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुण युक्त हों।"

हैलसिंग फार्म यूनीवर्सिटी (फिनलैन्ड) के प्रोफेसर लैटिनेन ने बारहवीं इन्टरनेशनल कांग्रेस में शराबी माता पिता की सन्तानों के विषय में बताया कि उनके बच्चे ८.२०% कमजोर और २४.८%

मरते थे जब कि शराब न पीने वाले माता पिता के प्रतिशत १.३ बच्चे कमजोर और १८.५ प्रतिशत बच्चे मरते थे।

उन्होंने आगे बताया कि एक दूसरे स्थान पर १६५१६ बच्चों को जांच करने पर नीचे लिखे अनुसार फल पाया गया :—

माता पिता के	प्रतिशत बच्चे मरे या अधूरे गिरे	जीवित बच्चे
शराब न पीने वाले	१३%	८७%
थोड़ी शराब पीने वाले	२३%	७०%
खूब शराब पीने वाले	३२%	६८%

इसी प्रकार प्रो० व्हान बुंगे ने शराबी माता पिता और क्षय-ग्रस्त बच्चों के सम्बन्ध में तहकीकात करने पर इस प्रकार फल प्रकाशित किया है—

माता पिता के	प्रतिशत बच्चे क्षयी पाये गये
कभी कभी शराब पीने वाले	८.७
प्रतिदिन किन्तु हिसाब में पीने वाले	१०.७
प्रतिदिन किन्तु बेहिसाब पीने वाले	१६.४
प्रसिद्ध शराबी	२१.४

यही हाल अन्य दुर्व्यसनों में ग्रस्त माता पिताओं की सन्तानों का होता है। विवाह से पूर्व भी युवकों तथा युवतियों का संयमी तथा सदाचारी दूसरे शब्दों में ब्रह्मचारी होना आवश्यक है। ऋषि दयानन्द ने युवक तथा युवतियों के माता पिताओं को चेतावनी देते हुए संस्कार विधि के गर्भाधान प्रकरण में लिखा है—"वही सब सुधारों का सुधार सब सौभाग्यों का सौभाग्य और सब उन्नतियों को उन्नति करने वाला कर्म है कि इस अवस्था (विद्यार्थी जीवन) में ब्रह्मचर्य रखा के अपने सन्तानों को विद्या और सुशिक्षा ग्रहण करावें कि जिससे (विवाह पश्चात्) उत्तम सन्तान होवें।"

गर्भाधान संस्कार की चर्चा के सम्बन्ध में अनेक लोग नाक भी चढ़ाते तथा इस सम्बन्ध में किसी भी तैयारी की आवश्यकता नहीं समझते हैं, परन्तु बाद में यही महानुभाव अपनी सन्तानों के नालायक या निकम्मी होने का रोना रोते रहते हैं। इस संस्कार के महत्व के सम्बन्ध में अमेरिका के डा० ट्राल (Trall) एम. डी. ने लिखा है— "गर्भाधान जो कि अत्यन्त महान कार्य है इसलिये इसके सम्बन्ध में मुख्य तैयारी करनी चाहिए।'

The Science of New Life नामक महत्व पूर्ण पुस्तक के लेखक डा. कौवन (Cowan) एम. डी. का कथन है—"आरम्भिक तैयारी का समय गर्भाधान क्रिया से चार सप्ताह पहले होना चाहिए, इस समय में माता पिता के विचार और कर्त्तव्य उच्च श्रेणी के होने चाहियें। माता पिता को परस्पर प्रेम रखते हुए धैर्य से उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के साधन करने चाहियें यदि इममें शारीरिक अथवा मानसिक निकृष्ट स्वभाव हो तो दृढ़ इच्छा से उनका दमन करना चाहिए और उनके स्थान में श्रेष्ठ यथार्थ पवित्र स्वभाव उत्पन्न करने चाहियें।"

इस प्रकार यह संस्कार मानव जीवन की आधारशिला के समान है। आधार शिला के दृढ़ तथा उत्तम होने से ही मानव जीवन का यह भवन दृढ़ और प्रशस्त बन सकता है। इस संस्कार में हवन यज्ञ द्वारा प्रभु स्तुति तथा परिवार के माननीय एवं वृद्ध स्त्री पुरुषों की वन्दना कर उनका आशीर्वाद लेना भावी सन्तान को आस्तिक तथा विनम्र बनाने का सूत्रपात है।

सप्तपदी का महत्व

श्री पं० चन्द्रभानु जी पुरोहित सिद्धान्त भूषण

मनुस्मृति के अध्याय ८ श्लोक २२७ में कहा गया है :—

पाणिग्रहणिका मन्त्रा नियतं दारलक्षणम् ।
तेषाँ निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे ।।

पाणिग्रहण के मन्त्र पत्नी बनाने के निश्चित लक्षण हैं परन्तु उन मन्त्रों की पूर्णता विद्वानों ने 'सप्तपदी' के सातवें पगपर कही है अर्थात् विवाह संस्कार में पाणिग्रहण के मन्त्र (गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्त० इत्यादि) पढ़ने आवश्यक हैं परन्तु जब तक 'सप्तपदी' विधि न हो तब तक विवाह पूर्ण नहीं माना जा सकता। इसी की पुष्टि महाभारत के अनुशासन पर्व अ० ४४ श्लोक ५५ में युधिष्ठिर के प्रश्नोत्तर में शास्त्र-विशारद भीष्म पितामह जी ने इस प्रकार की है :—

पाणिग्रहण मन्त्राणाँ निष्ठा स्यात् सप्तमे पदे ।

पाणिग्रहण के मन्त्रों की परिपूर्णता सप्तपदी के सप्तम पद पर ही होती है।

इसी सम्बन्ध में कर्मकाण्ड का यह वचन भी प्रसिद्ध है "यावत् सप्तपदी नास्ति तावत् कन्या कुमारिका"—जब तक सप्तपदी न हो जाय तब तक कन्या कुमारी के समान ही मानी जाती है।

सप्तपदी का महत्व उसके मन्त्रों की सारगर्भित तथा अर्थपूर्ण व्याख्या से भी है। विधि के प्रारम्भ में ही वर वधू से कहता है 'मा सव्येन दक्षिणमतिक्राम'—इसका अर्थ जहां यह है कि बायां पग दायें का अतिक्रमण न करे, उससे आगे न निकले—वहां इसका भाव यह भी है कि कोई भी उल्टा कदम, अनुचित कदम दक्षिण कदम को, सीधे कदम को सच्चाई के कदम का उल्लंघन न करे अर्थात् तुम ठीक मार्ग पर चलने वाली बनो।

सप्तपदी का पहला मंत्र है—'ओं इष एकपदी भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु पुत्रान् विन्दावहै बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।

हे देवि! अन्न के लिये पहला पग उठाने वाली बनो, मेरे व्रत के अनुकूलता वाली बनो। सर्वव्यापक प्रभु (मुझ तक) ले आवे, हम दोनों बहुत से पुत्रों को प्राप्त करें और वे पुत्र वृद्धावस्था तक जीने वालें हों अर्थात् दीर्घजीवी हों।

इसी प्रकार दूसरे पग में 'ऊर्जे': तीसरे में 'रायस्पोषाय': चौथे में 'मयो भवाय:; पांचवें में 'प्रजाभ्य'; छठे में 'ऋतुभ्य:' के लिये कहा गया है तथा सातवें पग में 'सखे' ऐसा सम्बोधन किया गया है।

'उर्ज' का अर्थ बल व रस है। अन्न खाने से शरीर में बल आना चाहिए। अन्न के साथ गोरस—दूध, दही, मक्खन तथा फलादि के रस का सेवन भी करना चाहिए। अन्न का तात्पर्य यहां धन से है। अन्न इसीलिये कहा क्योंकि यह सबसे बड़ा धन है। 'अन्नं साम्राज्यानामधिपतिः' अन्न साम्राज्यों का स्वामी है। हम धनों को बैंकों में ही डिपोजिट (Deposit) करने वाले न हों, अपने शरीर में भी डिपोजिट करने वाले हों, उनको बलवान् बनाने वाले हों।

वेदों में 'इष' तथा 'उर्ज' का स्थान-स्थान पर वर्णन आता है। यजुर्वेद के प्रारम्भ में ही कहा गया है 'इषे त्वा ऊर्जे त्वा···। इसी के अ० ३८। मन्त्र १४ में प्रार्थना की गई है 'इषे पिन्वस्व। ऊर्जे पिन्वस्व' हे प्रभो! हमें अन्न के लिए तथा बल के लिये शक्ति सम्पन्न कर। ऋ० ९।६६।१९ में कहा गया है······आसुवोर्जमिषं च नः' हमें ऊर्ज तथा अन्न प्राप्त कराइये। सामवेद उत्तरार्चिक अ० १९ खण्ड ३ सूक्त १० मन्त्र ७ में गृहपत्नी से आशा की गई है—इषं स्तोतृभ्य आ भर'। हम स्तुति करने वालों को अन्न से भरपूर कर दो। अथर्ववेद काण्ड ३ सूक्त १० मन्त्र ७ में गृहपत्नी से आशा की है—इषं ऊर्जं न आ भर' तू हमें अन्न तथा बल से सम्पन्न कर।

तीसरे पग में 'रायस्पोषाय' धन की वृद्धि तथा पशुओं की पुष्टि के लिए कहा गया है। मनुस्मृति अ० ७ श्लोक ९९ में उपदेश है—

अलब्धं चैव लिप्सेत, लब्धं रक्षेत यत्नतः।
रक्षित वर्धयेच्चैव, वृद्धं पात्रेषु निः क्षिपेत्॥

अप्राप्त को प्राप्त करने की इच्छा रखे, जो प्राप्त हो जाय उसकी यत्नपूर्वक रक्षा करे, रक्षित धन की वृद्धि करे तथा बढ़े हुए धन को सुपात्रों में दान कर दे।

शतपथ ३।३।१।८ में आया है 'पशवो वै रायः', इसलिए इनकी पुष्टि करनी चाहिये। वैदिक संस्कृति के अनुसार गृहस्थाश्रम में पशु होने आवश्यक हैं। यजुर्वेद अ० ३। मन्त्र ४३ में कहा गया है— 'उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः ०"। हमारे घरों में गौवें, बकरियां तथा भेड़ इत्यादि एकत्रित किये गये हैं।

चौथे पग में 'मयोभवाय' सुखी जीवन तथा ईश्वर भक्ति के लिए कहा गया है। धन, बल तथा ऐश्वर्य वृद्धि की सार्थकता तभी है जबकि पति पत्नी का जीवन सुखमय हो। दोनों में प्रेम हो, एक दूसरे से सन्तुष्ट हों।

सन्तुष्टो भार्या भर्ता, भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं, कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्॥ मनु० ३।६०

दोनों में आपस में ही प्रेम न हो अपितु प्रभु से भी प्रेम हो। दोनों आस्तिक हों, ईश्वर-भक्त हों। सन्ध्या के अन्तिम मन्त्र— नमस्कार मन्त्र में कहा गया है :—

'नमः शम्भवाय च मयो भवाय च'। यजु० १६।४१

उस सुखस्वरूप तथा संसार के उत्तम सुखों को देने वाले प्रभु को नमस्कार हो।

पांचवें पग में 'प्रजाभ्यः' सन्तान के लिए कहा गया है। घर में धन, बलादि सब हों परन्तु सन्तान न हो तब भी घर की शोभा नहीं है। बच्चों की किलकारियां घर के आंगन को हर्ष व प्रसन्नता से निनादित कर देती हैं इसीलिये सप्तपदी में प्रत्येक पग पर तथा विवाह की पाणिग्रहणादि विधियों में सन्तान प्राप्ति का बार-बार जिक्र आता है। सफल गृहस्थ का लक्षण बताया गया है :—

वाणी रसवती यस्य भार्या पुत्रवती सती।
लक्ष्मीर्दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम्॥

जिसकी वाणी सरस हो, पत्नी पतिव्रता तथा पुत्रवती हो, धन का दानादि में सदुपयोग होता हो, उस ही मनुष्य का जीवन सफल है। सप्तपदी में 'सन्तान' का नम्बर पांचवां है। सन्तानोत्पत्ति से पूर्व

घर में धन-धान्य हो, शरीर में बल हो, ऐश्वर्य की वृद्धि तथा गौ आदि पशुओं की विद्यमानता हो. हृदय में प्रेम हिलोरें भरता हो तथा प्रभु की मस्ती हो तब ही सन्तान का लालन-पालन ठीक हो सकेगा और वह बलवान्, सुन्दर, प्रेम करने वाली तथा आस्तिक होगी।

छठे पग में 'ऋतुभ्य' ऋतुओं के लिए कहा गया है। ऋतु छः होतो हैं तथा छठा ही पग रखा जाता है। किस ऋतु में कैसा आहार-विहार करना यह जानना आवश्यक है ताकि स्वास्थ्य उत्तम और निरोगिता रहे। डाक्टरों के बिलों से बार-बार बिलबिलाना न पड़े। आयुर्वेद में इसे ऋतुचर्या विद्या कहते हैं। सब ही ऋतुओं में आनन्द-प्रसन्न रहना चाहिये। हर मौसम की शिकायत न करते रहना चाहिये। सामवेद पूर्वार्चिक अध्याय ६ (आरण्य काव्य) की चतुर्थी दशति का दूसरा मन्त्र (क्रमशः मन्त्र सं० ६१६) है :—

वसन्त इन्नु रन्त्या ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्ततः शिशर इन्नु रन्त्यः॥

वसन्त ऋतु रमणीक है तो ग्रीष्म ऋतु भी रमणोक है। तदन्तर वर्षा की धारायें रमणीक हैं तो शरद् ऋतु, हेमन्त और शिशर ऋतुएं भी निश्चय पूर्वक रमणीक ही हैं।

अन्तिम सातवें पग में पत्नी को 'सखे' कह कर सम्बोधन किया गया है, यह हेतुगर्भ सम्बोवन है अर्थात् सख्यता के हेतु सातवां पग चलने वाली बनो। पति-पत्नी एक-दूसरे के सखा हैं, मित्र हैं। मित्र मित्र का आदर करता है उससे कोई बात छिपाता नहीं। वे एक-दूसरे के विश्वास-पात्र बनते हैं। ये ही एक दूसरे के सच्चे कामरेड (Comrade) भी हैं। अन्य कामरेड तो ऐसे भी हो सकते हैं जो काम की रेड ही मार दें।

इस प्रकार सप्तपदी के मन्त्रों में बहुत सुन्दर शिक्षा दी गई है जिसका संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया गया है। सप्तपदी का महत्व यह भी है कि जहां पारिवारिक जीवन की सफलता के लिये ये सात बातें आवश्यक हैं वहां राष्ट्रीय उन्नति के भी ये सात सोपान हैं।

राष्ट्र में सबसे प्रथम अन्न का प्रबन्ध होना चाहिये। हमारी सरकार को बहुत वर्षों पश्चात् यह होश आई कि Grow more food (अधिक अन्न उपजाओ) का आन्दोलन सबसे आवश्यक है। कल-कारखाने वालों को भी सबसे प्रथम भोजन की आवश्यकता है। ऋ० ७।३५।७ में कहा है—'शं न उरूची/भवतु स्वधाभिः'। हमारे

देश की दिशायें अन्न से भरपूर हों, जिससे हमारा कल्याण हो।

दूसरी वस्तु बल—सैन्य शक्ति होनी चाहिये। सेना के लिये भी पहले राशन की आवश्यकता है भूखी फौज क्या लड़ेगी और क्या प्राप्त करेगी। सेना ही देश की आन्तरिक तथा बाह्य सुरक्षा कर सकती हैं।

तीसरी वस्तु धन की वृद्धि तथा पशुओं की वृद्धि हो—सब प्रकार की समृद्धि हो। आर्थिक स्थिति दृढ़ हो। घाटे का बजट नहीं, बचत वाला बजट हो। देश में कल-कारखाने हों। अर्थ अनर्थ का कारण न बने इसके लिये उत्तम शिक्षा का प्रबन्ध हो।

चौथी वस्तु प्रजा का सुखी होना तथा ईश्वर भक्त होना है। ऋषि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है :—

"जिस राज्य में मनुष्य लोग अच्छी प्रकार ईश्वर को जानते हैं, वही देश सुखयुक्त होता है।"

सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में ऋषि कहते हैं :—

' जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुराचारी होते हैं तब (राज्य) नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।"

पांचवीं वस्तु राष्ट्र में उत्तम जन-संख्या का, साहसी नवयुवकों का होना आवश्यक है। वीरमाताओं के महत्व को हम न भूलें।

छठी वस्तु जनता का स्वास्थ्य उत्तम रहे, प्रत्येक ऋतु में सुखकारी भवन तथा स्थान हों इसके लिये राष्ट्र का स्वास्थ्य विभाग, लोक निर्माण, आवास, पर्यटन, परिवहनादि विभाग जागरूक तथा कर्तव्यपरायण हों।

सातवीं और अन्तिम वस्तु है जनता में परस्पर प्रेम और एकता हो। हम एक दूसरे को सखा समझें। अथर्ववेद १२।१।१८ में कहा गया है 'मा नो द्विक्षत कश्चन' हम से कोई द्वेष न करे। 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे' (यजु० ३६।१८) हम एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। देश के विभिन्न विचारधारा वाले व्यक्तियों से प्रभु आशा करते हैं :—

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः। (अथर्व० ३।३०।१)

मैं तुम लोगों को एक दूसरे से सहानुभूति रखने वाले, उत्तम विचारों से युक्त तथा द्वेषरहित करना चाहता हूं।

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के उपलक्ष में प्रकाशित 'स्मारिका' का विशेष लेख)

मेरी लन्दन यात्रा

(पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण पुरोहित आर्य समाज, हनुमान रोड)

मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमती इन्दुमती जी सहित २७ जुलाई १९८० ई० रविवार को प्रातः ४।। बजे पालम हवाई अड्डे से 'एयर इण्डिया' के वायुयान द्वारा प्रस्थान कर लन्दन प्रातः १०।। बजे (भारतीय समय ३। बजे अपराह्न) पहुंचा। यह मेरी दूसरी विदेश यात्रा थी। इससे पूर्व मैं सन् १९७७ ई० में २७ अगस्त को Panama के वायुयान द्वारा ईरान गया था तथा वहां १९ सितम्बर तक रहकर जर्मनी में Frankfurt तथा फ्रांस की राजधानी पैरिस देखते हुए २३ सितम्बर को डी-लक्स बस द्वारा लन्दन पहुचा था। उस समय मैंने लन्दन प्रवास में १२ अक्तूबर तक रहते हुए अनेक भारतीय परिवारों में पारिवारिक सतसंग कराये थे तथा आर्य समाज लन्दन व हिन्दू कम्युनिटी सैन्टर के मासिक सत्संग में विशेष व्याख्यान दिये थे। ये दोनों ही वायुयान बड़े विशाल तथा अनेक सुख सुविधा सम्पन्न हैं। निरामिष (Vegetarian) भोजन की उत्तम व्यवस्था है। लन्दन के (Heathrow) हवाई अड्डे पर (Immigration) अधिकारियों की व्यवहार सम्बन्धी अनेक घटनाएं मैंने सुनी हुई थीं और मैं कुछ शंकित तथा आतंकित भी था। उनके प्रश्नों का जिस प्रकार मैंने उत्तर दिया। उससे प्रभावित होकर अथवा मेरे व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन्होंने मेरे साथ बहुत ही सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया। कस्टम वालों ने भी कोई कष्ट नहीं दिया। एयरपोर्ट पर मेरे जामाता डा० राजकुमार जी M. D. अपनी कार लेकर स्वागतार्थ आये हुए थे।

लन्दन में मैं अपनी सुपुत्री सुधा की कोठी 11, Beechwood Gardens South Harrow Middiesex पर ठहरा। २२ जुलाई को आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड में जब आर्य समाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अधिकारी एवं अन्य आर्य समाजों के

विशिष्ट आर्यबन्धु मुझे तथा मेरी धर्म पत्नी जी को आर्य महासम्मेलन लन्दन में भाग लेने के लिए प्रस्थान करने के उपलक्ष्य में सम्मान पूर्वक विदाई दे रहे थे तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से लन्दन यात्रा के प्रबन्धक श्री मलिक रामलाल जी ने मुझसे विशेष अनुरोध किया था कि २० अगस्त को जो ७० यात्री लन्दन जायेंगे, उनमें से ५०-५५ के आवास, भोजन तथा ट्रान्सपोर्ट की व्यवस्था आर्यसमाज लन्दन के अधिकारियों द्वारा कराये जाने में मैं उनकी अवश्य सहायता करूं। इन यात्रियों की कठिनाई यह थी कि वे प्रत्येक यात्रीं से लिए जाने वाले ८० पौण्ड अग्रिम रूप में जमा नहीं करा सकते थे। भारत सरकार के नियमानुसार पौण्डों की प्राप्ति वैमानिक यात्रा के दिन ही हो सकती थी उससे पूर्व इतने पौण्डों का प्रबन्ध दुष्कर कार्य था। इस सम्बन्ध में उन्होंने मुझे वहां के प्रधान जी के नाम विशेष पत्र भी दिया था अतः लन्दन पहुंचकर मुझे सबसे अधिक चिन्ता इसी कार्य की थो तथा लन्दन में मुझसे पूर्व पहुंचने वाले श्री पं० जैमिनी जी शास्त्री एम. ए. से मिलना भी आवश्यक था। आर्य समाज लन्दन के प्रधान श्री प्रो० एस. एन. भारद्वाज से जो मेरे १९७७ ई० से परिचित थे सम्पर्क करने पर पता लगा कि ३० जौलाई बुधवार को ७॥ बजे रात्रि आर्य समाज मन्दिर लन्दन में जो Argyle Road पर है, महा सम्मेलन विषयक विशेष मीटिंग है जिसमें मुझे भा पहुंच जाना ठीक रहेगा। उन्हें यह जान कर प्रसन्नता हुई कि मैं लन्दन महासम्मेलन को सफल बनाने तथा सहयोग देने के लिए इतने दिन पूर्व पहुंच गया हूं।

आर्य समाज मन्दिर लन्दन में

लन्दन की महानगरो में ५ आरगाइल (Argyle) रोड हैं। आर्य समाज मन्दिर पहुंचने के लिए West Ealing तथा पोस्टल डिस्ट्रिक्ट W. B. का पता जान लेना आवश्यक है इसलिए मेरे जामाता डा० राजकुमार जी को भी जो लन्दन में २० वर्ष से रहते हैं, मुझे आर्य समाज मन्दिर तक पहुचाने में कठिनाई तथा उलझन हुई। श्री प्रो० भारद्वाज जी ने हमें आर्य समाज का पता ६९, ARGYLE रोड बताया था जब हम वहां पहुंचे तो वह एक अंग्रेज महोदय की कोठी निकली। हम आश्चर्य चकित और वह परेशान। प्रश्न करने पर उसने दुःखी होते हुए हम से कहा कि आपके प्रेजिडैन्ट के कारण

मैं बहुत परेशान हूं। ६९ नं० मेरा है, आर्य समाज का नहीं। लोग पूछने के लिये मेरी कोठी पर आते रहते हैं, आर्य समाज की डाक भी मुझे उनके पास भिजवानी पड़ती है। आप उनसे कह कर मेरी परेशानी दूर करें। हमने उस सज्जन से क्षमा याचना करते हुए, शीघ्र ही इस सम्बन्ध में कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। ७० वजे सायं जब मैं श्री प्रो० भारद्वाज जी उप प्रधान श्री धर्मवीर जी पुरी, आर्य समाज बिल्डिंग सब कमेटी के चेयरमैन श्री अमरनाथ जी गिरधर, सम्मेलन के मनोनीत अध्यक्ष श्री पं० सत्यदेव जी भारतद्वाज वेदालङ्कार इत्यादि महानुभावों से मिला तो मैंने सबके सामने यह समस्या रखी तथा सुझाव दिया कि आर्य समाज मन्दिर का पता ६९ के स्थान पर ६९-A पर दिया जाय जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। श्री रामलाल जी मलिक का पत्र देते हुए मैंने उन आने वाले ५०-५५ यात्रियों की कठिनाई का मौखिक वर्णन भी किया जिस पर सम्मेलन के अधिकारियों ने सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

आर्य समाज मन्दिर के वर्तमान भवन से पूर्व इस स्थान पर ईसाइयों की एक बड़ी चर्च थी। जिसे आर्य समाज के अधिकारियों ने सन् १९७७ में ३० हजार पौण्ड में खरीदा। उस समय चर्च खस्ता हालत में था जिसके पुनर्निर्माण तथा दृढ़ भवन बनाने में अब तक ५० हजार पौण्ड के लगभग व्यय हो चुका है। श्री पं० सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालङ्कार ने अपनी स्वर्गीय माता श्रीमती पार्वती की स्मृति में इस भवन का नाम वन्देमातरम् भवन रखने के लिये ५ हजार पौण्ड दान दिये हैं तथा अपने अन्य मित्रों से कई हजार पौण्ड एकत्रित करके दिये हैं। उनका इस आर्य समाज मन्दिर के कार्यों में सदा वरद हस्त सन्नद्ध रहता है। श्री सतपाल जी चड्ढा ने भी समाज मन्दिर के विशाल हाल का नाम रीता चड्ढा हाल' रखने के लिये ५ हजार पौण्ड दिये हैं तथा आर्य स्त्री समाज नैरोवी ने भव्य पुस्तकालय स्थापित करने के लिये २ हजार पौण्ड का सात्विक दान दिया है।

३० जुलाई को जब मैं आर्य समाज, लन्दन में श्री पं० जैमिनी जी शास्त्री से मिला तो ज्ञात हुआ कि वे एक आर्य परिवार में ठहरे हुए हैं जहां उनके भोजनादि की उत्तम व्यवस्था है। वे आर्य समाज

मन्दिर में तभी आयेंगे जब ४ अगस्त को श्री पं० सत्यपाल जी वेद-शिरोमणि नैरोबी से आजायेंगे। आर्य समाज मन्दिर में कोई सेवक भी नहीं हैं, अकेले रहना उचित नहीं! महा सम्मेलन के कार्यक्रम के सम्बन्ध में पूछने पर अधिकारियों ने बताया कि उसकी रूपरेखा के सम्बन्ध में साइक्लोस्टाइल कराये गये कुछ प्रोग्राम हैं जिनमें से एक आप लेकर टाइप करा लें तथा अपने मित्रों व परिचितों को देने की कृपा करें। सम्मेलन सम्बन्धी प्रकाशन में इस शैथिल्य का मुझ पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा जिसे आने वाले अन्य आर्य बन्धुओं ने भी अनुभव किया तथापि मैंने अपनी पुत्री द्वारा कार्यक्रम की १० प्रतियें टाइप करा कर वितरण के लिये अपने आप रख ली।

प्रथम पारिवारिक सत्संग

नई दिल्ली में १२ अक्तूबर सन् १९७४ से प्रत्येक मास दूसरे शनिवार को मैं श्री हरिश्चन्द्र (हरीश) जी शर्मा कनाट प्लेस के गृह में (कैम्प एन्ड को के ऊपर) पारिवारिक सत्संग कराता था जिसमें अनेक परिवार सम्मिलित होते थे। मई १९८० में जब उनकी बदली लन्दन हो गई तो उन्होंने और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रीति जी ने मुझ से कहा कि आप जब लन्दन पधारें तो वहीं पर हमारे गृह पर पारिवारिक सत्संग अवश्य कीजियेगा। तदनुसार जब मैं लन्दन पहुंचा तो उनके परिवार से सम्पर्क स्थापित कर २ अगस्त शनि-वार को ५ बजे सायं सत्संग करना निश्चित हुआ। श्री हरीश जी ने लन्दन में 3, HIGH WORPLE, RAYNER'S LANE HARROW, MIDDX में कोठी खरीद ली है वहीं पर मैं सपरिवार सम्मिलित होने के लिये सत्संग में गया जिसमें कई भारतीय परिवार दूर २ से आये हुए थे। हवन यज्ञ कराने के पश्चात् मेरा उपदेश हुआ जिसे आये हुए नर नारियों ने बहुत पसन्द किया तथा सितम्बर मास में पुनः सत्संग लगाने का आग्रह किया। अभ्यागतों का श्री हरीश जी के परिवार की ओर से प्रीति भोज द्वारा सत्कार किया गया। मैंने उन्हें आर्य सम्मेलन में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी तथा टाइप किया हुआ कार्यक्रम भेंट किया।

१० अगस्त को आर्य समाज मन्दिर लन्दन 69A ARGYLE ROAD के साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुआ तथा यज्ञ कराया। १९ अगस्त तक प्रायः प्रति दिन ही अपने निवास स्थान से काफी

दूर यात्रा करके आर्य समाज मन्दिर जाता रहता अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने की विभिन्न योजनाओं में सहगोग देता रहा। २० अगस्त से २३ अगस्त तक महा सम्मेलन के उपलक्ष्य में होने वाले 'राष्ट्र मेध यज्ञ' में अन्य कर्म काण्डी विद्वानों के साथ मुझको भी यज्ञ का ऋत्विज मनोनीत किया गया। यह यज्ञ बड़ा प्रभावशाली रहा तथा इसमें प्रथम दिन मेरा उपदेश भी हुआ। आर्य महासम्मेलन बहुत सफल रहा जिसमें भारत के अतिरिक्त नैरोबी, केनिया, मारीशस, फिजी, ट्रीनीजटा, सिंगापुर अमरीका आदि देशों से आये हुए आर्य नेताओं तथा प्रतिनिधियों ने उत्साह-पूर्वक लाभ लिया, पारस्परिक मेल तथा विचारों का आदान प्रदान होकर अनेक उपयोगो प्रस्ताव पास हुए। सम्मेलन में New Coas से स्व० जयदेव जी राजपाल १८ फायर ब्रिगेड लेन नई दिल्ली के सुपुत्र श्री आत्मप्रकाश जीं वर्मा भी आये हुए थे, उनके परिवार के साथ मेरे बहुत मधुर और घनिष्ठ सम्बन्ध थे तथा वे काफी अर्से के बाद मुझे मिले थे इसलिये उन्होने मुझ पर स्नेहवश जोर दिया कि मैं उनके नगर में उनके साथ चलकर उनके घर पर ठहरूं तदनुसार २५ अगस्त को महासम्मेलन के समाप्त हो जाने पर २६ अगस्त को ब्रिटिश रेलवे द्वारा लम्बी यात्रा करके इंगलेन्ड के अनेक ग्रामों, कस्वों तथा नगर के सुन्दर दृश्य को अवलोकन करता हुआ उनकी कोठी 9 ALMA PLACE, NORTH SHIELD, New Castle (On TXNE) में ३० अगस्त तक रहा। वहां कड़ाके की सर्दी थी परन्तु श्री वर्मा जी ने मेरी सब पुख सुविधाओं को ध्यान रखा और किसी प्रकार का कष्ट न होने दिया। वहां पर बन्दरगाह के भव्य दृष्य, ईसाइयों के विशाल तथा सुन्दर चर्च तथा प्रतिष्ठित अंग्रेजों की कब्रों पर जो विशाल लेख है मुझ सदा स्मरण रहेंगे। श्री वर्मा जी की कोठी पर कराये गये पारिवारिक सत्संग के अतिरिक्त वहां की हिन्द् विश्व परिषद के मुख्य कार्यकर्ता श्री मनोहर जी सहगल की कोठी पर 'गायत्री मन्त्र की महिमा तथा रहस्य' पर मेरा प्रभाव-शाली भाषण हुआ जिसे उन्होंने टेप कर लिया तथा मेरा बहुत आदर सत्कार किया।

३१ अगस्त को New Castle से रेल द्वारा यात्रा कर मैं लन्दन लौट आया और २ सितम्बर को अपने भक्त तथा आ. स. हनुमान रोड के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष श्री गोपाल प्रसाद जी श्रीवास्तव

PURSUR'S CROSS ROAD लन्दन की कोठी पर तथा ७ सितम्बर को श्री डा० राजा श्रीवास्तव 2. BEAUFORT GARDENS LONDON NW 4 की कोठी पर प्रभावशाली पारिवारिक सत्संग कराये जिनमें दूर २ से उनके मित्र पधारे तथा वैदिक धर्म की श्रेष्ठता विषयक उपदेशों को सुनकर आनन्दित हुए। श्री गोपाल प्रसाद जी श्रीवास्तव को फोटो लेने तथा उनके चल चित्र बनाने का पुराना शौक है। उनके पास आ० स० हनुमान रोड के अनेक अधिकारियों तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थादि के वार्षिकोत्सव पर पधारने वाले आर्य विद्वानों तथा नेताओं के चल चित्रों का उत्तम संग्रह है जिन्हें कभी दिल्ली में आने पर उनको प्रदर्शित करने का आग्रह मैंने उन से किया हुआ है। ९ सितम्बर को लन्दन में १ मास तथा १२ दिन प्रवास कर मैं दिल्ली लौट आया।

श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण द्वारा आर्यसमाज के विशिष्ट महानुभावों के सम्बन्ध में

लिखे गये संस्मरण

(१) शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० मुरारी लाल जी शर्मा संस्थापक गुरुकुल सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) के विषय में सस्मरण

एक पुराना संस्मरण

सन १६२३ ई० की ग्रीष्म ऋतु की बात है, मैं तब जैन हाईस्कूल पानीपत में नवम श्रेणी का विद्यार्थी था। मेरे साथ घरौन्डा के निकट गगसीना ग्राम के जाटों के लड़के पढ़ते थे। उन्होंने बताया कि वहां पर आर्य समाज का जोरदार वार्षिकोत्सव ह। मैं भी उसमें सम्मिलित हुआ। वार्षिकोत्सव में जहां स्व० स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज पधारे थे, वहां मुसलमानों से शास्त्रार्थ करने के लिए स्व० श्री पं० मुरारीलाल जी शर्मा भी पधारे थे। शास्त्रार्थ सुनने का यह मेरा पहला ही अवसर था। जहां तक मुझे स्मरण है शास्त्रार्थ "रूह और माद्दे की कदामत" (आत्मा और प्रकृति के अनादित्य) पर था। शास्त्रार्थ में आस-पास के ग्रामों की जनता बड़ी संख्या में उपस्थित थी और बड़ी तन्मयता से शास्त्रार्थ सुन रही थी। स्व० श्री पंडितजी अपनी युक्तियें ऐसी मनोरञ्जक शैली में दे रहे थे कि मौलवी साहब को उत्तर देना कठिन हो जाता था तथा जनता हंस पड़ती थी। शास्त्रार्थ का जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा तथा लोग वैदिक सिद्धान्तों की श्रेष्ठता के कायल हो गए।

(२)

श्री पं० प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न अजमेर के सम्बन्ध में लिखा गया संस्मरण।

सन् १६३४ में मैं आर्यसमाज बांदीकुई के वार्षिकोत्सव पर व्याख्यान देने गया हुआ था वहाँ पर पहली बार कविरत्न पं०

प्रकाशचन्द्र जी को देखा। उस समय उनमें बड़ा बांकापन तथा मस्ती का आलम था। ओजस्वी वाणी तथा हृदयग्राही संगीत से जनता को मोह लेने का जादू था।

स्व० स्वा० कर्मचन्द जी (जो बाद में जैन धर्म में चले गये थे) की सुपुत्री का विवाह संस्कार कराने मैं भिवानी गया हुआ था और आर्यसमाज मन्दिर में ठहरा हुआ था, वहीं पर कविरत्न जी भी आये हुए थे। कई दिन तक साथ रहा। आर्य समाज की प्रगति के सम्बन्ध में चर्चा हुई। भिवानी में इन्हें किन्हीं अच्छे संगीतज्ञ तथा वादक का पता चला। हम दोनों उनके घर गये और वागेश्वरी राग का आनन्द लिया। आर्यसमाज के प्रचार के साथ-२ इनका संगीत प्रेम तथा संगीत मर्मज्ञता सोने में सुहागे का मेल था।

समय-२ पर हास्य रस तथा विनोद की फुलझड़ियां भी छूटती रहती थी।

रुग्ण होने के पश्चात् कुछ वर्ष हुए कविरत्न जी अपनी सुपुत्री के साथ आर्य समाज हनुमान् रोड की ओर से प्रचारार्थ पधारे हुए थे राजा बाजार स्क्वेयर में प्रचार का कार्यक्रम रहा। नई दिल्ली की जनता ने आर्यसमाज के पुराने महारथी की वाणी सुनकर अपने को धन्य माना।

शारीरिक अस्वस्थता होते हुए भी श्री प्रकाश जी ने जिस धैर्य और साहस का परिचय दिया है; हौसला बनाये रखा है, आर्य समाज के लिए निरन्तर साहित्य सृजन किया है तदर्थ उन्हें साधुवाद है।

भगवान् उन्हें हमारे मध्य दीर्घकाल तक बनाये रखें, वे और भी यशस्वी हों।

(३)

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् तथा हरयाणा के नेता श्री पं० जगदेव सिंह जी सिद्धान्ती के सम्बन्ध में लिखा गया संस्मरण

विशेष व्यक्तित्व के महाधनी

सन् १९२५ से ३० तक जब मैं दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय लाहौर में विद्याध्ययन कर रहा था, श्री पं० जगदेव जी सिद्धान्ती ने

सन् १९२६ या २७ में विद्यालय के बाहर के परीक्षार्थी के रूप में 'सिद्धान्त भूषण' की परीक्षा उत्तीर्ण की। विद्यालय में गुरुकुल किरठल से कई छात्र उपदेशक परीक्षा के लिए आये हुए थे, वे प्रायः सिद्धान्ती जी तथा पं० रघुवीर सिंह जी के सम्बन्ध में चर्चा किया करते थे और उनका गुणगान किया करते थे, तब ही से मैं इन दोनों महानुभावों की ओर आकृष्ट हो गया था।

सन् १९३३ में जब मैंने हैदराबाद दक्षिण से निर्वासित होकर दिल्ली को अपना कार्य क्षेत्र चुना तो सिद्धान्ती जी की प्रशंसा तथा सिद्धांत प्रियता और अधिक सुनने को मिली। सन् १९४५ में जब उन्होंने किरठल के क्षेत्र को छोड़ कर दिल्ली के विराट् क्षेत्र में पदार्पण किया तो उनकी कीर्ति को चार चांद लग गये। श्री सिद्धान्ती जी हरयाणा तथा आस पास के क्षेत्र में सर्व प्रिय तथा सम्माननीय आर्य नेता हो गये। आगे चल कर वे ससद सदस्य तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मत्री तथा प्रधान पद को सुशोभित करने वाले हुये। इन उच्च पदों पर पहुचने पर भीउनके जोवन में वही सादगी तथा विनम्रता रही। निरभिमानिता श्रो सिद्धान्तो जी का विशेष गुण है।

नानक नन्हा हो रहो, जैसी नन्हीं दूब।
बड़ी घास जल जायेगी, दूब खूब की खूब॥

श्री सिद्धान्ती जी बड़े स्वाध्यायशील तथा वैदिक सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। सुवक्ता और सुलेखक हैं। 'आर्य मर्यादा' के वे जब तक संपादक रहे, उनकी विद्वत्ता की धाक दूर २ तक बैठ गई। अनेक उच्चकोटि के विद्वान् अपने विद्वत्तापूर्ण लेखों द्वारा उनको सहयोग देने के लिये मैदान में निकल आये। 'आर्य मर्यादा के विशेषांकों ने आर्य जनता के हृदय में एक विशेष स्थान बना लिया। सर्वखाप पंचायत के पुराने रिकार्ड द्वारा श्री विरजानन्द जी महाराज तथा १८५७ के विद्रोही क्रांतिकारियों के संबंध में खोज ने श्री सिद्धान्ती जी को अमर बना दिया है। आर्य जनता तदर्थं उनकी सदा ऋणी रहेगी।

स्वर्गीय श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की महत्त्वपूर्ण 'आर्यसमाज के महाधन' लिखने में भी सिद्धान्ती जी ने बहुत सहयोग दिया तथा परिश्रम किया। विशेष सूक्तियों से समलङ्कृत किया। श्री सिद्धांती

जी उदार हृदय तथा कद्रदां व्यक्ति हैं। 'आर्योदय' में मेरे तीन लेख प्रकाशित हुये थे जिनमें से एक 'त्रैतवाद' पर था, मिलने पर उन्होंने कहा आपका लेख बहुत सुन्दर है। पंजाब हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में श्री सिद्धांती जी ने बहुत कार्य किया। एक समय ऐसा भी आया जब उन्हें रूपोश होना पड़ा तथा आर्य समाज हनूमान् रोड नई दिल्ली के तत्कालीन मन्त्री स्व० श्री रामनाथ जी भल्ला ने उनका समाज मन्दिर में प्रबन्ध कर दिया। मुझ तथा मेरे परिवार को उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री सिद्धान्ती जी आर्य समाज के रचनात्मक कार्यकर्ता तथा नेता हैं। उन्होंने आर्य जगत् को बहुत से योग्य कार्यकर्ता तथा विद्वान् दिये हैं। उनके जीवन का निर्माण तथा पथ प्रदर्शन किया है। उन्हीं में से एक श्री पं० सुदर्शन देव जी आचार्य एम० ए० ने ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य पर 'यजुर्वेद भाष्य भास्कर' नामक सुबोधपूर्ण तथा विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ लिखा है।

प्रभु श्री सिद्धान्ती जी जैसे उच्चकोटि के विद्वान्; उदारचेता, परिश्रमी, सरल तथा साधु स्वभाव वाले व्यक्ति को शतायु करे, यही कामना है।

(४)

याद रह गई बातें

आर्य समाज के जोशीले वक्ता श्री कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर के सम्बन्ध में संस्मरण :—

सन् १९२३ ई० में जब मैं जैन हाई स्कूल पानीपत में पढ़ता था, मुझे आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में जाने का बड़ा चाव था। मैं करनाल में आर्य उप प्रतिनिधि सभा के वार्षिकोत्सव पर गया हुआ था, जिसमें स्व० पं० यशपाल जी सिद्धान्तालङ्कार तथा स्व० स्वामी व्रतानन्द जी महाराज (उस समय ब्र० युधिष्ठिर जी) पधारे हुये थे। वहीं पर कुंवर सुखलाल जी के मैंने प्रथम बार दर्शन किये। उन दिनों कुंवर सुखलाल जी की बड़ी धूम थी। दुबला पतला शरीर, परन्तु कड़ाकेदार आवाज। इनका प्रोग्राम रात्रि को सबसे अन्त में रक्खा जाता था ताकि जनता देर तक वार्षिकोत्सव में बैठी रहे।

वैदिक धर्म का प्रति पादन करते हुये मौलवियों और मौलानाओं की वह खबर लेते और चुटकले सुनाते कि जनता हंस-हंस कर लोट-पोट हो जाती, उठने का नाम न लेती। गजब का प्रभाव और गजब की तकरीर।

सन् १९२६ से ३० तक जब मैं लाहौर के दयानन्द उपदेशक विद्यालय में पढ़ता था, आर्य समाज बच्छोवाली के वार्षिकोत्सवों में जो गुरुदत्त भवन के विशाल मैदान में होते थे, कुंवर साहब के व्याख्यानों की बड़ी धूमधाम थी। उन दिनों दो महानुभावों के लिये न केवल आर्य जनता ही किन्तु दूसरी जनता भी उमड़ पड़ती थी, एक थे तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी देहल्वी तथा दूसरे श्री कुंवर सुखलाल जी। दोनों ही महानुभावों ने वैदिक धर्म का जबर्दस्त प्रचार किया।

सन् १९३१ में जब मैं लाहौर से विद्याध्ययन के पश्चात् आर्य समाज पानीपत में वैदिक धर्म का प्रचार करता था वहीं पर एक अलमारी के दोनों ओर मैंने अपने जीवन को उन्नत करने के लिये कुछ नियम और कुछ सिद्धान्त लिखे हुये थे, जिन्हे पढ़कर कुंवर सुखलाल जी बड़े प्रभावित हुये। उनका और मेरा उस समय तक साक्षात् परिचय न था, वे वहां के आर्य बन्धुओं से पूछने लगे, कि ये किसने लिखे हैं—वे कहने लगे कि ब्रह्मचारी चन्द्रभानु जी ने लिखे हैं। इस पर कुंवर सुखलाल जी ने मुझे बुलाकर बहुत शाबाशी दी तथा प्रशंसा की।

सन् १९५८ ई० में औचन्दी के निकट ग्राम कटेवड़ा में वार्षिकोत्सव था। आर्य समाज दीवानहाल की ओर से ग्रामप्रचाराध्यक्ष श्री सेवाराम जी ने मुझे उसमें व्याख्यान देने के लिये बुलाया था। औचन्दी तक तो तांगे की सवारी मिल गई। आगे कोई सवारी का प्रबन्ध न था। ग्राम का रास्ता भी मालूम न था, एक हाथ में सूटकेस तथा दूसरे में बिस्तरा थामे पूछता २ जा रहा था तथा आर्य समाज के अधिकारियों की सुव्यवस्था? को स्मरण कर रहा था। अभी आधा मील ही गया हूंगा कि पीछे से कुंवर सुखलाल जी पैदल ही लपकते आ रहे थे। उन्हें जब पता लगा कि मैं भी उसी वार्षिकोत्सव में जा रहा हूं, जहां उनको भी पहुंचना है, तो उन्होंने झट मेरे हाथ से बिस्तरा पकड़ लिया। मैंने बहुत कहा कि आप

कष्ट न करें परन्तु वे नहीं माने। उनकी उन दिन की फुर्ती और तेज चाल से मैं उनकी दुबली देह में प्रबल शक्ति का कायल हो गया। तथा उनकी सहायता का मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

सन् १९७३ ई० में जब आर्य समाज हनुमान् रोड के वार्षिकोत्सव पर पधारे तो मेरा तथा आर्य समाज के अधिकारियों का विचार था कि अब कुंवर साहब वयोवृद्ध हो गये हैं। अब उनमें वह बात न होगी परन्तु रात्रि को जब उनका प्रोग्राम हुआ तो उनकी बड़ी कड़कती आवाज तथा फड़कती तकरीर सुन कर हम सब हैरत में रह गये। इस समाज का गौरव था कि वह कुंवर साहब की कई वर्ष से प्रत्येक मास सेवा करते हुये उनके ऋण से उऋण हो रहा था।

(५)

आर्य समाज के अनथक कार्यकर्ता श्री मा० शिवचरणदास जी के सम्बन्ध में लिखा गया संस्मरण—

श्री मा० शिवचरणदास जी को मैं गत ४० वर्षों से जानता हूं। मेरे पूज्य श्वसुर रामचन्द्र जी जिज्ञासु तथा मेरे हितैषी पानीपत निवासी स्व० श्री लाला ज्योति प्रसाद जी का श्री मास्टर जी तथा आर्य समाज चावड़ी बाजार से घनिष्ट संबन्ध रहा है। सन् १९३३ ई० में जब मैं रियासत हैदराबाद में दो वर्ष तक आर्य मिशनरी का गौरवपूर्ण कार्य करते हुये निजाम सरकार द्वारा वहां से निर्वासित कर दिया गया तो मैं दिल्ली को अपना कार्य क्षेत्र बनाने की दृष्टि से अपने श्वसुर श्री जिज्ञासु जी के पास चर्खेवालान में ठहरा। वे उन दिनों चीफ मैडिकल आफीसर दिल्ली के हैड क्लर्क थे।

वहां रहते हुये प्रायः मैं आर्य समाज चावड़ी बाजार के साप्ताहिक सत्संग में जाया करता था तथा व्याख्यान भी दिया करता था। ये वो दिन थे। जब दिल्ली के आर्य जगत् में दो नाम प्रसिद्ध थे। एक श्री लाला नारायण दत्त जी ठेकेदार तथा श्री मा० शिवचरण दास जी। श्री लाला जी आर्य नेता थे तो श्री मास्टर जी कर्मठ कार्यकर्ता थे। स्कूल में कार्य करने के पश्चात् जो भी समय श्री मास्टर जी के पास बचता था वह सब आर्य समाज के अर्पण था। कोई इनसे मिलने आ रहा है तो किसी से वे मिलने जा रहे हैं।

न खाने की सुध है न आराम की परवाह उन दिनों ये आर्य समाज के दीवाने माने जाते थे। आर्य कन्या पाठशाला, वनिता विश्राम आश्रम, आर्य आनाथालय, शुद्धि सभा और न जाने दिल्ली तथा बाहर की कितनी आर्य संस्थाओं की सहायतार्थ दौड़ धूप करते रहते थे। इनकी आर्थिक स्थिति उन दिनों अधिक अच्छी न थी जिसके सुधारने में इनकी सहधर्मिणी अध्यापन कार्य द्वारा सहयोग देती थीं।

मैं मास्टर जी की सादगी तथा लगन का हृदय से प्रशंसक था। आर्य समाज नया बांस में दो वर्ष कार्य करने के पश्चात् जब मैं १९३५ ई० मैं आर्य समाज हनुमान् रोड में पुरोहित कार्य करने लगा तो एक दिन मैंने भी लाला नारायण दत्त जी से उनकी कोठी पर कहा कि आर्य समाज के ऐसे अनथक कार्यकर्त्ता की आर्थिक स्थिति अवश्य सुधरनी चाहिये, उस समय श्री मा० जो भी वहां उपस्थित थे। मुझे प्रसन्नता है कि श्री लाला नारायण दत्त जी ने मेरी बात पर विशेष ध्यान दिया और उनके सहयोग तथा परामर्श से श्री मास्टर जो ने प्रापर्टी के बिजनेश में प्रवेश किया।

श्री मास्टर जी अपने परिश्रम, अध्यवसाय, मिलनसारी तथा विस्तृत परिचय के द्वारा अपने इस कार्य को आगे बढ़ाते चले गये। तथा इनके सुपुत्रों ने इस कार्य में और भी चार चांद लगा दिये।

प्रभु कृपा से श्री मास्टर जी तथा उनका परिवार अब एक धन संपन्न परिवार है। उन्होंने सार्वदेशिक सभा को वेद भाष्य के लिये ४०००) दान दिये हैं तथा अन्य संस्थाओं को भी दिल खोलकर सहायता करते रहते हैं। धन वैभव के संपन्न होने पर भी श्री मास्टर जी में वही सादगी है, निरभिमानिता है, मिलन सारी है तथा विनम्रता है। आर्य विद्वानों से प्रेम है तथा उनके लिए हृदय में आदर है। पूज्य मास्टर जी जैसे महिमा संपन्न व्यक्तियों के लिये ही कहा है—

धनिनोऽपिरुन्मादा युवानोऽमि न चंचलाः।
प्रभवोऽप्यप्रमत्तास्ते महामहिमशालिनः॥

धनी होने पर भी जिसमें उन्माद नहीं है; जवानी होने पर भी चंचलता नहीं है, प्रभावशाली होने पर भी जो प्रमाद ग्रस्त नहीं है वे ही महा महिमा से संपन्न होते हैं।

आर्य समाज के स्तम्भ

युवकों की उन्नति में तत्पर श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु विषयक संस्मरण

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु मेरे बहुत पुराने साथी तथा मित्र हैं। श्री धर्मेन्दु जी ने डी० ए० वी हायर से० स्कूल नई दिल्ली में धर्म शिक्षण काल में तथा सेवा निवृत्ति के पश्चात् सैकड़ों छात्रों तथा नवयुवकों को वैदिक-धर्म तथा आर्य समाज के विभिन्न कार्यों के प्रति प्रबल प्रेरणा दी है। श्री पण्डित जी एक हंसमुख, उत्साही, परिश्रमी, मिलनसार तथा सीधे स्वभाव के सज्जन व्यक्ति हैं। दिल्ली की आर्य समाजों के एक स्तम्भ हैं। मैं उनके दीर्घ-जीवन की प्रभु से कामना करता हूं।

शास्त्रार्थ महारथी श्री महात्मा अमर स्वामी जी महाराज विषयक संस्मरण

मान्यवर श्री अमर स्वामी जी महाराज आर्य समाज के एक जाज्वल्यमान रत्न हैं जिनमें मिशनरी भावना कूट २ कर भरी हुई है। उनके व्याख्यान खोज पूर्ण, कथा सरस तथा शास्त्रार्थ प्रतिवादी को परास्त करने वाले होते हैं। आपका अपने सहयोगी उपदेशकों तथा पुरोहितों के साथ बड़ा मधुर व्यवहार होता है। आप उनके गौरव तथा प्रतिष्ठा की रक्षार्थ सदा सन्नद्ध रहते हैं। मैं श्री स्वामी जी को दीर्घायुष्य की प्रभु से कामना करता हूं।

—चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण
प्रधान आर्य पुरोहित सभा, दिल्ली प्रदेश

महाभारत सूक्ति सुधा से साभार

ब्राह्मण (विद्वान्)

(महाभारत अनुशासन पर्व)

(१) महद्धि भरतश्रेष्ठ ब्राह्मणस्तीर्थमुच्यते ।
वेलायां न तु कस्यांचिद् गच्छेद् विप्रो ह्यपूजितः ॥ अ० ६।२८

भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं—भरत श्रेष्ठ ! ब्राह्मण महान् तीर्थ कहे जाते हैं, अतः वे किसी भी समय घर पर आ जायें तो बिना सत्कार किये उन्हें नहीं जाने देना चाहिये ।

(२) ब्राह्मणाः सर्वलोकाना महान्तो धर्मसेतवः ।
धनत्यागाभिरामाश्च वाक्संयमरताश्च ॥ अ० १५१।४

ब्राह्मण समस्त जगत् की धर्ममर्यादा का संरक्षण करने वाले सेतु के समान हैं । वे धन का त्याग करके प्रसन्न होते हैं और मन में संयम रखते हैं ।

(३) रमणीयाश्च भूतानां निधानं च धृतव्रताः ।
प्रणेतारञ्च लोकोनां शास्त्राणां च यशस्विनः ॥ अ० १५१।५

वे समस्त प्राणियों के लिये रमणीय उत्तम निधि, दृढ़तापूर्वक व्रत का पालन करने वाले, लोकनायक, शास्त्रों के निर्माता और परम यशस्वी हैं :

(४) तपो येषां धनं नित्यं वाक् चैव विपुलं बलम् ।
प्रभवश्चैव धर्माणां धर्मज्ञाः सूक्ष्मदर्शिनः ॥ अ० १५१।६

सदा तपस्या उनका धन और वाणी उनका महान् बल है । वे धर्मों की उत्पत्ति के कारण, धर्म के ज्ञाता और सूक्ष्मदर्शी हैं ।

(५) ब्राह्मणे दारुणं नास्ति मैत्रो ब्राह्मण उच्यते ॥ अ० २७।१२

ब्राह्मण में क्रूरता नहीं होती, ब्राह्मण सब के प्रति मैत्री भाव रखने वाला बताया जाता है ।

(६) स्वाध्यायो यजन दानं तस्य धर्म इति स्थितिः ।
कर्माण्यध्यापनं चैव याजनं च प्रतिग्रहः ॥
सत्यं शान्तिस्तपः शौच तस्य धर्मः सनातनः ॥ अ० १४१ पृ० ५६१६

वेदों का स्वाध्याय, यज्ञ और दान ब्राह्मण का धर्म है, यह शास्त्र का निर्णय है। वेदों को पढ़ाना, यजमान का यज्ञ कराना और दान लेना—ये उसकी जीविका के साधनभूत कर्म हैं। सत्य, मनोनिग्रह तप और शौचाचार का पालन—यह उसका सनातन धर्म है।

(७) य एवं नैव कुप्यन्ते न लुभ्यन्ति तृणिष्वपि।
त एव नः पूज्यतमा ये चापि प्रियवादिनः ।। अ० ५९।२२

जो ब्राह्मण कभी क्रोध नहीं करते, जिसके मन में एक तिनके भर का लोभ नहीं होता तथा जो प्रिय वचन बोलने वाले हैं, वे ही (भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं। हम लोगों के परम पूज्य हैं।

(८) तपः श्रुतं च योनिचाप्येतद् ब्राह्मण्यकारणम्।
त्रिभिर्गुणैः समुदितस्ततो भवति वै द्विजः ।। अ० १२१।७

ब्राह्मणत्व के तीन कारण माने गये हैं—तपस्या, शास्त्र ज्ञान और विशद्ध ब्राह्मण कुल में जन्म। जो इन तीन गुणों से सम्पन्न हैं, वही सच्चा ब्राह्मण है।

(९) कर्मणा मनसा वापि वाचा वापि परंतप।
यन्मे कृतं ब्राह्मणेभ्यस्तेनाद्य न तपाम्यहम् ।। अ०।१७

शत्रुओं को सन्ताप देने वाले युधिष्ठिर! मैंने मन, वाणी और कर्म से ब्राह्मणों का जो थोड़ा बहुत उपकार किया है, उसी के प्रभाव से आज इस अवस्था में (वाणशय्या पर) पड़ जाने पर भी मुझे पीड़ा नहीं होती है।

(१०) दण्डपाणिर्यथा गोषु पालो नित्यं हिरक्षयेत्।
ब्राह्मणान् ब्रह्म च तथा क्षत्रियः परिपालयेत् ।। अ० ८।२८

जैसे चरवाहा हाथ में डंडा लेकर सदा गौओं की रखवाली करता है, उसी प्रकार क्षत्रिय को उचित है कि वह ब्राह्मणों और वेदों की सदा रक्षा करे।

(११) अनर्थो ब्राह्मणस्यैष यद् वित्तनिचयो महान् ।।१९)
श्रिया ह्यभीक्ष्णं संवासो दर्पयेत् सम्प्रमोहयेत् ।।२०।। अ० ६२

ब्राह्मणों के पास यदि बहुत धन इकट्ठा हो जाय तो यह उसके लिये अनर्थ का ही कारण होता है; क्योंकि लक्ष्मी का निरन्तर सह-वास उन्हें दर्प और मोह में डाल देता है।

(१) ब्राह्मणांस्तर्पयन् द्रव्यैस्ततो यज्ञे यतव्रतः ।
मैत्रान् साधून् वेदविदः शीलवृत्ततपोऽर्जितान् ।। अ० ६१।७

भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं—तुम नियमपूर्वक यज्ञ में सुशील, सदाचारी, तपस्वी, वेदवेत्ता, सबसे मैत्री रखने वाले तथा साधु स्वभाव वाले ब्राह्मणों को धन देकर संतुष्ट करो।

(२) यत् ते ते न करिष्यन्ति कृतं ते न भविष्यति ।
यज्ञान् साधय साधुभ्यः स्वाद्वभान् दक्षिणावतः ।। अ० ६१

यदि वे तुम्हारा दान स्वीकार न करेंगे तो तुम्हें पुण्य नहीं होगा अतः श्रेष्ठ पुरुषों के लिये स्वादिष्ट अन्न और दक्षिणा से युक्त यज्ञों का अनुष्ठान करो।

(३) अनिमन्त्रितो न गच्छेत यज्ञ गच्छेत दर्शकः । अ० १०४।१४१

बिना बुलाये कहीं भी न जाय, परन्तु यज्ञ देखने के लिये बिना बुलाये भी जा सकता है।

(४) यष्टव्यं च यथा शक्ति यज्ञैर्विविध दक्षिणैः । अ० १०

अपनी शक्ति के अनुसार भांति-भांति की दक्षिणा के यज्ञों का अनुष्ठान करना चाहिये।

(५) इज्या यज्ञ श्रुतिकृतैर्यो मार्गैरबुधोऽधमः ।
हन्याज्जन्तून् मांसगृध्नुः स वै नरक भाङ् नरः ।। अ० ११५।४

जो मांस लोभी मूर्ख एवं अधम मनुष्य यज्ञ-याग आदि वैदिक मार्गों के नाम पर प्राणियों की हिंसा करता है, वह नरकगामी होता है।

(६) सुशुद्धैर्यजमानैश्च ऋत्विग्भिश्च यथा विधि ।
शुद्धै द्रंव्योपकरणै र्यष्टव्यमिति निश्चयः । (अ० १४५ पृ० ६००

शुद्ध यजमानों तथा ऋत्विजों द्वारा किये गये विशुद्ध द्रव्योप करणों से यजन करना, यह शास्त्र का निश्चय है। (श्री महेन्द्र जी उमा से कहते हैं।

(७) तुष्टेषु सर्वदेवेषु यज्वा यज्ञ फलं लभेत्।
देवाः संतोषिता यज्ञैर्लोकान् संवर्धयन्त्युतः। अ० १४५ पृ० ६००

सम्पूर्ण वायु आदि देवताओं तथा विद्वानों के संतुष्ट होने पर यजमान को यज्ञ का पूरा-पूरा फल मिलता है। यज्ञों द्वारा सतुष्ट किये हुए देवता सम्पूण लोकों की वृद्धि करते हैं।

(८) नास्ति यज्ञसमं दानं नास्ति यज्ञसमो निधिः।
सर्व धर्म समुद्देशो देवि यज्ञे, समाहितः ॥ अ० १४५ पृ० ६००

यज्ञ के समान कोई दान नहीं है और यज्ञ के समान निधि नहीं है। श्री महेश्वर जी उमा से कहते हैं—देवि ! सब धर्मों का उद्देश्य यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

(९) नाग्निं परित्यजेज्जातु न च वेदान् पत्यिजेत्।
न च ब्राह्मणाना क्रोशेत् समं तद् ब्रह्महत्यया ॥ अ० २२ ।३

अग्निहोत्र का कभी त्याग न करे। वेदों का स्वाध्याय न छोड़ तथा ब्राह्मण की निन्दा न करे; क्योंकि ये तीनों दोष ब्रह्महत्या के समान हैं।

(१०) आज्यधूमोद्भवो गन्धो रुणद्धीव तपोवनम्।
तं दष्टवा मे मन; प्रीतं महेश्वर सदा भवेत् ॥ अ० १४१।६

उमा महेश्वर से कहती हैं—महेश्वर ! ये ऋषि लोग जब अग्नि में घी डाल देते हैं, उस समय उनके धूम से प्रकट हुई सुगन्धि मानो सारे तपोवन में छा जाते हैं।

भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को उपदेश देने के पश्चात् मन्त्रियों सहित हस्तिनापुर जाने की आज्ञा देते हुए यह आशीर्वाद दिया—

प्रविशस्व पुरीं राजन् व्येतु ते मानसो ज्वरः ॥९॥
यजस्व विविधैर्यज्ञैर्बहृन्नैः स्वाप्तदक्षिणैः।
ययातिरिव राजेन्द्र श्रद्धादमपुरः सहः ॥१०॥ (अ० १६६)

राजन् ! अब तुम पुरी में प्रवेश करो और तुम्हारे मन की सारी चिन्ता दूर हो जाय ॥९॥

राजेन्द्र ! तुम राजा ययाति की भांति श्रद्धा और इन्द्रिय संयम पूर्वक बहुत से अन्न और पर्याप्त दक्षिणाओं से युक्त भांति भांति के यज्ञों द्वारा यजन करो।

(१२) इदं तु सकलं द्रव्यं दिवि वा भुवि वा प्रिये।
यज्ञार्थं विद्धि तत् सृष्टं लोकानां हितकाम्यया ॥अ०१४५ पृ.६०१

प्रिये ! द्यु लोक या पृथ्वी पर जो द्रव्य दृष्टिगोचर होता है, इस सबको सृष्टि परमात्मा द्वारा लोक हित की कामना से यज्ञ के लिये कीं गयी है, ऐसा समझो।

एवं विज्ञाय तत् कर्ता सदारः सततं द्विजः।
प्रेत्यभावे लभेल्लोकान् ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ अ० १४५ पृ. ६००१

ऐसा समझ कर जो द्विज सदा अपनी स्त्री के साथ रह कर यज्ञ-कर्म करता है, वह ब्रह्मकर्म में तत्पर रहने के कारण मृत्यु के पश्चात् पुण्यलोकों को प्राप्त कर लेता है।

(१३) इष्टं दत्तं च मन्येथा आत्मा दानकर्मणा।
पूजयेथा यायजूकांस्तवाप्यंशोभवेद् यथा ॥६॥ अ० ६१)

भीष्म जी युधिष्ठिर से कहते हैं —याज्ञिक पुरुषों को दान करके ही तुम अपने को यज्ञ और दान के पुण्य का भागी समझ लो। यज्ञ करने वाले ब्राह्मणों का सदा सम्मान करो। इससे तुम्हें भी यज्ञ का आंशिक फल प्राप्त होगा।

यज्ञोपवीत

(१) भक्षचर्या परो धर्मो नित्ययज्ञोपवीतिता।
नित्यं स्वाध्यायिता धर्मो ब्रह्मचर्याश्रमस्तथा ॥ अ० १४१।३६

ब्रह्मचारी के लिये ग्रामों से भिक्षा मांग कर लाना और गुरु को समर्पित करना परम धर्म है नित्य यज्ञोपवोत धारण किये रहना, प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करना और ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों के पालन में लगे रहना, ब्रह्मचारी का प्रधान धर्म है।

वेदों के इक्यावन उपदेश से साभार

परिचय—वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद चार हैं—ऋग्वेद. यजुर्वेद. सामवेद और अथर्ववेद, इनका ज्ञान करुणासागर ने मनुष्य मात्र की भलाई के लिए क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा ऋषियों के पवित्र हृदयों में दिया। यदुर्वेद में ४० अध्याय और १९७६ मन्त्र हैं जिन पर ऋषि दयानन्द ने भाष्य किया है तथा उनके भावार्थ लिखे हैं। उन्हीं भावार्थ से निम्नलिखित उपदेशों का संग्रह किया गया है :—

ईश्वर

(१) जो सूक्ष्म से सूक्ष्म, बड़े से बड़ा, निराकार. अनन्त सामर्थ्य-वाला. सर्वत्र अभिव्याप्त, प्रकाशस्वरूप अद्वितीय परमात्मा है वही अति सूक्ष्म कारण (प्रकृति) से स्थूल कार्यरूप जगत् के रचने और विनाश करने को समर्थ है। जो पुरुष इसको छोड़ अन्य की उपासना करता है उससे अन्य जगत् में भाग्यहीन कौन मनुष्य है? (अध्याय १७ मन्त्र १९)

(२) हे मनुष्यो ! जो अनन्त शक्तियुक्त, अजन्मा, निरन्तर सदा-मुक्त. न्यायकारी, निर्मल, सर्वज्ञ, सबका साक्षी, नियन्ता, अनादि-स्वरूप ब्रह्म कल्प के आरम्भ में जीवों को अपने कहे वेदों से शब्द, अर्थ और उनके सम्बन्ध को जानने वाली विद्या का उपदेश न करे तो कोई विद्वान् न होवे और न धर्म, काम और मोक्ष के फलों के भोगने को समर्थ हो, इसीलिये इसी ब्रह्म की सदैव उपासना करो।
(अ० ४० मन्त्र ८)

(३) हे मनुष्यो ! जो सब जगत् में व्याप्त सबके लिये माता पिता के समान वर्तमान, दुष्टों को दंड देने हारा उपासना करने को इष्ट है उसी जगदीश्वर की उपासना करो। इस प्रकार के अनुष्ठान से तुम्हारी सब कामना अवश्य सिद्ध हो जावेगी।
(अ० १० मन्त्र २०)

(४) ईश्वर का आश्रय न करके कोई भी मनुष्य प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता। जैसे ईश्वर सनातन न्याय का आश्रय करके सब जीवों को सुख देता है वैसे ही राजा (शासक) को भी चाहिए कि प्रजा को अपनी न्याय व्यवस्था से सुख देवे। (अ० ७ मन्त्र ३९)

(५) जो लोग परमेश्वर की उपासना नहीं करते उनकी विजय सर्वत्र नहीं होती। जो अच्छी शिक्षा देकर शूरवीरों का सत्कार कर के सेना नहीं रखते हैं उनका सब जगह सहज में पराजय हो जाता है इससे मनुष्य को चाहिये कि दो प्रबन्ध अर्थात् एक तो ईश्वर की उपासना और दूसरा वीरों की रक्षा सदा करते रहें।

(अ० ५ मन्त्र ३७)

वेद

(६) परमात्मा सब मनुष्यों के प्रति इस उपदेश को करता है कि चारों वेदरूप कल्याणकारिणी वाणी सब मनुष्यों के हित के लिए मैंने उपदेश की है इसमें किसी को अनधिकार नहीं है। जैसे मैं पक्षपात को छोड़कर मनुष्य में वर्तमान हुआ प्यारा (प्रिय) हूं। वैसे आप भी होओ। ऐसे करने से तुम्हारे सब काम सिद्ध होंगे।

(अ० २६ मन्त्र २)

(७) मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ और विद्वानों के संग से परोपकार को सिद्धि ओर कामना को पूर्व करने वाली वेद-वाणी का प्राप्त होकर आनन्द में रहें। (अ० १७ मन्त्र १०)

यज्ञ

(८) मनुष्यों को इस प्रकार का यज्ञ करना चाहिये जिससे पूर्ण लक्ष्मी, सकल आयु, अन्न आदि पदार्थ, रोगनाश और सब सुखों का विस्तार हो। उसको कभी नहीं छोड़ना चाहिये क्योंकि उसके बिना वायु और वृष्टिजल तथा औषधियों की शुद्धि नहीं हो सकती और शुद्धि के बिना किसी प्राणी को अच्छे प्रकार सुख नहीं हो सकता। इसलिये ईश्वर ने उक्त यज्ञ करने की आज्ञा सब मनुष्यों को दी है।

(अ० १ मन्त्र २२)

(९) जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करते, सुगन्धि, पुष्टि मधुरता और रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का

यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा औषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में प्रशंसा के योग्य होते हैं। (अ० ८ मन्त्र ५८)

अध्यापक

(१०) सब विद्वान् और विदुषी स्त्रियों को योग्य है कि समस्त बालक और कन्याओं के लिए निरन्तर विद्यादान करें। राजा (सरकार) और धनी आदि लोगों के धन आदि पदार्थों से अपनी जीविका करें और वे राजा (शासक) आदि धनी जन भी विद्या और अच्छी शिक्षा से प्रवीण होकर अपने पढ़ाने वाले विद्वान् या विदुषी स्त्रियों को धन आदि अच्छे-अच्छे पदार्थों को देकर उनकी सेवा करें। (अ० ७ मन्त्र ३३)

(११) विद्वान् लोगों को उचित है कि प्रतिदिन विद्यार्थियों को पढ़ावें और परम विद्वान् पण्डित लोग उनकी परीक्षा भी प्रत्येक महीने में किया करें। उस परीक्षा से जो तीक्ष्ण बुद्धि युक्त परिश्रम करने वाले प्रतीत हों उनको अत्यन्त परिश्रम से पढ़ाया करें।

(१२) जो कन्या और पुत्रों में स्त्री और पुरुषों में विद्या पढ़ाने वाला कर्म है वही राज्य को बढ़ाने, शत्रुओं का विनाश और धर्म आदि की प्रवृत्ति कराने वाला होता है। इसी कर्म से सब कालों और सब दिशाओं में रक्षा होती है। (अ०८ मन्त्र १५)

(१३) अध्यापक लोग विद्यार्थियों के प्रति ऐसा कहें कि जैसे हम लोग आचरण करें वैसा तुम भी करो। जैसे गौ आदि पशु दिन भर में इधर-उधर भ्रमण कर सायंकाल अपने घर में आके प्रसन्न होते हैं वैसे विद्या के स्थान को प्राप्त होके तुम भी प्रसन्न हुआ करो। (अ० १५ मन्त्र ४२)

उपदेशक

(१४) हे स्त्री पुरुषो ! तुम दोनों को चाहिये कि जो विद्वान् लोग तुमको शरीर और आत्मा का बल कराने हारे उपदेश से सुशोभित करें उनकी सेवा और सत्संग निरन्तर करो और अन्य तुच्छ बुद्धि वाले पुरुष व स्त्रियों का संग कभी मत करो। (अ०११ मन्त्र ६७)

(१५) उपदेशक मनुष्यों को चाहिये कि जितना सामर्थ्य हो उतना सब मनुष्यों का एक धर्म, एक कर्म, एक प्रकार की चित्तवृत्ति और बराबर सुख-दुःख वैसे हों वैसे ही शिक्षा करें। सब स्त्री पुरुषों को योग्य है कि आप्त विद्वान् ही को उपदेशक और अध्यापक मान के सेवन करें और उपदेशक या अध्यापक इनके ऐश्वर्य और पराक्रम को बढ़ावें। और सब मनुष्यों के एक धर्म आदि के विना आत्माओं में मित्रता नहीं होती और मित्रता के बिना निरन्तर सुख भी नहीं हो सकता। (अ० १२ मन्त्र ५८)

माता पिता

(१६) माता और पिता को योग्य है कि अपनी सन्तानों को विद्यादि अच्छे-अच्छे गुणों में प्रवृत्त करा कर अच्छी प्रकार उनके शरीर की रक्षा करें अर्थात् जिससे वे नीरोग शरीर और उत्साह के साथ गुण सीखें और उन पुत्रों को योग्य है कि माता-पिता की सब प्रकार सेवा करें। (अ० ६ मन्त्र ३६)

(१७) हे अच्छे सन्तानों ! तुम को चाहिये कि ब्रह्मचर्य सेवन से शरीर का बल और विद्या तथा अच्छी शिक्षा से आत्मा का बल पूर्ण दृढ़ कर स्थिरता से रक्षा करो और आग्नेय आदि अस्त्र विद्या से शत्रुओं का विनाश करो। इस प्रकार माता पिता अपने सन्तानों को शिक्षा करें। (अ० ११ मन्त्र ४४)

(१८) माता-पिता और आचार्य को चाहिये कि सावधानी से गर्भाधान आदि संस्कारों की रीति के अनुकूल अच्छे सन्तान उत्पन्न करके उनमें वेद ईश्वर और विद्यायुक्त बुद्धि उपत्न करें क्योंकि ऐसा अन्य धर्म, अपत्य सुख का हितकारी कोई नहीं है ऐसा निश्चय रखना चाहिये। (अ० १२ मन्त्र ५१)

सन्तान

(१९) पुत्रों को चाहिये कि जैसे माता पिता अपने पुत्रों को सुख देते हैं वैसे ही अनुकूल सेवा से अपनी माताओं को निरन्तर आनन्दित करें और माता पिता के साथ विरोध भी न करें। माता पिता को चाहिये कि अपने पुत्रों को अधर्म और कुशिक्षा से युक्त कभी न करें। (अ० १२ मन्त्र ३९)

(२०) सन्तानों को चाहिये कि विद्य और अच्छी शिक्षा से युक्त हो और पुरुषार्थ से ऐश्वर्य को बढ़ा के अभिमान और मत्सरता रहित प्रीति से माता पिता की मन, वाणी और कर्म से यथावत सेवा करें।
(अ० १२ मन्त्र १०७)

(२१) जैसे विद्वान् माता पिता अपने सन्तानों को विद्या और अच्छी शिक्षा से दुष्टाचारों से पृथक रक्खें वैसे ही सन्तानों को भी चाहिये कि इन माता पिताओं को बुरे व्यवहारों से निरन्तर बचावें। क्योंकि इस प्रकार किये बिना सब मनुष्य धर्मात्मा नहीं हो सकते।
(अ० १२ मन्त्र ४०)

(२१) जैसे माता पिता पुत्र का पालन करते हैं वैसे पुत्र को माता पिता की सेवा करनी चाहिए। सब मनुष्यों को इस जगत् में ध्यान देना चाहिए कि हम माता पिता का यथावत् सेवन करके (उनकी उचित सेवा करके) पितृ ऋण से मुक्त होवें।
(अ० १९ मन्त्र ११)

विवाह

(२३) विवाह की कामना करने वाली युवती स्त्री को चाहिये कि जो छल कपट आदि आचरणों से रहित, प्रकाश करने और एक ही स्त्री को चाहने वाला, जितेन्द्रिय, सब प्रकार का उद्योगी धार्मिक और विद्वान् पुरुष हो उसके साथ विवाह करके आनन्द में रहे।
(अ० ८ मन्त्र २)

(२४) कन्या को चाहिये कि अपने से अधिक बल और विद्या वाले या बराबर के पति को स्वीकार करे किन्तु छोटे व न्यून विद्या वाले को नहीं। जिसके साथ विवाह करे उसके सम्बन्धी और मित्रों को सब काल में प्रसन्न रक्खें।
(अ० १२ मन्त्र ७१)

पति-पत्नी का परस्पर व्यवहार

(२५) स्त्री पुरुष ऐसे व्यवहार में बर्तें कि जिनमें उनका परस्पर भय और उद्वेग नष्ट होकर आत्मा की दृढ़ता, उत्साह और गृहाश्रम व्यवहार की सिद्धि से ऐश्वर्य बढ़े और वे द्वेष तथा दुःख को छोड़ चन्द्रमा के तुल्य आह्लादित हो।
(अ० ६ मन्त्र ३५)

(२६) जो स्त्री पुरुष सर्वथा विरोध को छोड़ के एक दूसरे की प्रीति में तत्पर, विद्या के विचार से युक्त तथा अच्छे २ आभूषण धारण करने वाले हो के प्रयत्न करें तो घर में कल्याण और आरोग्य बढ़े और जो परस्पर विरोधी हों तो दुख सागर में अवश्य डूबें। (अ० १२ मन्त्र ५७)

(२७) जैसे पति अपने आनन्द के लिये स्त्रियों का ग्रहण करते हैं, वैसे ही स्त्री भी पतियों का ग्रहण करें। इस गृहाश्रम पतिव्रता स्त्री और स्त्रीव्रत पति सुख का कोष होता है। खेत रूप स्त्री और बीज रूप पुरुष जो इन शुद्ध बलवान दोनों के समागम से उत्तम विविध प्रकार के सन्तान हों तो सर्वदा कल्याण ही बढ़ता रहता है ऐसा जानना चाहिये। (अ० १२ मन्त्र ६४)

(२८) स्त्री पुरुषों को चाहिये कि स्वयंवर विवाह करके अति प्रेम के साथ आपस में प्राण के समान प्रियाचरण, शास्त्रों का सुनना ओषधि आदि का सेवन और यज्ञ के अनुष्ठान से वर्षा करावें।
(अ० १४ मंत्र ४८)

(२९) जैसे शिशिर ऋतु सुखदायी होता है वैसे स्त्री पुरुष परस्पर सन्तोषी हों। सब उत्तम कर्मों का अनुष्ठान कर और दुष्ट कर्मों को छोड़ के परमेश्वर की उपासना से निरन्तर आनन्द किया करें।
(अ० १५ मन्त्र ६४)

गृहपत्नी

(३०) स्त्री अपने पति की प्रार्थना करे कि मैं सेवा के योग्य आनन्द चित्त आपको प्रतिदिन चाहती हूं वैसे आप भी मुझे चाहो और अपने पुरुषार्थ भर मेरी रक्षा करो जिससे मैं दुष्टाचरण करने वाले मनुष्य के किये हुए अपराध की भागिनी किसी प्रकार न होऊं। (अ० ८ मन्त्र २७)

(३१) विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहें। (अ० ८ मन्त्र ४२)

(३२) घर के काम करने में कुशल स्त्री को चाहिए कि घर के भीतर के सब काम अपने आधीन रखके ठीक-२ बढ़ाया करें।

(अ० ११ मन्त्र ६२)

(३३) जो स्त्री पति को प्राप्त हो के घर में वर्त्तती है वह अच्छी बुद्धि से सुख के लिए प्रयत्न करे। सब अन्न आदि खाने-पीने के पदार्थ रुचिकारक बनाये। और किसी को दुःखी वा किसी के साथ बैर बुद्धि कभी न करें। (अ० ११ मन्त्र ६९)

(३४) जो बहुत काल तक ब्रह्मचर्याश्रम से सेवन की हुई अत्यंत बलवान्, जितेन्द्रिय बसन्त आदि ऋतुओं के पृथक्-२ काम जानने, पति के अपराध क्षमा और शत्रुओं का निवारण करने वाली, उत्तम पराक्रम से युक्त स्त्री अपने स्वामी पति को तृप्त करती है उसी को पति भी नित्य आनन्दित करता ही है। (अ १३ मन्त्र २६)

(३५) स्त्रियों को योग्य है कि साङ्गोपाङ्ग पूर्ण विद्या और धन ऐश्वर्य का सुख भोगने के लिए अपने सदृश पतियों से विवाह करके विद्या और सुवर्ण आदि धन को पाके सब ऋतुओं में सुख देने हारे घरों में निवास करें। तथा विद्वानों का संग और शास्त्रों का अभ्यास निरन्तर किया करें। (अ० १४ मन्त्र २९)

(३६) अच्छी चतुर स्त्री को चाहिए कि घर के कार्यों के साधनों को पूरे कार्यों को सिद्ध करे। जैसे विदुषी स्त्री और विद्वान् पुरुषों की गृहाश्रम के कर्त्तव्य कर्मों में प्रीति हो वैसा उपदेश किया करें।

(अ० १५ मन्त्र ५९)

(३७) स्त्रियों को चाहिए कि समुद्र के समान गम्भीर, जल के समान शान्त स्वभाव, वीर पुत्रों को उत्पन्न करने, नित्य औषधियों को सेवने और जलादि पदार्थों को ठीक-२ जानने वाली होवें।

(अ० ९ मन्त्र ६)

आदर्श राष्ट्रपति वा प्रधान मन्त्री

(३८) मनुष्यों को योग्य है कि ईश्वर में प्रेमी, बल पराक्रम पुष्टियुक्त, चतुर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा, प्रजापालन में समर्थ विद्वान् को अच्छे प्रकार की परीक्षा कर सभा का स्वामी करने के लिए अभिषेक करके राजधर्म की उन्नति अच्छे प्रकार नित्य किया करे। (अ० ९ मन्त्र ३०)

(३९) जो सूर्य के समान श्रेष्ठ गुणों से प्रकाशित, सत्पुरुषों की शिक्षा से उत्कृष्ट, बुरे व्यसनों से अलग, सत्य, न्याय से प्रकाशित, सुन्दर अवयव वाला, सर्वत्र प्रसिद्ध, सब के सत्कार और जानने योग्य व्यवहारों का ज्ञाता और दूतों के द्वारा सब मनुष्यों के आशय को जानने वाला, शुद्ध न्याय से प्रजाओं में प्रवेश करता है वही पुरुष राजा (शासक) होने के योग्य होता है। (अ० १२ मन्त्र १३)

राज कर्मचारी

(४०) राजा (शासक) और उसके कामगर लोग अनीति से प्रजाओं का धन न लेवें किन्तु राज्य पालन के लिए राजपुरुष प्रतिज्ञा करें कि हम लोग अन्याय न करेंगे अर्थात् हम सदैव तुम्हारी रक्षा और डाकू, चोर, लम्पट, लबाड़, कपटी कुमार्गी, अन्यायी और कुकर्मियों को निरन्तर दन्ड देवेंगे। (अ० ६ मन्त्र २२)

(४१) राज पुरुषों को चाहिए कि सब प्राणियों में मित्रता से अच्छे प्रकार शिक्षा कर इन प्रजाजनों को उत्तम गुणयुक्त विद्वान् करें जिनसे ये ऐश्वर्य के भागी होकर राजभक्त हों। (अ० ९ मन्त्र ३३)

(४२) राज पुरुषों को चाहिए कि पुण्यार्थियों का उत्साह के लिये सत्कार, प्राणियों के ऊपर दया, अच्छी शिक्षित सेना को रखना चोर आदि को दण्ड, सेवकों की रक्षा और वनों को नहीं काटना इन सबको कर राज्य की वृद्धि करें। (अ० १६ मन्त्र २०)

स्त्रियों का न्याय स्त्रियां करें

(४३) राजाओं (शासकों) की स्त्रियों को चाहिए कि सब स्त्रियों के लिए न्याय और अच्छो शिक्षा देवें और स्त्रियों का न्यायादि पुरुष न करें क्योंकि पुरुषों के सामने स्त्री लज्जित और भययुक्त होकर यथावत् बोल वा पढ़ ही नहीं सकती। (अ० १० मन्त्र २६)

किसानों की रक्षा

(४४) जंसे खेती करने वाले लोग परिश्रम के साथ पृथिवी से अनेक फलों को उत्पन्न और रक्षा करके भोगते और असार को फेंकते हैं और जैसे ठीक-२ राज्य का भाग राजा (सरकार) को देते वंसे ही राजा (शासक) आदि पुरुषों को चाहिए कि अत्यन्त परिश्रम से इनकी रक्षा करें। न्याय के आचरण से ऐश्वर्य को उत्पन्न कर और सुपात्रों के लिए देते हुए आनन्द को भोगें। (अ० १० मन्त्र ३२)

प्रश्न—उत्तर

१—हम कौन हैं ?

उत्तर—हम आर्य हैं।

२—आर्य किसको कहते हैं ?

उत्तर—जो चारों वेदों को माने और उनके बताये हुए धर्म पर चले।

३—वे चार वेद कौन कौन से हैं ?

उत्तर—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

४—वेद किसे कहते हैं ?

उत्तर—ईश्वर के दिये हुए ज्ञान को वेद कहते हैं।

५—ईश्वर किसको कहते हैं ?

उत्तर—जो सबको बनाने वाला और सबसे बड़ा है।

६—वह ईश्वर कहां रहता है और कबसे है ?

उत्तर—ईश्वर सब जगह रहता है और हमेशा से है।

७—हमारा धर्म क्या है ?

उत्तर—हमारा धर्म वैदिक धर्म है।

८—धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिससे हम सब सुख और परमात्मा को पा सकें वह धर्म है।

९—हमारे देश का क्या नाम है ?

उत्तर—हमारे देश का नाम आर्यावर्त्त है।

१०—हमें आपस में मिलते समय क्या कहना चाहिए ?

उत्तर—नमस्ते।

प्रश्न और उनके उत्तर

१—आर्यसमाज किसको कहते हैं ?

उत्तर—आर्य लोगों के समाज को आर्यसमाज कहते हैं।

२—आर्य समाज को किसने बनाया ?

उत्तर—आर्यसमाज को महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने बनाया।

३—ऋषि दयानन्द कौन थे ?

उत्तर—बाल ब्रह्मचारी संन्यासी थे।

४—स्वामी जी का जन्म कहां हुआ ?

उत्तर—गुजरात काठियावाड़ की रियासत मौरवी के टंकारा ग्राम में हुआ।

५—स्वामी जी का जन्म कब हुआ और उनका बाल समय का क्या नाम था ?

उत्तर—स्वामी जी का जन्म संवत् १८८१ विक्रमी में हुआ और उनका बाल समय का नाम मूलजी था।

६—स्वामी जी के पिता का क्या नाम था और वे कौन थे ?

उत्तर—स्वामी जी के पिता जी का नाम कर्शनजी त्रिपाठी था और वे ब्राह्मण थे।

७—स्वामी जी के गुरु कौन थे और वे कहां रहते थे ?

उत्तर—स्वामी जी के गुरु श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज थे और वे मथुरा में रहते थे।

८—स्वामी जी ने आर्यसमाज को क्यों बनाया ?

उत्तर—वेदों का प्रचार करने और लोगों का सधार करने के लिये बनाया।

९—सबसे पहला आर्यसमाज स्वामी जी ने कब और कहां स्थापित किया ?

उत्तर—सबसे पहला आर्यसमाअ १० अप्रैल सन् १८७५ ई० को बम्बई में स्थापित किया ?

१०—इस समय कुल कितने आर्यसमाज हैं ?

उत्तर—इस समय कई हजार आर्य समाज हैं और नये नये समाज बनाये जा रहे हैं।

११—बालकों को प्रातः उठकर क्या करना चाहिये ?

उत्तर—सबसे पहले ईश्वर को याद करके अपने माता पिता तथा बड़ों को नमस्ते करना चाहिये।

प्रश्न—वेद कब से हैं ?

उ०—जब से मनुष्यों की सृष्टि हुई तब से ही वेद हैं।

प्र०—इस सृष्टि को बने हुए कितने वर्ष हो गये ?

उ०—एक अरब ९७ करोड़ २९ लाख ४९ हजार ५७ वर्ष (सन् १९५७ ई० में) हुए हैं।

प्र०—वेदों का ज्ञान किनको दिया गया ;

उ०—चार ऋषियों को दिया गया।

प्र०—उन चार ऋषियों के नाम क्या २ हैं ?

उ०—अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा।

प्र० —किस ऋषि को किस वेद का ज्ञान दिया गया ?

उ०—अग्नि ऋषि को ऋग्वेद का, वायु ऋषि को यजुर्वेद का आदित्य ऋषि को सामवेद का और अंगिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान दिया गया।

प्र०—चारों वेदों में कुल कितने मन्त्र हैं ?

उ०—चारों वेदों में कुल २०३०९ मन्त्र हैं।

प्र०—छः शास्त्रों के नाम बताओ !

उ० —न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त और मीमांसा।

प्र०—बालक का क्या धर्म है ?

उ० —अपने माता यथा गुरु की आज्ञा मानना और उनकी सेवा करना।

प्र०—हमें किसकी पूजा करनी चाहिये ?

उ०—हमें एक सर्वव्यापक निराकार ईश्वर की पूजा करनी चाहिये ?

प्र० —क्या हमें ईश्वर को मूर्ति वना कर पूजा करनो चाहिये ?

उ०—बिल्कुल नहीं, मूर्ति एक देशी और साकार वस्तु की होती है परन्तु ईश्वर सर्वव्यापक, अनन्त और निराकार है इसलिये उसकी मूर्ति बन ही नहीं सकती।

प्र०—क्या ईश्वर अवतार लेता है ?

उ०—कभी नहीं वह अजन्मा है इसलिए उसका जन्म नहीं हो सकता तथा सर्वशक्तिमान् होने से वह बिना शरीर धारे ही सब दुष्टों को मार देता है।

प्र०—हमें ईश्वर की पूजा कैसे करनी चाहिये ?

उ०—दोनों समय वेद मन्त्रों से अर्थ सहित सन्ध्या करके करनी चाहिये।

प्र०—सन्ध्या से क्या लाभ होता है ?

उ०—आत्मा को शांति मिलती है और मनुष्य झूठ, चोरी, रिश्वत, मांस खाना आदि पापों से बच सकता है।

संध्याविषयक प्रश्नोत्तर

प्र० १—संध्या किसे कहते हैं ?

उ०—प्रातःकाल व सायंकाल ईश्वर के अच्छी प्रकार से ध्यान करनें का नाम संध्या है।

प्र० २—आचमन मंत्र का क्या तात्पर्य है ?

उ०—आचमन मंत्र का तात्पर्य यह है कि प्रभु की दिव्य शक्ति हमें परमानन्द की देने वाली हो और वह हम पर सदा सुख की वर्षा करती रहे। जिस प्रकार आचमन का जल शीतल और मधुर होता है उसी प्रकार संध्या करनें वाले का जीवन शांति से बीते तथा उसमें मिठास पैदा हो।

प्र० ३—इन्द्रिय स्पर्श मंत्रों का क्या अभिप्राय है ?

उ०—इन्द्रिय स्पर्श मंत्रों का अभिप्राय है कि हम अपनी इन्द्रियों को अर्थात् वाणी, प्राण और चक्षुओं को; कान नाभि और हृदय को तथा कंठ, शिर और भुजाओं को बलवान् और यशस्वी बनावें। इनसे कोई पाप न करें।

प्र० ४—मार्जन मंत्रों में क्या बताया गया है ?

उ०—मार्जन मंत्रों में इन्द्रियों को पवित्र रखने के साधन बतलाये गये हैं अर्थात् शिर की पवित्रता यह है कि उसमें ईश्वर विश्वास हो, वह सत्य को ही विचारा करे तथा हम शुद्ध वायु में रहें। आंखों

को पवित्रता सब चीजों को ज्ञानपूर्वक देखने से है, कंठ को शोभा मीठा बोलने और आनन्दमय प्रभु के गीत गाने से है, हृदय की पवित्रता महान् विचारों से है, नाभि ब्रह्मचर्य रखने से पवित्र होती है, पैरों की पवित्रता तपस्या है यानी वे बुराई के रास्ते में न जायें तथा सारे शरीर की पवित्रता ईश्वर के हीं ज्ञान ध्यान से होती है।

प्र० ५—प्राणायाम मंत्र का क्या तात्पर्य है ?

उ० –इसका तात्पर्य यह है कि हर एक ईश्वर भक्त को अपना मन वश में करने के लिये, बुद्धि को शुद्ध और शरीर को निरोग रखने के लिये प्राणायाम यानी प्राणों की कसरत अवश्य करनी चाहिये तथा प्राणायाम करते हुए ईश्वर के भूः, भुवः स्वः आदि गुणों का चिन्तन करते रहना चाहिये।

प्र० ६—अघमर्षण के मंत्रों का क्या तात्पर्य है ?

उ०—अघ के अर्थ हैं पाप और मर्षण का तात्पर्य है दूर करना सो इन मंत्रों में बतलाया गया है कि ईश्वर के नियम बड़े अटल हैं सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, पृथ्वी समुद्रादि हमेशा उसके अटल नियमों में चलते आये हैं इसलिए हमें भी वेदों द्वारा उसके बतलाये हुये नियमों में चलना चाहिए और उसका कोई भी नियम नहीं तोड़ना चाहिए क्योंकि चाहे हम कितने ही विद्वान् बलवान्, धनवान् क्यों न हों, ईश्वर हमको दण्ड अवश्य देगा। इस प्रकार जो मनुष्य विचार कर उत्तम कर्म करता है वह आगे होने वाले पापों से अवश्य बच सकता है।

प्र० ७—मनसा परिक्रमा के ६ मंत्रों का क्या अभिप्राय है ?

उ०—मनसा परिक्रमा के अर्थ है मन के द्वारा ईश्वर की महान् शक्ति का अनुभव करना। इन ६ मंत्रों में यही बतलाया है कि ईश्वर छहों दिशाओं में है अर्थात् पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर नीचे और ऊपर सब ओर रम रहा है तथा हमारी सब जगह सूर्य, अन्न, और विद्वानों आदि द्वारा सब तरह से रक्षा कर रहा है इसलिए हमें हमेशा उसका धन्यवाद देना चाहिये और ईश्वर की तरह जहां तक हो, दूसरों की रक्षा करनी चाहिये तथा किसी से द्वेष नहीं करना चाहिये।

प्र० ८—उपस्थान के मन्त्रों का क्या तात्पर्य है ?

उ०—उपस्थान के अर्थ ईश्वर के पास पहुँचने के हैं जो इन मन्त्रों का विचार करता और अपने जीवन को पवित्र बनाता है वह ईश्वर को अवश्य प्राप्त कर सकता है। इन मन्त्रों में बतलाया गया है कि संसार की सब चीजों और सारे प्राणियों में सबसे बड़ा, सबसे उत्तम और सबसे पूज्य ईश्वर ही है इसलिए हमें सबसे अधिक ध्यान ईश्वर का ही रखना चाहिये। उसकी ज्योति सब पदार्थों में जगमगाती है। प्रत्येक वृक्ष का एक २ पत्ता उसकी सत्ता का पता देता है। उसकी महिमा महान् है वह चर-अचर सबका स्वामी है इसलिए हम सदा यह प्रार्थना किया करें कि हम सौ वर्ष तक प्रभु की महिमा को और वेदादि शास्त्रों को देखें, सौ वर्ष तक आनन्द के साथ जिन्दा रहें, अपने कानों से १०० वर्ष तक उत्तम उपदेश सुनते रहें। हमारी आत्मा इतनी बलवान् हो जावे कि हम पापों तथा पापियों के अधीन न रहें। यदि ईश्वर की कृपा हो तो हम १०० वर्ष से भी अधिक अपना जीवन इसी प्रकार पवित्र, उच्च और आनन्दमय बनाये रखें।

प्र० ९—गायत्री मन्त्र का क्या तात्पर्य है ?

उ०—गायत्री का अर्थ है भक्त की रक्षा करने वाली इसलिए हर एक प्रभु भक्त को इसका जप हमेशा करना चाहिये इस मत्र में प्रभु की महिमा को बतलाते हुये प्रार्थना की गई है कि वह हमारी बुद्धि को उत्तम कर्मों में लगावें। दुनिया के जितने भी काम होते हैं बुद्धि से ही होते हैं इसलिए हमें सदैव ऐसे पदार्थ खाने चाहियें ऐसी बातें सुननी चाहियें और ऐसी संगति में बैठना चाहिये जिससे हमारी बुद्धि ठीक ही रहे। गंदे विचारों वाली न हो जावे।

प्र० १०—नमस्कार का क्या तात्पर्य है ?

उ०—नमस्कार का अर्थ है आदर करना, इस मंत्र में बतलाया गया है कि हमें सदा प्रभु का आदर करना चाहिये क्योंकि वह सदा हमारा कल्याण करता रहता है, वह आनन्दस्वरूप है और आनन्द देने वाला है। ऐसे अनंत उपकार करने वाले भगवान् की जितनी प्रशंसा की जावे थोड़ी है। उसकी महिमा अपरम्पार है।

प्र० ११—क्या ज्योतिष विद्या सच्ची है।

उ०—गणित की हद तक तो सच्ची है परन्तु फलित नहीं।

प्र० १२—क्या सूर्य, चंद्र आदि किसी पर कोप करते हैं ?

उ०—नहीं, सूर्य चन्द्र आदि जड़ है इसलिये किसी को दुःख नहीं दे सकते। मनुष्य के दुष्ट कर्म ही उसे दुःख देते हैं।

प्र० १३—क्या किसी मनुष्य को मरने के पश्चात् खाना पहुंचाया जा सकता है?

उ०—बिल्कुल नहीं, जो शरीर खाने वाला था वह यहीं जला दिया जाता है फिर वह किस तरह उस शरीर से खाना खा सकता है।

प्र० १४—दूसरे शरीर में जीव को भोजन कौन देता है?

उ०—जहां जीव जन्म लेता है, वहीं परमात्मा उस को भोजन देता है, जिस तरह कि वह हम सबको भोजन दे रहा है?

प्र० १५—महापुरुष किसे कहते हैं?

उ०—जो महात्मा अपना और संसार का कल्याण करते हैं, वे महापुरुष कहलाते हैं, जैसे कि श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्णचन्द्र जी और महर्षि दयानन्द जी हुए हैं।

विचार एवं भावनायें

१५ वर्ष की आयु में संध्या के अनुष्ठान तथा स्वाध्याय के प्रभाव से मैं अन्तर्मुखी वृत्ति वाला हो गया था। अपने विचार तथा संकल्प समय-२ पर मैं एक कापी में लिखा करता था। उस कापी के बहुत पुरानी होने के कारण मैंने उनका संग्रह एक नयी कापी में कर दिया है। उस समय की भावनाओं में कुछ का उल्लेख अधोलिखित है :—

१. (१२-४-२४) जैन शास्त्रों व आर्षशास्त्रों को निष्पक्ष भाव से अवलोकन कर सत्य की खोज करो।
२. विद्वानों तथा सत्पुरुषों की संगति में बैठो और उपदेश ग्रहण करो।
३. पच्चीस साल तक यथा संभव ईश्वर की कृपा से ब्रह्मचर्य रखना।
४. दूसरे की भलाई में सदैव तत्पर रहो।
५. सन्ध्या एकान्त में करनी चाहिए।
६. (४-५-२४) मिर्च न खाओ।
७. पानी छना हुआ पीओ।

८. (१५-५-२४) गुरुओं का तथा बड़ों का आदर करो।

९. अपना आदर्श ऊंचा रखो।

१०. अगर हो सके तो हर इतवार की शाम को आर्यसमाज के सत्संग में जाया करो। (उन दिनों आ० स० पानीपत का साप्ता० सत्संग रविवार को सायं लगा करता था।

११. (५-६-६२४) प्रसन्न मुख तथा गम्भीर रहो।

१२. तुम अपने को एक निर्दोष ब्रह्मचारी बनाओ।

१३. सन्ध्या को श्रद्धापूर्वक हृदय से, मन्त्रों के अर्थ सोच विचार कर करनी चाहिए।

१४. (५-६-२४) रात को सोते वक्त शुभ विचार किया करो।

१५. झूट का कुछ प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए।

१६. जो पुस्तक पढ़ो उससे कुछ ग्रहण करो। सिर्फ पुस्तक देखना ठीक नहीं, उससे फायदा उठाना चाहिए।

१७. कम बोलो और अधिक सोचो।

१८. सन्ध्या के समय का ध्यान रखो।

१९. भोजन करने से पहले ईश्वर को स्मरण कर लिया करो।

२०. जहां तक हो सके स्व० दर्शनानन्द जी के ट्रैक्ट अगर मिल सकें, तो पढ़ना।

२१. अपनी दिनचर्या के अनुसार उठने, स्नान करने, सन्ध्या करने व स्वाध्याय करने का अभ्यास डालो।

२२. जहां तक हो सके अश्लील, बुरे, फोहोश आदि शब्दों पर ध्यान न दो और उनसे अलग रहने का यथासम्भव प्रयत्न करो।

२३. (३०-६-२४) चुप ज्यादह रहने का प्रयत्न करो क्योंकि एक चुप बहुत को हराती है।

२४. हृदय में जब मनोविकार हों या बुरी कामनायें या कल्पनाएं हों उस समय मन को किसी शुभ कार्य की ओर प्रवृत्त करना चाहिए।

२५. किसी शुभ कार्य के करने में किसी से भी न डरो।

२६. स्कूल में गम्भीरता से बैठना चाहिए तथा जो पढ़ाया जावे उस पर अच्छी प्रकार से ध्यान देना चाहिए।

२७. तुमको हिन्दी में और अधिक कार्य करना चाहिए। ७-७-२४

२८. सन्ध्या को सायंकाल सूर्य छिपने के लगभग प्रारम्भ करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने से 'निशि अशन त्याग' व्रत का पालन ठीक प्रकार से होता है।

२९. तुम अपने आप में इस बात का मान (गरूर) न करो कि मैं बड़ा सन्ध्या करने वाला हूं या बड़ा ईश्वरभक्त हूं।

३०. रात को मेरे विचार में अधिक समय तक पुस्तक न देखनी चाहिये तथा नेत्र शक्ति का भी ध्यान रखना चाहिए।

(१४-७-२४)

३१. भोजन करने से पूर्व विचार शुभ, मन क्रोधादि रहित तथा काया स्वच्छ करनी चाहिए।

३२. सवेरे के समय मन उत्साही तथा प्रसन्न रहना चाहिए।

३३. यद्यपि प्रातः जल्दी उठना, पहिले तो बुरा व नापसन्द सा लगता है परन्तु इसका नतीजा अन्त में अच्छा ही होता है।

३४. परीक्षा देते समय घबराना न चाहिए बल्कि शान्ति व निश्चिन्तता से देनी चाहिए।

३५. दूसरों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करो या संजीदगी से करो।

३६. अपने Standard से ऊंचा उठने की कोशिश करो।

(३-८-२४)

३७. देखो गुस्सा रोकना कितना अच्छा होता है, अनुभव से जान लो।

३८. आमतौर पर शान्तिपूर्वक और ठीक-२ शब्द (लैक्चर में) बोलने का कितना अच्छा असर पड़ता है।

३९. अन्तःकरण कहे, यह बात मत कहो, तो उसे तुम्हें न कहना चाहिए कहे, तो कह दो।

४०. अभिमानी होने से सरल होना और कर्त्तव्यपरायण होना अच्छा है।

४१. सदैव महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने अच्छे होते हैं।
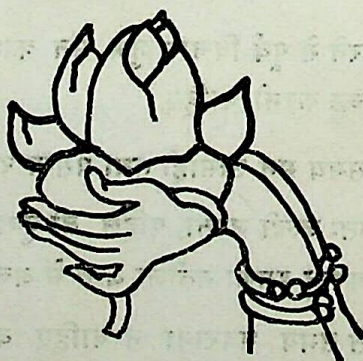
श्री पं० चन्द्रभानु जी अपनी स्वाभाविक मुद्रा में
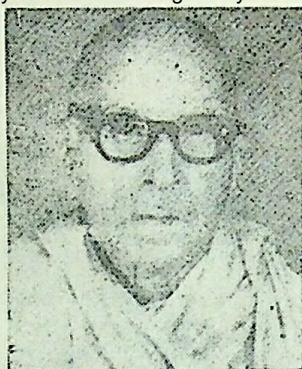
पूज्य श्री अमर स्वामी जी महाराज
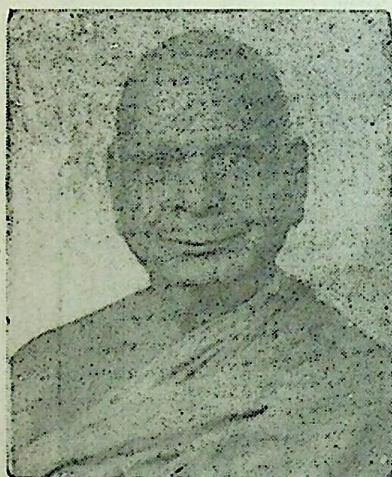
कुछ संस्मरण लेखक एवं सहयोगी

श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती

श्री स्वामी स्वरुपानन्द जी सरस्वती

श्री विक्रम जी एम० ए०

श्री पं० क्षितीश कुमार जी

श्री सरदारी लाल जी वर्मा

श्री क्षेमचन्द्र जी सुमन
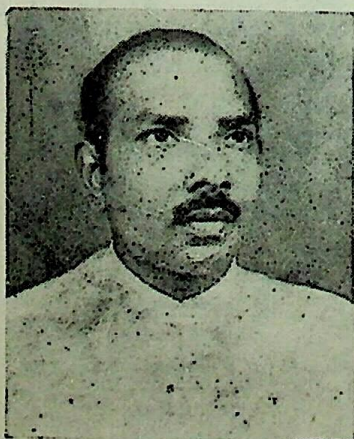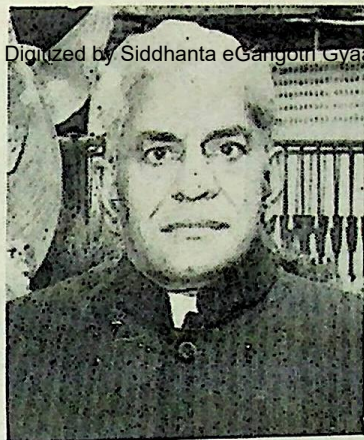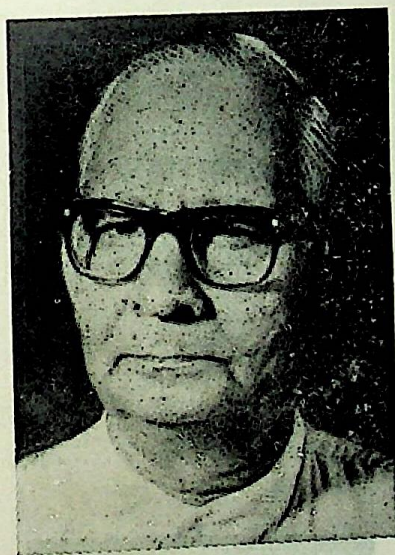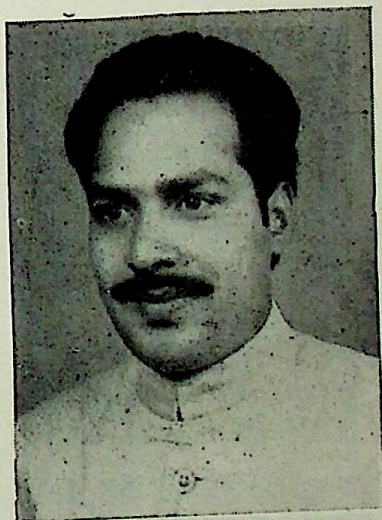
कुछ संस्मरण लेखक एवं सहयोगी

श्री पं० रुपकिशोर जी शास्त्री एम० ए०
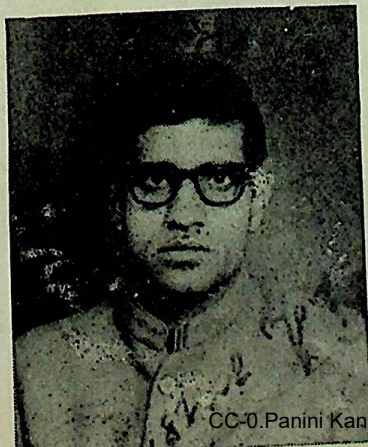
कुछ संस्मरण लेखक एवं सहयोगी
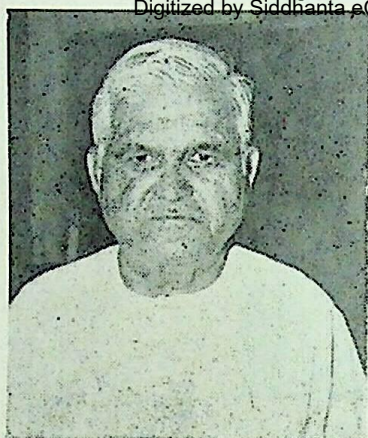
श्री राममूर्ति जी कैला
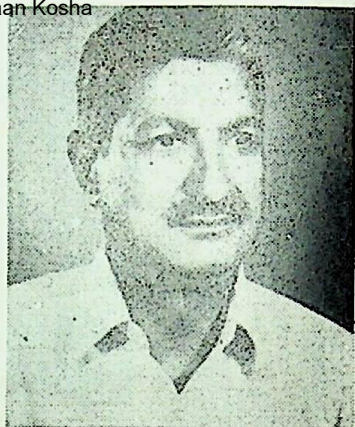
श्री रामनाथ जी सहगल

श्री सुभाष जी विद्यालंकार

श्री रतनलाल जी सहदेव
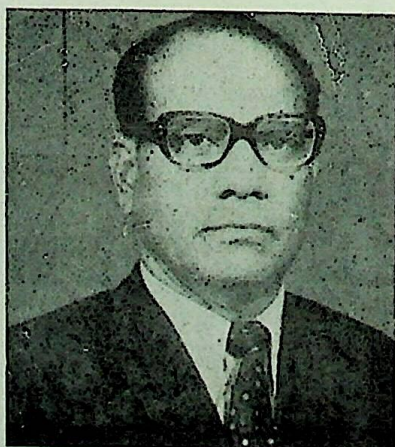
श्री प्राणनाथ जी घई
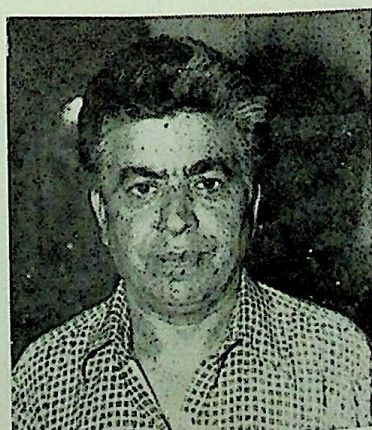
श्री बहादुर जी

आदर्श पुरोहित

(श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती)

१९७१ ई० में संन्यास लेने के अनन्तर मुझे दिल्ली में रहने का काफो सुयोग प्राप्त होता रहा। कई वर्ष हनुमान् रोड़ आर्य समाज के एक कमरे में रहा। आर्य समाज के हॉल के एक पार्श्व में पं० चन्द्रभानु जी रहते थे, दूसरे में मैं रहता था। मेरी और उनकी घनिष्टता बढ़ती गयी। उनकी ख्याति से पहले भी परिचित था। आर्य समाज के जगत् में इतने प्रतिष्ठित पुरोहित कम ही मिलेंगे। सरल प्रकृति के चन्द्रभानु जी की अपनी विशेषतायें हैं। सहस्रों से अधिक युवक और युवतियों को उन्होंने दाम्पत्य में वाँधा। वाभाविकता और सहज स्नेह से ये संस्कार कराते हैं। पढ़े लिखे उच्छृंखल युवक भो मिलते हैं, जो व्यंग्य करना चाहते हैं, या जिनकी कोई भी आस्था संस्कार के उपक्रम में नहीं है—पंडित जी उनको भी संभाल सकने में चतुर और विनोदी हैं सबकी प्रकृतियों को समझते हैं। इसीलिए बड़े-बड़ घरों में उनका पौरोहित्य सफल रहा है।

पंडित जी अनुभवी विद्वान् और आर्य सिद्धांतों के मर्मज्ञ रहे हैं, इस लिए आर्य समाज के अधिवेशनों और उत्सवों में उनकी मानमर्यादा रही है। ये उस पीढ़ी के पुरोहित हैं जब वेद पारायण यज्ञों की व्यापारिकता आरम्भ नहीं हुई थी। समय के अनुसार प्रगतिशीलता भी पंडित जी का आभूषण है।

भानु से तेजोवान, चन्द्र से शीतल और सिद्धान्त-भूषणों से अलङ्कृत पं० चन्द्रभानु जी दीर्घायु हों, पूर्णायु हों, स्वस्थ रहें—यह मेरी कामना है।

प्रसन्नता है कि उनके मित्रों ने मुझे भी अभिनन्दन करने का सुअवसर दिया है। शतः अभिवादन।

प्रयाग, २०-२-८४

समर्पित जीवन

श्री वेदकुमार जी वेदालंकार,

सादर नमस्ते।

आपका १२-१-८४ का पत्र मिला।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आर्य पुरोहित सभा माननीय पं० चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन करने जा रही है।

पं० चन्द्रभानु जी आर्य समाज के प्रति समर्पित जीवन वाले व्यक्ति हैं। वैदिक सिद्धान्तों के ज्ञाता, पांडित्यपूर्ण वक्ता और कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं। आर्य समाज उनकी सेवाओं से दीर्घकाल तक लाभ उठाता रहेगा। मैं अभिनन्दन ग्रन्थ को सफलता की कामना करता हूं और परमात्मा से माननीय पं० चन्द्रभानु जी की शतायु की मगल प्रार्थना करता हूं।

पं० जी ने निजाम शाही के खिलाफ उस समय काम किया जब हैदराबाद में वैदिक धर्म के प्रचार पर अनेक प्रकार की पाबन्दिया लगी हुई थी मैंने उन्हीं दिनों पहले-पहल पं० चन्द्रभानु जी के दर्शन किये।

सार्वदेशिक आ० प्र० सभा
महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

भवदीय
रामगोपाल शालवाले
प्रधान

※ अतीत के झरोखे से ※

(श्री पं० शिव कुमार जी शास्त्री काव्य-व्याकरण तीर्थ)

लगभग ५० वर्ष होने आये, मैं गुरुकुल महाविद्यालय सूर्यकुण्ड बदायूं से स्नातक होकर शास्त्री परीक्षा की तैयारी कर रहा था। मुझे विदित हुआ कि हमारे जिला अलीगढ़ के खैर कस्बे में आर्य समाज का वार्षिकोत्सव है। आर्यसमाज के प्रति श्रद्धातिरेक ने मुझे इस उत्सव को देखने सुनने को प्रेरित किया और मैं अपने पूज्य चाचा जी के साथ खैर चला गया।

मैं उस समय १७-१८ वर्ष का युवक था और थोड़ा बहुत बोल भी लेता था।

आर्यसमाज खैर के उस उत्सव में श्री पं० चन्द्रभानु जी दिल्ली से पधारे हुए थे। भाषण से पूर्व उनका परिचय देते हुए आर्यसमाज के मंत्रीजी ने जनता को बताया कि श्री पं० जी श्री दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर से शिक्षित होकर स्नातक बने हैं और आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली में इस समय धर्माचार्य हैं।

उस समय के पं० चन्द्रभानु जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का चित्र आज भी मेरे मानस पटल पर ज्यों का त्यों अङ्कित है। "गोर वर्ण, छरहरा शरीर, उन्नत ललाट, ऊंची और पतली नाक, गम्भीर और गूंजती वाणी" ये थीं उस समय के पं० चन्द्रभानु जी के व्यक्तित्व की विशेषताएं। आज के चन्द्रभानु जी को उस समय के चन्द्रभानुजी के चित्र से मिलाता हूं तो उसके समीकरण में भी कठिनाई होती है। कुछ तो उस समय का धार्मिक वातावरण और फिर आर्यसमाज के पौरोहित्य का कार्य ऐसे थे कि उस दायित्त्व को वहन करने वाला व्यक्ति सदा अपने को धीर, गम्भीर, वयोवृद्ध नहीं तो पक्का प्रौढ़ प्रकट करके ही सन्तुष्ट होता था। मैं केवल श्री पं० चन्द्रभानु जी को ही नहीं आर्यसमाज के अन्य अनेक युवक पुरोहितों को भी जानता हूं जो अपनी भूषा और भाषा से कालिदास के शब्दों में "वृद्धत्वं जरसा

विना" के उपयुक्त उदाहरण हैं। किसी उर्दू के शायर के शब्दों में यूं प्रकट करना और भी सुसंगत होगा कि—

"जवानी में नज़र आने लगे वाइज़ भी सदसाला।
उन्हें भी खाते-खाते खा गया घुन पारसाई का॥

उस समय के आर्यसमाज के उत्सवों में शङ्का समाधान भी एक महत्त्वपूण अंग होता था। इस कार्य के लिए आगत विद्वानों में से अधिक प्रभावशालो वाक्पटु और प्रत्युत्पन्नमति को चुना जाता था। खैर के इस उत्सव में यह काम पं० चन्द्रभानु जी को दिया गया और इन्होंने अपने वाक्कौशल और सिद्धान्तज्ञता की अच्छी छाप श्रोतृवृन्द के मन पर अङ्कित की।

मैं शास्त्री करने के लिए काशी चला गया और वहां से शास्त्री होते ही पश्चिमी पंजाब के गुरुकुल धाम जेहलम में प्रधानाचार्य हो गया। इस गुरुकुल में ७ वर्ष के प्राध्यापन के पश्चात् १ जनवरी सन् १९४५ को आ० प्र० सभा पंजाब के वेद प्रचाराधिष्ठाता श्री पं० यशपाल जी सिद्धान्तालङ्कार के अनुरोध पर मैं सभा के प्रचार कार्य में आ गया। एक डेढ़ वर्ष पश्चात् ही मुझे दिल्ली के सभा कार्यालय का वेद प्रचाराधिष्ठाता बना दिया गया।

दिल्ली आने पर मान्य पं० चन्द्रभानु जी से प्रायः सम्पर्क होता रहा।

आर्यसमाज के पौरोहित्य के इतिहास में श्री पं० जी का स्थान अद्वितोय और अनुपम है। इनमें वे सभी गरिमाएं तथा विशेषताएं हैं जिनकी अपेक्षा एक आर्य पुरोहित में की जाती है। ये जहां भी गये अपनी योग्यता और व्यवहार से आर्य समाज के प्रभाव की छाप लगाकर आये।

श्री पं० जी कर्मकाण्ड में ही निष्णात नहीं है, अपितु वैदिक सिद्धांत मर्मज्ञ और कुशल वक्ता भी हैं।

अभी ईश कृपा से श्री पं० जी का स्वास्थ्य अच्छा है। मेरा सुझाव है कि आर्यसमाजों को पुरोहित शिविरों का आयोजन कर उनमें दोक्षा का दायित्व श्री पं० जी को देकर इनके दीर्घकालार्जित अनुभव से आने वाले युवक पुरोहितों को लाभान्वित करना चाहिए।

शमित्योम्

एम-८७
साकेत
नई दिल्ली-१७

लगन और सेवा

ज्वालापुर
१६-२-८४

प्रिय वेद कुमार जी

सस्नेह नमस्ते !

आपका पत्र मिला समाचार ज्ञात हुआ। यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप एक अभिनन्दन ग्रन्थ माननीय श्री पं० चन्द्रभानु जी के ७५वें जन्म दिवस पर निकाल रहे हैं हार्दिक बधाई और शुभ कामनाएं। माननीय प० जी ने आर्यसमाज की सुदीर्घकाल तक बड़ी लगन से सेवा की, अनेकों परिवारों को आर्यसमाज की ओर अपने व्याख्यानों एवं संस्कारों के द्वारा मोड़ दिया है और अब भी वे सतत सेवा कर रहे हैं प्रभु करे वे शतायु हों और ऐसे ही सेवा करते हुए हम सब के लिये प्रेरणा के स्रोत बने रहें। उन्हें मेरी ओर से सादर नमस्ते देवें। शेष मेरे पास इतना समय तो नहीं कि कोई लम्बा लेख भेज सकूं, तो भी इतना अवश्य लिख रहा हूं कि आर्य समाज के पुरोहितों का कार्य बड़े तप का है। उन्हें यह कार्य करते हुए अपने जीवन को इतना सुसंयत रखना होता है, उत्तम गुण, कर्म स्वभावों वाला बना कर रखना होता है कि जिससे वे सदा सब के लिये ऐसे प्रेरणा के स्रोत बने रहे कि लोग आर्यसमाज की ओर खिंचे चले आएं सो आप के इस शुभ कार्य के लिये हमारी हार्दिक मंगल कामनाएं।

रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उपकुलपति
गुरुकुल कांगड़ी
वि० वि० हरिद्वार

सत्यनिष्ठा तथा धर्मप्रेम

दि० २३ मार्च, १९८४

प्रिय श्री वेदालंकार जी,

नमस्कार।

आपका पत्रक मिला है। मुझे अपार हर्ष है कि श्रद्धेय पं० चन्द्रभानु जी के ७५वें जन्म-दिवस के अवसर पर उनका सार्वजनिक अभिनदन्न करने का निर्णय हुआ है। गत ३० वर्षों से मैं पण्डित जी को एक अत्यन्त प्रभावशाली तथा समर्पित धर्मोपदेशक के रूप में कार्य करता देखता आया हूं। उनकी सत्यनिष्ठा, धर्मप्रेम, लगन, परिश्रम शीलता तथा विद्वता ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया है। वास्तव में इस तरह के श्रेष्ठ पुरुष ही हमारे देश के धर्म, परम्परा तथा नैतिकता में श्रद्धा बनाये रखने की प्रेरणा देते हैं। मैं उनके शतायु होने की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं के साथ

भवदीय,
केदारनाथ साहनी
अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी
दिल्ली प्रदेश

ए-१ नीति बाग
नई दिल्ली-४९

शुद्ध मन्त्रोच्चारण का प्रभाव

(श्रीमती इन्द्राणी जगजीवनराम)

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि वैदिक कर्मकाण्ड वेत्ता पुरोहित शिरोमणि पण्डित श्री चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण का उनके ७५वें जन्म-दिवस के शुभ अवसर पर अभिनन्दन समारोह मनाया जा रहा है और इस शुभ अवसर पर उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जायेगा। मेरी समझ में तो यह उनका अभिनन्दन नहीं सारे आर्य जगत का अभिनन्दन होगा।

मैं उनसे लगभग ३० वर्षों से परिचित हूं तबसे वे अनेकों शुभ-अवसरों पर तथा जन्म-दिवसों पर हमारे यहां यज्ञ कराने आते रहे हैं, और हमारे परिवार को अपने आशीर्वचनों से सिंचित करते रहे हैं।

उनका वेद मन्त्रों पर अपना पूर्ण अधिकार है। जब आप वेद मन्त्र बोलने लगते हैं तब ऐसा लगता है कि वेद-मन्त्र स्वयं पण्डित जी का रूप धारण करके उच्चरित हो रहा है। आपने असंख्य आर्य परिवारों में वेद मन्त्रों की शंख ध्वनि गुंजरित की है।

उनके अभिनन्दन समारोह के शुभ अवसर पर मैं अपने परिवार सहित उनका सादर अभिनन्दन करती हूं।

६, कृष्ण मेनन मार्ग
नई दिल्ली-११

७५ वां जन्म दिवस : मंगलम् अभिनन्दन : संस्मरण

व्यवहार कुशल पुरोहित

(आचार्य श्री दीनानाथ जी सिद्धान्तालङ्कार)

इस शती के चौथे शतक के अन्तिम वर्ष मैं उन दिनों अ र्यसमाज लायलपुर (मिंटगुमरी बाजार) आर्य समाज का पुरोहित था। देश में साम्प्रदायिकता, हिन्दू-मुस्लिम तनाव, दंगे इत्यादि का जोर। देशविभाजन का आन्दोलन मध्यम स्थिति में। आर्यसमाज के काम से प्रायः लाहौर जाना पड़ता था। रावी मार्ग पर विशाल गुरुदत्त भवन यज्ञशाला, आर्य छात्र निवास, उपदेशक विद्यालय, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और सीमाप्राँत का मुख्य कार्यालय इत्यादि कई धार्मिक सामाजिक वैदिक अनुसंधान इत्यादि प्रवृत्तियों का मुख्य केन्द्र श्रीमद् दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य श्री पूज्य स्वामी स्वतंत्रा नन्द जी महाराज और उपाचार्य श्री पूज्य वेदानन्द जी महाराज तथा कई प्रमुख आर्य विद्वानों और कायकर्त्ताओं से सान्निध्य और परिचय उपदेशक विद्यालय के तृतीय वष व चतुर्थ वर्ष के युवक छात्रों से हम पेशा और कुछ अनुभव होने हेतु कभी-कभी पारस्परिक बात चीत, विचार विमर्श, शंका समाधान इत्यादि भी। इनमें से कुछ परिचित छात्रों में से एक चन्द्रभानु जी का अभी तक स्मरण है—मितभाषी, सौम्य स्वभाव स्थिर और जिज्ञासा वृत्ति, विनयशील इत्यादि गुणों से मैं प्रभावित था। उन दिनों आर्यसमाज का प्रबल और मुख्य तथा प्रथम स्थानीय केन्द्र लाहौर था। देश की राजधानी होते हुए भी दिल्ली द्वितीय पद का और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के ही अन्तर्गत था। केन्द्रीय सरकार के दफ्तरों में पंजाब निवासियों का आधिक्य तथा उनमें भी आर्य समाजियों का वर्चस्व था। इनमें कई महानुभावों के साथ मेरे पारिवारिक सम्बन्ध थे। यह सब उत्साही आर्य समाजी थे। उनसे विशेष उल्लेखनीय ब्रिटिश सरकार द्वारा "रायबहादुर" उपाधि और साथ में मिंटगुमरी जिले में अब पश्चिमी पाकिस्तान अनुग्रह रूप प्रदत्त खेती की जमीन द्वारा समाहृत थे। वह शुद्ध आहार-विहार, उच्च विचार दृढ़ आर्य समाजी और हमदर्द स्वभाविके थे। उन दिनों दिल्ली के सरकारी दफ्तर छः महीने शिमला और छः महीने दिल्ली रहते थे।

निजाम हैदराबाद से बहिष्कृत : दिल्ली के कार्य क्षेत्र में

राजधानी में उस समय दो मुख्य आर्यसमाजें चावड़ी बाजार और सीताराम बाजार में थीं। दीवान हाल समाज की अभी स्थापना नहीं हुई थी। नई दिल्ली में कनाट प्लेस में सनातन धर्मियों का हनुमान मंदिर था और इसी नाम से सड़क थी। मंदिर के सामने ही "हनुमान मंदिर मार्ग" पर नई दिल्ली का प्रथम आर्यसमाज स्थापित किया गया जो अब विशाल भवन के रूप में कई आर्य सामाजिक प्रवृत्तियों का केन्द्र है। पं० चन्द्रभानु जी उपदेशक विद्यालय से "सिद्धान्त भूषण" उपाधि से अलंकृत हो कार्य क्षेत्र में आ चुके थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी की ओर से पहले उन्हें दक्षिण हैदराबाद रियासत में प्रचारार्थ भेजा गया। इस कट्टर मुस्लिम और हिन्दू विरोधी रियासत के शासक निजाम आर्य समाज के प्रचार को भला कब सह सकता था ? चन्द्रभानु जी को २ वर्ष के बाद ही रियासत से निकल जाने का आदेश दिया गया। इसके बाद पंडित जी का कार्यक्षेत्र दिल्ली हो गया। निजाम हैदराबाद से निष्कासित किये जाने के फलस्वरूप पंडित जी न केवल आर्य समाज किन्तु हिन्दु समाज में सुविख्यात हो गये। फलतः आर्यसमाज हनुमान रोड़ के अधिकारियों ने उनसे समाज का पुरोहित पद संभालने की प्रार्थना की। उन दिनों आर्यसमाज के पुरोहितों का वेतन, सामान्यतः ४० रु० से ६० रु० तक कहीं, कहीं तो इसमें भी कम होता था। मैंने ऊपर अपने राय बहादुर चाचा जी - जिनका शुभनाम हकूमत राय था—जिक्र किया है। वह दिल्ली के सरकारी क्वार्टरों में ही रहते थे। आर्य समाजी होने से हनुमान रोड़ आर्यसमाज से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध होना स्वाभाविक ही था। इस माध्ययम से दिल्ली में रहने वाले मेरे अन्य पारिवारिक जनों से भी पंडित जी से उनका सम्पर्क हो गया। चाचा जी तथा अन्य सब सम्बद्ध परिवारों के पंडित जी कुल पुरोहित रूप से आदरणीय हो गये। मैं भी जब कभी पंजाब से दिल्ली आता और यदि किसी प्रसंग में पंडित चन्द्रभानु का जिक्र आता तो उनके मिष्ट, मधुर और आत्मीयता पूर्ण व्यवहार की प्रशसा ही सुनता। मेरे पूज्य चाचा जी के साथ पंडित जी का विशेष सान्निध्य हो गया था।

विभाजन के बाद सम्पर्क : और सहयोग

विभाजन के बाद जब मैं दिल्ली आया तब पत्रकारिता से सम्बद्ध हुआ। १९२३-२५ में दिल्ली में पं० इन्द्र जी के सम्पादक रूप में नया बाजार (अब श्रद्धानन्द बाजार) दिल्ली से दैनिक "अर्जुन" में सह-सम्पादक था। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जीवित थे। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगतसिंह छद्मनाम 'बलवन्त सिंह' मेरी ही देखरेख में पत्रकारिता सीखता था। १९२५ में आर्थिक घाटे के हेतु "अर्जुन" जब बंद हो गया, तब मैं आर्यसमाज क्षेत्र में आ गया। विभाजन के बाद मुझे पुनः पत्रकारिता से सम्बद्ध होने में कोई विशेष असुविधा नहीं हुई। दिल्ली के कई दैनिक साप्ताहिक मासिक पत्रों में सह-सम्पादक व सम्पादक के रूप में कार्य करता रहा। पर इसके साथ ही आर्य सामाजिक प्रवृत्तियों से भी गहरा सम्बन्ध उपदेशक व पुरोहित रूप में टूट न सका। इसी प्रसंग में कई संस्कारों विशेषतः वैवाहिक अवसरों पर मुझे श्री पं० चन्द्रभानु जी का सहयोगी बनने का सौभाग्य मिलता रहता। उस समय मुझे इस सूझ-बूझ वाल महानुभाव को पर्याप्त समीपता से देखने के अवसर मिलते रहे। विवाह संस्कारों के अवसर पर, अधिकांश, वर-वधु दोनों पक्षों के व्यक्ति पुरोहित को प्रायः अनुचित मजाकों का शिकार बनाते हैं। जो पुरोहित के लिए भी प्रायः उत्तेजक हो जाते हैं। अनेक अवसरों पर कुछ सघर्ष व खींचतान की दुःखद स्थिति भी पैदा हो जाती है। पुरोहित का तब कोई सहायक व पक्षधर नहीं होता। ऐसे भी अवसर आते हैं जब पुरोहित इस अपमान को असह्य अनुभव कर विवाह संस्कार के बीच में ही छोड़ने को बाध्य हो जाता है। इस उग्र स्थिति को तब वर-वधू दोनों पक्ष अपशुकन समझ अपनी भूल समझ क्षमा मांगने को उद्यत हो जाते हैं। अत्यन्त खेद की बात है कि इस प्रकार ही पुरोहित के प्रति तिरस्कार और हीनता की भावना सुनिश्चित और समृद्ध आर्य परिवारों में प्रायः अधिक होती है अपेक्षा सामान्य शिक्षित और आर्थिक दृष्टि से साधारण परिवारों के।

आर्य पुरोहितों का अपमान

आर्य समाजी परिवारों में दूसरी बड़ी खेद और अपमान जनक स्थिति दक्षिणा के बारे में पैदा होती है। संस्कार के बाद उपस्थित

संबंधियों में कानाफूसी शुरू हो जाती है कि "पंडित को क्या देना है ?" इन दोनों परिस्थितियों में पौराणिक पंडित सदा लाभवान् रहता है और आर्य समाजी पंडित कई प्रकार के बन्धनों में फंसा कड़आ घूंट पीने को बाध्य होता है।

पंडित जो का सौम्य स्वभाव

पं० चन्द्रभानु जी के साथ सहयोगी के रूप में मैंने देखा कि वह अपने भी कुछ विशिष्ट गुणों और व्यवहार कुशलता से ऐसे अवसर, प्राय: पैदा होने को स्थिति की संभावनाओं पर पहले काबू पा लेते थे।

पंडित जी इस वृद्धावस्था में आर्य समाज हनुमान रोड़ से निर्वृत्त होकर भी सर्वथा सशक्त, सचेत और साहस के साथ जीवन संग्राम में दृढ़ता से सजग हैं। पुरोहित रूप में वह हजारों परिवारों उनके पितामय पिता, पुत्र, पौत्र के साथ स्नेह सूत्र में आबद्ध हैं। इन सब परिवारों के आर्यकरण में उनका श्रेयष्कर पुरुषार्थ है। इस स्नेही और आदरणीय आर्य बन्धु के प्रति मैं उनके सपरिवार दीर्घायु एवं स्वस्थ, मंगल और कल्याणमय जीवन वृत की प्रभु से अनवरत प्रार्थना करता हूं। आज का आर्यसमाज जिस चौराहे पर मुक्ति यात्री की तरह अपने उज्ज्वल भूतकाल से कटा-खड़ा छटपटा रहा है, उसके भावीमार्ग दर्शन में श्री पं० चंद्रभानु सिद्धांत भूषण सदृश विद्वानों द्वारा पथ प्रदर्शन चिरकाल तक अनिवार्य है। भूरि भूरि शुभ कामनाओं के साथ।

विद्वान के छः गुण

नीति कार के शब्दों में—

सत्यं तपो ज्ञानमहिंसता च विद्वत् प्रणामं च सुशीलता च।
एतानि यो धारयते स विद्वान् न केवलं यः पठति स विद्वान् ॥

विद्वान् वह है जो सत्य, तप, ज्ञान, अहिंसा, विनम्रता और सुशीलता इन गुणों को धारण करता है। केवल पाठ मात्र करने वाला विद्वान् नहीं है।

के० सी० ३७/बी
अशोक विहार
दिल्ली-५२

अध्यनशील सादा जीवन तथा उच्च विचार के प्रतीक

(प्रसिद्ध उपन्यास कार श्रीमती राजी सेठ)

एक ऐसे सम्बन्ध से पं० चन्द्रभानु जी को जानना हुआ जिससे जानना इस महानगर में कोई सुखद संयोग नहीं कहा जा सकता—एक किरायेदार की हैसियत से। एक वकील मित्र का कहना है कि दिल्ली का सिविन्न कोर्ट मकान मालिक और किरायेदारों के आपसी झगड़ों से पटा पड़ा है : इस सम्बन्ध की शुरुआत कुछ-कुछ ऐसे भय से अतोत की कुछ अप्रिय घटनाओं के बीच हुई। परन्तु शीघ्र ही समझ में आ गया इन दुर्भावनाओं का कोई आधार नहीं।

बेहद सौम्य, सुसंस्कृत, मृदुभाषी, हंसमुख और उदार भाव से भरे हुए पंडित जी दिन प्रतिदिन एक नये व्यक्तित्व की पहचान में परिणत हाते गये। एक प्रकार की आन्तरिक सादगी, सदैव अध्ययन मनन में व्यस्त, आवश्यकता पड़ने पर सदैव तत्पर अत्यन्त आत्मलीन और तटस्थ उनमें ये दोनों रूप देखे जा सकते हैं। कल्याण कामना करने वाला उनका सदाशयी मन पल भर में ही अपने अस्तित्व को भूल कर सामने वाले के दिलोदिमाग में घर कर लेता है।

आर्य समाज में उनकी निष्ठा है और यह निष्ठा पुरोहित कर्म का भाग ही नहीं उनक आचरण और मानसिकता का भाग है। कर्म और आचरण में एकात्मता आजकल दुर्लभ है, परन्तु वह पण्डित जी के व्यक्तित्व में एक-रस हो गई है। जब कभी भी उनके घर जाना हुआ उन्हें अध्यनरत पाया। एक मूल्यवान वाचनालय के वे अधिकारी हैं, ज्ञानपिपासु और सतत जिज्ञासु। उनके विचारों में कभी कटुता के दर्शन नहीं हुए। वह आधुनिक विचारों के प्रति भी उतने ही उन्मुख लगते हैं जितने संस्कार शीलता को बनाए रखने में प्रयत्नशील। उनमें एक उदारचेता दृष्टिवान व्यक्तित्व का सौष्ठव दिखाई देता है। अपने परिवार के बीच भी वह एक विनोदी मधुर भाव से हिरते-फिरते दिखाई देते हैं। अपनी पत्नी जैसे निकटतम

सम्बन्ध में भी स्त्री जाति के प्रति उनका आदर भाव लक्षित होता है।

वेदों, उपनिषदों, भाष्यों, कोषों का उनका अपार भंडार देखकर एक सान्त्वना मन में पनपा करती है कि उनका साहचर्य लाभ मिलेगा, परन्तु महानगर की अति व्यस्त जिन्दगी में एक कचोट ही हाथ लगती है साथ ही एक आश्वासन भी कि वह किसी भी पुकार और जरूरत पर सदा उपस्थित मिलेंगे। उनका आशीष सदा उपलब्ध रहेगा।

उन्हें देखकर कभी यह नहीं लगता कि वह जिस युग के हैं वह युग पीछे छूट गया, लगता है उसके चिन्तन का अनुदान आज भी हमारे लिए उतना ही अर्थवान और जरूरी है।

प्रभु करें वह दीर्घायु हों और उनका आत्मिक-स्पर्श हमारे भीतर सार्थकता की सृष्टि करता रहे।

एम-१६
साकेत
नई दिल्ली-१७
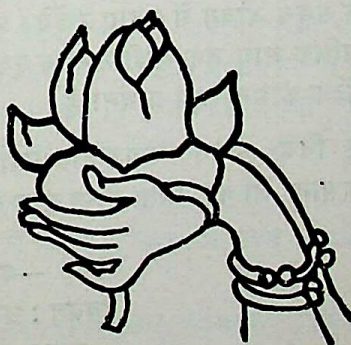
शुभ-कामना

वैदिक धर्म प्रचारक पुरोहितप्रवर आर्यसमाजरत्न विद्वत्वरेण्य महामान्य।

श्री पं० चन्द्रभानु जी !

वैदिक धर्म एवं सिद्धान्तों की अमरवाणी को जन-जन के मृदुल विमल सरस हृदय में आपूरित करने वाले महर्षि दयानन्द प्रतिपादित विविध संस्कारों, सन्ध्योपासना, यज्ञादि क्रिया-कलाप द्वारा दिग्दिगन्त को सुरभित एवं पावन करने वाले तथा आर्यसमाज के सार्वभौम आदर्शों को मूर्तरूप प्रदान करने वाले आपके कलकंठ की सुमधुर ध्वनि सर्वदा किसके मन को आनन्द विभोर न करती रहेगी। निरन्तर ५३ वर्षों तक पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित होकर अपने भगीरथ प्रयास द्वारा जो आपने आर्यसमाज की निष्काम भाव से अनथक सेवा की है, शत सहस्र संस्कारों एवं यज्ञों द्वारा मानव जाति का जो उपकार किया है, उसे भला कैसे विस्मृत किया जा सकता है।

आप जैसे निष्ठावान, कर्मण्य, तपोनिष्ठ विद्वान् पुरोहित आर्यजगत् में मिलने दुर्लभ हैं। आशा है कि आप इस सर्वोच्च आदर्श परम्परा को अपने समूचे जीवन में बनाए रखेंगे। प्रभु आपको शतायु एवं इससे भी अधिक आयु तक सुखी सम्पन्न एवं कार्यशील बनाए रखें यही मेरी हार्दिक कामना एवं प्रार्थना है।

प्रगति करें निज जीवन पथ पर होंय सदा नीरोग।
पंडित चन्द्रभानु जी का नित प्राप्त होय सहयोग॥

—शुभाकांक्षी
देवव्रत : धर्मेन्द्र आर्योपदेशक
प्रधान, आर्ययुवक परिषद्
१६,५४, कूचा दखिनीराय, दरियागंज,
नई दिल्ली-११०००२

आकर्षक व्यक्तित्व

आर्य पुरोहित श्री चन्द्रभानु जी शतायु हों।

(वेद मनीषी पं० मनोहर जी विद्यालंकार)

श्री चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण का स्थान दिल्ली के पुरोहितों में विशिष्ट रहा है। उन्होंने अपना सारा जीवन दिल्ली के आर्य समाजों में रह कर. आर्य समाज के सदस्यों को विशेष दिशा प्रदान करने में व्यतीत किया है। सबसे पहले वे दिल्ली की पांच छः प्रमुख आर्य समाजों में विशिष्ट आर्य समाज नयाबांस में पुरोहित बने थे। उन दिनों इस आर्य समाज की विशेष ख्याति थी। पं० इन्द्र वाचस्पति और श्री रामगोपाल विद्यालंकार इसी समाज के सदस्य थे। प० रामचन्द्र देहलवी का इस समाज से विशेष प्रेम था। इस समाज के संरक्षण में प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ करते थे। इस समाज में गृहस्थ पुरोहित को रखने की समुचित व्यवस्था न होने के कारण. वे इस समाज को छोड़ कर, दोनों समाजों की सहमति से आर्य समाज हनुमान रोड़ में चले गये। और फिर सेवा निवृत्त होने तक वहीं रहे।

उनका आर्य जगत् में सर्वत्र खूब आदर हुआ, क्योंकि वे आदर्श पुरोहित थे। वेद वेदाङ्गों के ज्ञाता, सदाचारी सत्यवादी, अपने यजमानों के हितैषी तथा सबको सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करने वाले सौम्य स्वभाव, मधुरभाषी तथा आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे, और अब भी वैसे के वैसे हैं। उनको आदर्श पुरोहित मानता हुआ मैं वेद के शब्दों में उनके लिये कामना करता हूं कि—

कृण्वन्तु विश्वेदेवा आयुष्टे शरदः शतम्। अथर्व २-१३-४

एक दूसरे मंत्र में अहम् के स्थान में 'त्वम्' करके मेरी परमेश्वर से प्रार्थना है कि—

प्रजापते रावृतो ब्रह्मणावर्मणात्वम्, कश्यपस्य ज्योतिषावर्चसाम्।
जरदष्टिः कृतवीर्यो विहायाः सहस्रायुः सुकृतश्चरेः। अथर्व २७ १ २७

आजकल पुरोहित शब्द, वेदवेदांग के ज्ञाता और जप तथा यज्ञ करने वाले और आशीर्वादात्मक वचन बोलने वाले ब्राह्मण के लिये

रूढ़ हो गया। आचार्य चाणक्य ने भी पुरोहित का यही लक्षण किया है—

वेदवेदाङ्ग तत्वज्ञो जप होम परायणः।
आशीर्वाद वचोयुक्त एष राज पुरोहितः॥ चाणक्य

पुरोहित के लिये आवश्यक है कि वह सत्यवादी, साफ सुथरा, सदाचारी, ईश्वर विश्वासी, सरल तथा अपने यजमानों पर आई हुई आपत्तियों का प्रतिकार करने में समर्थ हो। क्योंकि उसे युवतियों और कन्याओं में जाना होता है, उनसे सम्पर्क बना कर उनके लिये योग्य वरों का चयन करना होता है। उसका बड़े-बड़े अधिकारियों से सम्पर्क होता है; सत्यवादी सदाचारी होने से सब उस पर विश्वास करते हैं। इसलिये अपने यजमानों पर आई व्यर्थ की झूठी विपत्तियों, बनावटी आरोपों, विद्वेषवश किये गये अपयश को अपने सत्याचरण और सत्यवादिता के प्रभाव से दूर करने में समर्थ होता है। कवि-कल्पता में पुरोहित को ऐसा ही चित्रित किया है—

पुरोहितो हितो वेदस्मृतिज्ञः सत्यवाक् शुचिः।
ब्रह्मण्यो विमलाचारः प्रतिकर्तापदामृजुः॥

पुरोहित जैसे पद पर आसीन व्यक्ति को सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होना चाहिये, क्योंकि उत्सवों संस्कारों में उसकी भूमिका प्रधान होती है। उसका प्रमुख स्थान होता है। सब की दृष्टि उस पर पड़ती है। यदि उसकी वाणी और रूप में आकर्षण न हो तो उपस्थित जन समुदाय पर उचित प्रभाव नहीं पड़ता। इस बात का राजगृह में विशेष महत्व है, क्योंकि वहां तो विशिष्ट व्यक्ति ही निमन्त्रित होते हैं। इसलिये कलिका पुराण में निम्न विधान किया गया है—

काणं व्यङ्गम पुत्रं वानभिसमजितेन्द्रियम्।
न ह्रस्वं व्याधितं वापिनृपः कुर्यात्पुरोहितम्॥

५२२, ईश्वर भवन
खारी बावली
दिल्ली-६

"मार्ग दर्शक पुरोहित"

(साहित्य महारथी श्री क्षेमचन्द्र जी सुमन)

प्रिय भाई वेद जी,

आप के पत्र से यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश अपने संरक्षक और वैदिक कर्म-काण्ड के वयोवृद्ध विद्वान् पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण का उन के ७५वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर अभिनन्दन करने का आयोजन कर रही है।

मेरा उन से प्रथम परिचय सन् १९४५ ई० में उन दिनों हुआ था जब मैं दिल्ली में आया था। तब सहसा उनका वरद हस्त मेरे लिए एक अभूत पूर्व वरदान था। जब तक मैं अपने दिल्ली निवास के दिनों में गोल मार्किट के आस-पास रहा तब तक प्रायः पंडित जी का सत्संग लाभ मुझे सुलभ होता रहा। उसके बाद मैं जब सन् १९४७ ई० में पहाड़ी धीरज पर जाकर रहने लगा तब से उनके दर्शनों का लाभ मुझे मिलना बन्द हो गया।

जब मैंने सन १९५४ ई० में शाहदरा में आवास बना लिया और "दूरभाष" को सुविधा सुलभ कर ली तब यदा-कदा फोन पर ही संभाषण करने का सुयोग मिलता रहा। सन् १९७९ ई० में जब मैंने "दिवंगत हिन्दी सेवी" नामक विशाल परिचय-कोष के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया तब मैं आर्य विद्वान् लेखकों के परिचय प्राप्त करने के प्रसंग में उन से अवश्य मिला था उन्होंने जहां कुछ उपयोगी सामग्री मुझे प्रदान की वहां कई अनूठे सुझाव भी सुझाए थे। अब भी यदा-कदा फोन पर ही उन्हें मैं कष्ट देता रहता हूं।

पं० चन्द्रभानु जी के अभिनन्दन का यह शुभ अनुष्ठान कर के आप ने अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। इस पावन अवसर पर मेरी यह हार्दिक आकांक्षा है कि वे शतायु होकर स्वस्थ जीवन यापन करें, जिससे उन के मार्ग-दर्शन में मेरे जैसे अनेक जिज्ञासु समय-समय पर उन की विद्वत्ता से मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सकें।

सस्नेह आपका
क्षेमचन्द्र सुमन
२९ मार्च १९८४ ई०

अजयनिवास
दिलशाद कालोनी
शहादरा दिल्ली-११००३२

साहिष्णुता एवं माधुर्य की प्रतिमा

(श्री पं० श्याम सुन्दर जी स्नातक आर्य महोपदेशक)

ऐसा विदित हुआ है कि श्री पं० चन्द्रभानु जी की सामाजिक सेवाओं को सम्मानित करने के लिए उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जा रहा है। यह कार्य अत्यन्त स्तुत्य—एवं सामयिक है। पंडित जी ने नई दिल्ली के क्षेत्र में हनुमान रोड़ आर्य समाज को केन्द्र बनाकर कार्य किया है। उनके कार्य की सुगन्ध सारी दिल्ली में व्याप्त थी। उनके प्रशंसक दिल्ली के बाहर भी सदा रहे हैं, मुझे भी यदा कदा उत्सवों पर विशेषतः हनुमान रोड़ के उत्सवों पर प्रातः कालीन यज्ञ के अवसर श्री पण्डित जी के साथ कार्य करने का मौका मिला है। उनकी सहिष्णुता, माधुर्य नीतिज्ञता, एवं लक्ष्य प्राप्ति में कष्टों को सहन करने की शक्ति सदा ही मुझे प्रभावित करती रही है।

ऐसे समय ईश्वर से प्रार्थना है कि वे शतायु हों। स्वस्थ रहें। पुरोहितों की भावी पीढ़ी उनके जीवन से बहुत कुछ सीख सकती है। मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सकती है। मेरे विचार में तो यदि वे अपना कुछ समय किसी अच्छे उपदेशक विद्यालय में दे सकें तो अत्यन्त लाभदायक होगा।

बी-२०१
ग्रेटर कैलाश-१
नई दिल्ली-४८

॥ ओ३म् ॥

विद्वद्वर मान्यवर धर्माचार्य्य पं० चन्द्रभानु जी
सिद्धान्त भूषण की विदाई समारोह के अवसर पर
प्रस्तुत हृदयोद्गार

हे विद्वद्वर ! हे धर्मवीर !
हे क्रियाशील ! हे कर्मवीर !
हे स्नेहिल हृदय, हे चन्द्रभानु !
हे तेजपुंज कान्तिमय किशानु !!
हे वैदिक धर्म से तुम्हें प्रीत।
हे चन्द्रभानु, तुम अति पुनीत ॥१॥

तुम सरस, सरल हो, ज्ञानी हो।
तुम सत्यनिष्ठ, स्वाभिमानी हो ॥
तुम कर्म काण्ड में कुशल व्यक्ति।
है धर्म कर्म में तवानुरक्ति ॥
तुम सबके प्रिय, तुम सबके मीत।
हे चन्द्रभानु तुम अति पुनीत ॥२॥

हे ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, हे ज्ञानवान्।
हे सौम्यवान्, हे भाग्यवान् ॥
तुम पुरोहित वर्ग के नेता हो।
इक अद्भुत आर्य, विजेता हो ॥
तुम विमल बन्धुवर ! नर बिनीत।
हे चन्द्रभानु तुम अति पुनीत ॥३॥

तुम सचमुच धर्माचार्य धीर।
तुम वैदिकधर्मी आर्यवीर।।
हम सबके हो तुम वन्दनीय।
तुम्हारा जीवन है अनुकरणीय।।
कहाँ तक गायें तेरे गीत।
हे चन्द्रभानु तुम अति पुनीत।।४।।

पौरोहित्य कार्य किया तुमने।
दिया ही दिया, क्या लिया तुमने।।
हनुमान रोड की यह समाज।
दे रही विदाई तुम्हें आज।।
इस विदाहार में तेरी जोत।
हे चन्द्रभानु तुम अति पुनीत।।५।।

सौहार्द भावना सुमनों से।
हम तेरा अर्चन करते हैं।।
दीर्घायु, सुख, ऐश्वर्य हेतु।
हम सब अभिनन्दन करते हैं।।
तव भविष्य सुखद हो ज्यों अतीत।
हे चन्द्रभानु तुम अति पुनीत।।६।।

प्रस्तुतकर्त्ता :
विद्याभास्कर शास्त्री सि. भू.
धर्माचार्य
आर्यसमाज करौल बाग,
नई दिल्ली

दिनांक : १० जनवरी
स्थान : आर्यसमाज
हनुमान रोड,
नई दिल्ली-१५

॥ ओ३म् ॥

समय के पाबन्द पण्डित जी

(श्रीमती सुशीला जी भूतपूर्व प्रधाना प्रान्तीय आर्य महिला सभा)

श्री पं० वेदकुमार जो वेदालंकार,

सादर नमस्ते।

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि आर्य पुरोहित सभा, पुरोहित शिरोमणी पं० चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन कर रही है।

पं० जी के प्रथम बार दर्शन सन् १९४२ में आर्य समाज हनुमान रोड़ में हुए। पं० जी संस्कृत के श्लोकों द्वारा दृष्टान्त देकर विषय को मधुरता भरी वाणी से समझा रहे थे उपदेश बहुत अच्छा लगा।

उसके कुछ दिनों बाद घर में बच्चे का नामकरण-संस्कार होना था। पं० जी को आमन्त्रित किया। पं० जी ने नामकरण संस्कार का अर्थ समझाते हुए बहुत उत्तम ढंग से मन्त्रों की व्याख्या की। सबको उनके विचार बहुत पसन्द आये।

फिर परिवार में एक विवाह होना था, तब भी पंडित जी को ही बुलाने के लिए कहा गया। पं० जी ने विवाह के पवित्र भाव समझाते हुए विवाह संस्कार सम्पन्न कराया। जब विवाह हो रहा होता है तो नवयुवक और नवयुतियां बहुत हँसी मजाक करती हैं। यहां तक कि पुरोहित जी के साथ भी थोड़ा-बहुत मजाक करने से नहीं चूकती। तब पं० जी हँसते-हँसते उन सभी का समाधान भी करते हैं और गृहस्थ जीवन को सुखद बनाने में पति-पत्नि के क्या कर्त्तव्य हैं यह भी भली-भाँति समझाते हैं।

पं० जी तो हमारे परिवार के अपने ही निजी पुरोहित हैं परिवार में जितने विवाह आदि संस्कार हुए हैं तथा जो शुभ कार्य हुए हैं सब पं० जी ने ही सम्पन्न कराये हैं।

देहली की लगभग सभी कालौनियों में मुण्डन संस्कार व विवाह आदि अवसरों पर बहुधा पं० जी के दर्शन होते रहते हैं।

पं० जी अपने समय के बहुत पाबन्द हैं सदा निश्चित समय पर पधारते हैं। और अपने प्रवचन को भी समय के अन्दर ही समाप्त करते हैं। यह उनकी विशेषता है जो उपदेश देने वाले भाई बहिनों के लिए अनुकरणीय है।

विनम्रता, सादा जीवन, वाणी में मधुरता सौम्यता, अपने कार्य में दक्षता पं० जी के ये गुण ही उनके जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति के द्योतक हैं।

यह कहना अत्युक्ति न होगी कि देहली नगर के पुरोहित वर्ग में पं० जी की ही प्रमुखता है।

हम पण्डित जी के दीर्घ जीवन की कामना करते हैं। प्रभु कृपा से वे चिरकाल तक स्वस्थ रह कर वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करते रहें।
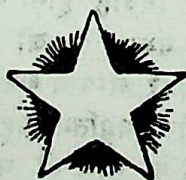
लोक प्रिय पुरोहित

१५ फरवरी, १९८४

सेवामें

मंत्री जी

आर्य पुरोहित सभा (रजिस्र्डट)
नई दिल्ली, दिल्ली प्रदेश

प्रणाम !

पूज्य पं० चन्द्रभानु जी के ७५वें जन्म दिवस के अवसर पर जो समारोह आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश की ओर से आप करने जा रहे हैं उस पर मैं सभा को बधाई देता हूं। यह समारोह वास्तव में उन सारे आर्य परिवारों की ओर से ही है जिनके आप पुरोहित हैं।

पं० जी बहुत ही लोकप्रय पुरोहित रहे हैं। वह सहस्रों परिवारों के दिलों में बसे हुए हैं। जिस परिवार में वह संस्कार आदि कराने जाते हैं उस परिवार से उन का सम्बन्ध हमेशा को हो जाता रहा है। उन के संस्कार कराने की संख्या तो एक रिकार्ड ही होगी। उनके सन्मान में आप का समारोह बहुत ही प्रशन्सनीय है।

उनकी सहनशीलता से, उनके शुद्ध उच्चारण से, उन की गम्भीर आवाज से, सब बहुत प्रभावित होते रहे हैं। क्योंकि मेरा सम्पर्क पं० जी से कोई ४० साल से अधिक का है जिस बीच मैंने बीसियों विवाह आदि उनसे कराय गए देखे हैं और मैं उनके निजी सम्बन्ध में भी निकट आता गया हूं। मैं उनके गुप्त गुणों से भी प्रभावित हुआ हूं। मेरे यह व्यक्तिगत विचार, छोटा मुंह बड़ी बात ही सही, उन के प्रति जो आदर सन्मान आर्य जगत् में है उस को

दर्षाते हैं। उन का मधुर बोल, क्रोध में कभी आना हो नहीं उन में मिलता है। समय को पाबन्दो का क्या कहना—मैंने उन्हें बुखार होते हुए भो संस्कार कराते देखा है इस प्रकार वह अपनी जिम्मेदारी निभाते हैं।

विवाह आदि समय अड़चनें आने पर वह गुत्थी सुलझाने में बहुत हो सफल मैंने उन्हें देखा है।

यह सब प्रशन्सनोय गुणों के कारण वह एक उदाहरण हैं। सबके लिए और पुरोहितों के लिए भो क्योंकि पुरोहित ही हमारे आदर्श होते हैं।

अन्त में मैं पं० जो को शुभकामनाएं भेजता हूं यह शुभ दिन हर वर्ष और बहुत-बहुत वर्षों तक उनको आये ऐसो मेरो ईश्वर से प्रार्थना है।

भवदीय

B. D. Nangpal

Retired, Asstt Chief Administrative Officer

Ministry of Defence

पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण—जवानी के झरोखे से

(रूप किशोर शास्त्री)

१७ सितम्बर १९३२ को पं० चन्द्रभानु एक आदेश द्वारा निजाम राज्य हैदराबाद से निकाल दिये गये। कुछ दिन बाद आर्यसमाजियों के एक शिष्ट मण्डल ने 'नीति मंत्री' 'नवाब मेहदी यारजंग' से भेंट करके स्पष्ट किया कि पंडित जी समाज के एक सौम्य एवं मिलनसार प्रचारक हैं। उनके विरुद्ध कोई ऐसी शिकायत नहीं है कि उन्हें राज्य से बाहर कर दिया जाय। मंत्री ने उत्तर दिया कि पण्डित साहब को आर्यसमाज के नाते नहीं अपितु भारत सरकार के आदेश पर राज्य से बाहर निकाल दिया गया है, क्योंकि वे कुछ राजनैतिक संस्थाओं एवं व्यक्तियों से सम्बन्ध रखते हैं। आर्य समाज ने भारत सरकार के पोलिटिकल सेक्रेट्री को इस बारे में पत्र लिखा, जिस पर रेजीडेन्ट हैदराबाद के करपत्र निशान १४३९ नवम्बर १९३२ का पत्र प्राप्त होने पर यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह निर्णय स्वयं निजाम सरकार की अपनी इच्छा से हुआ है। रेजीडेन्सी ने इस सम्बन्ध में न कोई रिपोर्ट की और न कोई राय भेजी थी। स्थिति के स्पष्ट होने के पश्चात् निजाम सरकार से पण्डित जी के मामले में न्याय के लिए आग्रह किया जाता रहा किन्तु इस दिशा में कोई ध्यान नहीं दिया गया।※

उक्त घटना हैदराबाद में निजाम सरकार के जुल्मों, अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध छेड़े गये आर्यों के आन्दोलन से कुछ वर्ष पूर्व की है उस समय पण्डित जी अपने अध्ययन को बीच में ही छोड़कर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार की भरपूर उमङ्गों के साथ अनेक कठिनाइयों को पार करते हुए हैदराबाद (दक्षिण भारत) पहुँचे, जहाँ पर पण्डित जी के आकर्षक व्यक्तित्व, सौम्य आकृति हंस-मुख एवं शिष्ट मजाकिया स्वभाव का जनता पर

※ हैदराबाद के आर्यों की साधना एवं संघर्ष—पं० नरेन्द्र पृष्ठ ८५-८६

अङ्कित हो जाना उनके परिचय का प्रथम चरण था, वहीं विद्वता कर्मकाण्ड प्रवीणता, ओजस्वी मधुर वाणी और संयत जीवन उनके परिचय का द्वितीय चरण था।

हैदराबाद के प्रसिद्ध नेता श्री पं० विनायकराव जी को हिन्दू समाज के सुधार की गहरी रूचि थी, इसी उद्देश्य से आपने वहाँ की राज्यविधान परिषद् में हिन्दू विधवाओं का पुनर्विवाह के सम्बन्ध में एक विधेयक प्रस्तुत किया कि यदि कोई हिन्दू विधवा पुनर्विवाह करले और उसे सन्तान हो तो वह वैधानिक समझी जायेगी और कानूनी तौर पर उसे पूरे अधिकार होंगे। यद्यपि उस समय समाज सुधार के आन्दोलन की सभी वर्गों की ओर से मानवता के नाते प्रशंसा एवं समर्थन होना चाहिए था परन्तु पुराने एवं दकियानूसी संकीर्ण विचारधारा के लोगों में एक बेचैनी पैदा हो गई तदनूरूप विरोध करने लगे। इस आन्दोलन के विरुद्ध कुछ कट्टर हिन्दू नेताओं ने आम सभा की और पुनर्विवाह के पक्ष में प्रमाण पुष्टि हेतु आर्य समाज के विद्वानों को चेलेन्ज दिया उस भीषण एवं विषम परिस्थिति में उनके चेलेन्ज को स्वीकार करने वाले आर्यसमाज की ओर से पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण एवं पं० मंगल देव शास्त्री थे। इन्होंने बड़ी दृढ़ता से, निर्भीकता से शास्त्रों क अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये पौराणिकों ने उत्तर देने के स्थान पर उक्त पण्डितों का अपमान अपनी सीमा को इतना छू चुका था कि भारी गड़बड़ एवं मारपीट की स्थिति उत्पन्न हो गई।

जहाँ पर पण्डित जी शास्त्रज्ञ हैं वहीं निर्भीक भी हैं जो कि एक विशिष्ट गुण है। समाज सुधार के लिए अपना सम्मान भी यदि आहुत करना पड़े तो पण्डित जी का हर समय एवं हर परिस्थिति में तैयार रहना उनके जीवन का अङ्ग बना हुआ है।

आर्य समाज, १५ हनुमान् रोड
नई दिल्ली-११०००१

हंस-मुख विनोदी पुरोहित जी

(स्व० श्री ज्ञानप्रकाश जी एम० ए० भूतपूर्व प्रधान आ० स० मौडल बस्ती)

महामान्य पण्डित चंद्रभानु जी सिद्धांत भूषण (पुरोहित आर्यसमाज हनुमान रोड़) का संस्मरण लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पंडित जी हंस-मुख, विनम्र और विनोद प्रिय व्यक्ति हैं। मेरा इन से परिचय अनेक वर्ष बीते हुआ था। इनके द्वारा मेरे सभी पुत्र, पुत्रियों एवं अनेक संबंधियों के विवाह संस्कार सम्पन्न हुए हैं। जो भी व्यक्ति उनके द्वारा कराये गये विवाह संस्कार में उपस्थित होता है वह अत्यन्त प्रभावित होता है और विवाह संस्कार के महत्व को भली भांति समझ जाता है। आपके द्वारा दिये गये प्रवचन व भाषण वैदिक धर्म की महानता को प्रगट करते हैं। इनके जीवन का संक्षिप्त परिचय निम्न लिखित है।

इनका जन्म मवाना कलां जिला मेरठ में पं० मुरारीलाल जी के घर में हुआ। पं० मुरारी लाल जी को स्वामी दयानंद जी के सम्पर्क में आने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा मेरठ में प्राप्त की और पानीपत के एक हाई स्कूल से १९२५ में मैट्रिक पास किया। आप सारे जिले में प्रथम रहे।

तदनन्तर आप गुरुदत्त भवन लाहौर के दयानन्द उपदेशक विद्यालय से सिद्धांत भूषण की उपाधि से विभूषित हुए। यह उपाधि M. A. के समकक्ष होती है। फिर आप कार्य क्षत्र में कूद पड़े और १९३१-३२ में हैदराबाद जाकर वैदिक Missionary के रूप में काम किया, परन्तु निजाम के कोप भाजन बन कर वहां से निष्कासित होकर दिल्ली आ गये फिर सन् १९३३-३४ में आर्यसमाज नया

बांस में पुरोहित के पद को सुशोभित किया। उन दिनों आप दिल्ली क्लाथ मिल्ज के निकट रहते थे।

१९३५ से आज तक आप आर्य समाज हनुमान रोड में पुरोहित का कार्य कर रहे हैं। आप दो बार इंगलैंड भी जा चुके हैं। अभी आपने इग्लैंड में आर्य महासम्मेलन (२३-२५ अगस्त १९८०) में भाग लिया और वहां से लौटे हैं और पुनः अपना कार्य भार संभाल लिया है। आपके साथ अब दो सहायक पुरोहित भी कार्य कर रहे हैं। धन्याः नराः विहित कर्म परोपकारा। आप धन्य हैं। परमात्मा करे आप दीर्घायु हों।

४९, मौडल बस्ती नई दिल्ली-६

ओ३म्
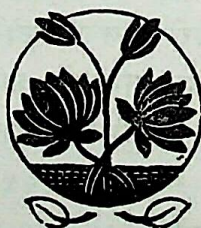
सनातन धर्मी पण्डितों पर अपना प्रभाव डालने वाले

"ब्रह्मणा मानधनाः भवति"

पं० चंद्रभानु जी के सम्पर्क में पहले-पहल में सन १९५०-५१ में आया जब मुझे आर्यसमाज मंदिर, हनुमान रोड, नई दिल्ली के समीप बाबा खड़क सिंह मार्ग पर सरकारी क्वाटर (नं० ४२ सी) रहने को मिला। रविवारों के साप्ताहिक सत्संगों में आर्यसमाज मंदिर में आपके द्वारा वेद मन्त्रों के पाठ और उनकी व्याख्या की शैली से मैं सत्संग को ओर खिचता चला गया। जो कुछ वहां सुनता उसे घर आकर उन्हीं के ढंग से अपनो धर्मपत्नी तथा बच्चों को समझाने का प्रयास करता। फलस्वरूप शनैः शनैः मेरे परिवार के सभी व्यक्तियों में सत्संग से प्रेम और धर्मभावना का संचार हो गया। किसी अकथनीय कारणवश मैं आर्यसमाज का सक्रिय सेवक नहीं बन सका फिर भी सत्संग के माध्यम से हम पर आपकी दया दृष्टि बनी रहती थी। आपकी विद्वता, सौम्यता तथा उदारता में मैं एक "आदर्श पुरोहित" की झलक देखता हूं। विवाह संस्कार सम्पन्न करने में आपकी निपुणता एवं चातुर्य अद्वितीय है। दूसरे पक्ष के सनातन धर्मी पुरोहितों को भी आप अपनी सौम्यता, शांति स्वभाव और बुद्धि कौशल से अपने अनुकूल बनाकर "रंग में भंग" नहीं पड़ने देते। समय और परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण "धम" की रूप-रेखा में जो परिवर्तन अब अनिवार्य समझा जाने लगा है, वह आपके स्वभाव में मानो जन्मजात ही है। आप जैसे कोमल चित्त कर्मकाण्ड में निपुण तथा हितैषी पुरोहित के कृपापात्र यजमान धन्य हैं। मेरी परमपिता परमात्मा से हार्दिक प्रार्थना है कि वह हमारे उपर हमारे परम उपकारी पुरोहित जी की छत्रछाया चिरकाल तक बनाये रखें और तेज प्रताप सदा वर्धमान रहे।

कंवरलाल

रिटायर्ड अवर सचिव, भारत सरकार

एस-३४, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-१६

सर्वप्रिय सौम्य विद्यार्थी

(श्री पं० अवनीन्द्र कुमार जी विद्यालङ्कार भूतपूर्व स० सम्पादक हिन्दुस्तान)

स्वस्त्यस्तु कुशलमस्तु चिरायुरस्तु ।
धनधान्यमस्तु श्री सम्पन्नमस्तु ।।

पुरोहित शिरोमणि श्री चन्द्रभानु शतायु हों ।

अभिवर्धतां पयसाभि राष्ट्रेण वर्धताम् ।
रय्या सहस्रवर्चसेमौ स्तामनु पक्षितौ ।।

(अ० ६।७८।२।।)

श्री चन्द्रभानु जी मेरे दूसरे नम्बर के उर्दू शिक्षक हैं । अप्रैल १६२८ ई० में लाहौर पहुंचने के दूसरे दिन स्वर्गीय श्री भीमसेन जी विद्यालङ्कार ने जिस व्यक्ति से सर्वप्रथम परिचय कराया वे थे श्री चन्द्रभानु । आप उस समय दयानन्द उपदेशक विद्यालय के सर्वप्रिय सौम्यविद्यार्थी थे । विचित्र बात यह है कि हम दोनों समवयस्क हैं । यह सत्र मुझे प्रेरणा करता है परम प्रभु से प्रार्थना करूं –शुभम् भूयात् ।। ऋषियों की यह वाणी सत्य हो, शतं जीव ।।

जीवेम् शरदः शतम् । भूयसीः शरदः शतात् ।।

उर्दू की शिक्षा

लेकिन मैत्री एवं सम्बन्ध आगे ही आगे बढ़ता रहा । लाहौर आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव गुरुदत्त भवन के मैदान में होता था । उसके प्रबन्धकों में एक श्री सन्तलाल जी थे, जो डिप्टी लीडर के के नाम से प्रसिद्ध थे ये सज्जन मुझ पर कृपालु थे । वो अपने साथ सदा मुझे रखते थे । उत्सव की रिपोर्ट तो "आर्य" में छपनी चाहिये । यह आवश्यक कार्य श्री चन्द्रभानु जी की सहायता के बिना पूरा होना सम्भव न था । चन्द्रभानु जी उर्दू दैनिक प्रताप पढ़ते और मैं लेखन का कार्य करता । इसी प्रकार गुरुकुल कांगड़ी की रजत-जयन्ती थी उसकी कार्यवाही की रिपोर्ट के लिये भी "आर्य" और उसका सम्पादक श्री चन्द्रभानु जी का सदा आभारी रहा ।

अब वो पुरोहितों के नेता हैं तब इतना ही निवेदन है वह विखण्डित भारत राष्ट्र को संयुक्त करने के प्रयास में अगुआ बनें।

मा व स्तेनईशत् । माकिर्नो अघ शंस ईशत् ।

विश्वविजयी आर्य जाति के संस्मरणीय सन्देश को पूरा करने में सफल नेतृत्व करें।

हनुमान रोड़ आर्यसमाज के पुरोहित रहते हुए इस जन को आगे बढ़ाने का सदा प्रयत्न करते रहें। इस बात को यह जन नहीं भूलेगा। वह यशस्वी हैं। और आर्यसमाज को भारत विभाजक कांग्रेस एवं एंग्लोमुस्लिम एवं ब्राह्मणवाद की दासता से मुक्त रखने में सफल हों। ऋषि को फिलम न बनने दें। यह व्यक्ति पूजा, मूर्त्ति पूजा है।

मेरी भूरि-भूरि स्नेहाञ्जलियां अर्पित हों।

इतिहास सदन
ए-२३९ पन्डारा रोड
नई दिल्ली-३
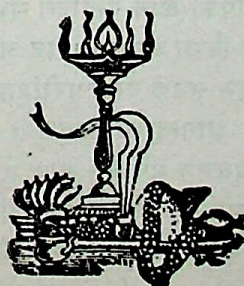
संक्षिप्त संस्मरण

वेद सागर में गहरी डुबकी लगाने वाले

पं० चन्द्रभानु जी 'सिद्धान्त भूषण' पुरोहित

कनाट प्लेस नई दिल्ली में स्व० श्री दीनदयाल जी सोनी ऑर्गनाईजर बीमा कम्पनी का मैं प्राईवेट सेक्रेटरी था। उन्हीं के घर रहता था। तब मैं २५ वर्ष का नवयुवक था। पं० चन्द्रभानु जी उस समय आर्य समाज १५ हनुमान् रोड के पुरोहित थे। मैं बहुधा उनसे मिलने चला जाया करता था। इस समय पं० चन्द्रभानु जी ७६ वें वर्ष में पदार्पण कर चुके हैं। आप जहाँ वैदिक वाङ्मय के पूर्ण ज्ञाता हैं वहां शील सौम्य एवं विनोदी स्वभाव के भी हैं। आप का शास्त्रों में गहन अध्ययन है। गूढ़ मंत्रों की भाव-भंगिमा को अति सरल शैली में प्रवचन द्वारा हृदय में बैठा देते हैं। यही प्रमुख इनकी विशेषता है कि निरन्तर एक ही आर्य समाज हनुमान् रोड में ४५।। वर्षों तक आप पौरोहित्य पद पर आसीन रहे।

आप का स्वास्थ्य सुन्दर और अनुकरणीय है। सादगी और स्वच्छ खादी परिधान के जीते जागते ज्वलन्त उदाहरण हैं। शुद्ध-सात्विक आहार का सेवन करते हैं।

इसी चालू वर्ष में आपका आर्य पुरोहित सभा की ओर से अभिनन्दन ग्रन्थ द्वारा स्वागत किया जाएगा। यह अति हर्ष का सुअवसर होगा। वास्तव में आप हम सबके दादा पुरोहित हैं। आपका स्वागत करते हुए मुझे तो असीम आनन्द को अनुभूति हो रही है। मैंने तो अनेकों बार आपके वेद-प्रवचन सुने हैं। आप वेदरूपी समुद्र में गहरी डुबकी लगा कर अनेक अमूल्य रत्न प्रकाश में लाए हैं। आपका जीवन अनुकरणीय है। अनेक स्थानों पर मैं और पंडित जी ने वैदिक-यज्ञ व विवाह संस्कार आदि सम्पन्न कराए हैं। आपको अनेकों स्थल के स्थल ऋचाओं के कण्ठस्थ हैं। अति शुद्ध मन्त्रोच्चा-

रण एवं सुललित व्याख्या से आप श्रोताओं को आनन्द विभोर कर देते हैं।

यद्यपि मुझे वैदिक-धर्म का कार्य करते हुए ४० वसन्त बीत चुके हैं परन्तु जो व्यापक परिचय यजमानों का आप से है उसकी तुलना में मैं अपने को नगण्य पाता हूं। आपने सेवा निवृत्त होकर भी हनुमान् गेड आर्य समाज को दान आदि की सहायता दी है और देते रहते हैं। इसके अतिरिक्त आप अन्य संस्थाओं का भी यथावत् ध्यान रखते हैं। आप मितव्ययता का अपने जीवन में सदेव ध्यान रख के उदार चित्त से सब अतिथियों का हृदय से स्वागत करते हैं। मेरा आपसे ४० वर्षों का परिचय है अर्थात् बहुत ही आत्मीयता का मेरा आपसे सम्बन्ध है।

मैं ऐसे उदीयमान व्यक्ति की शतायु की कामना करता हूं। आप २५ बसन्त अपने आयु के पूर्ण नीरोग होकर दीर्घायु के साथ हमारे मध्य में ध्रुव तारे के समान स्थिर रहें। "जीवेम शरदः शतम्" को आप अपने जीवन में अवश्य ही चरितार्थ करेंगे।

गुरुकुल झज्जर से संस्कृत में "सिद्धान्तोपाध्याय" हूं वर्तमान पुरोहित—आय समाज वसन्त विहार नई दिल्ली-५० निवासी—फिरोजपुर झिरका जि० गुड़गांवा (हरियाणा) पं० बुद्ध देव जी विद्यालंकार का प्राईवेट सैक्रेटरी बहुत समय तक रहा था।

आपका अभिन्न मित्र—
पं० सत्यव्रत 'स्नातक' भू० पू०
महोपदेशक आ० प्र० नि० स० पंजाव
उपाचार्य श्री मद्दयानन्द उपदेशक
विद्यालय टकारा (सौराष्ट्र)

सुलझे हुए तथा संतुलित विचारों के धनी

(श्री पं० महेन्द्रनाथ जी झा)

पुरोहित शिरोमणि प० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण एक मधुर सौम्य एवं कर्त्तव्यपरायण व्यक्तित्व"

ईस्वी सन् १९५०-५१ से १९५६ तक जब मैं आर्य समाज हनुमान् रोड नई दिल्ली का सदस्य और फिर उपमंत्री भी रहा पूज्य पंडित जी से मिलना जुलना होता ही रहता था क्योंकि वे समाज के सुयोग्य पुरोहित थे और समाज मन्दिर में ऊपर ही रहते थे। देश विख्यात लाला हंसराज जी गुप्त उन दिनों प्रधान थे और मंत्री थे ख्यातिप्राप्त श्री रामनाथ जी भल्ला। पंडित जी अंतरङ्ग सभा को बैठक में भी पधारते थे। जैसा कि हुआ ही करता है, मीटिंगों में कभी-कभी किसी विषय को लेकर सदस्यों में गरमा-गर्मी भी हो जाया करती है। ऐसी परिस्थिति आने पर पंडित जी अपने सुलझे तथा समाधान कारक विचारों से सारे वातावरण को रचनात्मक पटरी पर ले आते थे।

समाज के सभी वर्ग उन्हें उनके ऐसे संतुलित तथा सामञ्जस्य बैठाने वाले व्यवहार के कारण बड़े आदर तथा स्नेह की दृष्टि से देखा करते थे। उनके स्वभाव का यह आकर्षण अब भी उनमें ज्यों का त्यों है।

गत अगस्त १९८० ई० में लन्दन में हुए आर्य महासम्मेलन में मैंने देखा कि पंडित जी ने वहाँ भी वेदपाठियों तथा व्याख्याताओं में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया था। वे सबके लिए श्रद्धाभाजन बन गए थे। वे बड़े मितभाषो तथा मधुर भाषी हैं। विचारों में बड़े उदार परन्तु सिद्धान्तपक्ष में सुस्थिर। पुरोहित के आसन की गरिमा को उन्होंने सदा ऊंचा उठाया है, वे हम पुरोहितों के लिए अनुकरणीय हैं। वे सुदीर्घ आयु को प्राप्त करें, परमेश्वर से यही प्रार्थना है।

आर्य समाज मन्दिर
वाई ब्लाक सरोजनी नगर
नई दिल्ली ११००२३

अभिनन्दन-सुमन

श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

१. श्री चन्द्रभानु जी के अभिनन्दन का, सुन्दर समाचार सुनपाया।
दिल का मुरझाया पुष्प खिला, कविता लिखने को मन हरषाया॥

२. पुलकित हैं सभी आर्य बन्धु, हर्षोल्लसित सबका मन है।
वयोवृद्ध-तपोनिष्ठ का आज कर रहे अभिनन्दन हैं॥

३. सब भाँति सुयोग्य सुशिक्षित हैं, वेद-विवेक-विमण्डित हैं।
ऋषि दयानन्द के अनुयायी, सद्ज्ञान गुणादिक पण्डित हैं॥

४. आर्यसमाज हनुमान रोड में, पूरे पैंतालोस वर्ष गुजारे।
वैदिक प्रचार शुभ संस्कार, कुप्रथा मिटा परिवार सुधारे॥

५. अनवरत कार्यरत लग्नशील, जन-जन के प्रिय कहलाये।
जिनके उपदेश सुधा-रस का कर पान सभी जन हैं हरषाये॥

६. ऋषिवर स्वामी दयानन्द के परम भक्त सच्चे अनुयाई।
जिन्हें आज हम सब मिलजुल कर दे रहे श्रद्धायुक्त बधाई॥

७. हे प्रिय! आप पर अनुकम्पा सच्चिदानन्द भगवान करें।
यह पावन घड़ी आज आई, सब आर्य बन्धु सम्मान करें॥

८. निरखो जीवन के शत बसन्त दिग् दिगन्त होवे यश उज्वल।
अभिलाषा 'स्वरूपानन्द' की है, यह मानव जीवन करो सफल॥

अधिष्ठाता वेद प्रचार
दिल्ली-आ० प्र० सभा
१५, हनुमान् रोड, नई दिल्ली-१

पण्डित चन्द्रभानु जी : निष्ठावान् मधुर व्यक्तित्व

(श्री प० नरेन्द्र जी विद्यावाचस्पति सम्पादक आर्य सन्देश)

वर्षों पहले की बात है। १ कैनिंग लेन, श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी का निवास स्थान। हरे भरे घास के मैदान पर शुभ्र वेष भूषा में सैकड़ों नर-नारी एकत्र हुए। सन्ध्या में ५ बजे प्रार्थना मन्त्र यज्ञ के बाद श्री प्रकाशवीर जी के भाई सत्यवीर जी के विवाह के उपलक्ष्य में स्वागत समारोह का कार्यक्रम था। यज्ञ समाप्त हुआ श्वेतधवल वस्त्रों में धीर गम्भीर वाणी में एक वयोवृद्ध आर्यसमाज के विद्वान् नव विवाहित युगल दम्पती पर आशीर्वचनों के साथ क्षत पुष्पों की वृष्टि करवाई सारा कार्यक्रम अत्यन्त शालीनता, भव्यता और सादगी के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के बाद अचानक भाई प्रकाशवीर जी ने पूछा—क्या आप पण्डित जी को जानते हैं ?" मेरे चुप रहने पर उन्होंने मुझे परिचित कराते हुए बतलाया—"आप हैं पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण—आर्यसमाज हनुमान रोड में पुरोहित। अत्यन्त निष्ठावान् एवं मधुर व्यक्तित्व के साधु पुरुष।"

+ + +

उसके बाद तो पण्डित जी से मिलने के अनेक अवसर आए। उन्हें अनेक कार्यक्रमों, संस्कारों सम्मेलनों एवं विशिष्ट पारिवारिक एवं सामाजिक आयोजनों में समीप और दूर से देखने का अवसर मिला। इस सबसे पण्डित चन्द्रभानु जी के व्यक्तित्व के दोनों गुणों उनकी निष्ठा तथा माधुर्य का ही निरन्तर प्रमाण मिला। अन्य संस्थाओं की तरह आर्यसमाज में भी थोड़ी बहुत दलबन्दी या राजनीति के दर्शन होते हैं, पण्डित जी को इन सभी धड़ों, समूहों और गुटों में सभी प्रमुख व्यक्तियों से अत्यन्त घनिष्ठ देख कर भी कभी उन्हें किसी भी दलबन्दी में फंसा नहीं देखा इसी के साथ सुख-दुःख, विराट समारोहों और एकान्तिक पारिवारिक सम्मेलनों में

भो उनसे मिलने का अवसर मिला कहीं कोई हबड़-धबड़ नहीं, किसी तरह का राग-द्वेष नहीं, कोई क्रोध-उतावलापन नहीं, सदा मुस्कान की वही दृष्टि। एक सरीखा निस्संग मधुर निष्ठावान् आर्य व्यक्तित्व।

\+ + +

आर्यसमाज का एक युग बीत गया। उसके साथ कुछ पुराने तपस्वो विद्वान् निष्ठावान् आर्य पुरुषों की पोढ़ी भी नहीं रह गई है। आज भी आर्यसमाज में कुछ सच्चे तपस्वो, विद्वान् स्वार्थहीन तपे हुए आर्य पुरुष-देवियां हैं, इन्हीं के कारण आर्यसमाज का नाम आज भी जीवित है। खेद का विषय है कि नई पोढ़ी में विद्वता है, लगन है, परन्तु त्याग, निष्ठा, माधुर्य और लगन में वैसे समवेत तत्व एक साथ नहीं दिखाई देते जसे कि पं० चन्द्रभानु जी में एक साथ दिखाई देते हैं। पंडित चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन-स्वागत करते हुए हम उन जसी निष्ठा, त्याग, लगन और माधुर्य भी पैदा कर सकें तो पण्डित जी के गुणों का सच्चा समादर हो सकेगा। जैसे एक दीए से दूसरा प्रज्ज्वलित होता है, आशा है कि पण्डित चन्द्रभानु जी के ओजस्वो व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण कर अनक आर्य युवक अपने जीवनों में निष्ठा, त्याग, माधुर्य और लगन की सच्चो ज्योति प्रज्ज्वलित कर सकेंगे।

अभ्युदय, बो-२२,
गुल मोहर पार्क
नई दिल्ली-११००४६।

श्री वटुक सिंह जी का पत्र

प्रिय पं० चन्द्रभानु जी,

नमस्ते ।

मैं यह पत्र आप को धन्यवादार्थ लिख रहा हूं । आपने वैदिक विधि से मेरे तोनों पुत्रों और दोनों पुत्रियों का अन्नप्राशन, तथा नामकरण संस्कार कराया और तीनों पुत्रों का उपनयन संस्कार भी । यदि मुझे ठीक याद है, तो आपने मेरे ज्येष्ठ पौत्र का भी उसी भांति अन्नप्राशन और नामकरण संस्कार हनुमान् रोड स्थित आर्यसमाज मन्दिर में करवाया । आपके आशीर्वाद से ये सभी स्वस्थ, सकुशल एवम् सुखी हैं ।

मैं [और मेरा सारा परिवार] आप का आभारी है । कृपा बनाये रखिये ।

सादर

वटुक सिंह

(भूतपूर्व सदस्य यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन)

३/१ सर्वप्रियविहार

नई दिल्ली-११००१६

मधुर-व्यवहार

(श्री महेन्द्रलाल थापर मुजफ्फर नगर भूतपूर्व वैल्फेयर आफिसर रोहाना शुगर मिल)

मैं आदरणीय पं० चन्द्रभानु जी से लगभग ५० वर्षों से परिचित हूं, मेरी बहन पुत्रवधू स्व० ला० नारायण दत्त जी ठेकेदार के विवाह के बाद में सभी विवाह उन्हीं द्वारा सम्पन्न हुए। सगे सम्बन्धियों तथा मित्रों के अन्य शुभ अवसरों पर पं० जी से भेंट होती रहती थी। उनके मधुर व्यवहार तथा अवसरों पर उनको प्रेम भरी वाणी से सभी प्रभावित होते थे। प्रभु उन्हें दीर्घ आयु प्रदान करें कि वह अधिक समाज सेवा कर सकें। मुझे यह थोड़े शब्द लिखते बड़ा हर्ष होता है कि उन्होंने कितने लम्बे समय तक समाज सेवा की और समाज में अपने पुरातन आदर्शों पर चलने के लिए युवक युवतियों को प्रेरित किया। पूवजों के बनाए मार्ग पर मर्यादानुकूल चलने का संदेश सदा याद रहता है नई पीढी के लिए यह एक मार्ग प्रदर्शन है जिससे हिन्दू (आर्य समाज) में यह जागृति सदा बनी रहे।

३२५ पटेल नगर
मुजफ्फर नगर (उ० प्र०)

अमर रहे तुम्हारा नाम

—(श्री बनवारी लाल "शादाँ" वैद्य)

श्री चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण, नमन तुम्हें है शतबार।
किया वेद उजियाला जग में, सुखी हुए सारे नरनार।।

आर्यसमाज हनुमान रोड, पुरोहित वन बहु काम किया।
नर-नारि और बाल वृद्ध को, तुमने वैदिक ज्ञान दिया।।

भाषा भेष अंग्रेजी भाया, भारत के हर जन-जन में।
हिन्दी भाषा भेष हो अपना, दिव्य भाव भरे उन में।।

भूल चुके थे वेद की वाणी, भूले ऋषिवर का सम्मान।
भूल चुके निराकार प्रभु को, पत्थर में मानें भगवान।।

नारियों को रक्षा धर्म बताकर, रक्षा करना उन्हें सिखाया।
पतिव्रत धर्म की शिक्षा देकर, पद्मा दुर्गा उन्हें बनाया।।

बने विधर्मी अपने भाई, शुद्धि करके उन्हें मिलाया।
छूत अछूत जाति पांति का, दे उपदेश भ्रम मिटाया।।

सभी मिलें मिल जुलकर बैठें, यही तुम्हारी मन आशा।
यही तुम्हारी शुभ्र भावना, हिन्दी जग की हो भाषा।।

रक्षा करने तुम देश धर्म की, आगे बढ़ते चले चले।
जो भी पथ में बाधा आई, उनसे भिड़ते चले चले।।

वेद ज्योति जला कर घर घर, अविद्या अन्धकार हटाया।
भर कर स्वदेश भक्ति भावना, भारत देश पुनः जगाया।।

परम पूज्य चन्द्रभानु जी को, "शादां" करता है प्रणाम।
जब तक सूर्य चन्द्र धरा पर, अमर रहे तुम्हारा नाम।।

प्रो० श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी,
१०८०२ मानिकपुरा नई दिल्ली ११०००५

विद्रोही व्यक्तित्व

(श्री विमलचन्द्र जी विमलेश उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

श्री पं० चन्द्रभानु जी आर्य समाज हनुमान रोड़ में ४५ वर्ष तक पुरोहित पद को सुशोभित करते रहे। संभवतः पूरे देश में यह अनूठा उदाहरण है। आपके पूज्य पिता चाहते थे कि बेटा इंजीनियर बने पर पंडित जी का विद्रोही व्यक्तित्व इससे सहमत नहीं हुआ। जीवन के प्रारम्भिक दिनों में आप निजाम हैदराबाद के राज्य में गये और सर्वथा विपरीत परिस्थितियों में आपने वैदिक धर्म का प्रचार किया। निजाम सरकार ने पंडित जी को राज्य छोड़ने का आदेश दिया। तब से आज तक आप दिल्ली में ही पौरोहित्य तथा प्रचार कार्य कर रहे हैं।

पूज्य पंडित जी कर्मकांडी विद्वान् हैं हजारों परिवारों में आपने संस्कार कराये हैं। आर्य जगत से बाहर भी पंडित जी को एक आदरणीय वैदिक विद्वान् के रूप में सम्मान प्राप्त है। ईरान, व इंग्लैंड, आदि दूसरे देशों में भी जाकर पंडित जी ने वैदिक धर्म का प्रचार किया है।

सरल, सहज, मितभाषी, और तर्कशील पंडित जी आर्यसमाज के गौरव हैं। मैं उनके दीर्घजीवन की प्रभु से कामना करता हूं।

FELICITATIONS

TO

Pandit Chandra Bhanu Purohit

Sarvpriya Vihar : I. I. T. Gate

Shiromani Vedic Missionary of Eminance

Some people are born great, others who acquire greatness and on a very few Greatness is thrusted. 'Pujniya' Pandit **Chandra Bhan** is an **Outstanding Arya Missionary Updeshak** who belongs to the last category. Today, he has carved a niche for himself as a pacesetter in Arya Samaj Movement in the country and abroad for functioning as zealous Arya Samaj, missionery.

Prominence of Panditji in Arya Samaj movement. In the Annals of Arya Samaj, after passing away of vanguards of Arya Samaj movement including Swami Shraddha Nand, Pt Lekh Ram, Pt Gurdatt Vidyarthi, Swami Darshana Nand, Second in line of hierarchy, are a score of dedicated Arya Samaj Missionarys who sprang up during the 20th Century, Amongst them in the second generation of Arya Samajist, Pt. Chandra Bhanu enjoys a unique position, as one the topmost Arya Missionery purohit in the Union Terriotry of Delhi. Pt. Chander Bhanu is an eminent scholar in Vedic literature, and at the same time fully equipped with modern needs of the changing pattern of Society here in India and Abroad. In the wake of 75 Birth-day of this rising star in Arya Samaj firmament, I join with innumerable admirers of Delhi and Nohern India to pay respectful felicitations to this towering Arya Missionary. Pandit Ji got his grooming in Vedic lore at Arya Updeshak Vidyalya, Gurudatt Bhavan, Lahore. Later on, he made his mark as far as back in 1932,

as vanguard of Arya Samaj Movement in Hyderabad State.

Here is an outstanding Arya Samajist, with whom I came in contact as far back as August 1942 when Pandit Ji used to be the Purohit of Arya Samaj, Hanuman Road, New Delhi in which privotal position he retired two years back after successful forty-five years innings. Compresing repeated Supres and fours for Arya Samaj Hanuman Road, Pandit Ji was instrumental not only in collection of Annual donations of thousands of rupes but much more so donations in form Sanskars of conple of thousand of Rupees annual. Even At the stage I was highly impressed with his magnetic personality who in his weekly sermons, had a very well defined concrete message for modern youths, as well as for elders. Pandit Ji believes in pragmatism in applying the fundamentals of Vedic Lore to modern needs. As a pragmatist he believes what is called for in propagation of the fundementals of Arya Samaj to Memorable Anecdotes the widest possible audience. In this context I recollect two anecdotes whice I cherish even to this day.

— Two decades lago when my eldest daughter Dr. Shashi Prabha was to be married according to the Vedic rites, there was a demand from Bridegroom's side to expedite the entire vedic rites marriage in about 30-40 minutes. It goes to the credit of Pandit Ji that he very success fully completed the entire vedic rites of marriage ceremony with elegance according to schedule.

— Later on as to Pandit Ji as Kul-Purohit, 18 years back when I took my third daughter Miss Sushma First Class-Second Position in M. Sc. Zoology (University of Delhi) to Arya Samaj, Hanuman Road, for attending early morning Satsang for blessing of Pandit Ji reaction of my modernised daughter, student of Miranda College, University of Delhi, after undergoing the ceremonials drill and quite dignified sermons of Pandit Ji was that she did not know that Arya Samaj code of philosophy and rituals were so impressive and applicable to every day life.

A number of such anecdotes could be multiplied. Even at this advance age of about 75 years exact date being Holi-day, which falls on 16th March 1984 this year, he continues to be fresh and kicking as a matured Arya leader.

Pandit Ji as a Kul-Purohit. Another distinguished feature of Pandit Ji is that he believes in service for the Arya Hindu Community all hours and his doors are always open while he was Purohit of Arya Samaj Hanuman Road, he was readily available for functioning as Purohit for Arya Samaj Sanskers in general ana Vedic rite marriages in particular. Even today, he continues to be in study Room right up to 11AM or beyond at night and still manages to be fresh as usual in the morning to discharge his duties.

Appeal : Since he will be more free after 16 March 84, when he will be entering another landmark in his career, it hoped that he will complete his commentary on Vedic Litera ture in general and of Sataesth Prkash in particular in prin-ted form posterity. I will go a step further that his serm ons should also be tape-recorded for the coming generation and as a media for propagation of Arya Samaj tealhing overseas.

LONG LIVE PANDIT JI-A TEST CAPTAIN IN ARYA SAMAJ UPDESHAK TEAM.

K. L. KHOLI
MA JOURNALIST
MANAGING EDITOR IBC
QTR. NO. 200, SEC. III
NEW DELHI-110022

तन्मयता और कर्तव्यपरायणता

(श्री सरदारी लाल जी वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली)

पुरोहित सभा माननीय पण्डित चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन करने जा रही है, यह जान कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। ऐसे कर्मनिष्ठ विद्वान् जिसने अपनी सारी आयु ही आर्य समाज के प्रचार में लगा दी हो उनका अभिनन्दन करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। अत: पुरोहित सभा बधाई की पात्र है।

मैं सन् १९३५ में मैट्रिक पास करने के पश्चात् दिल्ली आया था। मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री मुलकराज वर्मा आर्य समाज, हनुमान रोड के सदस्य थे और गोल मार्केट में सरकारी क्वार्टर में रहते थे। उनके साथ मैं भी आर्य समाज, हनुमान रोड के सत्संगों एवं अन्य कार्यक्रमों में आने लगा और आर्य समाज का सदस्य बन गया। उन्हीं दिनों पं० चन्द्रभानु जी इस आर्य समाज में पुरोहित पद पर आये थे। उस समय आर्य समाज के मन्त्री श्री रामशरणदास जी थे। पं० चन्द्रभानु जी उस समय अभी युवावस्था में ही थे तब ही से मैं पं० जी को जानता हूं, और मुझे आयंसमाज के कार्यों में अग्रसर करने का श्रेय भी पं० जी को ही है। जब मैं शिमला से कार्यालय दिल्ली आने पर सन् १९४३ शीतकाल में यहां आया तो पं० जी से कुछ अधिक सम्पर्क हुआ। १९४४ में जब आर्य समाज का निर्वाचन हुआ तो पं० जी के आदेश से मैंने समाज का उपमन्त्री बनना स्वीकार किया हालांकि मैं इसके लिये उद्यत नहीं था, क्योंकि मैं उस समय सिग्रेट पिया करता था और हिन्दी का भी मेरा अध्ययन न के बराबर था, परन्तु पं० जी के आदेश के आगे मैं ना नहीं कर सका उनका कहना था कि आप स्वयं ही सिग्रेट भी छोड़ दोगे और हिन्दी भी सीख लोगे। और हुआ भी ऐसा ही।

पं० जी ने सारी आयु जिस लगन, तन्मयता एवं कर्त्तव्य परायणता से आर्य समाज की सेवा की है, वह बहुत कम व्यक्ति कर

पाते हैं। पं० जी ने अपने आपको कभी कर्मचारी नहीं समझा, और जिस समय भी आर्य समाज के प्रचार का कोई अवसर आया स्वतः ही उसे प्रेम व श्रद्धा से निभाया। मैं आपके साथ समाज के प्रचार मन्त्री के रूप में साउथ दिल्ली के ग्रामों में प्रचारार्थ जाता रहा हूं। तुगलकाबाद, अनंगगपुर आदि ग्रामों में पं० जी इस आर्य समाज की ओर से खूब प्रचार कार्य करते रहे। और इन ग्रामों में आर्य समाज की स्थापना करके उनके वार्षिकोत्सव भी धूमधाम से मनाते रहे।

जहां तक संस्कारों का सम्बन्ध है नई दिल्ली में विशेषतया आपने बाप बेटे एवं पोते सभी के संस्कार करवाये हैं। अपने पौरोहित्यकाल में हजारों संस्कार करवाये और लाखों का दान आर्य समाज को लाकर दिया। आप अपनी युवावस्था में हैदराबाद में भी प्राचारार्थ गये थे। और इनके प्रचार पर निजामशाही ने रोक लगा दी थी। और इनका हैदराबाद में प्रवेश वर्जित कर दिया था परन्तु जिस निर्भीकता एवं आर्य समाज के प्रति निष्ठा का प्रमाण माननीय पं० जी ने दिया वह आज के हमारे युवक मण्डल में देखने को नहीं मिलता।

पं० जी ने संस्कारों के साथ भी कभी खिलवाड नहीं किया। सभी संस्कार आप पूर्ण वैदिक रीति से ही करवाते रहे हैं। आजकल प्राय: संस्कार भी अधूरे ही करवाये जाते हैं। इसी कारण आज भी नई दिल्ली के पुराने निवासी अपने संस्कारों पर पं० जी को ही आमन्त्रित करते हैं। यद्यपि पं० जी के लिये जाना कठिन होता है। पुरोहित वर्ग से मेरा विनम्र निवेदन एवं आग्रह है कि वह आर्य संस्कारों की पवित्रता को ध्यान में रखते हुए अपने महान् आचार्य महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट रीति से ही संस्कार सम्पन्न करवाने की परम्परा को बिगडने न दें, जिससे आर्य समाज के संस्कारों की विशेषता बनी रहे।

१५, हनुमान रोड
नई दिल्ली-११०००१

चन्द्रभानु नाम को सार्थक करने वाले

(श्री पं० यशपाल जी एम० ए० उपप्रधान आर्य पुरोहित सभा)

पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण एक ऐसा नाम जिसे आर्य जगत में एक आदर्श पुरोहित प्रमाण रूप में जाना जाता है। सम्भवतः पण्डित जी के माता पिता को उनके भावी जीवन का आभास था अस्तु उसी के अनुरूप उन्होंने उनका नामकरण किया जो सार्थक है। उनमें चन्द्र और भानु दोनों गुणों का दर्शन मैंने किया शान्त स्वभाव और मधुर भाषण "चन्द्र" शब्द को परावर्तित करता है विद्वता और ओजस्विता भानु के गुण प्रकट करते हैं। ऐसे व्यक्ति का, अभिनन्दन होना अपने आप में अनिवार्य था। मेरी सम्मति में पुरोहित सभा ने यह निर्णय लेकर स्व कर्त्तव्य का पालन किया है।

जीवन में प्रथम परिचय अथवा दर्शन मुझे तब हुआ जब मैं १५-१६ वर्ष का था भारत के उत्तराखण्ड प्रदेश में स्थित मुख्य सरोवर नगरी नैनीताल का सम्भवतः वह वेद प्रचार आयोजन था मेरे कानों ने सुनी थी वह घोषणा जब पण्डित जी से वेद प्रवचनार्थ प्रार्थना की गई एक सौम्य मूर्ति सादे किन्तु पवित्र बड़े ढंग से पहने गये वस्त्र, गले में पीतवर्ण का सुन्दर उपवस्त्र सिर पर सफेद टोपी बड़े धैर्य गम्भीरता शालीनता जो एक पण्डित के लिये आवश्यक है व्यक्ति जब अपने आसन पर विराजमान हुये और ईश्वर स्तुति के उपरान्त जब वेदोपदेश किया तो मन में तभी से पुरोहित शब्द के प्रति निष्ठा उत्पन्न हो गई—पुरोहित पद प्रतिष्ठा का है लेकिन तब जब उस पद पर प्रतिष्ठत व्यक्ति उस प्रतिष्ठा को रक्षा करे मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूं कि पण्डित चन्द्रभानु जी ने इस प्रतिष्ठा की रक्षा ही नहीं प्रत्युत उसके गौरव को बढ़ाया है।

देहली में सन् १९७१ से मैं रह रहा हूं इस बीच पण्डित जी के काफी निकट आने का सौभाग्य मुझे मिला पुरोहित सभा के निर्माण

में विभिन्न पदों पर रहते हुये एक साथ कार्य करने का अवसर मिला मैंने देखा ऐसे अवसरों पर जब तनाव की स्थिति आई अथवा उत्तेजना के क्षण आये पण्डित जी को प्रत्युतपन्न मति उनके विनोदी स्वभाव ने सदा ही स्थिति को संभाल दिया पुरोहित जीवन दूसरों के लिये आलोचना की वस्तु आसानी से बन जाता है और कई बार संस्कारों की जटिलता कई प्रश्न चिह्न उत्पन्न कर देती है लेकिन पण्डित जी ने कभी भो ऐसी स्थिति उत्पन्न नहीं होने दी मैं ही नहीं अनेक पुरोहित मित्र उनसे प्राय: उनके सफल जीवन का रहस्य पूछते रहते हैं। पुरोहित उपदेशकों के विषय में प्राय: कहा जाता है कि उनका परिवार पक्ष तथा आर्थिक पक्ष अधूरा रह जाता है। किन्तु प्रभु कृपा से उन्हें इसमें भो पूरी सफलता प्राप्त हुई है मैं जब कभो इनके जीवन की सफलता का अध्ययन करता हूं तो मुझे इसके मूल में उनकी देवी जी का अथक परिश्रम एवम् सहयोग दृष्टिगोचर होता है किसी पति की सफलता का पृष्ठ तब तक अधूरा है जब तक पत्नि की जीवन रूपी स्याही से उसे न लिखा गया हो मैं इस देवी के प्रति परमात्मा से दीर्घायुष्य की प्रार्थना करता हूं।

पण्डित जी के जीवन से मुझे आशा है पुरोहितगण गम्भीरता एवम् शालीनता के गुणों को ग्रहण कर अपने जीवनों को सवारेंगे।

जिस निष्ठा के साथ पण्डित जी ने आर्य समाज की सेवा की है प्रभु हमें भी वही निष्ठा प्रदान करें मेरी कामना है हम उनके जोवन की शताब्दी मनायें। आर्य सामाजिक लोग अपने पुरोहित उपदेशक संन्यासियों का सम्मान सत्कार करना सीखें—वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हो।

कामना के साथ

१०४३, डो० डो० ए० फ्लैट्स
कालका जी
नई दिल्ली-११००१९

कुलगुरु

श्री सुभाष जी विद्यालंकार, मंत्री आर्य समाज, हनुमान रोड

खादी की सफेद धोती, कुरता और टोपी तथा कन्धे पर पीलेअंग वस्त्र को देख मेरी आंखें सहसा उस व्यक्ति की ओर आकृष्ट हो गईं। इस सादी वेष भूषा में भी इस व्यक्ति में जो आकर्षण था वह मेरे हृदय में आज भी विद्यमान है। आज से ३१ वर्ष पूर्व १९५३ में मैंने अपने साथियों से इस व्यक्ति के बारे में पूछताछ की थी। तब पता चला था कि पाश्चात्य सभ्यता के केन्द्र कनाट प्लेस के एक कोने में बने आर्य समाज के पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित ये व्यक्ति पण्डित चन्द्र-भानु जी हैं। मन में यह इच्छा जगी थी कि पण्डित जी से कुछ बात चीत करूं किन्तु संकोचवश ऐसा नहीं कर पाया।

आर्य समाज के रंग में पूरी तरह सराबोर परिवार में जन्म लेने और सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा आर्य समाज की शिक्षा संस्था में होने के कारण मन में सदैव इच्छा रहती थी कि मैं राजधानी की आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लूं किन्तु कई वर्ष तक यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी।

सात आठ वर्ष बाद पण्डित चन्द्रभानु जी ने एक दिन स्वयं मेरे निवास पर पधारने की कृपा की और मुझे आर्य समाज हनुमान रोड का न केवल सदस्य बनाने का अपितु एक पदाधिकारी बनाने का भी प्रस्ताव किया। पण्डित जी ने जिस सौम्य, शिष्ट और आत्मीय भाव से मेरे साथ बात चीत की उसमें मेरे लिये ना कहने का अवसर ही नहीं था। पण्डित जी की ही प्रेरणा और परामर्श का यह सुपरिणाम है कि आर्य समाज से सम्बद्ध रहने की मेरी हार्दिक इच्छा पूरी हुई और मैं पिछले २५ वर्षों से आर्य समाज की गतिविधियों से घनिष्ट रूप से सम्बद्ध हूं।

मेरे जैसे अनेक व्यक्ति और परिवार हैं जिन्हें पण्डित जी ने आर्य समाज की गतिविधियों से जोड़ा है। पण्डित जी राजधानी के अनेक सम्भ्रान्त और विशिष्ट परिवारों के कुलगुरु हैं। दिल्ली में ऐसे अनेक आर्य परिवार हैं जिनकी दो-दो तीन-तीन पीढ़ियों में

आर्य समाज और वैदिक धर्म के संस्कारों की दीक्षा पण्डित जी ने

दी है उन्होंने जिस निष्ठा और लगन के साथ आर्य समाज हनुमान रोड में अपने कठिन उत्तरदायित्व को निभाया है वह अपने आप में एक ऐसा उदाहरण है जिसकी मिसाल आर्य जगत् में नहीं मिलती। चालीस से भी अधिक वर्षों तक एक ही आर्य समाज की सेवा करते रहना अपने आप में एक महान् उपलब्धि है, क्योंकि आज आर्य समाज का नेतृत्व जिन लोगों के हाथों में है वे प्रायः विद्वत्ता, निष्ठा और धैर्य जैसे सद्गुणों की परवाह नहीं करते, किन्तु इस दृष्टि से आर्यसमाज हनुमान रोड के पदाधिकारी और पण्डित जी का परस्पर सम्बन्ध एक अपवाद है और सारे आर्य जगत् को एक चुनौती है कि वह विद्वानों का आदर करने की अपनी पुरानी परम्परा को फिर अपनायें। आज इस परम्परा को छोड़ देने का दुष्परिणाम हम सब भुगत रहे हैं। आर्य समाज एक अखिल भारतीय ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय सगठन होने के बावजूद तेजहीन संस्था है। इसमें विद्वानों और त्यागी संन्यासियों का सर्वथा अभाव है। किन्तु आज से ४०-५० वर्ष पूर्व स्थिति इसके सर्वथा विपरीत थी। दिल्ली की पुरोहित सभा आज जो काम कर रही है उसे सावदेशिक सभा अथवा दिल्ली की आर्य प्रतिनिधि सभा को करना चाहिये था। हमें आशा करनी चाहिये कि आर्य समाज के वर्तमान कर्णधार अपनी जिम्मेदारी को समझेंगे और आर्य समाज में एक बार फिर विद्वानों और तपःनिष्ठ संन्यासियों की प्रतिष्ठा बढेगी। इस दृष्टि से हमें इसाईयों से कुछ सीखना चाहिये। वहां सारे संगठन को चलाने का भार पादरियों पर है। उन्हें काम करने की पूरी स्वतन्त्रता है और उनकी तथा उनके परिवारों की आवश्यकताओं की पूर्त्ति करने की पूरी जिम्मेदारी ईसाई समाज लेता है। मेरा विश्वास है कि जब तक आर्य समाज की बागडोर विद्वानों और निष्ठा तथा लगन से काम करने वाले पुरोहितों तथा संन्यासियों के हाथों में नहीं सौंपी जायेगी तब तक आर्यसमाज अपने उद्देश्य पूरे करने में सफल नहीं हो पायेगा।

मेरी यही हार्दिक कामना है कि पण्डित जी का मार्गदर्शन आर्य समाज को सदैव प्राप्त होता रहे। प्रभु उन्हें स्वस्थ-दीर्घायुष्य प्रदान करें। आदरणीय पण्डित जी का अभिनन्दन करने के लिये आर्य पुरोहित सभा और इसके कार्यकर्त्ता धन्यवाद के पात्र हैं। ❀

आर्य पुरोहित शिरोमणि आचार्य प्रवर पण्डित चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण

(प्राचार्या श्रीमती कमला रत्नम् जी एम० ए०)

उत्थान और पतन प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। इसी नियम के अंतर्गत आर्यसत्यों का आविर्भाव और तिरोभाव होता रहता है, यद्यपि उनका अत्यन्ताभाव कभी नहीं होता। प्रति पखवाड़े वर्द्धमान और क्षीयमान चन्द्रमा के माध्यम से यह सत्य हमारे सामने उजागर होता रहता है। वास्तव में प्रकृति का यह नियम मनुष्य को निरन्तर गतिशील कर्मशील बने रहने का प्रेरक है। यदि उन्नत स्थिति सदैव बनी रहे तो मनुष्य को कुछ नया, कुछ अच्छा करने, आगे बढ़ने की प्रेरणा ही न मिले। वास्तव में विनाश और अवनति उत्साह और मानव अध्यवसाय का जन्मदायक है। यह सभी को विदित है कि वैदिक काल में हमारा देश उन्नति के चरम शिखर पर था और हमने जगद्गुरु की पदवी प्राप्त कर ली थी। हमारे ज्ञान की ज्योति एक समय सारे एशिया में फैल चुकी थी। ज्ञान-विज्ञान की अनेक विद्याओं के लिये विश्व के अनेक देश हमारे ऋणी हैं। इसे काल की विडम्बना ही कहा जाएगा कि वही आर्यावर्त्त भारत-वर्ष इतिहास के गर्त में फंस कर सहस्र-वर्ष की दासता में जकड़ गया और अपनी राजनैतिक तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता ही नहीं खो बैठा, अपना स्वतन्त्र चिन्तन, अपनी अस्मिता से अपनी मानसिक स्वाधीनता, अपनी संस्कृति से भी विमुख हो गया और आज वह अपनी भाषा, भूषा, भोजन, आचार-विचार को भी तिलांजलि देकर पूर्णरूपेण मानसिक गुलामी की जंजीरों में जकड़ गया है। यह इस देश का सौभाग्य था कि पिछली शताब्दी में महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसी तेजस्वी विभूति ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया और एक बार फिर हमें आत्मदर्शन की ओर उन्मुख होने का अवसर प्राप्त हुआ।

स्वामी दयानन्द के समय में सारा भारत उनकी तेजस्विता, और प्रखर पाण्डित्य की चपेट में आ गया था। "चपेट" शब्द का प्रयोग मैं जानबूझ कर रही हूं। क्योंकि उनका ज्ञानरूपी कुठार धर्मान्धता, अज्ञान, गुलामी और रूढ़वादिता पर भरपूर प्रहार करता था। झाड-झंखाड़ का सफाया किये बिना अच्छी ओर फलदायक खेती नहीं की जा सकती। सत् के निर्माण के लिये असत् का विध्वस आवश्यक है। इसलिये स्वामी जी ने पहले समाज में प्रचलित कुरीतियों अन्धविश्वासों और झूठे ढकोसलों का पर्दाफाश किया। यही नहीं उनको जड़ से उखाड़ फेंका। बालक मूलशंकर का शिवजी की प्रतिमा पर चूहों के आक्रमण को देखकर वहां से उठ भागना अपने आप में महती क्रान्ति का प्रतीक है। आज ज्ञान-विज्ञान में ऊँची-से-ऊँची उपाधि प्राप्त तथाकथित शिक्षित लोग थोड़ी सी असफलता, थोड़ी सी अशान्ति से विचलित होकर मन्दिरों में माथा टेक कर समाधान ढूँढते हैं, यह भूलकर कि वे मन्दिर, और उनके कर्त्ता-धर्त्ता आज गर्हित अनाचार, और भ्रष्टाचार के केन्द्र बन चुके हैं। अधिकांश मन्दिर अनपढ़, स्वार्थी पण्डों के आधिपत्य में दुराचार और अन्धविश्वास को जन्म देते हैं। स्वामी जी के सामने स्थिति इससे भी भयंकर थी। देश में मुसलमानों के आतंक के बाद अंग्रेजी का धन और नौकरी का लालच देकर इसाईकरण जोरों पर था। ऐसे समय में उन्होंने आदि विद्या के स्रोत वेदों का स्मरण किया। उनकी सही व्याख्या की, वेदों के ज्ञान-विज्ञान को लोगों तक पहुंचाया। उन्हें स्मरण दिलाया कि तुम आर्य-ऋषियों की सन्तान हो, निरन्तर आगे बढ़ना तुम्हारा कर्तव्य है, आध्यात्मिक जीवन की साधना तुम्हारा ध्येय है। स्वामी जी के समय तक वेदों का कर्मकाण्ड बहुत पतित हो गया था। वेद-ऋचाओं के ठीक अथ न समझ पाने के कारण लोग यज्ञ का महत्व भूल गये थे और पशु-बलि को ही यज्ञ का परम-पावन कर्तव्य मानने लगे थे। स्वाभाविक था कि यज्ञ में मारा गया पशु उनका भोज्य भी होता था और इस प्रकार एक जीव हत्या कर अपना पेट-पालन करने के घृणित कर्म में वे निरन्तर व्याप्त हो गये थे। "अन्नं वै प्राणाः" जैसा खाओगे वैसे ही बनोगे। तामसिक भोज्य से लोग तमोगुण के अन्धकार में लिप्त होते जा रहे थे।

इस दिग्भ्रमित वैदिक कर्मकाण्ड से त्रस्त होकर महात्मा बुद्ध ने अपने अहिंसा-धर्म का प्रचार किया। परन्तु कालान्तर में उसमें भी दोष भर गये तथा वर्णाश्रम अवस्था के विकृत होने से क्षत्रिय अपना कर्तव्य भूल गये। देश की रक्षा और गृहस्थ धर्म के पालन की उपेक्षा कर वे गृहत्याग करने लगे। देश के परतन्त्र होने का एक यह भी बहुत बड़ा कारण था। स्वामी जी ने इस सब को देखा, अनुभव किया। इसी लिये उन्होंने जहां झूठे धर्मों तथा वितण्डावाद का अपनी पैनी ओजस्वी वाणी से खण्डन किया, शुद्ध शास्त्रार्थ से विधर्मियों को धराशायी किया, वहीं वैदिक कर्मकाण्ड को फिर से उसके पवित्र, निर्मल एवं सर्वपावन रूप में प्रतिष्ठित किया। आर्यसमाज द्वारा प्रशिक्षित यज्ञ-पुरोहितों के देश भर में फैल जाने के कारण अन्धविश्वासी अनपढ़, मूर्ख सनातनी पुरोहितों की छुट्टी हो गया। और इस पवित्रधारा की आपाद-मस्तक अनुभूति मुझे पूजनीय पुरोहित प्रवर पं० चन्द्रभानु जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के माध्यम से हुई।

हम विदेश में रहते थे। बेटा छः वर्ष का हो गया था। विदेश में वैदिक संस्कार हो नहीं सकते थे। राजधानी लौट कर आर्य समाज से सम्पर्क किया। मेरे पिता स्वामी दयानन्द के बड़े भक्त थे। मूर्तिपूजा के सख्त खिलाफ थे। आर्यपद्धति से हवन करते थे तथा नियमपूर्वक प्रवचन सुनते थे। उन्होंने स्वामी जी के निर्देशानुसार हम बहिनों का भी यज्ञोपवीत संस्कार कराया। आर्य समाज मन्दिर से हमने पूछा ऐसा पुरोहित चाहिये जो कम-से-कम शुद्ध संस्कृत बोलता हो और वेदोक्त विधि से संस्कार करा सके। छूटते ही पं० चन्द्रभानु का नाम प्रस्तावित किया गया। अपने समय के वे सबसे विद्वान एवं तेजस्वी पुरोहित थे। इस प्रकार २४ मार्च, १९५१ को पण्डित जी से हमारी प्रथम भेंट हुई।

"पण्डित जी बेटे का यज्ञोपवीत करना है। कौन सा दिन शुभ है?"

"सभी दिन शुभ हैं। ईश्वर की बनायी कोई वस्तु अशुभ या दोषपूर्ण नहीं है। सब दिन कल्याणकारी होते हैं।"

"पण्डित जी, कौन सा मुहूर्त्त ठीक रहेगा?"

"मुहूर्त्त भी काल का ही एक अंश है। काल स्वयं ईश्वर का एक रूप है। सभी मुहूर्त्त अच्छे हैं। आप अपनी सुविधा का समय चुन लीजिये।"

संयोग से उसी दिन हमारी पुत्री भी ४० दिन की हुई थी। पण्डित जी ने बेटे का यज्ञोपवीत और बिटिया का जातकर्म तथा नामकरण संस्कार एक ही बैठक में पूर्ण वैदिक विधि से जिस प्रकार कराया वह इन सबके लिये स्मरणीय है। उस दिन पण्डित जी की वाणी हमें हजारों वर्ष पूर्व ऋषियों के युग में ले गयी। इससे पहले हमारे यहां हवन आदि होते थे, परन्तु संस्कारकर्त्ता पण्डितों के अन्ध-विश्वास और भ्रष्ट उच्चारण, ऊपर से लोभ-लोलुपता तथा मलिन अनुशासनहीनता से त्रस्त होकर मेरा जी चाहता था यहां से उठ जाऊं और यज्ञ ध्वंस कर दूँ। वैदिक कर्मकाण्ड के जाज्वल्यमान, परमपावन, पावक प्रदीप्त प्रतिमा के दर्शनों का, उनमें भाग लेने का सौभाग्य मुझे सर्वप्रथम पंडित चन्द्रभानु के सान्निध्य में प्राप्त हुआ। बस, उस दिन से जो श्रद्धा मन में बनी वह आजन्म बनी रही। बीच-बीच में रविवारीय हवन-प्रवचनादि में जाना होता था और पण्डित जी से मिलना होता रहता था।

हम लोग जापान से लौटे थे। मेरे पिता की मृत्यु हो चुकी थी। छोटे भाई का विवाह होने वाला था। भाई ने अपने लिये सर्वांग सुन्दर सिख-परिवार की षोडशी कन्या चुनी। विवाह के समय कन्या के माता-पिता अनुपस्थित थे। पण्डित जी की शरण गये। विवाह विधि इस प्रकार सम्पन्न करानी थी जिससे हमारा आर्य धर्म भी खण्डित न हो और लड़की के पैतृक सिख सम्प्रदाय का भी पूरा सम्मान हो। और यह सब एक ही समय, एक ही धार्मिक विधि द्वारा एक ही स्थान पर सम्पन्न होना था। पण्डित जी ने बड़ी कुशलता से इस कठिन गुत्थी को सुलझाया। न्यायाधीश के सम्मुख हस्ताक्षर करने के बाद प्रातःकाल ११ बजे वैदिक विधि से विवाह प्रक्रिया सम्पन्न हुई। वर पक्ष वाले तो सन्तुष्ट थे ही, कन्यापक्ष वालों ने भी अपने को पूर्ण सम्मानित अनुभव किया, और किसी प्रकार का साम्प्रदायिक मतभेद उठने नहीं दिया। इस घटना से यदि आज की स्थिति की तुलना करें तो सोच कर बड़ा दुःख होता है कि एक ही माता की सन्तान सिख और हिन्दु आज एक दूसरे के

खून के प्यासे हो रहे हैं। उस अवसर पर आदरणीय पण्डित जी ने जिस दूरदर्शिता और मानवीय संवेदना का परिचय दिया था। वह अपने आप में एक स्मरणीय घटना बन कर रह गया है। वैदिक सिद्धान्तों की सार्वभौमिता को उन्होंने उस दिन बड़ी कुशलता से सिद्ध किया था।

इसके वाद हमारे परिवार में कितने हवन हुए, यज्ञानुष्ठान हुए सब के होता, अध्वर्यु, पुरोहित पंडित जी होते थे। वैदिक यज्ञपद्धति में वेदी के चारों ओर चार पुरोहित बैठते हैं। पण्डित जी के समकक्ष किसी अन्य को न पाकर मैं उन्हीं को चतुर्मुख ब्रह्मा समझ उन्हीं के तेजस्वी व्यक्तित्व में "चत्वारो होतारः" की कल्पना कर लती थी। १९७२ में हमारा बेटा विदेश से अध्ययन समाप्त कर घर लौटा। मैंने पण्डित जी से कहा अब इस युवा स्नातक का समावर्तन संस्कार होना चाहिये। आप कृपया वैदिक संस्कार विधि का अध्ययन कर एक सुन्दर सर्वांग सम्पूर्ण यज्ञ की कल्पना कोजिये और फिर स्वयं उसका अनुष्ठान भी। स्मरण रहे आज कल लोग जन्म, विवाह और मरण के अतिरिक्त अन्य तेरह संस्कार भूल चुके हैं। "समावर्त्तन" नाम भी बहुतों ने नहीं सुना है। उस यज्ञ में हमने नगर के प्रतिष्ठित संस्कृति सम्पन्न शताधिक अतिथियों को बुलाया था। आज तक वे लोग उस यज्ञ की गरिमा एवं महिमा-मण्डित सौन्दर्य को याद करते हैं। हमारे परिवार की तो वह अमूल्य स्मृति है ही। रूस, योरोप और अमरीका में भौतिकी में "विज्ञानवारिधि" की उपाधि-विभूषित उस बालक ने उस दिन आँख में काजल डाल दर्पण में अपना मुख देखा तथा पण्डित जी के आदेशों का अक्षरशः पालन किया था। वर्त्तमान में अतीत को प्रतिबिम्बित प्रतिस्फूरित कराने का यह अद्भुत प्रयोग था। कितना गूढ़ अर्थ छिपा था इस वेदोक्त कृत्य में। ब्रह्मचारी के विद्यार्थी जीवन की ओर इस एक विधान का कैसा स्पष्ट संकेत था और इस सब को साकार करने का श्रेय माननीय पण्डित जी को था।

तदुपरान्त भूमि खरीदी गयी। भूमिपूजन हुआ, गृह प्रवेश हुआ। घर बसा, बच्चे बढ़े हुए। उनके विवाह, वाग्दान आदि का समय आया। यह सब सुकृत्य पण्ठित जी की छत्रछाया उनके सुललित मन्त्रोच्चारण से पूत वातावरण में सम्पन्न हुए। पण्डित जो

ने विवाह विधि को इस प्रकार महिमा मण्डित किया है कि उसका संस्कार एवं प्रभाव विवाहित जोड़ों पर आजन्म रहता है। और वे स्वस्थ,,सुखी जीवन व्यतीत करते हैं। पण्डित जी द्वारा कराये गये विवाह के असफल होने का प्रश्न ही नहीं उठता। कहां तक कहा जाए, हमारे घर धार्मिक पक्ष का कितना भी कर्मकाण्डीय आधार था, सब पण्डित जी के हाथों साकार हुआ और अत्यन्त सौन्दर्यमयता से हुआ। यथार्थ में वे हमारे परिवार के धार्मिक अधिष्ठाता तथा नैतिक और आध्यात्मिक पथप्रदर्शक हैं।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक कर्मकाण्ड के उद्देश्यों में एक प्रमुख बिन्दु यह भी है कि दीर्घकाल से दुरुपयोग और अज्ञान के कारण जिन-जिन वैज्ञानिक क्रियाओं का अर्थ और व्यवहार विकृत अथवा विस्मृत हो गया है उनका शोध करके उन्हें पुनः प्रतिष्ठित किया जाए। महर्षि के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पंडित चन्द्रभानु ने वर्षों शोध तथा परिश्रम अध्ययन करके एक ग्रन्थ तैयार किया, जो उनके अर्द्धशताब्दी से भी ऊपर के अनुभवों से अनुप्राणित है। पंडित जी की आयु इस समय अस्सी के आस-पास है। उन्हीं की प्रेरणा से दक्षिण-दिल्ली के एक सुरम्य प्रान्तर में आवासस्थली का निर्माण हुआ है और उन्हीं के आशीर्वाद से उसका नामकरण "सर्वप्रिय विहार" हुआ है। इस छोटी सी बस्ती में पण्डित जी के व्यक्तित्व की छाप छायी हुई है। जिससे पूछो वही उनका प्रशंसक है। सुनते थे कि सन्तों के सान्निध्य में शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। सर्वप्रिय बिहार में भी आपसीमतभेद भुला कर, ऊच-नीच का विचार त्याग कर आपस में मैत्रीभाव से रहते हैं। वैदिक आर्यपुरुष, सौम्यशालीन मनुष्यत्व की पण्डित जी आदर्श मिसाल हैं। मुख पर तेज, जिह्वा में मिश्री और आंखों में स्नेह की यह प्रतिमूर्ति शतायु हो और दीर्घकाल तक आर्यधर्म को बल देती रहे, परमपिता से यही हमारी प्रार्थना है।

'ईशान'
एफ-१/७ हौज खास
नयी दिल्ली
११००११६

विद्या विलास मनसो
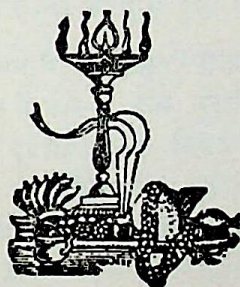
विद्वानों की लेखनी से
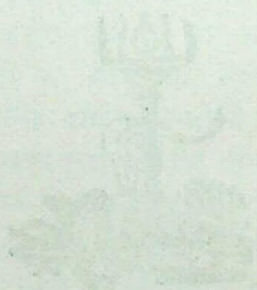
पुरोहित

(शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी महाराज)

वेदों में पुरोहित शब्द का बहुत प्रयोग है। एक व्यक्ति मेरठ से मेरे पास आये और उन्होंने कहा कि वेदों में पुरोहित शब्द कहां-कहां है? वे पते आप लिखवा दीजिये। मैं लिखवाने लगा तो लिखते-लिखते थक गये और कहने लगे यह बहुत बड़ा काम है। मैं तो इतने ही प्रमाण लेकर जाता हूं, चले गये। पीछे मुझ को पता लगा कि वह सज्जन पुरोहित का अर्थ एम० एल० ए० और एम० पी० लगाना चाहते हैं। यह सुनकर मुझ को दुःख हुआ कि व्यर्थ परिश्रम किया।

वेद के आधार पर मैं "पुरोहित" शब्द पर पुस्तक भी लिखना चाहता हूं। इस लेख में वैदिक शब्द पुरोहित पर बहुत न लिखकर "वर्त्तमान स्थिति में पुरोहित" इस विषय पर लिखूंगा। वैसे याद दिला दूं कि—आर्य सामाजिक वृद्ध, युवा, बालक, नर नारी बहुतों को "अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम् होतारं रत्नधातमम्" (ऋग्वेद) कण्डठस्थ है।

निरुक्त में श्री यास्काचार्य जी ने पुरोहित शब्द पर कहा है—

"पुरा एनं दधति" जिसको अगुआ बनाया जाता है, वह पुरोहित होता है। अगुआ, अग्रगन्ता, पथप्रदर्शक, नेता, लीडर और इमाम ये सब शब्द पुरोहित के लिये प्रयोग में आ सकते हैं।

पौराणिकों में विद्वान् भी पुरोहित हो सकता है और अविद्वान् भी। संस्कार कराने वाले भी पुरोहित होते हैं और पुरोहित के पुत्र कुल पुरोहित अनपढ़ भी पुरोहित होते हैं। विवाह संस्कार कोई पण्डित कराए, कुल पुरोहित अनपढ़ भी आकर बैठ जाएगा और संस्कार कराने वाला पण्डित यजमान को कहकर दक्षिणा उसको भी दिलायेगा। यजमान स्वयं भी उसका अधिकार मानता है। पुरोहित नामधारी स्वयं भी मांग लेता है और थोड़ी मिलने पर

अधिक देने को भी कहता है। आर्य समाज में भी पुरोहित होते हैं। यहां अनपढ़ तो पुरोहित हो नहीं सकता है। कोई अधिक पठित हो, कोई कम हो, होगा पठित ही वंश परम्परा से अनपढ़ व्यक्ति कोई पुरोहित नहीं हो सकता।

आर्य समाज के पुरोहित प्रायः समाजों से कुछ मासिक वृत्ति लेते हैं क्योंकि केवल दक्षिणा के भरोसे पर पुरोहित रहना अत्यन्त कठिन है। पंजाबी यजमानों में विवाह संस्कारों में सबसे अधिक धन सेहरा पढ़ने वाले को मिलता है।

सेहरा पढ़ने वाला पहिले ही तय कर लेता है कि मैं इतना रुपया लूंगा। वह ठहराया हुआ रुपया दश, बीस, पचास न होकर तीन अंकों में ही होता है। सेहरा को कविता बोलने वाला जब उस अपनी तुकबन्दी को बोलता है तो—'आया सेहरा, सजाया सेहरा" आदि और उस तुकबन्दी में जब दूल्हा के चाचा, ताऊ, दादा, चाची, ताई, दादी आदि के नाम जोड़ कर बोलता है। चाचा, चाची, ताऊ, ताई और दादा दादी उछल-उछल कर उसको नोट पर नोट देते हैं। वह आधे घण्टे में कई सौ रुपये ले जाता है। सेहरा बोलने वाला प्रायः शराबी, कबाबी और सेक्युलर अर्थात् लामजहब होता है।

पंजाबियों के विवाहों में एक तुक्कड़ और आता है। उसको शिक्षा बोलने वाला कहा जाता है। वह भी तुकबन्दी बोलता है। उस में भाव यह होता है कि "यह लाडो फूलों की तरह रखी गई थी। आंखों का तारा उस को समझा गया था। इसको जिगर का टुकड़ा समझा गया था। यह नाजों की पाली हुई बेटी आज जा रही है। आज बाप का कलेजा फट रहा है। मां का दिल टुकड़े-टुकड़े हो रहा है।" उनको सुनकर मां रोती है, बाप रोता है। चाची, ताई, दादी, बहिनें, भाभियां सब के सब रोते हैं। उस समय ऐसा लगता है कि अभी कोई मर गया है। इस अवसर पर जो अधिक रुलाता है, उसको अधिक रुपया मिलता है।

पुरोहित जी सेहरा के समय से रोने के समय तक कई घण्टे तक मुशकिल से अपना समय काटते हैं। प्रायः भोजनादि के समय भी उनको याद नहीं किया जाता है। पांच छः घण्टे उलटे सीधे रहने के पीछे उनको दक्षिणा दी जाती है।

हजारों रुपये बिजली और आतिशबाजी, बैंड, भंगड़ा आदि पर खर्च करने वाला, पुरोहित की दक्षिणा पर किफायत सोचता है। जो नया आर्यसमाजी हो तो वह कुछ उदारता से दक्षिणा दे देगा और यजमान पुराना आर्य समाजी होगा तो वह कम से कम देगा। पुराना आर्य समाजी वहां बैठा भी होगा तो यजमान को कम से कम दक्षिणा देने की सलाह देगा। पुरोहित जी ने यदि यह कह दिया कि "दक्षिणा थोड़ी है" तो उसके विरुद्ध बवंडर खड़ा हो जायगा। पुरोहित वरण करने के लिये धोती, तौलिया दे दिया तो समझो यजमान ने सर्वस्व दान कर दिया। मेरा एक सूत्ररूप वचन प्रसिद्ध हो रहा है। वह यह है :—

"पौराणिक पुरोहित अपने यजमान को ठगता है और आर्य समाजी यजमान अपने पुरोहित को ठगता है।"

(१) कई समाजों में पूरी दक्षिणा समाज को दे देनी पड़ती है। पुरोहित केवल मासिक वेतन का अधिकारी है।

(२) कई समाजों में दक्षिणा आधी समाज लेता है, आधी पुरोहित के पास रहती है।

(३) कई समाजों में दक्षिणा तो पुरोहित के ही पास रहने दी जाती है पर मासिक वेतन इतना कम होता है कि उतने पर चपड़ासी भी नहीं मिलता है।

(४) कई समाजों के अधिकारी प्रधान अथवा मन्त्री संस्कार कराते और दक्षिणा लेते हैं। उन समाजों के पुरोहित केवल अन्त्येष्टि संस्कार कराते अर्थात् मुर्दे जलाते हैं।

(५) कई समाजों के चपड़ासी भी संस्कार कराते हैं। उन समाजों में पुरोहित रखे जाते हैं पर अधिक देर टिक नहीं सकते क्योंकि एक तो आय कम होने से निर्वाह नहीं हो पाता, दूसरे चपड़ासो घर घर पुरोहित की विधिपूर्वक निन्दा करता रहता है। अतः पुरोहित जो को बेकार बताकर मुक्त कर दिया जाता है।

(६) वह पुरोहित यदि किसी समाज में जाये तो वह समाज पहिले समाज का प्रशंसा पत्र मांगता है।

(७) किसी समाज से पुरोहित स्वयं दुःखी होकर अधिकारियों की इच्छा के बिना जाता है अथवा किसी समाज से सेवक द्वारा की

गई निन्दा अथवा किसी पदाधिकारी के साथ मतभेद होने के कारण हटाया जाता है। इन सब दशाओं में प्रमाण पत्र अथवा प्रशंसा पत्र मिलना असम्भव है। पर अगला समाज पिछले का प्रमाण पत्र अवश्य मांगता है।

(८) प्रशंसा पत्र के अभाव में समाज दया करके कम से कम वेतन पर उनको पुरोहित रख लेता है और उनको कह दिया जाता है कि आपको परीक्षार्थ रखा जा रहा है। परीक्षा यह है कि पुरोहित जी वर्त्तमान पदाधिकारियों तथा उनकी पत्नियों को प्रसन्न करने और प्रसन्न रखने में सफल हो गये तो यावत् तावत् का नित्य संबंध देखकर कुछ समय टिके रहें। नहीं तो नहीं ही है।

(९) एक समाज में एक विद्वान् पुरोहित हैं। उनकी पत्नी भी विदुषी है और दोनों ही बहुत अच्छे हैं। दोनों समाज का बहुत काम करते हैं पर समाज उनको १५० रु० मासिक वृत्ति देता है।

(१०) एक समाज में एक महाविद्वान् पुरोहित ने बहुत ही अच्छा कार्य किया। जैसा पहले किसी ने न किया था न पीछे कोई कर सका। उस सज्जन को डिक्टेटर रूप नये प्रधान जी के दुर्व्यवहार के कारण त्यागपत्र देना पड़ा और उस प्रधान ने उस सज्जन पुरोहित के विरुद्ध वह तूफान खड़ा किया कि भगवान ही बचाये। "सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।" कविरत्न पं० अखिलानन्द जी जब आर्य समाज में थे, तब एक श्लोक स्वनिर्मित सुनाया करते थे जिसका अर्थ यह है कि "आर्य समाजी किसी कारण यदि बहुत प्रसन्न हो जाय तो वह "धन्यवाद" दे देगा और यदि अकारण ही अप्रसन्न हो जाय तो उन दोषों का आरोपण करेगा जो कभी स्वप्न में भी उसमें न आये हों। उसका जीवन दुश्वार कर देगा।"

(११) एक समाज में एक युवक पुरोहित गुरुकुल के स्नातक थे। योग्य भी थे और कमठ इतने थे कि प्रातः चार बजे से रात्रि के दस बजे तक धर्म प्रचार, कर्म काण्ड, पठन पाठन में ही व्यस्त रहते थे। उनके माता पिता कुछ समय के लिये उनके पास आ गये तो समाज ने अपनी चारपाइयां उनसे ले लीं और कह दिया कि अपनी चारपाइयां बनाओ। मैंने उन तीनों को भूमि पर सोते देखा तो उस समाज के प्रधान जी को पत्र लिखा कि योग्यता और कर्त्तव्य परायणता में

जैसे पुरोहित आपके समाज में है ऐसे मुशकिल से ही कहीं मिलते हैं और इसके चले जाने पर ऐसा पुरोहित आपको मिलेगा नहीं। इनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं होना चाहिये कि चारपाइयां भी छीन ली गईं।

श्री प्रधान जी का उत्तर पत्र मेरे पास आया। उसमें मुझको आदेश था कि आप आदर्श पुरोहित के लक्षण लिखें।

मैंने उसके उत्तर में लिखा कि आप आदर्श आर्य सभासद, आदर्श मन्त्री और आदर्श प्रधान के लक्षण लिखिये, मैं आदर्श पुरोहित के लक्षण उनके साथ ही लिख दूंगा।

न उन्होंने आदर्श प्रधान आदि के लक्षण लिखे न मुझ को लिखने की आवश्यकता पड़ी। वह जो सज्जन पुरोहित थे वह आजकल किसी सरकारी पद पर हैं। हजारों रुपया मासिक उनकी आय है। समाजों में ससम्मान बुलाये जाते हैं पर उस समाज को आज तक योग्य पुरोहित नहीं मिला। कभी किसी भजनीक को पुरोहित रख लिया। कभी कोई परीक्षार्थी नवसिखिया आ गया। "जैसो नकटी देवी वैसे ऊत पुजारी"—'यादृशी शीतलादेवी तादृशी वाहन खरः"।

(१२) दिल्ली के ही एक समाज ने पुरोहित की आवश्यकता का विज्ञापन समाचार पत्रों में छपाया। उसमें जो विशेषण लिखे थे कि प्रार्थी में ये होने चाहियें। वे ऐसे थे कि उन विशेषणों वाला व्यक्ति दो हजार रुपया मासिक पर भी नहीं मिल सकता है। अब तो पांच हजार मासिक पर भी नहीं मिलेगा। मैंने उस समाज को पत्र लिखा कि जिन विशेषणों से युक्त आप पुरोहित चाहते हैं। परमेश्वर कृपा करें कि वैसा पुरोहित आपको मिल जाय तब कृपया मुझ को अवश्य सूचित करना। मैं उस महापुरुष के चरण स्पर्श करने के लिये आऊंगा। वह कहां मिलना था ? विज्ञापन निकालना चाहिए—

"लावे कोई ऐसा नर, पीर[1] बावर्ची[2] भिश्ती[3] खर[4]।"

(१३) पौराणिक पुरोहित योग्य हो, अयोग्य हो, उसके परिवार की आवश्यकताओं की चिन्ता यजमानों को होती है। उनकी पुत्रियों के विवाहों में यजमान लोग इतना धनादि देते हैं कि पूरा कार्य होने पर और बच जाता है। पुत्रियों के विवाहों में पौराणिक पुरोहित का कुछ भी व्यय नहीं होने पाता है।

(१४) ईसाई मिशनरियों में पति का भी वेतन प्रभूत है और पत्नी का भी। साथ ही उनके लड़के लड़कियों की शिक्षा मुफ्त होती है और घर में खर्च के लिये भी लड़के लड़कियों के नाम पर मासिक वृत्ति पृथक् मिलती है।

आर्य समाज के पुरोहित और उपदेशक के बच्चों को मासिक वृत्ति तो मिलनी असम्भव ही है, उनके बच्चे किसी भी पाठशाला या गुरुकुल में किसी भी स्कूल या कालिज में निःशुल्क शिक्षा नहीं पा सकते हैं।

हैड चपरासी

(१५) महा पंडित श्री बिहारीलाल जी शास्त्री कहते हैं कि—आर्य समाज का पुरोहित हैड चपरासो होता है। मैंने उनको बताया कि कई समाजों में चपरासी हैड और पुरोहित उसका असिस्टेण्ट होता है। पुरोहित को चपड़ासी का अनुशासन और कभी-कभी आदेश भी मानना पड़ता है।

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का एक 'प्रसिद्ध वाक्य है—

"जगत् गुरु ब्राह्मण, ब्राह्मण का गुरु संन्यासी।
संन्यासी का गुरु, आर्यसमाज का चपड़ासी।"

भभ्भड़ा

(१६) पुरोहित या उपदेशक का कुछ विवाद यदि समाज के अधिकारी या समाज के चपड़ासी से हो जाल तो मेरा साठ बर्ष से भी अधिक बर्षों का अनुभव है कि उस विवाद में पुरोहित और उपदेशक की निश्चय हार, चपड़ासी की जीत होती है। चपड़ासी का काम नित्य घर-घर घूमने का है। वह किसी के बच्चों को प्यार कर आता है। किसी की शाक भाजो बाजार से लाकर दे जाता है। किसी का आटा पिसा देता है। हाथ जोड़ सकता है। पैर पकड़ सकता है और उसके पास घर-घर जाने के लिये खुला समय है। बड़ा भोला बनकर धीरे-धीरे विधिपूर्वक पुरोहित की निन्दा निरन्तर करता रह सकता है। पुरोहित यह सब कुछ कर नहीं सकता है। अतः निश्चय ही पुरोहित की हार होती है।

प्रसंगवश यह लिखता हूं कि मैं नब्बे वर्ष का बूढ़ा चलने फिरने में असक्त, असमर्थ हूं। धन कमाया नहीं। कोई मकान भी बनाया नहीं। पहला भी फूट गया। सन्तान परेशान है। एक सज्जन मेरे घोर विरोधी हैं। वे घर-घर घूम घम कर मेरी घोर निन्दा करते हैं। मेरी सेवा करने वालों पर भांति भांति के लांछन लगाकर उनको हर प्रकार से बर्बाद करने का घोर प्रयत्न करते हैं। उनके पास दिन रात खुला समय है। मैं कहीं सफाई देने जा नहीं सकता —"अतथ्यस्तथ्यो वा हरति महिमानं जनरेवः। बात सत्य हो व असत्य सुनने वालों पर प्रभाव डालती ही है, किसी को क्या पड़ी है जो बात की तह तक पहुंचने का परिश्रम करे।

उन बेचारे गरीबों की सहायता कोई क्यों करे ?

एक हंस और हंसिनी की कहानी है। हंस और हंसिनी दोनों थककर रात्रि को एक बड़े वृक्ष पर विश्राम करने के लिए ठहर गये। उस वृक्ष पर एक उल्लू रहता था। जब हंस और हंसिनी दोनों अपने गन्तव्य स्थान के लिए जाने लगे तो उल्लू ने हसिनी को पकड़ लिया और कहा कि "यह मेरी पत्नी है।" गवाहियों की आवश्यकता हुई तो हंस परदेशी था। उसका गवाह कोई न बना। पड़ौस के सभी पक्षियों ने उल्लू की गवाही दी। उन्होंने कहा..."हमको तो नित्य काम इससे पड़ता है और आगे पड़ना है। परदेशी हंस से हमको क्या काम !"

यह नीति बहुत चलती है। गरीबों, परदेशियों और आने जाने वालों से किसी को क्या लेना? अतः पुरोहित की हार अवश्य होती है।

पुरोहित और समाज के सदस्य

(१७) पुरोहित दो सौ रुपये समाज से लेता है और सदस्य एक दो रुपये समाज को देता है। पुरोहित का चौबीसों घण्टे प्रतिदिन समाज को देना कुछ मूल्य नहीं रखता है। सदस्य और अधिकारी का एक सप्ताह में एक घंटा भी बहुत मूल्य है। सदस्य और अधिकारी अपने आपको शासक मानते और पुरोहित को शासित (नौकर) समझते हैं। यही कारण सारे बिगाड़ का है।

(१८) एक विद्वान् ने सारी आयु में एक बार पुरोहिताई की। कई वर्षों तक बहुत सफलता के साथ उनका कार्य चला। एक बड़े प्रधान बने। उन्होंने अकारण पुरोहित जी पर रोब डालने के लिये शिकायत की कि…आप मेरे अनुशासन में नहीं रहते हैं।" पुरोहित जी ने कहा…काम तो समाज का पूरा करता हूं। समाज की हानि पहुंचाने वाला कोई काम नहीं करता हूं। सदा समाज के लाभ का ही ध्यान रखता हूं और अनुशासन आप क्या चाहते हैं?" श्री प्रधान जी ने कहा—"समाज का कार्य करते हुए भी मेरे अनुशासन में रहना चाहिये।" पुरोहित जी ने कहा…श्री प्रधान जी ? शासन में रहने का नाम अनुशासन है तो यह बताइये कि शासन करने का अधिकार विद्वान् को होना चाहिये अथवा अविद्वान् को प्रधान जी ने उत्तर तो कुछ नहीं दिया। पर सांप की सी फुंकार मार कर उठकर चले गए। पुरोहित जो ने भो समझ लिया कि क्या होना है। अतः त्यागपत्र लिखकर दे दिया कि मैं श्री प्रधान जी के साथ काम करने में असमर्थ हूं अतः मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लिया जावे।

अपना बोरिया बिस्तरा उठाकर चले आये। वह ही उनका प्रारम्भिक पौरोहित्य था और वह ही अन्तिम। "आई मौज फकीर की, दिया झोंपड़ा फूंक।"

बुलबुल ने आशियाना चमन से उठा लिया।"
उसकी बला से बूम रहे या हुमा रहे।'

(बूम—उल्लू। हुमा—बहिश्त की चिड़िया)

प्यारे पुरोहित गण !

उसने जो कुछ कह दिया, यह आप मत कहना। यदि आपने भी यह कह दिया तो "ढोल से भी खाल जायेगी" आप छोड़कर चले जावेंगे तो आपके पीछे बहुत से खुशामदी और चापलूस आ जायेंगे। आर्यसमाज का काम सर्वदा चौपट हो जायेगा।

"सितम सहे जा करम किये जा, यही था तर्जे अमल ऋषि का।
इसी पै आमिल "प्रेम" तू हो कि हक तुझे कामगार कर दे।"

गम्भीरता से कर्त्तव्य का पालन किये जाइये। आपका परिश्रम

व्यर्थ नहीं जायेगा। समय आवेगा जब विद्वानों का, धर्मात्माओं का सम्मान करने वाले भी आगे आयेंगे।

"लगा रख दिल किनारे से कभी तो लहर आयेगी।"

मैं बहुत आशावादी हूं, कभी डरता नहीं, घबराता नहीं, कभी रोता नहीं, परमेश्वर पर पूरा विश्वास रखता हूं।

पाय अटके रहे, अलि गुलाब के फूल।
अइहें पाय बसन्त ऋतु, इन डारन पै फल।।"

उपदेशकों के विना उन्नति का कार्य कभी नहीं हुआ, नहीं होगा। "उपदेश्योपदेष्ट्रवात।" (साँख्य)

उपदेश का कार्य उपदेष्टाओं से ही होगा।

"इतरथा अन्धपरम्परा।" (साँख्य)

उपदेशकों के बिना अन्ध परम्परा ही चलती है।

"मारग सोई ज ाकहें जो भावा।
पण्डित सोई जो गाल बजावा।"

आपके ऊपर ऋषि दयानन्द जी महाराज का ऋण है। उसको उतारना उनका परम कर्त्तव्य है जो उसको जानते हैं। जो उसको नहीं जानते, उनका कुछ कर्त्तव्य नहीं है। इसलिए कहिए..."वयंराष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" (वेद) हम राष्ट्र में जागने वाले पुरोहित हैं।

आर्य समाज और पुरोहित

(श्री शिवकुमार शास्त्री पूर्व सांसद)

"पुरोहित" शब्द वैदिक है। इसके भावगाम्भीर्य को अनुभव करके वैदिक ऋषियों ने इसका प्रयोग समाज के पथप्रदर्शक आचारवान् विद्वानों के लिए किया है। अथर्ववेद के वे मन्त्र जिसमें पुरोहित एक अनूठे काव्यमय ढंग से अपने गौरवपूर्ण कृतित्व का वर्णन करता है, वह समाज के उच्चतम और बिरले नेता ही आत्मविश्वास के साथ इस प्रकार अपने कार्य के प्रकाशन का साहस कर सकते हैं।

अथर्व में जो वर्णन है, वह इस प्रकार का है कि मानों किसी नेता से उसका परिचय पूछा गया और नेता ने उसके उत्तर में अपने कार्य स्वरूप, अपने अनुयायियों की योग्यता और प्रभाव का वर्णन करना प्रारम्भ कर दिया, जिसका फलितार्थ यह हुआ कि जिसके पीछे चलने वाले इस योग्यता और क्षमता के स्वामी हैं, उसके प्रभाव और योग्यता को तुम स्वयं समझ लो। वेद का वह मन्त्र निम्न है :—

तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत।
इन्द्रस्य वज्रात्तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहित ॥

मैं जिनका नेता (पुरोहित) हूं वे परशु की धार से भी कहीं अधिक तीक्ष्ण हैं, अग्नि से भी अधिक उग्र और तेजस्वी हैं। इन्द्र के वज्र (बिजली) से भी अधिक विध्वंसक हैं।

आपाततः इन शब्दों में बड़ा दर्पोन्मादसा झलकता है। किन्तु इतिहास इस का साक्षी है कि कभी पुरोहित का इसी प्रकार का वर्चस्व था। चक्रवर्ती सम्राट भी पुरोहित को भर्त्सना और तेवर देखकर विचलित हो जाते थे।

रामायण का युग वैदिक संस्कारों के ह्रास का समय था, जब राजा एक पत्नीव्रती न होकर अनेक विवाह रचा लेता था। किन्तु

उस समय भी पुरोहित के अपरिमेय प्रभाव का पता चलता है। राक्षसों के उपद्रव से तंग आकर विश्वामित्र अपने यज्ञ को अधूरा छोड़कर महाराज दशरथ के दरबार में आये, ऋषि के स्वागत में महाराज ने सम्मानजनक शब्द कहे और उचित आदेश से अपने को अनुगृहीत करने की प्रार्थना की। ऋषि ने भी लोहा गर्म देखकर अपनी मांग की चोट जमा दी और कहा—राजन् मुझे राक्षसों के उपद्रव से यज्ञ की रक्षा के लिए आपके पुत्र राम और लक्ष्मण का सहयोग चाहिए। मैं यही आशा लेकर आपके पास आया हूं। महाराज दशरथ ऋषि की इस मांग से हतप्रभ होकर बगलें झांकने लगे। राजपुरोहित वशिष्ठ ने अवसर की गम्भीरता को अनुभव करके तुरन्त हस्तक्षेप करते हुए राजा पर तीखा कटाक्ष करके कहा—

प्रतिश्रुत्य करिष्येति उक्तवाक्यमकुर्वतः।
इष्टापूर्तंबधोभूयात्तस्माद्रामंविसर्जय॥

राजन्! आपने ऋषि के स्वागत बचन में आज्ञा पालन का आश्वासन दिया है, अब यदि आप उसकी पूर्ति करने में हिचकते हैं तो धर्मशास्त्र की दृष्टि से आपके इष्ट और पूर्त नष्ट हो जावेंगे। अतः राम को ऋषि के साथ भेजना ही उचित है।

पुरोहित की इस भर्त्सना से राजा के होश ठिकाने आ गये और राम और लक्ष्मण को ऋषि के साथ जाने की अनुमति दे दी। न केवल राज दरबार में अपितु प्रत्येक परिवार में भी पुरोहित का अत्यधिक आदर था। देहात में अभी तक पारिवारिक परम्परा में यह बात चली आ रही है कि कृषक के घर नये अन्न की रोटी तब तक नहीं पकेगी जब तक कि प्रथम पुरोहित घर उस नये अन्न का प्रयोग न हो जावे।

इस सम्मान को बनाये रखने के लिए पुरोहितों को भी बड़ा तप और त्याग करना पड़ता था और कभी कभी तो प्राणों तक की आहुति भी देनी पड़ती थी।

मेवाड़ के इतिहास में प्रसिद्ध है कि एक आखेट को लेकर राणा प्रताप और शक्ति सिंह में विवाद हो गया। शक्ति सिंह कहते थे कि यह मेरे प्रहार से मरा है और राणा प्रताप का कहना था कि यह मैंने मारा है। झगड़ा यहां तक बढ़ा कि दोनों कट मरने को उद्यत हो गये। दोनों भाईयों के इस विवाद को शान्त करने के लिए पहले परोहित जी ने समझाकर शान्त करने का यत्न किया और तब भी

वे नहीं माने और एक दूसरे पर तलवार से प्रहार कर दिया तो पुरोहित जो दोनों के बीच में कूद पड़े और मारे गये। इस ब्रह्महत्या से दोनों को ही घोर पश्चाताप हुआ। किन्तु पुरोहित ने कर्तव्य पालन का जो उदाहरण उपस्थित किया उससे वे अमर हो गये।

किन्तु आगे चलकर धार्मिक संस्कारों की शिथिलता के कारण परोहित और यजमान दोनों का ही विचार और आचार की दृष्टि से पतन हुआ। पुरोहित मर्यादा को छोड़कर अपने यजमान को बरी बात में भी सहयोग कर उसे प्रसन्न रखकर अपना स्वार्थ साधने लगे। जब आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् स्व० धुरेन्द्र शास्त्री एक राजा के गुरु की हैसियत से उनके साथ क्षत्रिय महासभा के अधिवेशन में बैठे हुए थे तो पास को कुर्सी पर बैठे हुए एक दूसरे हिज़हाईनेंस महाराज ने पास की कुर्सी पर बैठे हुए अपने पुरोहित की ओर देखते हुए कहा—पुरोहित जी ! आज है तो ऐसा दिन जिसमें शराब नहीं पी जा सकती, किन्तु इच्छा बहुत हो रही है, कोई उपाय करिये। इतना सुनते ही पुरोहित जो ने कहा यदि ऐसा है तो थोड़ा गंगाजल मिलाकर पी लीजिये।

कहां वह समय जब वशिष्ठ ने घुड़क कर दशरथ को विश्वामित्र ऋषि के साथ राम को भेजने के लिए बाध्य कर दिया और कहां यह पतन कि पुरोहित ही पाप मार्ग में चलने के लिए यजमान के सहायक बन रहे हैं। हुआ यह कि पुरोहित स्वार्थवश अपने कर्तव्यपथ से विचलित हुए और इधर यजमान भो उनके प्रति तिरस्कार का भाव रखने लगे। कहावत वह चरितार्थ हुई "जैसी नकटी देवी वैसे हो ऊन पुजारी।" पुरोहितों की दुर्भावना से खीझे किसी संस्कृत कवि ने इस निम्न पद्य में अपने मन को भडांस निकाली है—

पुरीषस्य चरोषस्यहिंसायास्तस्करस्य च।
आद्याक्षराणि संगृह्य वेधाश्चक्रे पुरोहितम् ॥

परमात्मा ने पुरोष (मल) में से 'पु' लेकर, रोष में से 'रो' लेकर, हिंसा में से 'हि' और तस्कर में से 'त' लेकर पुरोहित बना दिया। इस पर किसी टिप्पणि को आवश्यकता नहीं।

अब आया युग आर्य समाज का। आर्य समाज ने जिस प्रकार धार्मिक क्षेत्र में विकृत अन्य परम्पराओं को सुसंस्कृत किया, उसी प्रकार इस पुरातन संस्था का भी जोर्णोद्धार करना चाहा। अब से लगभग ६०-७० वर्ष पूर्व पंजाब के कुछ आर्य समाजों में धार्मिक

संस्कारों के निर्वाह के लिए पुरोहित रखने का क्रम प्रारम्भ हुआ। अब प्रायः सम्पूर्ण भारत और विदेशों में नैरोबी, सिंगापुर और लन्दन के आर्यसमाजों में भी पुरोहित कार्यरत हैं। किन्तु अपवाद को छोड़कर कहीं भी आदर्श रूप में इस पद का गौरव सुरक्षित नहीं है। पुरोहित को भी एक वैतनिक कर्मचारी ही समझा जाता है और उसी प्रकार उसके साथ व्यवहार किया जाता है। यहां पुरोहित का वह स्वरूप भी प्रतिष्ठित नहीं हुआ जो पुरानी हिन्दु परम्परा में अब तक चला आता है। हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य परिवारों में प्रत्येक का पुरोहित परम्परा से चला आता है। उसे वे अपने परिवार का अंग मानते हैं। विवाह आदि के अवसर वह आवे, चाहे न भी आवे उसका कुछ देय भाग अवश्य सुरक्षित रखकर उसके घर पहुंचा दिया जाता है। आप विचार करें तो हमारे पूर्वजों ने इस पद की गरिमा को समझ कर इसे कितना महत्व दिया था और इसकी जड़ें हमारे परिवारों में कितनी गहरी समायी हुई थीं। कौन बालक किस संस्कार के योग्य हुआ है इसका ध्यान घर वालों से अधिक पुरोहित को होता था। मध्यकाल में लड़कियों के विवाह सम्बन्ध निश्चित करने के लिए तो जाते ही पुरोहित थे। पुरोहित के साथ इतनो आत्मीयता का सम्बन्ध आर्य समाज में स्थापित नहीं हो पाया। आर्य समाजियों में प्रत्येक कुल का पुरोहित हो यह आवश्यक ही नहीं समझा जाता। जहां तक मेरी जानकारी है केवल एक उदाहरण फीरोजाबाद के ऐडवान्स ग्लास वर्क्स के अधिपति सेठ बालकृष्ण का है जो श्री वाचस्पति जी शास्त्री को अपना कुल पुरोहित मानते थे और श्री शास्त्री जी के जीवन काल में प्रत्येक विशष अवसर पर श्री सेठ बालकृष्ण जी की एक पुत्री के विवाह पर मैं और स्व० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री आमन्त्रित थे। हम दोनों को गुरुकुल वृन्दावन की विधान सभा की बैठक में भाग लेकर फीरोजाबाद जाना था। श्री वाचस्पति जी उन दिनों रुग्ण थे। अतः हमने निश्चय किया कि आगरे में श्री वाचस्पति जी को देखते हुए फीरोजाबाद जावें।

हम लोग आगरे में श्री शास्त्री जी के घर उनसे मिले और उन्हें बताया कि हम सेठ बालकृष्ण की पुत्री के विवाह पर जा रहे हैं। श्री शास्त्री जी ने कहा कि "मैं तो उनका पुरोहित हूं। किन्तु मैं तो रोग के कारण जा नहीं सकूंगा।" हम लोग आगरा से चलकर

फीरोजाबाद पहुंचे तो देखा कि श्री बालकृष्ण जी कुछ फल मिठाई और वस्त्रादि श्री वाचस्पति जी के घर एक व्यक्ति के द्वारा भिजवाते हुए कह रहे थे। "गुरु जी वहीं से बेटी के गृहस्थ जीवन के लिए मंगलकामना कर दें।

विचार के देखें तो इस आत्मीयता का सम्बन्धों के स्थायित्व और उन्हें प्रभावोपेत बनाने में बहुत बड़ा हाथ था।

अतः आर्य समाज में कायाकल्प के लिए अन्यान्य उपायों के साथ-साथ पुरोहित संस्था को भी प्रभावी बनाना परम आवश्यक है। सबसे पूर्व तो पुरोहितों के लिए मान सम्मान का भाव होना चाहिए। एक धनी मानो सेठ अपने पुरोहित से विनयपूर्वक व्यवहार करेगा तो स्वभावतः शिष्ट व्यवहार का प्रभाव उसके परिवार के सभी सदस्यों के ऊपर होगा और वे लोग भी पुरोहित का उसी प्रकार आदर करेंगे और उसकी बात को मानेंगे। स्थिति यदि इसके विपरीत हो और सेठजी हो पुरोहित को साधारण समझ कर उपेक्षा का व्यवहार करें तो उस परिवार के नौजवान बच्चे तो पुरोहित के पैर ही नहीं जमने देंगे। इस व्यवहार के महत्व को हमारे पूर्वज समझते थे और यही कारण था कि विद्वान पुरोहित को आता देख-कर राजा भी मार्ग छोड़कर एक ओर खड़ा हो जाता था।

आर्य समाज के संघठन में आगे आने वाली पीढ़ी की बड़ी निराशाजनक स्थिति है। एक बड़े से बड़े नेता के घर में आर्य समाज उस नेता तक ही परिवेष्टित है। क्या हुआ थोड़ा बहुत लगाव नेता की सहधर्मिणी को है-किन्तु बच्चों को तो अपवाद रूप में ही कहीं हो सकता है। परिणाम यह होता है कि नेता को जीवनलीला समाप्त होने पर उस घर से आर्य समाज ही समाप्त हो जाता है। अतः प्रत्येक समर्थ आर्य समाज में योग्य, सक्रिय और चरित्रवान पुरोहितों की नियुक्ति अविलम्ब होनी चाहिए। उनके भरणपोषण के लिए सहृदयता और उदारता से व्यवस्था कीजिये। वे अपने निर्वाह के विषय में न केवल निश्चिन्त हों अपितु सरकारी अवसरों को छोड़कर भी धार्मिक क्षेत्र के कार्य को वरीयता दें। अधिकारी पुरोहितों की दक्षिणा को घूर घूर कर देखते रहें और उस दक्षिणा में से भी अपने मन्दिर का कमीशन लें। यह आर्थिक अशुचिता है और धार्मिक दृष्टि से अनैतिकता है। दक्षिणा पुरोहित की पत्नी मानी जाती है। जैसे किसी की पत्नी को घूर कर देखना पाप है, वही अनैतिकता

पुरोहित की दक्षिणा को ललचायी दृष्टि से देखने में भी है। जैसे कन्या का पिता वर को अपनी पुत्री वस्त्रों में आवेष्टित करके देता है, इसी प्रकार दक्षिणा भी खुले रूप में नहीं देनी चाहिए। उसकी घोषणा भी नहीं होनी चाहिए। न वह दक्षिणा दान के लिए निकाली राशि में से होनी चाहिए। दक्षिणा पुरोहित पर दया नहीं है, पारिश्रमिक है। दान वह होता है जहां किसी की पात्रता देखकर उसके आदर या साह्य के लिए कुछ द्रव्य अर्पित किया जाय।

पुरोहित पद को उपयोगी और प्रभावोपेत बनाने के लिए आर्य समाज के विचारक विद्वान श्री पं० भूदेव जी शास्त्री एम० ए० ने अपने एक लेख में बड़े महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं यहां मैं संक्षेप से उन्हीं का उल्लेख करके लेख समाप्त करता हूं।

पुरोहित के कर्तव्य

१. समस्त सदस्यों के साथ नियमित सम्पर्क रखना।
२. सदस्यों की सन्तानों का रजिस्टर रखना तथा समय-समय पर उनका समुचित संस्कार कराने की माता-पिताओं को प्रेरणा करना और संस्कार सम्पन्न कराना।
३. साप्ताहिक अधिवेशनों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहना तथा अधिवेशन को उपयोगी बनाना।
४. सदस्यों को पारस्परिक सुख-दुख में सहयोगी बनाते रहना।
५. महिलाओं, युवकों तथा बालकों के लिए आर्य स्त्री समाज, आर्य युवक समाज, आर्य कुमार सभा तथा आर्य बाल सभा आदि का संयोजन करना कराना।
६. आर्य समाज की पुस्तकालय वाचनालय सेवा को सक्रिय बनाये रखना।
७. आर्य समाज द्वारा संयोजित अन्य व्यायामशाला, आर्य वीर दल आदि गतिविधियों पर भी दृष्टि रखना तथा उन्हें पुष्ट करना।
८. आर्य बालकों की आर्य क्रीड़ा की व्यवस्था करना तथा क्रीडा के पश्चात् सम्मिलित सन्ध्या, एक भक्ति गीत का सम्मिलित गायन। इन कार्यों में पुरोहित की सतर्कता से आर्य समाज में नवजीवन का संचार होगा।

शमित्योम्

वैदिक वाङ्मय-एक परिचयात्मक शोध दृष्टि में

रूप किशोर शास्त्री एम० ए०, एम० फिल, रिसर्च स्कालर

वैदिक साहित्य संसार भर में अपनी विपुलता विशालता एव ज्ञानगरिमा के लिए सर्व स्वीकृत तथा विश्व विश्रुत है। यद्यपि मूलत: वेद चार ही हैं, परन्तु एतन्नि सुत वैदिक वाङ्मय अत्यन्त विशाल है। वेदों या संहिताओं के आधारभूत अथवा उनके ज्ञान, अभिप्राय एवं सिद्धान्तवलियों को स्पष्ट करने के प्रयोजन से प्राच्य ऋषियों, मनीषियों. विचारकों व आप्त पुरुषों के द्वारा समय-समय पर अनेक विध ग्रन्थों की रचना की गई, एतत् कारणात् उनका समावेश वैदिक साहित्य में किया गया। इस प्रकार वैदिक साहित्य एवं विषयापेक्षया मुख्यत: निम्न वर्गों में विभक्त कर सकते हैं।

१. वैदिक संहितायें।
२. वेदों की शाखायें।
३. ब्राह्मण ग्रन्थ।
४. आरण्यक और उपनिषदें।
५. सूत्र ग्रन्थ।
६. वेदांग।
७. उपवेद।
८. दर्शन।
९. स्मृतियां।

वैदिक संहिताएं

वेद का मूलत: अ ज्ञान है। यह मुख्यतया चार धातुज अर्थ प्रकट करता है। १. विद् विचारण, २. विद ज्ञाने, ३. विद्लृ लाभे और शब्द ४. विद् सत्तायाम्। प्रधानतया वेद पद्यात्मक हैं, गद्यात्मक भाग भी है। वैदिक पथ का ऋक् का ऋचा, गद्य का यजुण्

---

१. ऋक्साम यजुषी इति वेदास्त्रायीस्त्रायी अमरकोष १-६-३

और गीतात्मक छन्द रूप पर को साम कहा गया है। प्राच्यकाल में इन तीनों प्रकार के पदों के कारण त्रयी भी कहते थे।[1] परन्तु वैदिक मन्त्रों का संकलन जिस रूप में आज उपलब्ध है उसे संहिता कहा जाता है। संहिताओं के नाम हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

शाखाएं

ऋषियों ने अपनी-अपनी योग्यता और सुविधानुसार अपने शिष्यों के लिए मन्त्रों को पढ़ाया। किसी ने एक छन्द के सब मन्त्र एक साथ पढ़ाये। ग्रन्थ के एक देवता के सब मन्त्र एक साथ पढ़ाये। तथा अन्य किसी ने मन्त्रों को विषय उपयोग अथवा विनियोग के अनुसार क्रम में रखा। इस प्रकार सम्पादन क्रम से एक वेद की अनेक शाखाएं हो गई। एतद्कारणातर चारों वेदों की ११३१ शाखाओं के नाम मिलते हैं।

ऋग्वेद की	२१
यजुर्वेद की	१०१
सामवेद की	१०००
अथर्ववेद की	९
	११३१

शाखातत्व पर निवेदन करते हुए जैमिनि का मन्तव्य है कि शाखानाम प्रवचन के कारण है। २. शाखा का अभिप्राय यह कभी नहीं रहा कि वेदों का अमुक भाग शाखा है। भाग, अंश, चरण आदि भाग शाखा के नहीं अपितु पठन पाठन का क्रम या शैली ही है। चरण शब्द शाखा के लिये बहुशः प्रयुक्त हुआ है।[3] चरण शब्द

१. चत्वारो वेदाः साङगा सरहस्या वहुधा भिन्नाः एकशत मध्वर्यु शाखाः सहस्रवर्त्मा सामवेदा। एकविंशतिया वाह्वृच्यम्। नववाथर्वणा वेदः। महाभाष्य पस्पशाह्निक।

२. शाखया प्रवचनात्। मीमांसा दर्शन-१-१-३०

३. गत्रिचं चरणैः सह। महाभाष्य कारिका ४-१६३

अध्ययन, पठन पाठन एवं आचरण आदि अर्थ रखता है। चरण और शाखावादि शब्द वेदों के पठन पाठनादि की शैली या क्रम के ही वाचक हैं।[4]

ब्राह्मण ग्रन्थ

वैदिक वाङ्मय में संहिताओं के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रन्थों का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। ब्राह्मण निर्मित हैं और अनेक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। मन्त्र और यज्ञ के लिये प्रयुक्त किया गया है जो ग्रन्थ वेद मन्त्रों की व्याख्या कर तथा उनके अभिप्राय को स्पष्ट करें और यज्ञों की विधि एवं अनुष्ठानों को प्रतिपादित करें, उन्हीं के लिये ब्राह्मण संज्ञा दी गई है। महर्षि दयानन्द ब्राह्मणों के सम्बन्ध में व्याख्या करते हैं कि इनका नाम ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्म जो वेदों का व्याख्यान ग्रन्थ होने से ब्राह्मण नाम हुआ है।[5] दर्श पूर्णमास प्रकाश में आपस्तम्म परिभाषा सूत्र पर[6] टीका करते हुए कपर्दी का कथन है कि 'मन्त्री मनमात् ब्रह्मणमभिधानात्' अर्थात् मन्त्र नाम मनन से तथा ब्रह्म वेद का वर्णन होने से ब्राह्मण ऐसा अभिप्राय है। ब्राह्मण ग्रन्थों का प्रमुख विषय यज्ञों का प्रतिपादन तथा उनकी विधियों की सर्वांगीणता प्रस्तुति करना है। इनमें मन्त्रों, कर्मों तथा विनियोगों की विधिवत व्याख्या उपलब्ध होतो है। जैमिनीय भाष्य का शबर स्वामिने ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रतिपात्र विषयों में दश घटक तत्वों का निर्देश किया है।[1] अतः स्पष्ट है कि ब्राह्मण शब्द वेदों के व्याख्या भाव हैं। इस तथ्य को सायणाचार्य ने भी स्वीकार करते हुए कहा है कि ब्राह्मणों का रूप मन्त्रों के व्याख्यान का है। अतः आदि में

---

४. चरण शब्दाध्ययन वचनः। कैयट

५. ब्रह्मणां वेदानां इमानि व्याख्यानानि।

अनुभ्रमोच्छेदन- पृ० ६ बनारस १८८०

६. मन्त्र ब्राह्मणयो वेद नामधेयम्।

सूत्र ३२, अनन्दा श्रम सूत्र १९१४

---

१. हेतु निर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधि। परक्रिया पुराकल्पां व्यवधारण कल्पना उपमानं देशतेतं विषयो ब्राह्मणस्य च।

मन्त्र ही समाम्नात् है।[2] चारों वेदों के ब्राह्मणों की संख्या १४ है।

ऋग्वेदीय ब्राह्मण—ऐतरेय और सांख्यायन अथवा कौषीतकी।

यजुर्वेदीय ब्राह्मण=तैतरीय एवं शतपथ।

सामवेदीय[3] ताण्ड्य (पन्चविंश)
षडविंश ब्राह्मण
मन्त्र ब्राह्मण
देवताध्याय
वंश ब्राह्मण
संहितोपनिषद्
जैमिनीयार्षेय
जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण

अथर्ववेदीय— गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक उपनिषद

ब्राह्मण ग्रन्थों में तो याज्ञिक विधि विधानों तथा कर्मकाण्ड की प्रधानता है। कालान्तर में ऋषि लोग अरण्य अर्थात् एकान्त में आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं पारलोकिक विषयों का चिन्तन किया करते थे। आत्मा क्या है। सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार हुई, सृष्टि के मूल तत्व कौन से हैं, समूचि सृष्टि का नियामक एवं कर्ता कौन है, जड़ प्रकृति से भिन्न चेतन सत्ता का क्या स्वरूप है इत्यादि मूलभूत आध्यात्मिक प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार विनिमय किया करते थे। इन्हीं दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं पारलोकिक प्रश्नों पर विशद विवेचन समस्त उपनिषदें व आरण्यक हैं। इनके रचयिता चिन्तक ऋषि मुनि सांसारिक समस्याओं से उपराम होकर गम्भीर चिन्तन सागर में व्यावृत रहा करते थे। यह कथन निस्सन्देहास्पद है कि जिस प्रकार दही से मक्खन, मलयाचल से चन्दन और औषधियों से अमृत प्राप्त होता है उसी प्रकार वेदों या वेद विद्या से आरण्यकों एवं उपनिषदों का प्रादुर्भाव है। अरण्यकों की संख्या इस प्रकार है, जो अधुना उपलब्ध हैं:—

ऋग्वेदीयारण्यक—ऐतरयोरण्यक

---

२. ब्रह्मणस्य मन्त्र व्याख्या न रूपत्वात् मन्त्राः एवादों समाम्नाताः। तैतरीय संहिता की भाष्य भूमिका।

३. आजकल लेखक इन्हीं सामवेदीय सभी ब्राह्मणों पर दिल्ली विश्व विद्यालय की पी. एच. डी. के लिये शोधरत है।

कौषीतकि आरण्यक

शांखायन आरण्यक

यजुर्वेदीयारण्यक—वृहदारण्यक दूसरा नाम माध्यन्दिन यह माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण से निसृत भाग है।

वृहदारण्यक। काण्व।

तैतरीयारण्यक

मैत्रायणीय आरण्यक या वृहदारण्यकचरक शास्त्रोक्त। वैसे यह आरण्यक अब मैत्रयूपनिषद् के नाम से प्रसिद्ध है।

सामवेदीयारण्यक—तलवकार आरण्यक या जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण।[3]

अथर्ववेद के आरण्यक सम्प्रत्यपि उपलब्ध नहीं है।

यद्यपि इस समय प्राप्त उपनिषदों की संख्या लगभग २७५ है[4] तथापि प्रामाणिक उपनिषद् लगभग ११ मानी गई हैं जिनकी संख्या इस प्रकार है:—ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डूक्य, प्रश्न, ऐतरेय, तैत्तरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक और श्वेताश्वत।

सूत्र ग्रन्थ

वेदों द्वारा प्रतिपादित या उन पर आधारित कर्मकाण्ड के विधि विधान का निरूपण श्रोत सूत्रों द्वारा किया गया है। प्राचीन भारतीय चिन्तक गृहस्थ आश्रम को सब आश्रमों में प्रधान मानते रहे और अन्य सब आश्रम इसी पर आश्रित समझते थे। अतः ग्रहस्थ के कर्त्तव्यों तथा धर्मो का विशेष रूप से प्रतिपादन गृह सूत्रों द्वारा किया गया है। इनमें अनेक संस्कारों का विधान जिनका प्रयोजन मानव जीवन की मर्यादा मर्यादित करना तथा उच्च आदर्शों को सन्मुख रखकर कर्त्तव्यों का बोध कराना है और व्यक्ति का परिवार से कैसा सम्बन्ध रहे इस चिन्तनधारा के अन्तर्गत व्यक्तिगत तथा सामाजिक कल्याण, वर्णाश्रम व्यवस्था के कारण सूत्रों की रचना हुई वैदिक साहित्य में सूत्रभाग तीन प्रकार के हैं—१. श्रोत्र सूत्र २. गृह्य सूत्र ३. धर्मसूत्र।

१. आरण्य च वेदेभ्य औमातिभ्यो मृत तथा। महाभारत शान्तिपर्व ३३१-१

२. देखे—वैदिक वाङ्मय का इतिहास-प्रथम भाग-प० भगवद्त्त

३. इसी ब्राह्मण ग्रन्थपर लेखक लघु शोध प्रबन्ध लिख चुका है।

४. कल्याण—उपनिषद अङ्क प्रथम भाग

वेद में पुरोहित की स्थिति

(वेदमनीषी श्री मनोहरलाल जी विद्यालंकार)

वेद में पुरोहित किसे कहते हैं ? और उसके क्या कर्त्तव्य हैं ? इस पर विचार करने से पूर्व, यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि वेद के शब्द रूढ़ न होकर यौगिक हैं। इस सिद्धान्त को पुरोहित शब्द भी पुष्ट करता है।

अमर कोश में पुरोधास्तु पुरोहितः' कहकर दोनों को पर्याय-वाची माना है। निरुक्तकार ने २-१२ में इसकी व्युत्पत्ति 'पुर एनं दधति' करके, इसका अर्थ माना है कि किसी भी आयोजन में जिसे आगे रक्खा जाए, उसे पुरोहित कहते हैं। हलायुध कोश कारने पुरोऽग्रे दधाति मंगलम्' व्युत्पत्ति करके पुरोधा या पुरोहित उसे माना है जो आगे होकर—अपने समाज या अनुयायी वर्ग का कल्याण करता है।

इन व्युत्पत्तियों और वेद के शब्दों को यौगिक मानने के सिद्धान्त के आधार पर पुरोहित शब्द के अर्थ राजा, राष्ट्रपति, मन्त्री सेनापति, गुरु तथा जप और यज्ञ कराने वाला ऋत्विज भी हो सकते हैं। वेद के उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाएगा, कि वेद में पुरोहित शब्द इन सब अर्थों में प्रयुक्त हुवा है। यदि इसका अर्थ केवल लौकिक रूढ़ पुरोहित करेंगे, तो वेदार्थ की संगति नहीं हो पाएगी।

पुरोहित शब्द का वेद मन्त्रों द्वारा अनेकार्थों में निदर्शन

१. अग्निमीड़े पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्। ऋक् १-१-१

इस मन्त्र में अग्नि को पुरोहित कहा है। यहां अग्नि का अर्थ परमात्मा, आत्मा, नेता, पुरोहित और भौतिक आग—कुछ भी किया जा सकता है। लेकिन एक बात सिद्ध है कि आप जिसे भी पुरोहित बनाते हैं—उसे अग्नि के ऊपर कहे अर्थों के समान ही

महत्व प्रदान करना होगा। जब तक आप उसे वह महत्व प्रदान नहीं करते तब तक वह पुरोहित का कार्य नहीं कर सकता. वह नेता (अग्नि) नहीं सेवक ही बना रहेगा।

२. असि ग्रामेष्ववितापुरोहितोऽसि यज्ञेषु मानुषः ।।ऋक् १-४४-१०

ग्रामों या संगठनों में मानव पुरोहित ही यज्ञों का संचालक और आपत्ति आने पर संगठन का रक्षक तथा शान्ति के समय आगे बढ़ाने का काम करता है। इसलिये ग्रामों में ग्रामणी को भी पुरोहित कह सकते हैं।

३. यद् देवानां मित्रमहः पुरोहितोऽन्तरो यासि दूत्यम।
ऋक् १-४४-१२

यह पुरोहित या नेता (अग्नि) ही विद्वानों का महान् मित्र होता है, और मतभेद, विरोध या संघर्ष होने पर यही दूत कार्य करके इनका निवारण करता है। इस तरह दूत भी पुरोहित होता है।

४. स सुक्रतुः पुरोहितो दमे दमेऽग्निर्यज्ञस्याध्वरस्य चेतति। ऋत्वा वेधा इषूयते विश्वा जातानि पस्पशे।

यतो घृतश्रीरतिथिरजायत वह्निर्वेधा अजायत। ऋक् १-१२८-४

यह पुरोहित ही अपने उत्तम कर्मों द्वारा प्रत्येक घर का नेता या गृहपति होता है। प्रत्येक कार्य यज्ञ भावना से और बिना हिंसा के सम्पन्न करता है। यह जगत् में ब्रह्मा की तरह घर के प्रत्येक प्राणी का अपने कर्म द्वारा स्पर्श करता है, और उसे इषु की तरह गतिमय बनाता है। अपने कर्त्तव्य कर्मों में ज्ञान दीप्त रहने के कारण इसकी अतिथि की तरह पूजा होती है। सारे गृहस्थ का वहन करने के कारण इसे घर या समाज में ब्रह्मा का स्थान प्राप्त होता है। अर्थात् गृहपति, सभापति तथा राष्ट्रपति तीनों को अपने आधीन प्राणियों को देख भाल करने के कारण पुरोहित कह सकते हैं।

५. स संनयः स विनयः पुरोहितः स सुष्टुतः स युधि ब्रह्मणस्पतिः।
चाक्ष्मो यद् वाजं भरते मती धनादित् सूर्यस्तपति तप्यतुर्वृथा।।
ऋक् २-२४-९

यह पुरोहित अर्थात् नेता या अध्यक्ष उत्तम नीति को विनयपूर्वक अपनाता है, इसलिये सब इसकी प्रशसा करते हैं। युद्धकाल में यह

विचक्षण बनकर अन्न और धन का भरण करने के कारण ब्रह्मण-स्पति बन जाता है और फिर सूर्य की तरह दीप्त होकर शत्रुओं और रुष्टों को तपाता है, इसके सामने सूर्य का तेज भी फीका पड़ जाता है। यहां वास्तव में मुख्य सेनापति या राष्ट्रपति या राजा को पुरोहित कहा है।

६. यह विचक्षण नेता बड़े बड़े आयोजनों को पूरा करता है, इसलिये सब विद्वानों का पुरोहित बन जाता है। इसे सब संगठन अपना अध्यक्ष बनाना चाहते हैं। ऐसे बहुविज्ञ, तथा दमयुक्त जितेन्द्रिय की सबको सेवा करनी चाहिये। आवश्यक भोग्य पदार्थों का प्रबन्ध करने वाले और प्रत्येक कर्म को यज्ञ का रूप देने वाले ऐसे वैश्वानर पुरोहित को सबको सदा नमस्कार करना चाहिये— अर्थात् उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिये।
मन्त्र देखिये—

७. नमस्यत हव्यदातिं स्वध्वरं दुवस्यत दम्यं जातवेदसम्।
रथीॠतस्य वृहतो विचर्षणिरग्निर्देवानामभवत्पुरोहितः॥
ऋक् ३-२-८

वास्तव में अगुआ बन कर सब कार्यों को करने वाला, जहां तक संभव हो बिना हिंसा के सब का हित सम्पादक, बुद्धिपूर्वक धन कमाने वाला, मानव पुरोहित ही वास्तविक यज्ञ को जानता है और वही निरन्तर इससे लाभ उठाता है।

होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः। अग्निरिषितो धियावसुः।
ऋक् ३-३-२

अग्निर्होता पुरोहितोऽध्वरस्य विचर्षणिः। स वेद यज्ञमानुषक्।
ऋक् ३-११-१

पुरोहितों का महत्व

१. पुरोहित अर्थात् नेता का महत्व इसमें है कि वह सारे समाज को मित्र भाव से देखे, उनके कष्टों और दुर्गति करने वाले दुर्गुणों को दूर करे। यदि दुष्ट जन अपनो दुष्टता का त्याग न करें तो उनका दण्ड द्वारा नियमन करें। इसलिये वेद ने कहा है कि सच्चा पौरोहित्य, मित्रावरुणौ देवों की सम्मिलित भावना ही कर सकती है। राष्ट्र की ओर से प्रजा के लिये किये जाने वाला प्रत्येक आयोजन यज्ञ है, और

वह तभी सफल हो सकता है जब उसे मित्रावरुणों की भावना से किया जाए ।

इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वा दुर्गापिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभि. सदा नः ॥

ऋक् ७-६०-१२

२. जिस तरह सूर्य सबको प्राणशक्ति प्रदान करने के कारण महान् पुरोहित कहलाता है, उसी तरह पुरोहित पद (नेता) पर स्थित व्यक्ति को अपनी प्रजा को अपने आचरण द्वारा प्राण शक्ति प्रदान करके, और उनमें दुर्दमनीय विभु तेज उत्पन्न करके सूर्य के समान महान् बनना चाहिये ।

वट् सूर्य महां असि सत्रा देव महाँ असि ।
महाँ देवानामसुर्यः पुराहितो विभु ज्योतिरदाभ्याम् ॥

ऋक् ८-१०१-१२

यह मन्त्र यजुः ३३-४० और अथर्व २०-५८-४ में भी इन्हीं शब्दों में आया है ।

३. पुरोहित का महत्व इसी में है कि वह पृथिवी पर दिव्यगुण वाले मनुष्यों को मान प्रदान करे । उन्हें स्थानों पर नियुक्त करे, उनका निरीक्षण करता रहे, और इस प्रकार अपने वस्त्रों को सदा शुभ्र बनाए रहे । उसे अपयश की कालिमा कभी मलिन न कर सके । यह पुरोहित राजा या राष्ट्रपति हो हो सकता है ।

स तु वस्त्राण्यध पेशनानि वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः ।
अरुषो जातः पद इलायाः पुरोहितो राजन्यक्षीह देवान् ॥

ऋक् १०-१-६

४. इसलिये वेद का आदेश है कि जिस नेता (अग्नि) में ऋषियों के समान क्रान्त दृष्टि हो, जो आचरण में पवित्र हो, पञ्चजनों का हित चाहने वाला हो उसी को पुरोहित समझना चाहिये । ऐसे महान् कीर्ति वाले, ऐश्वर्यों से युक्त व्यक्ति की ही अपने प्रमुख या राष्ट्रपति के रूप में कामना करनी चाहिये ।

अग्नि ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम् ।

ऋक् ९-६६-२०

५. ऐसे अंग अंग से दृढ़, मन से अच्यृत, व्यक्ति को ही, जो सदा कष्ट और आवश्यकता के समय आगे रहता हो अपना अध्यक्ष बनाना चाहिये। क्योंकि ऐसा व्यक्ति ही हम पर आक्रमण करने वाले अथवा किसी भी प्रकार की कृत्या (अंग भंग) करने वाले बाह्य, और आन्तर शत्रुओं को अच्छी तरह से काट कर अथवा पीछे ढकेल कर उन्हें समाप्त करने में समर्थ हो सकता है।

प्रतीचोन आंगिरसोऽध्यक्षो नः पुरोहितः।
प्रतीचीः कृत्या आकृत्यामून्कृत्याकृतो जहि ॥
अथर्व १०-१-६

पुरोहित के कर्तव्य

१. वेद के अनुसार राष्ट्र का अध्यक्ष, राष्ट्र के प्रमुख आयोजनों, सैन्य विभागों, मन्त्रालयों, निगमों के प्रमुख सभी पुरोहित हैं। यदि राष्ट्र के ये पुरोहित सदा जागरूक रहें। अपने कर्त्तव्यों का पालन करते रहें। अपने विभागों में भ्रष्टाचार के घुन को न लगने दें, तो राष्ट्र में सर्वत्र उत्तम वाणियां सुनाई दें। एक दूसरे की प्रशंसा करे। प्रतिदिन किसी नये आविष्कार, पीड़ितों को सुख सुविधा प्रदान करने वाले नये आयोजन के समाचार सुनने को मिलेंगे। शासन की निन्दा और उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार के भण्डाफोड़ के दुष्ट समाचार कान में न पड़ें। इसीलिये वेद कहता है—

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा ॥ यजुः ९-२३

२. जिस राष्ट्र का पुरोहित अपने नाम को सार्थक बनाता है, उसके राष्ट्र में ब्राह्म शक्ति और क्षात्र शक्ति प्रबुद्ध रहती हैं, राष्ट्र सदा विजयशील बना रहता है। उसमें किसी प्रकार की जर्जरता नहीं आती।

संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम्।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येशामस्मि पुरोहितः। अथर्व ३-१९-१

३. इस राष्ट्र के बली नेता पुरोहित का कर्तव्य है कि अपने राष्ट्र पर आक्रमण करने वाले शत्रुओं को जीत कर उन्हें वैसे ही पद दलित करे जैसे रथी पदातियों को करता है सभी राष्ट्र विरोधिनी शक्तियां उसकी द्युति से निस्तेज हो जाएं।

अयमग्निः सत्पतिर्वृद्धवृष्णो रथीव पत्तीनजयत्पुरोहितः।
नाभा पृथिव्या निहितोदविद्युतदधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः।।
अथर्व ६-६४-१

पुरोहितों का अर्थ

इस प्रकार वेद मन्त्रों के आधार पर हमने देखा कि पुरोहित किसे कहते हैं। पुरोहित केवल संस्कार कराने वाला या जपादि करने वाला सामान्य ब्राह्मण नहीं; अपितु राष्ट्र को उन्नत करने वाला प्रत्येक विभागाध्यक्ष, राष्ट्रीय कार्यों में लगा, छोटे से छोटे विद्यालय और व्यापार का प्रमुख, सामाजिक और धार्मिक जागृति उत्पन्न करने वाले संगठनों के उत्तरदायी नेता—सभी पुरोहित हैं!

इन सबका नियन्त्रण करने वाले भिन्न-भिन्न मन्त्रालयों के निरीक्षक मन्त्री, और सब प्रकार की रक्षा करने वाली सेनाओं या आरक्षी दलों के सेनापति भी पुरोहित हैं।

इन सबको सामञ्जस्य में रखने वाला राजा सबसे बड़ा या प्रमुख पुरोहित है। इसीलिये क्रान्तदर्शी विचारक मनुष्यों को चाहिये कि वे अपने छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कार्य के प्रमुख पद के लिये ऐसे व्यक्ति को चुने जो उनका वास्तव में नेता और पुरोहित बनने के योग्य हो।

अग्निदेवो देवानामभवत्पुरोहितोऽग्निं मनुष्या ऋषयः समीधिरे।
अग्निं महो धनसातावहं हुवे मृलीकं धनसातये।
ऋक् १०-१५०-४

पुरोहित को अत्यन्त जितेन्द्रिय तथा समाज की वृद्धि, सुख के लिये किये जाने वाले प्रत्येक कार्य में अगुवा बनना चाहिये, क्योंकि जिसे आदेश कर दे वही नेता (अग्नि) बन जाता है।

अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृलीकाय पुरोहितः। ऋक् १०-१५०-५

इस प्रकार यह पुरोहित शब्द अपने वेद में आए प्रयोगों द्वारा "वेद के शब्दों के अर्थ यौगिक होते हैं", इस सिद्धान्त को भी पुष्ट करता है।

स्विष्ट कृत होम तथा प्रायश्चित्ताहुतियां

स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती-संन्यास आश्रम गाजियाबाद

आर्य जगत् के प्रायः विद्वान् एवम् अधिकांश आर्य जनता स्विष्टकृत होम को ही प्रायश्चित्ताहुति समझते हैं। निम्नलिखित अवतरण से मेरी बात ठीक से आपकी समझ में आ जायेगी।

माननीय प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री अपनी पुस्तक वैदिक यज्ञ दर्शन के पृ० ६८ पर लिखते हैं कि—इसके अनन्तर स्विष्टकृत आहुति आती है। यह प्रायश्चित्त की आहुति है। अतः यह सु+इष्ट+कृत है। यज्ञ में मन्त्र आदि पढ़ते समय या क्रिया आदि में गलतियां हो जाती हैं। उस समय यह आहुति देकर पुनः गलती को सुधार कर वह कर्म पुनः किया जाता है। ऐसा नहीं है कि गलती की हुई का इस मन्त्र से आहुति देने के बाद सुधार हो जावेगा। यह आहुति देकर यदि मन्त्र गलत पढ़ा गया था तो शुद्ध मन्त्र पढ़ के आहुति पुनः देनी चाहिए। यदि क्रिया में व्यतिक्रम था तो उस क्रिया को शुद्ध करके पुनः करना चाहिए।

इसी ग्रन्थ के पृ० ७३ पर आप पुनः लिखते हैं कि—कुछ लोग स्विष्ट कृत आहुति को पूर्णाहुति के पूर्व ही प्रामाणिक मानते हैं। मध्य में नहीं। परन्तु संस्कार विधि में जहां पर सामान्य प्रकरण में यह मन्त्र लिखा है वहां पर तो उसे बोलकर आहुति देना ही चाहिए। बाद में पूर्णाहुति के पूर्व भी देनी चाहिए। जो लोग सामान्य प्रकरण में यथा स्थान आए हुए 'यदस्य कर्मणः' से वहां पर आहुति न देने के और केवल अन्त में देने के पक्ष में हैं, वे इस मन्त्र को केवल प्रायश्चित्त का मन्त्र ही समझते हैं। अतः वे समझते हैं कि न्यूनता अगर कोई हुई है तो उसका तो अन्त में ही प्रायश्चित्त करना चाहिए। इसलिए सामान्य प्रकरण के मध्य में आहुति नहीं देनी चाहिए। परन्तु यह ठीक नहीं है। अगर किसी को ज्ञात हो जावे कि मैं गलत मन्त्रोच्चारण करता हूं और गलत क्रिया कर दी है तो उसी समय

इस मन्त्र से आहुति देकर गलत क्रिया को ठीक करके पुनः करना चाहिए। अन्त में तो इसलिए आहुति दी जाती है कि ऐसी कोई त्रुटि हो गई जो ज्ञान में नहीं है वह स्विष्टकृत हो। बड़े यज्ञों में तो जिस समय भी कोई गलती हो जाती है, इस मन्त्र से आहुति देकर पुनः उस गलती को ठीक करके उसी सही रूप में फिर से किया जाता है।

माननीय शास्त्री जी के लेख का सार यह है कि :

१. 'यदस्य कर्मणः' यह प्रायश्चित्ताहुति का मन्त्र है।
२. प्रायश्चित्ताहुति के रूप में जहां त्रुटि हो वहां पर इस मन्त्र से आहुति देनी चाहिए।
३. संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में यथा-स्थान यह आहुति देनी चाहिए।
४. वास्तव में प्रायश्चित्ताहुतियों का विषय माननीय आचार्य जी अभी देख नहीं पाए हैं।

जैसे इस लेख से यह स्पष्ट हो रहा है कि माननीय श्री पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री 'यदस्य कर्मणः' मन्त्र को प्रायश्चित्ताहुति का मन्त्र मानते हैं, वैसे ही अन्य अनेक विद्वानों का भी ऐसा ही मन्तव्य है। परन्तु सिद्धान्त रूप में 'यदस्य कर्मण' यह मन्त्र केवल स्विष्टकृत आहुति के लिए हीं है। इसका नामकरण इस बात को स्पष्ट करता है कि यह प्रायश्चित्ताहुति का मन्त्र नहीं है। स्विष्टकृत आहुति तथा प्रायश्चित्ताहुति दोनों परस्पर भिन्न-भिन्न दो कर्म हैं, इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए। साथ ही यह भी सर्वदा ध्यान रखना चाहिए कि एक प्रधान कर्म की स्विष्टकृत आहुति केवल एक ही होती है, अनेक नहीं, परन्तु त्रुटियों के अनुसार प्रायश्चित्ताहुतियां अनेक होंगी तथा उनके मन्त्र भी भिन्न-भिन्न होंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज सर्वशास्त्र पारंगत विद्वान, मन्त्रद्रष्टा, आप्तपुरुष, कल्पकार एवम् निषणात विनियोजक आचार्य थे। उन्होंने संस्कार विधि, एक विधि ग्रन्थ के रूप में लिखी। इसलिए अपने पूज्य आचार्य के विनियोग क्रम का आदर करते हुए स्विष्टकृत आहुति ग्रन्थ में जहां पढ़ी गई है वहीं पर देनी चाहिए। यज्ञ कर्म के अन्त में फिर से यह आहुति देना मनमानी ही होगी। अतः ऐसा करना ठीक नहीं है। वैसे यदि तनिक विचार किया

जावे तो यथास्थान में दी हुई भी यह आहुति कर्म के अन्त में ही है। बीच में नहीं। इस विषय को हमने अपने लघु ग्रन्थ 'समाधान' में विस्तार से लिखा है पाठक वहीं देखने की कृपा करें।

रही बात प्रायश्चित्त की। सो यह आहुति प्रायश्चित्ताहुति नहीं है। हां इस मन्त्र में सर्वप्रायश्चित्ताहुतियों के नाम से प्रायश्चित्ताहुतियों का संकेत अवश्य है। तदनुसार अष्टाज्याहुतियों में से 'इमं मे वरुण' तत्वायामि, तथा भवतन्नः समनसौ, इन तोन मन्त्रों के अतिरिक्त 'त्वन्नो अग्ने, स त्वंनो अग्ने, ये तेशतं वरुण, अयाश्चाग्ने, तथा उदुत्तमवरुण, ये पांच मन्त्र सर्व प्रायश्चित्ताहुति मन्त्र कहलाते हैं। (द्रष्टव्य-कात्यायन श्रौत सूत्र अध्याय २५ कण्डिका। सूत्र १० तथा पारस्कर गृह्य सूत्र काण्ड। कण्डिका ५ सूत्र ५) दर्श पौर्ण मासादि इष्टियों और अग्निष्टोमादि बड़े यज्ञों के मध्य में मन्त्रोच्चारण या सतत् अनुष्ठान में त्रुटि होने पर यदि ऋग्वेद के किसी मन्त्रोच्चारण में या उस मन्त्र से अनुष्ठोयमान कर्म में कोई त्रुटि होती है तो ब्रह्मा अथवा यजमान 'ओ३म् भूः स्वाहा' इस प्रकार प्रायश्चित्ताहुति देवे। यदि यजुर्वेद से तो 'ओ३म् भुवः स्वाहा' यह प्रायश्चित्ताहुति देवें। यदि सामवेद से तो 'ओम् स्वः स्वाहा' इस मन्त्र से प्रायश्चित्ताहुत्ति देवे। यदि चारों वेदों से अनुष्ठीयमान कर्म में कोई त्रुटि होती है तो 'ओ३म् भूर्भुवः स्वः स्वाहा' इस प्रकार प्रायश्चित्ताहुत्ति देने का विधान है। (द्रष्टव्य कात्यायन श्रौत सूत्र अध्याय २५ कण्डिका सूत्र ५ से ९ तक)

अतः यज्ञों के बीच मन्त्रोच्चारण या अनुष्ठान में हुई त्रुटि के लिए स्विष्टकृताहुति मन्त्र से प्रायश्चित्ताहुति देना शास्त्रानुमोदित न होने से अवैध एवम् अनुचित होगा। क्योंकि यह प्रायश्त्ताहुति का मन्त्र नहीं है। पुनरपि निवेदन है कि यह केवल स्विष्ट कृताहुति मन्त्र है। अस्तु।

स्विष्ट कृताहुति केवल काम्य कर्मों और नमित्तिक कर्मों में ही दी जाती है। दंनिक अग्निहोत्र में नहीं दी जाती परन्तु प्रायश्चित्ताहुतियों का क्षेत्र काम्य और नैमित्तिक कर्म के साथ-साथ दंनिक अग्निहोत्र भी है। यथा—

सायं होमेहोने प्रातः—(१) ओ३म् अग्नेय स्वाहा (२) ओ३म् वैश्वानराय स्वाहा। अर्थात् सायंकाल का अग्निहोत्र न हो सकने की

अवस्था में ये दो प्रायश्चित्ताहुतियां देकर फिर सायंकाल के छुटे अग्नि होत्र का अनुष्ठान करके फिर प्रातःकाल का दैनिक अग्निहोत्र करना चाहिए। इसी प्रकार—

प्रातर्होमहोने सायं—(१) ओ३म् अग्नेय स्वाहा। (२) ओ३म् पार्थकृते स्वाहा। ये दो प्रायश्चित्ताहुतियां देकर फिर प्रातः काल का दैनिक अग्निहोत्र पूरा करके पश्चात् सायंकाल का दैनिक अग्निहोत्र करना चाहिए। (द्रष्टव्य-अग्निवेश गृह्य सूत्र)

कात्यायन श्रौत सूत्र तथा पारस्कार गृह सूत्र के विधान को ध्यान में रखते हुए गृह कर्मों में भी व्याहृत्याहुतियां ही प्रायश्चित्ताहुतियों के रूप में विधान की गई हैं। इनका कहीं स्विष्टकृत से पूर्व और कहीं स्विष्टकृत के बाद देने का विधान मिलता है। अन्य प्रायश्चित्ताहुतियों का विधान भी प्रायः स्विष्टकृत के पश्चात् ही मिलता है। संस्कार रत्न माला जैसे बृहत् काय ग्रन्थ में तो स्विष्टकृत के बाद संकल्प पूर्वक सोलह प्रायश्चित्ताहुतियों का विधान किया गया है। अतः यह कहना कि स्विष्टकृत आहुति अनुष्ठान के अन्त में पूर्णाहुति के पूव ही होनी चाहिए, ऐसा नियम कल्पशास्त्र में नहीं मिलता। अपितु दोनों ही प्रकार मिलते हैं। अतः संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में स्विष्टकृत होम का जहां विधान है वहीं पर यह आहुति देनी चाहिए।

कुछ माननीय विद्वानों का कहना है कि 'पाठक्रमादर्थं क्रमोबलीयान्' अर्थात् पाठक्रम की अपेक्षा अर्थक्रम बलवान् होता है। अतः अर्थक्रम की दृष्टि से स्विष्टकृत आहुति यज्ञ के अन्त में ही होनी चाहिए।

इस विषय में हमारा नम्र निवेदन है कि यह नियम तो किसी मन्त्र का किसी कर्म में विनियोग करते समय अपनी यह व्यवस्था देता है। पहले से विनियुक्त मन्त्र एक प्रामाणिक आचार्य एक कर्म में विनियोग कर चुका है, उस विनियोग क्रम को इस नियम के आधार पर कैसे भंग किया जा सकता है। इस प्रकार न तो कोई विनियोग स्थिर रह पाएगा, न ही विनियोजक आचार्य की प्रामाणिकता स्थिर रह सकेगी। और न ही किसी कर्म के अनुष्ठान क्रम में कोई व्यवस्था रह पाएगी। 'पाठ क्रमार्थदर्थक्रमो बलीयान्' यह नियम यहां चरितार्थ नहीं हो सकता।

माननीय प्राज्ञ महानुभाव ! 'पाठ क्रमादर्थ क्रमो बलीयान्' जहां पर यह नियम है वहां पर यह नियम भी तो है कि—

स्व सत्र पर सूत्रयो विरोधे स्व सूत्रमेवाऽऽत्रयेत् ।
स्व शाखा त्यागे दोष श्रवाणात् ॥

(सत्पाषाढ़ श्रौत सूत्र गोपीनाथ भट्ट वृत्ति पृ० ६४७)

इस नियम के अनुसार हमें अपने सूत्र=कल्प ग्रन्थ संस्कार विधि के अनुसार ही यज्ञादि कर्मों का अनुष्ठान करना चाहिए। 'पाठ क्रमादर्थ क्रमो बलीयान्' जैसे पर सूत्र का अवलम्बन करके स्व सूत्र =अपने कल्प ग्रन्थ के क्रम में परिवर्तन कर अनुष्ठान करके हमें दोषी नहीं बनना चाहिए।

सारांश रूप में पुनः निवेदन है कि—

१. स्विष्टकृताहुति मन्त्र प्रायश्चित्ताहुति मन्त्र नहीं है।
२. एक प्रधान कर्म में केवल एक ही स्विष्टकृत आहुति होती है, अनेक नहीं। अतः एक कर्म में दूसरी बार यह आहुति नहीं देनी चाहिए।
३. अष्टाज्याहुतियों के ३।४ तथा ८ वें मन्त्र को छोड़कर शेष पांच मन्त्र सर्व प्रायश्चित्ताहुति मन्त्र कहे जाते हैं।
४. गृह कर्मों में व्याहृत्याहुतियां ही प्रायश्चित्ताहुतियों के लिए विहित हैं। ये कहीं स्विष्टकृत आहुति से पूर्व और कहीं पश्चात् विनियुक्त हुई हैं।
५. दर्शपोर्णमासादि इष्टियों तथा अग्निष्टोमादि समस्त बड़े-२ यज्ञों में प्रतिवेद के क्रम से 'ओ३म् भूः स्वाहा। ओ३म् भुवः स्वाहा। ओ३म् स्वः स्वाहा। ओ३म् भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इस प्रकार प्रायश्चित्ताहुत्तियां देने का विधान है।
६. इसी प्रकार विभिन्न अनुष्ठानों के लिए विभिन्न मन्त्र प्रायश्चित्ताहुतियों के लिए विधान किए गए हैं, ऐसा जानना।

आर्य समाज और दक्षिणा

(शास्त्रार्थ महारथी पं० श्री देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री, सांख्य तीर्थ
आचार्य गुरुकुल सिकन्दराबाद)

दक्षिणा के सम्बन्ध में आर्य समाज ने जो प्रस्ताव पास किया है मेरी सम्मति में कमेटी को उस पर पुनर्विचार करना चाहिये क्योंकि आर्य समाज के लिये पुरोहित का पद अत्यन्त माननीय है और दक्षिणा यजमान के हृदय की श्रद्धा का फल है उसका ग्रहण पुरोहित को ही करना चाहिये। उसके लेने का अधिकार किसी अन्य को इस लिये नहीं क्योंकि वह पुरोहित को ही लक्ष्य करके दी जाती है। और जितनी ज्यादा मिलती है उससे पुरोहित की योग्यता और जिस आर्य समाज का वह पुरोहित है उस का सम्मान सूचित होता है आर्य समाज को इस बात का अभिमान होना चाहिये कि हमारे पुरोहित जी की इतनी योग्यता है कि उसे सर्वत्र यजमान आदर की दृष्टि से देखते हैं और अधिक से अधिक दक्षिणा देकर आर्य समाज को गौरवान्वित करते हैं। यह कहा जा सकता है कि पुरोहित समाज का नौकर है और उसे वेतन मिलता है संस्कार में जो समय जाता है उसका प्रतिफल वेतन रूप में ले लेता है तब क्यों न कुछ भाग दक्षिणा का समाज को मिले, यह युक्ति ठीक है, इस दशा में पुरोहित को चाहिये अपनी दक्षिणा के साथ वह आर्य समाज के लिये यजमान से दान देने की प्रेरणा करे फिर चाहे यजमान थोड़ा दे या बहुत परन्तु जो कुछ दे समाज को उसे ग्रहण करना चाहिये, यदि ऐसा न कर के समाज पुरोहित की दक्षिणा स्वयं लेने लगेगी और इसका पता सर्वसाधारण को लग जायेगा तो वे संस्कारों को एक दुकानदारी समझने लगेंगे। और आगे चलकर दक्षिणा देना ही बन्द कर देंगे। तब समाज का क्या हित होगा ? यह बन्दिश भी ठीक नहीं है कि पुरोहित की दक्षिणा इतनी ही हो इससे श्रद्धा का विघात होता है। यदि यजमान दक्षिणा तो दे परन्तु दान कुछ भी न दे इस

दिशा में पुरोहित को चाहिये कि यह स्वयं अपनी दक्षिणा में से समाज को दान कर दे, जिस से समाज की हानि न होने पावे। पुरोहित को दी हुई दक्षिणा के लेने का अधिकार समाज को इसलिये भी नही क्योंकि यजमान यह पूछ सकता है कि मैंने समाज को दान पृथक दिया और दक्षिणा पृथक तब किस अधिकार से समाज ने दक्षिणा ले ली। इसका उत्तर कुछ भी न होगा। इस काट छांट से तो यह अच्छा है कि पुरोहित बिना दक्षिणा लिये ही संस्कार करावें, कम से कम इससे आर्य समाज का गौरव ही बढ़ेगा किन्तु यह दक्षिणा भी ले और इस पर नियन्त्रण भी हो यह उचित नहीं प्रतीत होता।

मुझे आशा है कि आपकी समाज के संभ्रान्त सदस्यगण इस पर पुनः विचार करके उसे ठीक कर लेंगे।

आर्य समाज और दक्षिणा

(शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी आर्य महोपदेशक दिल्ली
सदर १२ जून १९४० ई०

मैंने दक्षिणा के सम्बन्ध में हनुमान रोड आर्य समाज की अन्त-अन्तरङ्ग सभा ता० १७-३-४० का प्रस्ताव पढ़ा मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि हमारे सामाजिक पुरुषों की मनोवृत्ति दिन प्रतिदिन बड़ी संकुचित होती जा रही है और जिस स्थान में उदारता का व्यवहार होना चाहिये वहां संकोर्णता का व्यवहार होने लगा है। हमारी मौजूदा Govt जो विदेशीय है इतनी अनुदार नहीं है कि डाक्टरों की मुकर्रर तनख्वाहों के अलावा जो धन उनको Private Practice से प्राप्त होता है उसमें से कुछ काट लेवें या Private Visit को बन्द कर दें परन्तु हमारे स्वदेशीय भाई इससे कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करते। मेरे विचार में सिवाय उस अवस्था के जबकि किसी संस्कार में आर्य समाज को कुछ भी दान न मिला हो और पुरोहित को १) रु० से अधिक मिले तो उसकी दक्षिणा में से आधा आर्य समाज को दान कर दिया जाए। बाकी किसी अवस्था में भी पुरोहित को मिली दक्षिणा में से कुछ भी न काटा जावे। अन्तरङ्ग सभा से नम्रता पूर्वक प्रार्थना है कि वह पुरोहित के सम्मान व अधिकार का मान्य करे और ऐसा ही प्रस्ताव अपने यहां पास करे ॥
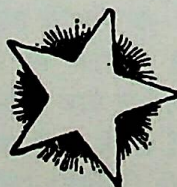
धैर्यशाली पुरोहित

(वयोवृद्ध श्री प० सुरेन्द्र शर्मा गौड काव्य-वेद तीर्थ शाहदरा)

ओ३म संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम् ।
संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णुर्येषामस्मि पुरोहितः ॥

वैदिक आदर्श में पुरोहित और यजमान अर्थात् गुरु और शिष्य की परम्परा में गुरु-पुरोहित की यह शुभ कामना होती है कि मैं जिनका पुरोहित अर्थात् गुरु-शिक्षक हूं उन सबका ज्ञान प्रशंसित हो और जो मेरे शिष्य वर्ग में क्षत्रिय हों उनमें रक्षा करने का सामर्थ्य हो और वे हमेशा विजयी होवें। अर्थात् मैं जिनका पुरोहित हूं वे सब ज्ञान विज्ञान बल आदि से सर्वत्र प्रशंसनीय हों।

आर्य समाज के पूर्वार्ध से लगभग ६०-७० वर्षों से कई प्रमुख आर्य समाजों में वेतनिक पुरोहित प्रथा प्रचलित हो गई जिससे यजमान एवं पुरोहित के आपसी व्यवहार में भी परिवर्तन आ गया। मैं सुरेन्द्र शर्मा गौड़ भी भिन्न २ समय में अनेक आर्य समाजों में भी (मुल्तान हिसार, सरगोधा, लायलपुर, रावल पिण्डी कलकत्ता मांडले बर्मा) और आर्य समाज चावड़ी बाजार दिल्ली में पुरोहित जीवन के अनेकशः कटु अनुभव करता हूं।

श्री पं० चन्द्र भानु जो सिद्धान्त भूषण आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली में लगभग ४६ वर्षों से पुरोहित पद को सुशोभित करते रहे हैं और प्रत्येक परिवार की प्रतिकूलताओं के होने पर भी इस पद की गरिमा की रक्षा करते रहे, यह इनके जीवन की बहुत बड़ी विशेषता है इतने दीर्घकाल तक जो आ. स. की सेवा श्री पण्डित जो ने की, मैं उनके दीर्घ एवं मंगल जीवन की इस अभिनन्दन समारोह के अवसर पर भगवान से प्रार्थना करता हूं।

इनके जीवन की यह विशेषता रही कि ये आर्य समाज के अधिकारियों को अपने बौद्धिक ज्ञान एवं व्यवहार कुशलता से

वैदिक सिद्धान्तों की परम्परा के अनुरूप बना लेते रहे हैं, तथा उन्हें उचित पथ पर चलाते रहे हैं।

आर्य समाज के अधिकारियों द्वारा विभिन्न कष्टप्रद परिस्थितियों में भी पण्डित जी ने धैर्य न छोड़ा। त्याग एवं निःस्वार्थ भावना से अन्ततोगत्वा उनके दिल को जीत लिया। एक समय आर्य-समाज के अधिकारियों ने संस्कारों पर मिलने वाली दक्षिणा को भी समाजों के कोष में जमा करने तथा उसके बदले में विवाह पर दो रुपये तथा अन्य के १ रुपये हिसाब से देने का प्रस्ताव पास कर दिया। लेकिन पण्डित जी ने सिद्धान्त रूप में पुरोहित को दक्षिणा जो कि पत्नी की तरह से गोपनीय एवं यज्ञ का अंग होती हैं इस पर पुरोहित का ही अधिकार होता है तथा बिना दक्षिणा के यज्ञ निष्फल होता है "निष्फलो यज्ञस्त्वदक्षिणा" को बड़े धैर्य के साथ अधिकारियों के समक्ष अनेक विद्वानों की सम्मतियों द्वारा प्रस्तुत की अन्त में पण्डित जी की बात को उचित रूप देते हुए कालान्तर में अधिकारियों ने अपनी त्रुटि का अनुभव किया और अपने निर्णय में उचित परिवर्तन कर प्रशंसनीय कार्य किया।

परमात्मा कृपा करके पण्डित जी के भावी जीवन को सुखमय एवं स्वस्थ बनाए ऐसी शुभ कामनाओं सहित।

६८९ गौड भवन
कबूलनगर शाहदरा
दिल्ली ३२

पुरोहितों के प्रधान

(प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा)

पं० चन्द्रभानु जी का नाम जिह्वा पर आते ही एक तेजस्वी और भव्य चेहरा सामने आकर खड़ा हो जाता है, जिसमें चन्द्र की शीतलता और भानु की भव्यता दिखाई देती है। आर्य समाज में पुरोहित का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हुए भी साधारण है, फिर भी अधिकारी वर्ग उन्हें समाज में कहाँ ठहरने देते हैं ऐसी विकट परिस्थितियों में पं० चन्द्रभानु ने अपने जीवन से आर्य समाज के पुरोहित का इतिहास लिखा है और लगातार एक समाज में ४६ वर्ष तक कार्य किया जो भूत वर्तमान और भविष्य का एक रिकार्ड रहेगा।

मेरी दोनों पुत्रियों और पुत्र के विवाह संस्कार भी आपने ही कराये हैं सहजता, सरलता और मिठास से जो संस्कार कराने का गुण आप में है वह बिरले ही विद्वानों में मिलता है, आर्य समाज के अधिकारी वर्ग और पुरोहित वर्ग दोनों के बीच पं० जी सेतू का काम करते हैं, इसी कारण वह पुरोहितों में मुख्य हैं और पुरोहित सभा के प्रधान हैं, साधारण समाजों और सभाओं का प्रधान होना साधारण बात है किन्तु विद्वान (पुरोहितों) की सभा का प्रधान होना अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं गरिमामय है, यह सब श्रेय पं० जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को है। मैं जीवन के पच्हत्तरवें वर्ष पर आप का सादर अभिनन्दन करता हूं।

एम० १४ साकेत
नई दिल्ली—११००१७

आदर्श और व्यवहार के समन्वय साधक

(क्षितीश वेदालंकार सम्पादक आर्य जगत)

किसी नीतिकार ने कहा है—

नरकाय मतिस्चेत् पौरोहित्यं समाचर ।

यदि नरक में जाने की इच्छा हो तो पुरोहितायी करो ।

जिस व्यक्ति ने यह बात कही है उसको सम्भवतः पुरोहितायी का ऐसा ही कटु अनुभव हुआ होगा । पुरोहित्य का कर्म करने वाले अन्य लोग उससे सहमत हों, यह आवश्यक नहीं ।

जहां तक आर्य समाज के पुरोहितों का सम्बन्ध है, इतना तो निःसंकोच कहा जा सकता है कि यह कार्य तलवार की धार पर चलने के समान है । जब-जब समाज के अधिकारी बदलते हैं तब-तब यदि पुरोहित उनकी मानसिक अनुकूलता की कसौटी पर खरा न उतरे, तो उसे सफल पुरोहित नहीं कहा जा सकता । आर्य समाज के सब अधिकारी भी सदा निष्पक्ष हों और व्यक्तिगत राग-द्वेष से प्रभावित न हों, यह सम्भव नहीं है। कुछ अधिकारी तो केवल अधिकारी होने मात्र से अपने आप को सर्व-गुण-सम्पन्न समझने लग जाते हैं और वे पुरोहित को प्रतिष्ठा करने के बजाय पुरोहितों से अपनी प्रतिष्ठा करवाना अपना अधिकार समझते हैं। इसीलिये किसी समाज में कोई पुरोहित चिरकाल तक टिका रहे, ऐसे उदाहरण बहुत विरल हैं ।

कभी कभी समाजों में ऐसे अधिकारी भी आ जाते हैं जो अपने से पूर्व अधिकारियों से सर्वथा विपरीत विचार वाले होते हैं और वैसा ही आचरण भी करते हैं। उस समय आर्य समाज के पुरोहित की स्थिति बड़ी विचित्र हो जाती है । यदि वह पूर्व अधिकारियों का पक्ष ले तो वर्तमान अधिकारी असन्तुष्ट, और वर्तमान अधिकारियों का पक्ष लें तो भविष्य में पूर्व अधिकारियों के हो पुनः सतारूढ़ हो

जाने पर उनके असन्तुष्ट हो जाने का खतरा। इसलिये सफल पुरोहित वही कहा जा सकता है जो मिशनरी भावना से वेद प्रचार और पुरोहितायी के अपने कार्य में लगा रहे और समाज के सब प्रकार के अधिकारियों से जिनमें प्रायः कभी-कभी विरोधी विचारों के लोग आ ही जाते हैं। बना के रख सके। इसक लिए जहां पुरोहित का विद्वान होना आवश्यक है वहां मधुर भाषी, व्यवहार कुशल और शिष्टाचार में पारंगत होना भो आवश्यक है। अभिमान न होने पर भी आत्म सम्मान का विचार तो पुरोहित को भी रखना ही होगा। यदि कोई पूरोहित अधिकारियों की ख़ुशामद को आधार बनावें तो उसका आत्म सम्मान कभी सुरक्षित नहीं रह सकता।

इस प्रकार विपरीत परिस्थितियों से गुजरते हुए समाज के अधिकारियों का और आम जनता का सहयोग तथा स्नेह पाना बड़ी कठिन तपस्या का काम है। जो ऐसी तपस्या करने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं, उन्हें यह काम नरक जैसा दुःखदायी लगे, तो आश्चर्य नहीं, जो ऐसी तपस्या कर सकते हैं, वहो परीक्षा में सफल होते हैं और अन्त में सभी लोग उनकी प्रशंसा करते नही अघाते।

जब भी कभी सफल पुरोहितों की चर्चा होती है तो उसमें आदर्श पुरोहित के रूप में श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्तभूषण का नाम सब से ऊपर होता है। जिस व्यक्ति ने निरन्तर ५० वर्ष तक उपदेशक रहकर पैंतालीस वर्ष एक ही सभाज के पुरोहित पद पर व्यतीत किये हों, वह भो कोई छोटी-मोटी समाज नही, अपितु आर्य समाज हनुमान रोड जैसी दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज हो, तो यह सामान्य बात नहीं है। यह जानकर आश्चर्य होता है कि इस अवधि में श्री पं० चन्द्रभानु जी ने दस हजार संस्कार, पांच हजार विवाह संस्कार और ६ हजार से ऊपर यज्ञ करवाये। ढाई हजार पारिवारिक सत्संग करवाये। तीन सौ बीस शुद्धियाँ कीं और इस बीच आर्य समाज हनुमान रोड को ४ लाख सोलह हज़ार रुपया दान दिलवाया है। यह सामान्य बात नहीं है। अतीत में या भविष्य में कभी कोई अन्य पुरोहित इस रिकार्ड को तोड़ सकेगा, इसकी संभावना नहीं।

विद्वान् लोगों में प्रायः एक कमी रहती है। वे स्वभाव के रूखेपन को अपनी विद्वता का शृंगार मान बैठते हैं। ऐसे लोगों के मुंह

पर कभी हंसी देखने को नहीं मिलती। परन्तु पं० चन्द्रभानु जी में विद्या के साथ हंसमुख स्वभाव का जैसा मेल हुआ है, वह अत्यन्त दुर्लभ है। वे साक्षात् "वंदन प्रसाद सदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः" के उदाहरण हैं। स्वभाव की मधुरता के साथ यदि वाणी की मधुरता भी जुड़ जाये तो फिर कहना ही क्या! जैसे सोने में सुहागा। पंडित जी के सम्पर्क में जो भी व्यक्ति आया वह उनकी सहृदयता, मधुर भाषिता, सरलता, वैदिक सिद्धान्तों की मर्मज्ञता, व्यवहार-कुशलता शिष्टता और सब परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा, एक तरह से यह कहा जा सकता है कि नई दिल्ली का शायद ही कोई ऐसा आर्य समाजी परिवार हो जो पं० के सम्पर्क में न आया हो और उनके व्यवहार तथा मधुर स्वभाव का कायल न हो। कितने ही ऐसे परिवार भी मिल जायेंगे जिसमें दादा से लेकर पोते तक तीन पीढ़ियों के संस्कार करवाने का सौभाग्य पण्डित जी को ही मिला। एक बार जो उनके सम्पर्क में आ जाता है वह जैसे उनका सदा के लिए भक्त और प्रशंसक बन जाता है। यह सौभाग्य कितने पुरोहितों को मिल पाता है?

जीवन की सार्थकता किस बात में है इन पर विवाद हो सकता है। परन्तु जिस व्यक्ति ने अपने जीवन काल में हजारों लोगों का सम्मान स्नेह और प्रशंसा पाई हो, उसके लिये जीवन में और कुछ प्राप्तव्य शेष हो ऐसा नहीं लगता।

आदर्श और व्यवहार के समन्वय-साधक, अपने गुणों से औरों को सुखी जीवन की प्रेरणा देने वाले, महान् मनीषी श्री पं० चन्द्रभानु जी शतायु और 'ततोऽधिकम्' हों, यही प्रभु से प्रार्थना है।

पता—डी-८१, गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली—११००४९

आर्य समाज पहले कहाँ—अब किधर ?

(पं० मेघश्याम वेदालंकार)

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने श्रेष्ठ समाज श्री परिकल्पना करते हुए और समस्त जगत का कल्याण करने की दृष्टि से आर्य समाज की स्थापना की थी। इसी बात को समझाने के लिए सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास में बताया—"जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज़ के साथ मिलकर उसके उद्देश्यों के अनुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना अब भी पालन होता है आगे भी होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता, यदि इस समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बनाना समुदाय का काम है। एक का नहीं।"

स्वामी जी स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश के अन्तिम भाग में लिखते हैं—"जो जो बात सबके सामने माननीय है उसको मानना जैसे सत्य बोलना, सबके सामने अच्छा और मिथ्या बोलना बुरा है ऐसे सिद्धान्तों को स्वीकार करता हूं और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़ते हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता क्योंकि इन्हीं बातों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा करके परस्पर शत्रु बना दिया है।

अतः उपर्युक्त उद्धरणों से बात स्पष्ट है कि स्वामी जी सारे संसार का कल्याण चाहते थे। स्वामी जी निष्पक्ष होकर सबके हित की भावना रखते थे जैसा कि ११ वें समुल्लास में संन्यासी के गुण बताये हैं—

आर्यसमाज ने समाज सुधार, शिक्षा प्रचार, दलितोद्धार, धार्मिक जागृति आदि जो कार्य किये हैं वह कोई भी भुला नहीं सकता।

किन्तु प्रश्न है कि क्या अब महर्षि के स्वप्नों को साकार रूप मिल रहा है। आज आर्यसमाजों और आर्य संस्थाओं की स्थिति वड़ी दयनीय है आर्य समाज के कर्णधार स्टेजों पर कूद कूद कर यही कहते रहते हैं कि आर्यसमाज प्रगति के पथ पर है। लेकिन वास्तव में वह सब सफेद झूठ है। प्रत्येक पढ़ा लिखा नौजवान इस स्थिति से अवगत ही है। ये सब पदासीन अपनी कुर्सी बचाने की दृष्टि से जनता को केवल गुमराह करते रहते हैं। यह भी सभी जानते हैं कि कितना कार्य हो रहा है। सिर्फ हमारा कार्य भाषणों तक ही सीमित है। इसलिये दिन-प्रतिदिन सभाओं के सदस्यों की संख्या घट रही है। आर्य जगत के मूर्धन्य वोतराग संन्यासी स्वा० आत्मानन्द जी सरस्वती ने आर्य सदस्यादि के विषय में लिखा कि मैं "समाज के हितैषी सज्जनों से प्रार्थना करूंगा कि वे अपनी-अपनी समाज के पुराने रजिस्टरों की जांच करें। मैंने इस दृष्टि से बहुत सी पुरानी समाजों के रजिस्टर देखे मुझे तो कोई विशेष उन्नति नजर नहीं आई। ५० वर्ष पहले जिस समाज में २०० मेम्बर थे, आज तो उतने ही या उससे भी कम ही तादाद है, अधिक नहीं। मैं जिस समाज में सारी उमर रहा, उसमें किसी समय डेढ सौ तक संख्या पहुंच गई थी परन्तु आज उसमें ३०-४० से अधिक नहीं बढ़ती। अब तो यह मनोवृत्ति हो गई है कि जब तक समाज और संस्था में पद मिलते रहें, हम नेता और आयसमाज सर्वोत्तम समाज। पद छिना नहीं कि चन्दा देना और समाज में आना दोनों बन्द। नुक्ता-चीनी, पार्टी बन्दी राग-द्वेष और अलग समाज खोलने की धुन सवार हो जाती है। शायद ही कोई समाज होगा जिसमें दो पार्टियां न हों। जिनके हाथ में अधिकार आ गये, वे दृढ़ आर्यसमाजो बाकी सब अनार्य ऐसो दशा में भला कौन श्रद्धालु पुरुष समाज में आना पसन्द करेगा। फिर संख्या बढ़े तो कैसे ?"

आगे पूज्य स्वामी जी लिखते हैं ?"

"वैदिक धर्म हमारी समाज में पारिवारिक धर्म बना ही नहीं और न वर्तमान दशा में वन सकता है। अपने समाज के पुराने और नए सभासदों की जीवनी पर नजर डालकर जब विचार करते हैं तो ऐसा अनुभव होता है कि आर्य समाज एक स्टेज है, नित्य नये एक्टर आते हैं और अपना-अपना एक्ट करके चलते बनते

हैं। पूज्य स्वा० धर्मानन्द जी सरस्वती ने अपनी पुस्तक :'महर्षि दयानन्द के आदर्श आर्यसमाज कैसे बनें" में लिखते हैं कि "आर्यसमाज की आन्तरिक अवस्था सन्तोषजनक नहीं है। आर्यसमाज के सदस्यों के वैयक्तिक जीवन में जो विशेषतायें होनी चाहिए वह नहीं हैं। अब पौराणिक रीति रिवाजों का मिश्रण हो रहा है।"

यदि सही रूप से देखा जाये तो आर्यसमाज के अच्छे कार्यकर्ता राजनैतिक क्षेत्र में चले गये हैं अब तो केवल अवसरवादी लोग ही आर्यसमाज के पदों पर आसीन हैं। उस समय (प्रारम्भ में) आर्यसमाज के प्रति लोगों का विशेष आकर्षण था। जिन मूर्तिपूजा, श्राद्ध आदि अंधविश्वासों को दूर करने हेतु ऋषि दयानन्द ने अनेकों बार जहर खाया। आज इनके समर्थकों के लिये कपाट खुल गये हैं। आर्यसमाज में ही नहीं परोपकारिणी, सार्वदेशिक जैसी सभाओं में मूर्तिपूजा करने वाले सदस्य बन गये हैं। आर्य –स्पेशल ट्रेन में बैठकर लोग टंकारा जाते हैं तो रास्ते में उतर कर पुष्कर में जरूर स्नान करके आते हैं। स्वा० विरजानन्द की नगरी मथुरा जायेंगे तो वृन्दावन में भी जाकर मन्दिरों में उन मूर्तियों के दर्शन करेंगे और उत्साह एवं जयकार शब्दों के साथ पैसे फेंकेंगे।

वास्तव में आर्य सभासदों और पदाधिकारियों का एक तरफ से निश्चित रूप से काश ! एक बार भी सर्वेक्षण किया जाय तो बड़ा ही आश्चर्य होगा। आर्य समाज के छठे नियम में स्वामी जी ने यही जी कहा कि 'पहले स्वय आर्य बन जाओ और फिर सामाजिक उन्नति में आगे आवें।" हमने यह नियम रट तो लिया है लेकिन इसे अपने और अपने पारिवारिक जीवन में प्रायः प्रयोग नहीं किया है। हम तो स्वयं बुराइयों की खान रहे और सदैव दूसरों को बुराइयों से बचाने का उपदेश देते रहे।

आज शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य समाज की सम्पत्ति के कारण पदों का आकर्षण ऐसा बन गया है कि कोई भी सनातनी हिन्दू-धर्म निरपेक्ष आर्य बन जाता है। मानो उसने प्रवेश पत्र भर दिया और थोड़ा सा चन्दा दे दिया जिसके कि कारण उसका कायाकल्प हो जाता है। आज चुनावों में भी बहुमत प्राप्त किया जाता है

हथकंडे अपनाकर उस राजसिंहासन पर आसीन हो जाते हैं, जो कि पढ़ाई लिखाई एवं त्याग तपस्या में न के बराबर हैं।

आर्य समाज का विद्वान वर्ग कराह रहा है। एकमात्र कारण यही है कि आज आर्य समाज अधोगति को जा रहा है। यदि समाज के लोग चहुमुखी उन्नति चाहते हैं तो आवश्यक यही होगा कि प्रथम जिन विद्वानों ने सर्दी-गर्मी और भूख-प्यास सहन करते हुये जिस वेद विद्या का अभ्यास किया है ऐसे विद्वानों को पदों पर आसीन करके स्वयं उनके चरणों में श्रद्धा के साथ बैठकर अपने जीवन का निर्माण करें। ऐसा करने पर समाज अवश्य उन्नत होगा। अन्यथा उपर्युक्त तथ्यों पर यदि विचार नहीं किया तो फिर किसी तरह से आशा ही नहीं रहती।

आर्य समाज
सी II लाजपत नगर
नई दिल्ली-११००२४

सफल व्यक्तित्व

(श्रीमती प्रकाशवतीजी बुग्गा शास्त्री सिद्धान्तभूषण एम. ए. भू. पू. अध्यापिका श्री रघुनाथ आर्य कन्या हा० सै० स्कूल राजा बाजार)

आर्य समाज हनुमान रोड के माध्यम से पं० चन्द्रभानु जी को १९३५ से जानती हूं। यह एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। कार्य-तत्परता, विशेषज्ञता, कार्यकुशलता आदि कई श्रेष्ठ गुणों के साथ इनके जिस गुण से मैं अत्यधिक प्रभावित होती रही हूं, वह इनका नियम पालम का स्वभाव है। जिसको कि English में Punctuality कहते हैं वह गुण विरले ही लोगों में पाया जाता है। मानव-चरित्र की श्रेष्ठतम कसौटी भी यहां है। इनके बचनों ने कभी किसी को निराश नहीं किया। यदि कार्यक्रम १० बजे प्रारम्भ होता है तो एक बार आप घड़ी की सुई की ओर देखें दस पर है दूसरी ओर द्वार की ओर देखिए पं० पण्डित जी की भव्य मूर्ति चली आ रही है।

आर्य समाज तथा संस्कारों के कार्यक्रमों के संचालन करते हुए एक उत्तम शासक प्रतीत होते थे। इनकी दृष्टि से न तो कोई व्यक्ति उपेक्षित रहता था और न ही कोई कार्यभाग छूटता था वेद मन्त्रों पर इनका ऐसा अधिकार है कि पृष्ठों और मन्त्रों को तुरन्त बता देते हैं। इनके भाषण नपे तुले शब्दों में और मंत्र व्याख्या मनोहारी होते हैं बात चीत करने में बड़े संयम से काम लेते और व्यवहार कुशलता के आदर्श प्रतीत होते हैं।

मैंने इनको अत्यन्त निकट से देखा तथा यह जानकर विस्मित होती थी कि यह जीवन में आने वाले उतार चढ़ाव अर्थात् दुःख सुख, निन्दा स्तुति और हानि लाभ में समान तथा एकरस रहते हैं।

यही कारण है यह जहां भी गये इनका स्वागत हुआ तथा सफलता और विजय ही प्राप्त हुई।

भाषण कला के साथ साथ इन्होंने अपने स्वाध्याय और लेखन कार्य को भी जारी रक्खा है। यही कारण है कि इनका पुरोहित जीवन पूर्णतया सफल तथा उन्नतिकारक सिद्ध हुआ है। इनके द्वारा की गई शुद्ध तथा मधुर वेदमन्त्रों की गुंजार तो मेरे मस्तिष्क में सदा ही गूंजती रहती है।

परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि ऐसे विद्वान् व्यक्ति की आयु अधिक से अधिक हो जिससे हमारा देश ही नहीं, विदेश भी इनके द्वारा गाये गये मधुर वेद मन्त्रों से गुंजित होता रहे।

जैन मन्दिर राजा बाजार नई दिल्ली

पेंशनर पुरोहित

श्री रामनाथ सहगल मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

श्रद्धेय पं० चन्द्रभानु जी आर्यसमाज हनुमान रोड़ के आजीवन पुरोहित रहे यह समाज आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रमुख समाज है किन्तु पं० जी का स्नेह आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं उसके अधिकारियों से बराबर रहा, साथ ही पुरोहित रूप में पं० जी कालिज पार्टी और गुरुकुल पार्टी के सदस्यों एवं 'अधिकारियों के यहां बराबर संस्कार कराते रहे बल्कि अधिक दक्षिणा और अधिक सम्मान भी कालिज विभाग से ही मिला यह पं० जी स्वयं जानते हैं।

आर्य समाज हनुमान रोड ने पं० जी के रिटायर होने पर २०० रु० मासिक पेंशन निश्चित की है यह दूसरी बात है कि इससे ज्यादा पेंशन चपरासियों को भी मिलती है और साथ ही याद रखने वाली बात यह है कि पं० जी इससे कहीं ज्यादा दान आर्य समाज को अब भी प्रति माह दे रहे हैं, शाबास आर्य समाजियों पुरोहित और उपदेशक भी व्यापार में आ गये सभा का कनस्तर ले जाओ जितना हमसे लेते हो, मांग कर लाओ दयानन्द और आर्य समाज के नाम पर, हमें भी दो कुछ आप भी ले जाओ, आर्य समाज जब तक इस वृति से न उठेगा, तब तक बनेगा कुछ नहीं, आर्य समाज को चाहिये कि कालिज के प्रो० की तरह सब सुविधायें पुरोहित एवं उपदेशकों को दें। पं० जी के साधु स्वभाव और सहन शीलता के प्रति नत मस्तक होकर अभिनन्दन करता हूं।

ए ४१६
डिफेंस कालोनी
नई दिल्ली-११००२४

आचार्य भगवानदेव
संसद सदस्य
(लोक सभा)

दूरभाष : ६१६१७७
१३, लोधी एस्टेट,
नई दिल्ली-११०००३
दिनांक १५-१-१९८४

(पूजनीय पुरोहित)

आचार्य विक्रम जी

सादर नमस्ते।

आप पंडित चन्द्रभानु जी का अभिनन्दन ग्रन्थ तैयार कर रहे हैं—इसके लिए बधाई स्वीकार करें।

श्री पं० चन्द्रभानु जी आर्य समाज के पुरोहितों की प्रेरणा मूर्ति हैं। सात्विक, श्रेष्ठ, सदाचारी विद्वान पंडितों में आप प्रथम स्थान रखते हैं।

"विश्व आर्य समाज" की स्थापना के सुअवसर पर हमें उनका सम्मान, करने का अवसर मिला था। विद्वानों का जो समाज आदर नहीं करती, वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकती। आपने बहुत ही पवित्र कार्य को अपने हाथों में लिया है।

परमात्मा से यही प्रार्थना है कि पूज्य पंडित चन्द्रभानु जी लम्बी आयु तक आर्य समाज के पुरोहितों और यजमानों को प्रेरणा देते रहें। वास्तव में पंडित चन्द्रभानु जी—"सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्" की साकार मूर्ति हैं। सच्चे, श्रेष्ठ आर्य पुरोहित एवम् आचार्य हैं।

भगवानदेव
अध्यक्ष-विश्व आर्य समाज

जर्मन लड़की का विवाह

आर्य समाज हनुमान रोड में मेरे एक मित्र का विवाह एक जर्मन लड़की से होना था, मैं 'भी विवाह में सम्मिलित हुआ, सोच रहा था कि जर्मन लड़की वैदिक विवाह कैसे समझेगी किन्तु पूज्य पं० चन्द्रभानु जी की विवाह संस्कार कराने की शैली अंग्रेजी-संस्कृत-हिन्दी की योग्यता देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ हार्दिक अभिनन्दन है।

अशोक कुमार सिह
दिल्ली पुलिस

दिव्य पुरोहित

नेक कर्मों का फल ही स्वास्थ्य-सुन्दरता एवं प्रतिभा के रूप में मिलता है सभी सुख पूज्य पं० जी को उपलब्ध हैं, यह दिव्य मानव पूर्व जन्म का पुण्य और वर्तमान के पुण्य की प्रति मूर्ति है लोगो,देखो और कर्मफल को पहचानो सादर अभिवादन।

डा० सत्यपाल वेदालंकार
३/७७६ दक्षिणपुरी
एक्सटेंशन नई दिल्ली

सच्चे पुरोहित

पिताजी ने इन्जीनियर बनाना चाहा किन्तु बच्चे में ब्राह्मणत्व जाग उठा और आर्य समाज की ओर झुक गया, इस सच्चे पुरोहित का अभिनन्दन है।

शिवचरण
रि० पु० इंसपेक्टर
पाली जि० मेरठ

"महान् पुरोहित"

(श्री नवनीतलाल जी एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट अध्यक्ष श्रद्धानन्द मेमोरियल ट्रस्ट)

श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण को यदि 'महान् पुरोहित' कहा जाये तो इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी। पं० चन्द्रभानु जी को मैं लगभग ४० वर्ष से जानता हूं आपके धर्मपिता (श्वसुर) जी स्वर्गीय पं० रामचन्द्र जिज्ञासु कई वर्ष आर्य समाज दीवान हाल के पुरोहित रहे, वहीं दीवान हाल समाज का मैं भी पदाधिकारी रहा, जिससे जिज्ञासु जी के समान ही चन्द्रभानु जी को सौम्य मर्ति तथा शान्त स्वभाव वाला पाया। पण्डित जी ने कहा कि हैदराबाद में कई वर्ष आर्य समाज की सेवा की वहां आर्य समाज हनुमान् रोड के पुरोहित पद से नई देहली के सुशिक्षित परिवारों में इस प्रकार के संस्कारों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया। आप विवाह संस्कार इस ढंग से कराते हैं कि भारतीय शिक्षित वर्ग तथा विदेशी सभी बहुत प्रभावित होते हैं। हनुमान् रोड आर्य समाज के पुरोहित पद से विमुक्त होकर आप अपना अधिक समय पुरोहितों तथा उपदेशकों की सेवा में व्यतीत करते हैं। शारीरिक तथा आर्थिक संकट आने पर हमारे पुरोहितों तथा उपदेशकों की देखभाल की कोई संस्था न थी। आपने आर्य पुरोहित सभा के निर्माण में सहयोग देकर, उस कमी को पूरा किया। मेरी कई वर्ष से प्रबल इच्छा थी कि पुरोहितों तथा उपदेशकों के परिवारों की सहायता के लिये एक विशेष निधि बनाई जाये। पं० चन्द्रभानु जी ने इसको कार्यरूप देने के लिये अथक प्रयत्न किया।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इन्हें दीर्घायु प्रदान करे जिससे यह आर्य समाज तथा आर्य पुरोहितों तथा उपदेशकों की अधिक सेवा कर सकें।

पूज्य पुरोहित

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि पं० चन्द्रभानु जी सि० भू० के ७५वें जन्मदिवस के अवसर पर-एक भव्य अभिन्दन ग्रन्थ निकालने का निश्चय किया गया है। यह एक बड़ा सही निर्णय लिया है कि पंडित जी ने अपना सारा जीवन ही आर्य समाज की सेवा में लगा दिया है। उन्होंने अपने कार्य से समस्त आर्य जगत के लिये एक उदाहरण स्थापित कर दिया है। इसमें किंचित मात्र भी शक नहीं है कि पण्डित जी की मीठी वाणी और सुन्दर व्यवहार से आर्यजनों के अन्दर बड़ी अपार श्रद्धा और सम्मान की भावना उत्पन्न हो गई है। पण्डित जीं का जीवन अत्यन्त सरल और सादा है। उनके मुख पर सर्वदा मुस्कराहट देखने को मिलती है उनके अन्दर एक बड़ी विशेषता यह है कि उनका व्यवहार सबके साथ चाहे कोई बड़ा हो वा छोटा एक सा रहा है।

पूज्य पण्डित जी का आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ भी बड़ा निकट का सम्बन्ध रहा है, क्योंकि पण्डित जी अपने समस्त कार्यकाल में १५ हनुमान रोड पर ही रहे हैं और यह सभा भी अपने जन्मकाल से इसी भवन में स्थित है। जब कभी भी आवश्यकता होती पूज्य पण्डित जी अपना परामर्श हमें देते रहे हैं।

मेरा भी पण्डित जी से १९४१ से जब मैं दिल्ली में आया तब से ही बड़ा निकट का सम्बन्ध रहा है। जुलाई १९४१ में दक्षिण दिल्ली में सबसे पहली जो आर्य समाज स्थापित हुई वह अलीगंज (लोधी रोड) में पण्डित जी के कर कमलों द्वारा ही आर्य समाज का उद्घाटन हुआ। पण्डित जी का इस समाज के साथ विशेष योगदान रहा है। यह मेरा अनुभव है कि जो भी व्यक्ति पण्डित जी के सम्पर्क में आया वह हमेशा के लिए उन्हीं का बन गया।

मैं अपनी ओर से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि पण्डितजी को दीर्घायु करे और वह इसी प्रकार से आर्य समाज की सेवा करते रहें।

भवदीय
प्राणनाथ घई
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

Respectable Shri Pandit Ji

I have the privilege of knowing Pandit Chander Bhanu Ji now for nearly four decades. In fact, there is hardly any family in Delhi, and particularly in New Delhi which has not come into contact with Pandit ji and received his blessings-whether it is marriage, or mundan or any other auspicious function. His vast and deep knowledge of the Hindu scriptures coupled with his simple and unassuming way of life has left an indelible impression on the mind of those who had the opportunity of listening to his learned discourses on Vedas, Shastras. Satyartha Prakash, Gita, Ramayana and numerous other Granthas. Indeed, in a world full of chaos and confusion, where fear and hatred reign supreme, Pandit ji's lectures, based on the study of holy books of different religions and his own scriptures, have served as a batan in to the wounds caused by human misery and affliction. His is a life of dedication and he has never considered any sacrifice too great for causes which are dear to him.

The Arya Samaj, Hanuman Road, New Delhi and Pt. Chander Bhanu are synonimous, it is difficult to think of the one without the other. His life long association with this institution, enabled him to spread the message of Swami Dayanand and Arya Samaj to vast multitudes of people who are bound to have been benefitted by it. Arya Samaj, Hanuman Road, is a premier organisation, known not only in the whole of the country, but also in different parts of the world. It would be no exaggeration to say that its present position and popularity is due no less to the tireless efforts and long assocation of Panditji with this Samaj and we take this opportunity to place on record our appreciation of the great services rendered by Pandit ji to Arya Samaj, Hanuman Road, New Delhi.

I am happy to know that the Arya Purohit Sabha are filiicitating Panditji. In fact, by honouring Pt. Chander Bhanu ji the Arya Purohit Sabha, is honouring itself. I wish Pandit ji many more years of useful service to the Arya Samaj and the ideals and aims which are close to him, and send my best wishes to him on this occasion.

C-134, Sarvodaya Emdane
New Delhi, 17
June 27, 1984

H. R. Chopra
Ex.-Private Secretary to Minister
of Defence & External Affairs,
Govt. of India & Vice-President
Arya Samaj, Hanuman, Road,
New Delhi
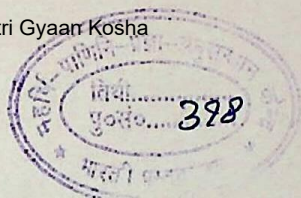
आर्य पुरोहित सभा का संक्षिप्त परिचय

वेदकुमार वेदालंकार

२५-१२-७६ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस अर्ध शताब्दी पर एक विशाल शोभा यात्रा भारत की राजधानी दिल्ली में निकाली गई। पुरोहितों, उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की उपेक्षा उस समय भी पहले की तरह से ही की गई, कुछ नवयुवक उठे और रामलीला मैदान में ही ओ३म पताका के नीचे आर्य पुरोहित सभा की स्थापना कर दी, प्रकाश चन्द्र जी शास्त्री प्रधान एवं वेदकुमार सचिव चुने गये। पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी संरक्षक बनाये गये।

आर्य समाज में हो रहे आपसी विवादों एवं विद्वानों की उपेक्षा को जड़ से समाप्त करना सभा का मुख्य उद्देश्य है। इस कार्य में अनेकों बार रुकावटें आईं और सब छूमन्तर हो गई। अन्य सभाओं की तरह सभा का पंजीकरण नवम्बर १९८२ को हुआ और सभा अपने उद्देश्यों की ओर अनवरत अग्रसर हो रही है। उद्देश्यों को अगले पृष्ठ पर देखने की कृपा करें।

पुरोहित सभा (पंजी०) दिल्ली प्रदेश के उद्देश्य एवं भावी योजना

१. समस्त पौरोहित्य कर्म करने वाले पुरोहितों को संगठित कर उनके गौरव की रक्षा करना तथा उनका समुचित पथ प्रदर्शन करना।

२. महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक कर्ममाण्ड को संस्कारों एवं उपदेशों के माध्यम से लोकप्रिय बनाकर उन्हें घर-घर तक पहुंचाना।

३. समय-समय पर वैदिक कर्मकाण्ड के विशेष विद्वानों से सत्परामर्श, विचार गोष्ठी एवं शिविर आदि का आयोजन करना।

४. आर्य समाज के अधिकारियों तथा पुरोहितों के सम्बन्धों को मधुर बनाना तथा किसी भी तरह के आपसी वाद-विवादों को दूर करने का प्रयास करना।

५. रुग्ण, लाचार एवं वयोवृद्ध आर्य पुरोहितों उपदेशकों की आपत्कालीन सहायता के लिए कोष की स्थापना करना।

६. समाज में फैली हुई दहेज प्रथा छुआ-छूत आदि सामाजिक कुरीतियों को दूर कर स्वस्थ वैदिक समाज की स्थापना करना।

७. निर्धन एवं असहायों की यथाशक्ति आर्थिक सहायता करना।

८. "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को सफल करने हेतु योग्य विद्वानों कार्यकर्ताओं को समाज में व्याप्त शिथिलता को दूर करने के लिए उत्साहित एवं प्रेरित करना।

९. वैदिक कर्मकाण्ड के जटिल एवं विवादास्पद स्थलों की सरल व्याख्या कर जन सामान्य की उसके प्रति रुचि जागृत करना।

१०. उन समस्त विद्वानों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों, एवं कार्यकर्ताओं के प्रति (जो निष्ठापूर्वक आर्य समाज की

करते रहे हैं सम्मान एवं प्रतिष्ठा भाव पैदा करना एवं कराना इत्यादि
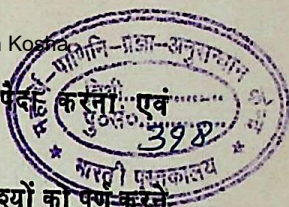
आर्य पुरोहित सभा गत कई वर्षों से अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए सतत् प्रयत्नशील है। सभा देश में आये हर संकट (दुर्भिक्ष बाढ़ आदि) के अवसर पर तन-मन-धन से सामर्थ्यानुसार सहयोग करती रही है तथा समय-समय पर अपनी विचार गोष्ठियों एवं शिविरादि के द्वारा संस्कारों को एक रूपता के विषय में विचार करती आ रही है।

अब हमारी योजना है कि

१. इस संगठन को अखिल भारतीय स्तर पर गठित करना।

२. वृद्ध, निर्धन एवं असहाय पुरोहितों एवं विद्वान् उपदेशकों की सहायता के लिए स्थायी कोष की स्थापना करना।

३. समय-समय पर छोटे-छोटे ट्रैक्टों को प्रकाशित कर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार करना।

नोट : जो भी दानी महानुभाव इस कार्य के लिए अपना आर्थिक सहयोग सभा को देंगे, सभा उन्हीं के नाम एवं चित्र सहित लघु पुस्तिका प्रकाशित कर वितरित करेगी।

४. आर्य समाज के संगठनों को आर्य पुरोहितों की प्रतिष्ठा के लिए प्रेरित करना तथा समाज की उन्नति के लिए समस्त आर्य संगठनों के अधिकारियों, विद्वानों एवं उच्च कोटि के संन्यासियों द्वारा सुझाये गये प्रस्तावों को कार्यान्वित करने में सहयोग देना।

५. आर्य पुरोहितों के स्थायी निवास हेतु कोआपरेटिव हाऊसिंग सोसायटी की स्थापना करना।

नोट : किसी भी राजनैतिक पार्टी व संगठन से इसे अलग करते हुए सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति के लिए स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करना।

वेदकुमार वेदालंकार एम. ए.
मन्त्री

चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण
प्रधान

आर्य पुरोहित सभा (पंजी)

दिल्ली-प्रदेश

स्थापना २६.१२.१९७६

सन्	प्रधान	मंत्री
१९७६	श्री पं० प्रकाश चन्द्र जी शास्त्री (बाजार सीताराम)	वेद कुमार वेदालंकार
१९७७	,, ,, चन्द्रभानु जी सिद्धात भूषण	श्री पं० नरेन्द्र पाल जी शास्त्री एम० ए०
१९७८	,, ,, ,, ,,	वेद कुमार वेदालंकार एम० ए०
१९७९	,, ,, ,, ,,	श्री पं० कर्णदेव जी शास्त्री एम० ए०
१९८०	,, ,, ,, ,,	वेद कुमार वेदालंकार एम० ए०
१९८१	,, ,, आचार्य विक्रम सिंह जी एम.ए.	श्री पं० यशपाल जी शास्त्री एम० ए०
१९८२	,, ,, ,, ,,	श्री पं० यशपाल जी शास्त्री एम० ए०
१९८३	,, ,, यशपाल जी शास्त्री एम. ए.	श्री पं० वेदकुमार वेदालंकार एम० ए०
१९८४	,, ,, चन्द्रभानु जी (सि० भू०)	वेदकुमार वेदालंकार एम० ए०

आर्य पुरोहित सभा (पंजी)

दिल्ली-प्रदेश १९८४ के अधिकारी

१. संरक्षक—श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री पूर्व संसद् सदस्य

२. प्रधान—श्री चन्द्रभानु, सि० भू० ११।२ सर्वप्रिय विहार न.दि

३. उप प्रधान—श्री आचार्य विक्रम जी साकेत

४. उप प्रधान—श्री पं० यशपाल शास्त्री डी. डो. फ्लेटस कालका जो
एम० ए०

५. मन्त्री—वेद कुमार वेदालंकार आर्य समाज ग्रेटर कैलाश I
नई दिल्ली

६. उप मन्त्री—श्री पं० वेदपाल जी आर्य समाज देव नगर
(मुल्तान)

७. उप मन्त्री—श्री पं० जय प्रकाश जी आर्य समाज मोती बाग
(साऊथ)

८. कोषाध्यक्ष—श्री पं० मेघश्याम जी आर्य समाज लाजपत नगर
वेदालंकार II-सी

९. लेखा निरीक्षक—श्री पं० प्रकाशचन्द्र जी
वेदालंकार आर्य समाज माडल बस्ती

अन्तरंग सदस्य

१. श्री पं० प्रेमपाल जी जी शास्त्री आर्य समाज शक्ति नगर

२. ,, ,, रूप किशोर जी शास्त्री ,, ,, १५ हनुमान् रोड

३. ,, ,, राजेन्द्र कुमार जी शास्त्री ,, ,, सफदर जंग इनक्लेव

४. ,, ,, प्रकाश चन्द्र जी शास्त्री ,, ,, बाजार सीताराम

५. शिवराज जी शास्त्री J ११५ राजौरी गार्डन

अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये दान देने वाले महानुभावों की सूची

३१००) श्री पं० चन्द्रभानु जी सिद्धान्त भूषण के परिवार की ओर से ।
१०००) श्री ला० इन्द्रनारायण जी ग्रीन पार्क ।
५०१) श्री बाबा दानसिंह जी १४ बाराखम्बा रोड ।
५००) श्री अशोक जीसरीन (अनन्त राज एजेन्सीज कनाट प्लेस) ।
२५१) श्री मन्त्री जी आ० स० हनुमान् रोड ।
२५०) श्री डी. आर. सौन्धी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट ।
२५१) श्री शिवराज जी गुप्त फ्रैन्ड्स कालोनी ।
२५०) श्रीमती डा. एस. के. लाल ग्रीनपार्क ।
२०२) श्री प्रकाशचन्द्र जी ग्रेटर कैलाश I ।
२०१) श्री रामकृष्ण जी तनेजा ग्रेटर कैलाश ।
१५१) श्री मन्त्री जी आ० स० ग्रैटर कैलाश I ।
१५१) श्री पी. एन. चोपड़ा (श्री त्रिलोक भगवती धर्मार्थ ट्रस्ट) जोरबाग ।
१५०) श्री रतनचन्द जी सूद गौल्फ लिंक्स् ।
१५०) श्री मन्त्री जी आ. स. मन्दिर मार्ग ।

१०१) दान देने वाले महानुभाव

सर्व श्री राय बहादुर श्री शिवचरणदास सभ्भरवाल, औरंगजेब रोड । मदनमोहन सभ्भरवाल औरंगजेब रोड, डॉ० हरीशचन्द्र हनुमानरोड, सुरेन्द्रनाथ आनन्द कैलाश कालोनी, रमेशचन्द्र शर्मा बाबरलेन, विश्वबन्धु गुप्त संसद् सदस्य, विजयकुमार—गोविन्दराम हासानन्द, राकेशचन्द्र न्यू बुक डिपो कनाट प्लेस, राममूर्ति कैंत्रा प्रधान आ० स० हनुमान रोड, श्रमती पद्मचन्द हौजखास, रतनलाल सहदेव डिफेन्स कालोनी, बनवारीलाल भल्ला आजाद अपार्टमेन्ट, भगीरथ भल्ला आजाद अपार्टमेन्ट, श्रीमती विमल गुजराल कौटिल्य मार्ग, मदन जी लाम्बा पंचशील पार्क, रवि खन्ना पचशील पार्क, जसवन्तराय कोछड़ पंचशील पार्क, रघुनाथ गुप्ता रिंग रोड लाजपत नगर, मन्त्री आर्य प्र० सभा दिल्ली, नवनीतलाल जी, सत्यप्रिय धर्मार्थ ट्रस्ट निजामुद्दीन, जे. के. खन्ना रिंग रोड लाजपत नगर, आर० के० मेहरा फ्रैंड्स कालोनी, जीवनसिंह वेदी महारानी बाग, अनिलकुमार डंग बसन्त बिहार, ओ३म् प्रकाश सरीन राजेन्द्र नगर, बलदेव कृष्ण राजेन्द्र नगर, चन्दुलाल गुप्त ग्रेटर कैलाश, एस० एल० सलूजा ग्रीन पार्क, डा० रूपकिशोर शास्त्री आ० स० हनुमान रोड, मन्त्रिणी स्त्री समाज ग्रेटर कैलाश, मिश्री वछेरा पृथ्वीराज रोड, कैलाश लाम्बा गोल्फलिंक, श्याम सुन्दर गुप्त गोल्फलिंक ।

१००) दान देने वाले महानुभाव

सर्व श्री कुंवरलाल गुप्त ग्रीनपार्क, श्रीमती मोहिनी चौधरी न्यू फ्रैन्डस कालोनी, लोकनाथ सूद मालचा मार्ग, इन्द्रनाथ पंचशील पार्क, श्रीमती कृष्णमोहन आनन्दलोक, नेत्रकृष्ण सहगल सरदार पटेल मार्ग, इन्द्रकुमार गुजराल महारानी बाग, मोहनलाल भयाना महारानी बाग, विद्याभूषण सोनी महारानी बाग, श्रीमती शकुन्तला बजाज गोल्फलिंक । अमृतलाल भल्ला, हरवंशलाल भल्ला, गुरुदेव शरण जी एम. ए., के० एल० राठी, मुनीश्वर सरदाना सभी बसन्त बिहार, ७८१) रुपये फुटकर ।

श्री पण्डित जी की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुमती जी